हाँ हाँ तेरी दुनियाँ में

लेखक

शाह नसीर फरीदी

प्रकाशक

जनप्रिय प्रकाशन कुटीर

आगरा

प्रकाशक
जनप्रिय प्रकाशन कुटीर
आगरा

मूल्य ४'५० नये पैसे
(नोट :—इसका उर्दू संस्करण भी मिलता है)

मुद्रक—
महावीर प्रेस,
किनारी बाजार आगरा।

**In the beginning, said a Persian poet,
Allah took a rose, a lily, a dove,
a serpent, a little honey, a dead-sea-
apple, and a handful of clay.
When He looked at the amalgam**
—— *it was a Woman !*

नहीं हैं दीपक के राग से कम मुहब्बतों के गुदाज़ नग़मे !
जो सुन रहा है वो फुंक रहा है, जो गा रहा है वो जल रहा है !!

समर्पण

श्रद्धेय प्रोफ़ेसर अबूसालिम के करकमलों

में

सादर समर्पित

भूमिका

श्री फ़रीदी का उपन्यास हाँ हाँ तेरी दुनियां में आप पढ़ेंगे। लेकिन इसको पढ़ने से पहिले आपके लिये जरूरी है कि लेखक और उसकी रचना के बारे में कुछ जानकारी कर लें। वैसे आपको इस बात का अधिकार है ही कि आप जो भी राय चाहें इस उपन्यास के बारे में कायम कर लें।

इस उपन्यास को पढ़ने से चन्द प्रमुख बातें स्पष्ट होती है। सबसे पहली बात तो यह है कि पाठक को अधिक से अधिक मनोरंजन मिलेगा और दूसरी बात यह है कि लेखक के ऊपर योरुप में लिखे गये उपन्यासों का अधिक प्रभाव मालूम होता है और साथ ही यह भी मालूम होता है कि लेखक ने यथार्थ जीवन को स्पष्ट करने के लिये बड़ी चेष्टा की है। यही कारण है कि लेखक को बाज़ बातें इस उपन्यास में अशलोल मालूम होगीं। परन्तु ज्यों ही आप इस उपन्यास की परख शुरु करेंगे आपको यह मानना पड़ेगा कि लेखक ने हर बात का चित्रण पूरे तौर से किया है और निर्णय पाठक पर छोड़ा है। उपन्यास में वहस मुबाहिसे भी हैं जिन्हें आप मानें या न मानें किन्तु रोचक— तो वे हैं ही।

क्या हमारा समाज भिन्न भिन्न वर्गों में बंटा हुआ है? क्या औरत को हमारे समाज में पूरी आज़ादी प्राप्त है? क्या निर्धन को अपनी बात मनवाने के लिये उतनी ही सुविधायें प्राप्त हैं जितनी कि धनवान को? यह सारी बातें हमारे समाज में मौजूद हैं और इनको सबसे अधिक पेचीदा बनाने वाली घरों के रीत रिवाज हैं। श्री फरीदी के इस उपन्यास के अनुसार इन सारी बातों का जोर हमारे समाज की स्त्री के हाथ में है। उनके अनुसार यदि चाहे तो एक क्या हज़ारों ऐसी परम्पाराओं का खात्मा हो जाय जो आदमी ने आदमी के लिये बीमारी की तरह फैला रखी हैं।

फ़ारसी का जो शेर आवरण पर दिया है उसी की झांकी श्री फ़रीदी के स्त्री पात्रों में मिलेगी। पढ़िये और सहमत होइये अथवा असहमत यह तो आपका अधिकार है।

पाठकों ने सौभाग्य और दुर्भाग्य के चमत्कार भी तो सुने होंगे। हमारी रोजाना की जिन्दगी की यह भी एक बहुत बड़ी जीती जागती तस्वीर है। किसी को लाटरी मिल जाना और किसी के सारे धन का चोरी हो जाना आये दिन की बातें है। इनसे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। इस उपन्यास के लेखक ने भी जीवन के इस भाग को दिखाया है।

इस उपन्यास के तीन पहलू हैं। एक तो झूठी परम्पराओ का बन्धन और उन से प्रेम, दूसरे झूठा मान और गौरव और तीसरा भाग्य के चमत्कार। वास्तब में ये ही तीन भावनायें है जो किसी न किसी रूप में पाठक को इस उपन्यास में मिलेंगी।

इन सब बातों के अतिरिक्त लेखक उर्दू शायरी को सहायता लेकर पुस्तक को अधिक से अधिक रोचक बनाने में अवश्य सफल हुये है। इस उपन्यास की शैली आये दिन लिखे जाने वाले उपन्यासों की शैली से एक भिन्नता लिये हुये है। जिसके लिये लेखक के उत्साह की प्रशंसा करनी पड़ेगी।

श्री फ़रीदी ने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं। वह शोविया कॉलेज में प्रोफेसर हैं। हिन्दी के प्रति इनका उत्साह देखकर हर्ष होता है। आशा है आगे चलकर हमें उनकी कृतियों में सत्य शिवं सुन्दरम् को सानुपात साकारता प्राप्त होगी। उनके लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

झाँसी —वृन्दावनलाल वर्मा

The one invincible thing is a good book neither malice nor s upidity can crush it.

George Moore

आमुख

Opinion can do much,
and indeed she is that great
lady which rules over the world.

—*James Howell*

इन्सान को इन्सान के करीब आने से रोकने वाली सब से बड़ी हानिकारक शक्ति केवल एक है और वह है "परम्परायें" आप देखेंगे कि इन्सान को एक दूसरे से अलग रखने के लिये न मालूम कितने तरह की परम्पराओं का सहारा लिया जाता है परम्पराओ का क्या कहना, कुछ धर्म के नाम पर हैं कुछ बाप दादा के नाम पर कुछ जाति-पाँति के नाम पर आदि।

आप थोड़ी देर केवल एक ऐसे 'समाज की कल्पना कीजिये जिसमें मनुष्य अन्धविश्वास से दूर हो और देखिये कि इंसान एक दूसरे के कितना करीब आ जाता है। दुनियाँ में हम सब केवल एक जंजीर से जुड़े हुये हैं और वह है "मानवता"। अगर हम मानवता को सच्चे रूप में अपने जीवन का आधार मान कर चलें तो यही नहीं कि समाज के बहुत से झूठे बन्धन टूटेंगे बल्कि इन्सान अपने आपको उच्च स्थान पर पायेगा और आजाद समझेगा।

इसी के साथ साथ मेरा विश्वास है कि समाज के अन्दर अधिक तर खराबियाँ और अच्छाइयाँ "औरतों" की वजह से हुआ करती है जिस तरह से आपके परिवार की उन्नति आपके घर की औरत पर निर्भर है बिलकुल उसी तरह से सारे देश और समाज की तरक्की केवल औरतों के इन्कलाब पर ही निर्भर है।

मेरे इस उपन्यास में एक औरत कहती है मैं पहले औरत हूँ और बाद में रंजना दूसरी कहती है मैं पहले तारा हूँ और बाद में औरत और तीसरी कहती

है मैं मर्द की सब से बड़ी शक्ति हूँ। मुझे नहीं मालूम आप किसके विचार से सहमत होंगे और किसको इस उपन्यास की हीरोइन कहेंगे क्योंकि इस उपन्यास में "भाग्य" के चमत्कार के साथ-साथ औरतों के चमत्कार भी स्पष्ट हैं।

इस उपन्यास में आप शायद यथार्थ को पसन्द न करें क्योंकि अक्सर लोग यथार्थ को ना पसन्द करते हैं अपनी माफी के लिये एक शेर मिर्जा ग़ालिब का और दूसरा शेर रघुपति सहाय फ़िराक का पेश करता हूँ।

धौल धप्पा उस सरापा नाज़ का शेवा नहीं।
हम ही कर बैठे थे ग़ालिब पेशदस्ती एक दिन ॥

\+ \+ \+ \+ \+

अब जवाँ हो चली है शामे विसाल।
खिलवते नीम-शब है कपड़े उतार ॥

अन्त में केवल एक ही बात निवेदन करूँगा वह यह कि मेरे उपन्यास के बारे में आप जो कुछ भी फैसला करें इसको पढ़कर समाप्त करने के बाद निष्पक्ष होकर फ़ैसला करें। इस नाविल का बुनियादी मतलब पाठक का मनोरंजन है। अगर आपको इसके पढ़ने से मनोरजंन प्राप्त हुआ तो मैं समझूंगा कि मेरा परिश्रम सफल हुआ। जुमला हक़ूक महफ़ूज है।

१६—४—[redacted] ई०
आगरा

विनिति—
शाह नसीर फ़रीदी

Why should you try the same things as others? What one feels inspired to do, is the best thing for one—*Sri Auaobindo*

अध्याय पहला

ओ इश्क़ के मतवाले ओ हुस्न के दीवाने!
हम भी तो सुनें आख़िर क्या हैं तेरे अफ़साने !!

वैसे तो अलीगढ़ का विश्वविद्यालय सारे संसार में प्रसिद्ध है परन्तु उत्तर प्रदेश में कुछ और भी विश्वविद्यालय हैं जो कम विख्यात नहीं। लखनऊ का विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश में अधिक विख्यात है। इसलिए इस विश्वविद्यालय का छात्र कम से कम अपने नगर में प्रसिद्ध हो ही जाता है। बहरहाल इस वाद-विवाद को कौन बढ़ाये। सारांश यह है कि जब लखनऊ विश्वविद्यालय के खुलने का समय आता है और नये छात्र वहाँ पर प्रवेश लेना चाहते हैं तो लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रों का भाग्य जग जाता है। जो है वही अपने नगर में राजा इन्द्र बना घूमता है।

तनवीर राम भी लखनऊ विश्वविद्यालय का छात्र है। वह ग़ाज़ीपुर का निवासी है। आप भी यह भली भाँति जानते होंगे कि लखनऊ में केवल लड़के ही नहीं कन्यायें भी पढ़ती हैं और इनके लिए सुन्दर प्रबन्ध भी हैं। तनवीर को लखनऊ से कुछ इतना प्रेम है कि जब कभी छुट्टियाँ होतीं तो उसे लखनऊ छोड़ने पर बहुत खेद होता—शोक होता तथा बहुधा मन मसोस कर घर जाता तो

बेचैन हो जाता किन्तु प्रेरित होकर अवकाश में उसे घर जाना ही पड़ता। केवल दो कारण से—एक तो माता-पिता का प्रेम पुत्र को देखने के लिए और दूसरे यदि छुट्टियों में घर न जाए तो सब मित्र और साथी यही समझेंगे कि बिल्कुल लफंगा है और उसके घर वाले कुछ ऐसे ही वैसे हैं। बहरहाल अवकाश में जाना आवश्यक होता ताकि घर का भोजन करने के पश्चात् लखनऊ में आकर कुछ दिन तक शरीर की मशीन ठीक चला सके। सदैव की भाँति इस वार भी लखनऊ में गर्मी की छुट्टियाँ हुईं और लड़के अपने-अपने घर को प्रस्थान करने लगे। लखनऊ का जंकशन है कि छात्रों से पटा पड़ा है। और जब गाड़ी स्टेशन से चलती है तो छात्रों का शोर मचता है और वे आपस में हाथ मिलाना तथा बधाई देना आरम्भ कर देते हैं और कुछ छात्र अपने रूमाल हिलाने लगते हैं। किन्तु रूमाल हिलाने की आदत उन्हीं लोगों की होती है जो सदैव के लिए अपने रूमाल खो दिया करते हैं या दूसरे शब्दों में जिनके रूमाल साधारणतया ग़ायब कर दिये जाते हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय का नवयुवक तनवीर भी सूट पहिने हुए अपने बक्स तथा बिस्तर सहित स्टेशन आ पहुँचा। मित्रों ने ताँगे से सामान उतरवाया और गाड़ी में बड़े सन्तोष के साथ उसको जगह दिखलाई। थोड़ी देर बाद तनवीर की गाड़ी ग़ाजीपुर के लिए रवाना हो गई। लखनऊ का स्टेशन बहुत दूर रह गया और अब तनवीर ने डिब्बे में बैठे अपने मित्रों से गप्प लड़ाना आरम्भ कर दी और इसके उपरान्त ताशबाजी भी शुरू हो गई। स्टेशन के बाद स्टेशन गुजरते गये और अन्त में बाबू तनवीर दूसरे दिन ढाई बजे ग़ाजीपुर के स्टेशन पर उतर पड़े। ताँगा किया और घर पहुँचे। तनवीर चूँकि पत्र लिखने में अधिक आलसी है इसलिए उसने अपने आने की खबर भी अपने माता-पिता को न दी। उसका अचानक आ जाना सबके लिए प्रसन्नता और आनन्द का विषय बन गया। पिता प्रसन्न, माता प्रसन्न, बहिन खुश और साथ ही साथ तनवीर के पिता के नौकर बुद्धूराम भी बहुत ही प्रसन्न हैं कि "बाबू" आ गये।

मैं यहाँ पर आवश्यक समझता हूँ कि तनवीर के घराने से परिचित करा दूँ। तनवीर के पिता श्री रणवीर ग़ाजीपुर के राजकीय विद्यालय में अध्यापक

हैं। आप एक साधारण व्यक्ति हैं और अधिक सभ्य और सुलझे हुए मनुष्य हैं। श्री रणवीर का अधिकतर समय तो लड़कों के पढ़ाने में या भगवान के पूजा-पाठ में व्यतीत होता है। तनवीर की माता बिहार के जिला छपरा की हैं और पुराने विचार की महिला हैं। तनवीर की छोटी बहिन कमला एक सीधी-साधी लड़की है। परन्तु सबसे दिलचस्प वस्तु इनके घर के नौकर बुद्धूराम हैं। बुद्धूराम आयु में अधेड़ हैं। पहली चीज़ तो यह है कि बुद्धूराम को नगर के एक दो आदमी नहीं जानते बल्कि यह समझ लीजिए कि सारा नगर का नगर उनके नाम से, चाल-ढाल से और सबसे अधिक उनके सिर से परिचित है। जी हाँ! उनके सिर से! इसलिए कि लगभग नगर का प्रत्येक बालक जब कभी अवसर पाता है "चपत" लगाकर इधर-उधर भाग जाता है। चपत खाने के उपरान्त वे मातृभाषा में लौंडों को जो गाली देते हैं तो वह सुनने योग्य होती है। वास्तव में पूछिये तो लौंडे बुद्धूराम के मुख से गाली सुनने के लिए उनको चपत लगाते हैं और न जाने क्या बात है कि लड़कों के झुंड पर बुद्धूराम की गालियाँ आशीर्वाद का काम देती हैं क्योंकि वह ज्यों-ज्यों अपने मार्ग में आगे बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों चपत मारने वालों की संख्या या लड़कों की संख्या कह लीजिए, अधिक होती जाती है और कोई भी नहीं कह सकता कि चपत का मारना किस मंजिल पर समाप्त होगा क्योंकि चपत मारने वाले हर स्थान पर मिलते जाते हैं।

आज चूँकि तनवीर बाबू घर पहुँचे हैं अतः बुद्धूराम भी बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। कभी ताँगे से बिस्तर उठाकर ले जाते और कभी सामान इत्यादि। इनकी अजीब दशा है। इस वक्त ये अपने आपको संसार का सर्वश्रेष्ठ मनुष्य समझ रहे हैं क्योंकि बाबू दो तीन मास के पश्चात् लखनऊ से आये हैं। तनवीर के पिता बाबा और चाचा सब लोग खड़े हैं। द्वार के पास ताँगा भी खड़ा है और बुद्धूराम दौड़ धूप कर रहे हैं कि इसी समय एक "घटना" होती है। तनवीर के घर की नौकरानी का पुत्र कल्लू जनाने घर से निकल कर बाहर और फाटक के पास न जाने किस प्रतीक्षा में खड़ा हो गया। इतने में तनवीर ने कल्लू को संकेत किया और उसने संकेत का उत्तर संकेत ही में दिया और

अवसर निकाल कर बुद्धूराम के सिर पर एक ज़ोरदार चपत लगा कर जनाने घर की ओर भाग गया। चपत कुछ ऐसी जोरदार पड़ी कि विश्वास कीजिए बुद्धूराम के सिर का गुब्बारा फट गया। बस साहब चपत का पड़ना और कल्लू का घर के अन्दर भाग जाना ऐसा प्रतीत होता था कि बुद्धू का मुँह रेडियो बन गया और उसने जो गाली देना प्रारम्भ किया तो फिर न पूछिये और बिगड़ते हुए जो बातें बुद्धूराम ने कहीं वह यह है "...... ...अबे कल्लू के बच्चे हम हजार बार मना कर चुके हैं ... ... हमारा क्रोध खराब है.........हम गुस्से में अपने बाप को बाप नहीं समझते......सूअर के बच्चे आज तुझे कत्ल कर देंगे.......देखें कौन माई का लाल हमें फांसी चढ़ाता है.......हरामज़ादा है तो आखिर लौंडी का बच्चा ही.....उल्लू का पट्ठा, आज शाम तक इस हराम-ज़ादे को हम जरूर कत्ल कर देंगे.......निकल आज घर में से तो हम आज तुझे बताते हैं.......देखेंगे कि बच कर कहाँ जायेगा.......हमारा गुस्सा बहुत खतरनाक है.......अगर पास में बन्दूक होती तो अभी तुझे खत्म कर देता.... ....अच्छा छुरे से गला काटेंगे। (तनवीर को ओर) देखो बाबू, जब न तब साला चपत लगा कर अन्दर घुस जाता है। अब बाबू आ गये हो। इस साले की खबर लो.......इस साले को खूब मारो"।

न जाने क्या बात है कि बुद्धूराम के ऊपर जो चपत पड़ती है तो देखने वाले शब्दों द्वारा सहानुभूति का पर्वत खड़ा कर देते हैं परन्तु हृदय में सभी प्रसन्न होते हैं और बहुधा लोग दूसरे को भी संकेत कर देते हैं कि चपत नम्बर दो भी पड़ जाना चाहिए।

इस घटना के बाद तनवीर खुशी से अपने घर चला जाता है। सबसे मिलता है। नाते की कई एक महिलाएँ आती हैं और सबसे मुलाकात होती है और थोड़ी देर बैठकर नाश्ता पानी करने के पश्चात् स्नान के लिए चल देता है। फिर यात्रा की थकान के कारण सो जाता है। दूसरे दिन प्रातःकाल बुद्धू के पास जनाने घर से आज्ञा आती है कि जाओ बाज़ार से तरकारी खरीद लाओ। तरकारियाँ अच्छी हों और शीघ्र आना। बुद्धूराम ने पैसे लिए और बाज़ार की ओर रवाना हो गये। कुछ अजीब इत्तफ़ाक की बात है कि जब

बुद्धूराम दुकान से तरकारी खरीद रहे थे तो एक दूसरा आदमी भी आ टपका। यह आदमी आयु में बुद्धूराम से कुछ ही कम है किन्तु पागल होने में बुद्धूराम से एक श्रेणी, आगे ही है पीछे नहीं। इनकी गिनती भी अधेड़ अवस्था वालों में की जा सकती है। इनके सिर के बाल और सिर के ऊपर एक बहुत ही गुच्छेदार चोटी है। इनका नाम बांकेलाल है और ये हर वक्त कुर्त्ता और धोती पहिने घूमा करते हैं। ये रायबहादुर मोहनलाल के नौकर हैं और इनका काम दिन भर बाजार से सौदा खरीदना तथा रायबहादुर साहब के घर पहुँचाना है और यदि कोई मार्ग में मिल जाय तो उससे बातचीत करना भी आवश्यक है। थे। बांकेलाल भी अनोखे ढंग के मनुष्य हैं। यह महाशय केवल अपनी तो कहा करते हैं और दूसरे की सुनने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं रहते किन्तु बुद्धूराम से इनकी मित्रता बहुत गहरी तथा पुरानी है तो फिर क्या कहते।

—खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो !!

ज्यों ही बुद्धू तथा बांके का तरकारी वाले की दुकान पर आज एकाएक सामना हुआ तो दोनों ने प्रसन्नतापूर्वक वातचीत प्रारम्भ कर दी।

बांके—जैराम जी की, बुद्धू भैया !

बुद्धू—जैराम जी की भैया बांके !

बांके—कहो भैया, आजकल कैसे समय कट रहा है ?

बुद्धू—क्या बतायें, ठाकुर साहब, तरकारी खरीद रहे हैं............इस हरामजादे कल्लू ने तो हमारी नाक में दम कर रखी है।

बांके—क्या बात है ?

बुद्धू—अरे यार बात क्या है जब देखो बदमाश चपत लगा देता है और लगाने के बाद घर में घुस जाता है। आखिर हम करें तो क्या करें ?

बांके—अरे यार ठाकुर साहब तुम भी अजीब ठाकुर हो, कम्बख्त को पकड़ कर साले की टाँग पर टाँग रख कर चीर दो !

बुद्धू—यार, हम ऐसा तो कर दें किन्तु वह भागता बहुत तेज है दूसरे यदि हम ऐसा कर दें तो उसकी माता को बहुत ही शोक होगा !

बाँके—उसकी माता को शोक होगा तो क्या होगा वह अपने पुत्र को रोकती क्यों नहीं।

बुद्धू—यार, यही बात तुम नहीं समझते। उसकी माता को दुख होने का मतलब है हमको दुख होना।

बाँके—ऐं ! यह क्या बात हुई ?

बुद्धू—यही तो सारी बातों की बात है।

बाँके—ज़रा हम भी तो सुनें............।

बुद्धू—हम अब तुमसे हृदय की बात बता ही देते हैं। परन्तु देखो, किसी को बताना मत। बात यह है कि कल्लू की माता विधवा है और उसके ले-दे के केवल एक ही पुत्र है। वह हमारे खाने-पीने और कपड़े आदि का ख्याल रखती है। घड़ी दो घड़ी हमारे पास बैठ कर हँस-बोल भी लिया करती है।

बाँके—ठाकुर साहब, जब यह बात है तो कल्लू की चपत भी खाये जाओ और यदि मौका मिले तो उसकी माँ की जूतियाँ भी खा लिया करो।

बुद्धू—अजी ठाकुर साहब, क्या बात करते हैं। वह ऐसी औरत नहीं, वह तो हमारे गले में हार डालती है, हार............!

बाँके—छोड़ो इस क़िस्से को। यह तो तुम्हारे दिल का मामला है। दिल जाने और तुम............हाँ यह बताओ कि तुम्हारे बाबूजी के लड़के लखनऊ से आ गए ?

बुद्धू—हाँ ! हाँ ! वह तो कल ही आ गए।

बाँके—तो यार आखिर बात क्या है हमारे सरकार की बिटियाँ लोग अभी तक नहीं आई हैं।

बुद्धू—क्या मतलब............?

बाँके—हमारे वकील साहब की लड़कियाँ भी वहीं लखनऊ में पढ़ती हैं।

बुद्धू—अच्छा............।

बाँके—और वह लोग अभी तक नहीं आईं, न जाने क्या बात है ?

बुद्धू—तो वकील साहब की दो लड़कियाँ हैं और दोनों वहाँ पढ़ती हैं।

बाँके—नहीं ! नहीं ! एक तो वकील साहब की लड़की है और दूसरी उनकी भतीजी है और दोनों वहीं लखनऊ में पढ़ती हैं। जरा अपने बाबूजी से पूछना कि आखिर बात क्या है कि वह लोग नहीं आईं। क्या लड़कियों को अभी छुट्टियाँ नहीं हुईं या अभी कॉलिज बन्द नहीं हुए ......आखिर बात क्या है ?

बुद्धू—अच्छा, हम जरूर पूछेंगे.......... ।

बातचीत का अन्त होना था कि बुद्धू ने अपनी तरकारी सँभाली और बाँकेलाल ने अपना सौदा सँभाला और अपने मुहल्ले सैयदवाड़े की ओर वह अग्रसर हुए तथा अपने मुहल्ले चिश्तीपुरे की ओर बुद्धू चले और घर पहुँचे।

इसी दिन दोपहर में जब तनवीर खाना खाकर दरवाजे पर आया बुद्धू ने कमरे में पलँग पर बिस्तर लगा दिया और वह लेट गया। ख्याल यह था कि लेट कर समाचार-पत्र अथवा पत्रिका आदि देखे और उसके बाद सो जाये। किन्तु गर्मी कुछ इतनी अधिक थी कि उसने न तो समाचार-पत्र पढ़ना चाहा न पत्रिका देखना, बल्कि फौरन बुद्धू को बुलवाया और कहा कि थोड़ी देर तक पंखा झलते रहो। बुद्धू आज्ञानुसार पंखा झलते रहे और अपनी इधर-उधर की बातें भी तनवीर से करते जाते थे। तनवीर भी बुद्धू से मनोरंजक बातें करता जाता था। कभी बुद्धू यह कहते कि अमुक ने हमको चपत लगाई तो हमने यह किया और अमुक को हमने ऐसे मारा और वैसे मारा। मतलब यह कि बुद्धू अपनी कहानी बहुत जोरों में छेड़े हुए थे। बातों ही बातों में तनवीर से कहने लगे :

बुद्धू—और हाँ, एक बात जरा बताना। लखनऊ में लड़कियों को छुट्टियाँ हुईं कि नहीं ?

तनवीर—क्यों ? (अचरज से दृष्टि डालते हुए)

बुद्धू—अरे कल बाँके मिला था। कहता था कि तुम्हारे बाबू आये कि नहीं आये ? अभी वकील साहब की लड़कियाँ नहीं आई हैं।

तनवीर—इसका क्या मतलब ? बाँके कौन है ?

बुद्धू—सैयदवाड़े मुहल्ले में रायबहादुर मोहनलाल वकील रहते हैं कि नहीं······ बांकेलाल उन्हीं का नौकर है······ ।

तनवीर—तो !

बुद्धू—वकील साहब की दो लड़कियाँ लखनऊ के कॉलेज में पढ़ती हैं। वह लोग अभी तक नहीं आई हैं। यही बात बाँके पूछ रहा था कि आखिर वजह क्या है ? क्या इन लड़कियों का कॉलिज बन्द नहीं हुआ है ?

तनवीर—बुद्धू, लड़कियों का नाम क्या है ?

बुद्धू—हमको तो मालूम नहीं !

तनवीर—कब से पढ़ती हैं ?

बुद्धू—लगभग दो साल से !

तनवीर ने आश्चर्य से मौन साध लिया और सोचने लगा कि यह भी अनोखी बात हुई कि हमारे शहर की दो लड़कियाँ लखनऊ में पढ़ रही हैं और मुझे खबर भी नहीं। भाँति-भाँति के विचार उसके दिल में आने लगे। आखिर इन लड़कियों के क्या नाम हैं, सुन्दर हैं या नहीं ? मैं तो एम० ए० में पढ़ता हूँ। वह न जाने किस दर्जे में पढ़ती हैं। न जाने मुझसे सीनियर हैं या जूनियर। भाँति-भाँति के विचार उसके हृदय में लहरें ले रहे थे और वह कुछ दिलचस्पी से इस बात पर मनन करने लगा कि फिर कुछ पूछिये मत। अन्त में उसने सोचा—"होंगी लड़कियाँ पढ़ती, छोड़ो इस किस्से को।" और उसने अपना ध्यान उधर से हटा लिया। थोड़ी देर में वह सो गया। तनवीर के सोते ही बुद्धू ने भी पंखा रख दिया।

तनवीर के हृदय में यह बात बैठ गई कि यहाँ के प्रसिद्ध वकील की लड़कियाँ भी लखनऊ में पढ़ती हैं और उनके साथ कोई न कोई मनोरंजन होना चाहिये। अवकाश के दिन गुजरते गए। आज एक दिन बीता तो कल दूसरा दिन और इसी प्रकार मई का पूरा माह व्यतीत हो गया। जून का मास भी बीत चला था। विश्वविद्यालय खुलने के दिन आ रहे थे।

अध्याय दूसरा

मुहव्वत क्या है तासीरे मुहव्वत किसको कहते हैं!
तेरा मजबूर कर देना, मेरा मजबूर हो जाना !!

जून का अन्तिम सप्ताह केवल इसलिए नहीं महत्वपूर्ण है कि छुट्टियों के अन्त का समय होता है और गर्मी इसी समय ज्यादा होती है बल्कि इसलिए भी कि उन छात्रों के लिये यह समय सबसे भयानक होता है जो यू० पी० बोर्ड की इण्टर की परीक्षा के नतीजे की राह देखते रहते हैं। और परीक्षाफल निकलते ही क्या खलबली उत्पन्न करता है, न पूछिए। गाजीपुर में एक बहुत मशहूर कपड़े की दुकान के मालिक का नाम महावीर राम है। महावीर बहुत ही योग्य मनुष्य है। ईमानदारी इनका सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त है और साथ ही शिक्षा का अधिक सम्मान करते हैं। यद्यपि बेचारे स्वयं शिक्षा न प्राप्त कर सके, किन्तु अपने लड़के की शिक्षा का काफ़ी ख्याल रखते हैं। परिणाम यह हुआ कि उनका पुत्र गनपतराम दसवीं कक्षा पास करके बलिया के टाऊन कॉलिज में पढ़ने गया और अब की वर्ष उसने एफ० ए० की परीक्षा दी है और इस माह के दूसरे सप्ताह में उसका नतीजा आने वाला है। बेचारे अत्यन्त व्याकुल हैं कि क्या करें क्या न करें? यद्यपि उसने परीक्षा के अच्छे उत्तर दिये हैं फिर भी व्याकुलता कहाँ जाती है। न जाने क्यों? इसकी वजह से

हृदय को शान्ति प्राप्ति नहीं हो रही है। समय काटने के लिये उसने एक साधन कर रखा है और वह सोने का है। बिस्तर पर पड़े सोते रहना। एक दिन उसका एक मित्र आकर उसको सूचित करता है। "अखबार शहर में आ गया है।" उसने अपना और गनपत का परीक्षाफल देखा। परमात्मा की असीम कृपा से दोनों ही पास हो गए।

गनपत मारे खुशी के उछल पड़ा। शीघ्र ही अन्दर गया और हर ओर से बधाई के फूल बरसाये जाने लगे। आज महावीर राम भी बहुत प्रसन्न हैं कि उनका पुत्र सफल हो गया है। वह अधिक प्रसन्न तो इस कारण से हैं कि पिताजी ने तो शिक्षा प्राप्त नहीं की परन्तु पुत्र को शिक्षित बना कर समाज को दे रहे हैं। हर तरफ से लोग मिलने के लिये आ रहे हैं और उनको बधाई दे रहे हैं तथा महावीर राम भी इसी भाव से बधाई का उत्तर देते जा रहे हैं। नतीजे के दूसरे दिन के बाद यह प्रश्न उठा कि गनपत की शिक्षा कहाँ तक हो। उनके पिता को भिन्न लोगों ने भिन्न-भिन्न राय दीं। किसी ने कहा आगे शिक्षा होनी चाहिए। किसी ने कहा आगे शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं। इतनी शिक्षा काफी है। किसी ने यह परामर्श दिया कि यदि आगे शिक्षा प्राप्त करने जाय तो इलाहाबाद जाय। किसी ने कहा—"नहीं, यदि आगे शिक्षा प्राप्त करने जाय तो लखनऊ जाय क्योंकि शिक्षा के लिये सबसे योग्य स्थान लखनऊ है। किसी और स्थान पर पुत्र को भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस बात का निर्धारण होना था कि अब इस सिलसिले में प्रबन्ध होना आरम्भ हो गया। कपड़े, जूते तथा दूसरे सामान का क्रय होने लगा और इधर-उधर की सब बातें होने लगीं। चूँकि महावीर राम को रुपये की कमी तो थी ही नहीं, अतः हर कार्य प्रसन्नतापूर्वक करते गये। और किसी चीज़ में रुपये लगाने से हिचकिचाये नहीं।

अब केवल आवश्यकता इसकी थी कि ग़ाज़ीपुर में ही कोई लड़का मिल जाय जो लखनऊ में पढ़ता हो ताकि गनपत उसी के साथ लखनऊ चला जाय और वहाँ पर उसका प्रवेश सरलतापूर्वक हो जाय क्योंकि परदेश का मामला है और नाम लिखने में जो कठिनाइयाँ होती हैं वह साफ प्रकट हैं।

महावीर राम को अपने लड़के के लखनऊ भेजने की इतनी खुशी नहीं थी जितनी कि स्वयं गनपत को लखनऊ जाने की थी। अतः यह दिन-रात इसी चक्कर में पड़े फिरा करते थे कि कोई लखनऊ वाला मिल जाय। ढूँढने से तो परमात्मा भी मिल जाता है। अन्त में इनको पता चला कि श्री तनवीर लखनऊ ही में पढ़ते हैं और आजकल वह ग़ाज़ीपुर ही में हैं। अब इससे बढ़कर क्या हो सकता था ? दूसरे ही दिन सबेरे लगभग आठ बजे गनपत तनवीर के घर जा पहुँचा। मालूम हुआ कि तनवीर बाबू अभी सो रहे हैं। बहरहाल उनके नौकर बुद्धू से आवाज दिलवाकर यह सूचना करादी कि एक श्रीमान् जी तनवीर बाबू से मिलने आये हैं, यदि आकर मिल लें तो विशेष कृपा होगी। बाध्य होकर तनवीर को बिस्तर छोड़ना ही पड़ा। शौच और स्नान से निवृत्त हो और कपड़े बदल कर बाहर अपने बैठक में आया। गनपतराम से बातचीत हुई। नौकर से चाय लाने को कहा। थोड़ी देर में चाय आई। दोनों ने मिल कर पी और इधर-उधर की बातें हुईं और जब ये बातें समाप्त हो गईं तो गनपत अपने मुख्य उद्देश्य पर आये।

गनपत—तनवीरजी, मैं एक आवश्यक बात के लिए उपस्थित हुआ हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो कहूँ।

तनवीर—अवश्य, अवश्य कहिये। क्या बात है ?

गनपत—निवेदन यह है कि अब की वर्ष हमने टाउन कॉलिज, बलिया से एफ० ए० पास किया है और अब लखनऊ चलना चाहता हूँ। अतः यदि आप वहाँ नाम लिखाने के सिलसिले में मेरी सहायता करें तो कृपा होगी।

तनवीर—हाँ ! हाँ ! इसमें कौन-सी बात है ? यह तो मेरा कर्त्तव्य है। जो भी बात आप पूछना चाहें पूछें। परमात्मा ने चाहा तो आपका नाम सरलतापूर्वक लिख जायेगा.........किन्तु एक बात तो आप बताइये कि आपने प्रॉसपेक्टस तथा फार्म तो मंगा लिये हैं या नहीं।

गनपतराम—जी हाँ.......प्रॉसपेक्टस तथा फार्म आदि के लिये लिख दिया है। सम्भव है, दो-तीन दिन में आ जावेंगे।

तनवीर—बिल्कुल ठीक·········परन्तु गनपतजी, एक बात है कि लखनऊ में खाने की बहुत तकलीफ होती है।

गनपत—हाँ साहब ! यह तो हमने भी सुना है कि लखनऊ में भोजन की तकलीफ बहुत होती है। किन्तु बात क्या है ? इसका कारण क्या है ? वहाँ पर खाने की तकलीफ क्यों होती है ?

तनवीर—(रुकते हुए) क्या बताया जाय। कारण कई है।

गनपत—फिर भी तो कोई मुख्य कारण होगा।

तनवीर—क्या मुख्य कारण बताऊँ (रुकते हुए)·········मुख्य कारण यह है कि आप तो जानते ही हैं कि लखनऊ में छात्राएँ भी पढ़ती हैं।

ग०—जी हाँ !

त०—तो इस विचार से कि लड़कियों को घरेलू कामों की महारत की वृद्धि होती रहे और लड़कियाँ खाना आदि अच्छा पकाने का ढंग सीखती रहें विश्वविद्यालय ने यह प्रबन्ध कर दिया है कि लड़कों का भोजन लड़कियाँ पकाकर भेजा करें !·········चुनाँचे हम लोगों का भोजन लड़कियाँ बोर्डिंग से पकाकर भेजा करती है।

ग०—तो साहब, यह तो विचित्र प्रबन्ध है। किसी कॉलिज या विश्वविद्यालय में ऐसा प्रबन्ध नहीं है।

त०—जी हाँ ! इन्हीं सब बातों के कारण तो लखनऊ प्रसिद्ध है।

ग०—तो लड़कियाँ हमारा भी भोजन बनाकर भेजेंगी। इसमें क्या कठिनाई की बात है ?

त०—भई, केवल इतनी ही बात नहीं है, बल्कि इसके साथ-साथ यह भी है कि वहाँ के कार्यालय में जाकर लिखवाना भी पड़ता है कि कौन सी लड़की आपका खाना या किसी लड़के का भोजन तैयार करेगी।

ग०—इसमें तो बड़ी कठिनाई है। आखिर हम किस लड़की से खाना पकवाने के लिए लिखवायेंगे।

त०—श्रीमान्‌जी, इसीलिये तो हमने कहा कि वहाँ भोजन का प्रबन्ध बहुत खराब है।

ग०—तो आखिर बताइये कि आपने क्या प्रबन्ध कर रखा है ?

त०—श्रीमान्‌जी, हमारे प्रबन्ध की क्या बात पूछते हैं ! बस यूँ ही प्रबन्ध किसी प्रकार हो ही गया है।

ग० —आखिर कैसे हुआ हमको भी तो बताइए।

त०—आपसे छिपाना क्या ? आप तो सैयदवाड़ा मुहल्ले में श्री रायबहादुर मोहनलाल को जानते ही होंगे।

ग०—जी हाँ ! अच्छी तरह जानता हूँ।

त०—तो उन्हीं की बेटी और भतीजी लखनऊ में पढ़ती हैं और लड़कियों के बोर्डिंग में रहती हैं। वे सब अपना भी भोजन तैयार करती हैं और साथ ही हमारा भी खाना पकाकर भिजवा देती हैं।

ग०—तो साहब अब इससे अच्छा प्रबन्ध क्या होगा ? उन्हीं लोगों से कह दीजिए कि जहाँ तीन आदमियों का खाना पकाती हैं वहाँ एक का और सही। कोई हर्ज तो न होगा। जो कुछ व्यय होगा हम देने के लिए तैयार हैं।

त०—भाई सुनिए, साफ़ बात यह है कि हम उन लोगों से कहेंगे तो गड़बड़ी होगी। इसलिए कि फिर वह लोग कहने लगेंगी कि देखिए इनका खाना पकाते हैं तो यह लोग अपने मित्रों का भी खाना पकवाने लगे। ऐसी दशा में मेरा कहना उचित नहीं होगा।

ग०—(व्याकुल होकर) तो फिर कोई तरकीब मेरे लिए भी बताइए।

त०—हाँ एक तरकीब है परन्तु आपको वैसा करना होगा जैसा कि हम बताएँ।

ग०—हाँ ! हाँ ! श्रीमान् बताइए········।

त०—अच्छा तो देखिए इस समय साढ़े नौ बज रहे हैं। वकील साहब के घर पहुँचते-पहुँचते दस बज जावेंगे इसलिए आप इसी समय चल दीजिये और

वहाँ जाकर वकील साहब के नौकर बांके से मिलिए और कहिए कि अध्यापक श्री रणवीर के लड़के ने आपको भेजा है। जरा-सा वकील साहब की लड़कियों को दरवाजे के पास बुलावा दो। उन लोगों से उनका कुछ सन्देशा कहना है।

ग०—तो फिर बताइये कि हम उन लोगों से कहेंगे क्या ?

त०—बताते हैं ! (रहस्य के तौर पर) देखिए जो कुछ हम बता रहे हैं बस यही कहियेगा। न कुछ इससे अधिक कहियेगा न इससे कम।

ग०—बताइये क्या ?

त०—आप यह कहियेगा कि हम एक आवश्यक निवेदन के लिये उपस्थित हुए हैं। आशा है आप लोग मान लेंगी। बात यह है कि मास्टर रणवीर के पुत्र लखनऊ में पढ़ते हैं उन्होंने यह बताया है कि लखनऊ में लड़कों का भोजन लड़कियां तैयार करती हैं और फिर बोर्डिंग में भेज देती हैं। अतः निवेदन है कि यदि हो सके तो आप लोग हमारा भी खाना पकादें क्योंकि मैं भी लखनऊ में एडमीशन कराने जा रहा हूँ।

ग०—बहुत अच्छा है हम जाकर यही कहेंगे और यदि परमेश्वर चाहेंगे तो वह लोग भोजन बनाने को तैयार हो जावेंगी।

त०—जी हाँ, हमको भी अधिक आशा है !

ग०—अच्छा, तनवीर साहब अब तो घड़ी ने साढ़े नौ बजाये·········मुझको वहाँ के लिए अग्रसर होना चाहिए ; इसलिए कि इस समय तो वकील साहब भी कचहरी चले जायेंगे !

इस बातचीत के पश्चात् दोनों ने एक दूसरे को झुककर नमस्कार किया और गनपत रवाना हुआ। तनवीर अपने दालान में टहलने लगा और उसके मुख पर मुस्कान की लहर रह-रहकर दौड़ पड़ती। दिल ही दिल में सोचता तथा प्रसन्न होता कि देखें क्या आनन्द आता है। और आगे की दिलचस्प बातों पर हँसता हुआ सोचने लगा कि सच है लखनऊ के बाहर मूर्खों की अधिक संख्या है और गनपत बेचारा इस प्रसन्नता में कि शीघ्र वकील साहब के घर पर पहुँचे तेजी से डग रखते हुए उधर की ओर चला जा रहा था।

इधर जरा वकील साहब के घर का वृत्तान्त सुनिये। वकील साहब खाना खा-पी रहे थे कि घड़ी ने दस बजाये और उन्होंने खाना खाने की गति तेज करदी और खा-पीकर बाहर आये। टमटम तैयार थी। उस पर बैठे और कचहरी रवाना हो गये। वकील साहब की स्त्री ने सोचा कि अब तो मियाँ कचहरी चले ही गये हैं। चलें हम भी कुछ पुराने कपड़ों की मरम्मत कर डालें। इसलिए वह तो अपने कमरे में जाकर सिलाई और टकाई करने लगीं और उनके साथ वहीं ज़मीन पर घर की दाई-दासियाँ बैठीं बातचीत करने लगीं। दूसरी तरफ वकील साहब की बेटी और भतीजी कमरे में बैठी हुई लखनऊ की स्मृति ताजा करने में लीन हो गईं और वह भी किस तरीके से कि अमुक दिन अमुक लड़के को हम लोगों ने मूर्ख बनाया। अमुक भाषण के अवसर पर हाल में अमुक लड़के के ऊपर जो पानी गिरा तो उस मूर्ख ने चिल्लाकर क्या कहा कि देखो ऊपर बालकनी पर प्रतीत होता है कि लड़कियाँ गड़बड़ी कर रही हैं। इस किस्से की याद आते ही दोनों हँस पड़ीं।

इस प्रकार की घटनाओं पर आलोचना करते-करते अब सिलसिला लखनऊ की प्रदर्शनी पर पहुँच चुका था और अब प्रदर्शनी ही पर वाद-विवाद हो रहा था। कि इधर गनपत साहब दनदनाते हुए वकील साहब के घर पहुँचे और एक नौकर की तरह लड़के से पूछा—"कहो जी, बाँके कहाँ है ?" इस लड़के ने "बाँके !"........"बाँके !" आवाज दी और बाँके आ गया। उसने आते ही पूछा—"कहिए क्या बात है ?"

ग०—हमको श्री रणवीर के पुत्र तनवीर बाबू ने भेजा है। तुम उन्हें जानते हो ?

बाँके—आपका अर्थ मास्टर साहब के पुत्र से है !

ग०—हाँ, हाँ !...............।"

बाँके—जी हाँ, उनको अच्छी तरह जानते हैं। बाबू लखनऊ में पढ़ते हैं न।

ग०—तो देखो उन्होंने हमको भेजा है। जरा वकील साहब की लड़कियों को दरवाजे के पास बुला दो। उन लोगों से उन्होंने एक आवश्यक बात कहने भेजा है। वही बात हम उन लोगों से कहना चाहते हैं।

बा०—बहुत अच्छा अन्दर जाकर कहे देता हूँ।

बाँके ड्योढ़ी पर गया और लड़कियों को दरवाजे पर बुलाकर उसने कहा कि एक श्रीमान् जी आये हैं और वह तुम लोगों को दरवाजे पर बुलाकर कुछ बातें करना चाहते हैं। उन्हें अध्यापक रणवीर के पुत्र श्री तनवीर बाबू ने जो लखनऊ में पढ़ते हैं, भेजा है। खैर, दरवाजे का पल्ला बन्द हुआ और पर्दा पड़ गया। श्री गनपत दरवाजे पर बुलाये गये और फिर वकील साहब की लड़की ने पूछा।

लड़की—कहिए, कैसे कष्ट किया आपने ?

ग०—मास्टर साहब के लड़के तनवीर साहब लखनऊ में पढ़ते हैं न। उन्होंने कहा है कि लखनऊ में लड़कों का खाना लड़कियाँ पकाया करती हैं और आप लोग श्री तनवीर साहब का खाना पकाकर भेजती हैं। मैं भी लखनऊ चल रहा हूँ। निवेदन है कि यदि आप लोग कृपया मेरा भी भोजन तैयार कर दिया करें तो अच्छा हो !

यह सुनना था कि वकील साहब की लड़की ने भतीजी के कान में झुककर धीरे से कहा—"देखो लड़का लखनऊ जाने के पूर्व कितना मूर्ख होता है। इनको लखनऊ वाले ने यहीं से ही मूर्ख बनाना आरम्भ कर दिया तो फिर आखिर ये चौगद हम लोगों से क्यों बचने पायेंगे ? क्यों न हम लोग भी इसको यहीं मूर्ख बनालें ?"

"हाँ, हाँ सिद्धान्त की बात यही है कि इन साहब को यहीं से मूर्ख बनाया जाय·······अवश्य, अवश्य। इनसे कुछ खा-पी लिया जाय··· ········।"

आखिर वकील साहब की लड़की ने कहा—'देखिए, श्री तनवीर को तो जो कुछ हम लोगों ने खिलाया, उन्होंने खूब ही खाया होगा। किन्तु न जाने हम लोगों का पकाया खाना आपको पसन्द आये या नहीं।

ग०—अरे साहब, जो भी मिल जाएगा हम खा लेंगे। परदेश में खाने के लिए कोई क्या शिकायत कर सकता है ? यदि आप कंकड़-पत्थर भी देंगी तो उसको भी हम प्रसन्नतापूर्वक खालेंगे।

लड़की—नहीं, साहब कंकड़-पत्थर खाये आपका दुश्मन। निवेदन यह है कि मालूम नहीं आपके लिए हम लोग कैसा खाना बनायें। और न जाने आप कैसा खाना पसन्द करते हैं। अतः हम लोग यह आवश्यक समझते हैं कि आप यदि सामान मँगवादें तो आपको हम लोग कल ही यहाँ पकाकर खिला दें। यदि आपको हम लोगों का खाना अच्छा लगे तो फिर इसमें हर्ज ही क्या है? लखनऊ में भी हम लोग आपके लिए भोजन तैयार कर दिया करेंगी।

गनपत—बहुत अच्छा, हम अभी जाकर बाँके के साथ रुपया भेजते हैं। परन्तु एक बात यह है कि हम तो यहीं पर कल आकर खालेंगे किन्तु इस खाने में से तनवीर के लिए भी एक खाना भेज दीजिएगा। इसलिए कि उनको इस बात की शिकायत न रहे कि अकेले ही अकेले खा लिया।

लड़कियाँ एक स्वर में बोलीं—"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। ऐसा भी हो जाएगा। श्री तनवीर के घर भी खाना पहुँच जाएगा। इस बात के लिए तनिक भी चिन्ता न कीजिए।"

गनपत अपने घर के लिए प्रसन्नतापूर्वक रवाना हो गया और घर आने पर अपने पिता से कहा—"२० रुपए दे दीजिए!" पिता ने पूछा "क्यों?" गनपत ने कहा—लखनऊ में श्री तनवीर का भोजन श्री रायबहादुर की पुत्री तथा भतीजी पकाती है। उन लोगों ने हमारा खाना पकाने के लिए भी वचन दे दिया है और उसके साथ-साथ यह कहा है कि यदि आप सामान मँगवा दें तो आप यह भी देख लेंगे कि हम लोग कैसा खाना पकाते हैं ताकि बाद में शिकायत न रहे कि लखनऊ में खाने का बड़ा कष्ट होता है।

पिता ने आश्चर्यजनक स्वर से पूछा "वकील साहब की लड़कियों ने खाना पकाने का भी वचन दे दिया है?"

ग०—हाँ, हाँ! कह तो रहे हैं, शीघ्र रुपया दीजिए।

महावीर राम ने रुपया दिया और गनपत रुपया लेकर रवाना हो गया और वकील साहब के घर पहुँचा। बाँके को रुपया दिया और कहा "देखो, जो सामान वह लोग कहें इसी रुपये में ला देना और यदि कम पड़ जाय तो हम से

ग्रोर ले लेना। बाँके ने कहा "बहुत ग्रच्छा। हम उन लोगों को रुपया दे देते हैं।"

रुपया देने के पश्चात् श्री गनपत घर ग्राये ग्रौर उनको कुछ हार्दिक शान्ति हुई।

दूसरा दिन ग्राया ग्रौर श्री गनपत साहब खाना खाने की तैयारी में बहुत प्रसन्न ग्रौर लीन दिखाई दे रहे थे। उधर रुपया पहुँच जाने के पश्चात् लड़कियाँ भी ग्रत्यन्त प्रसन्न थीं कि चलो तनवीर ने भी इसको उल्लू बनाया ग्रौर हम लोगों ने भी इसको उल्लू बनाया। ग्रच्छा ही हुग्रा बाबू साहब रुपया भी दे गये।

झटपट लड़कियों ने बाँके को वस्तुएँ लाने की ग्राज्ञा दी। इतने का चावल ग्रौर इतने का घी लाना तथा इतने की ग्रमुक वस्तु लाना ग्रादि। ग्रौर भिन्न-भिन्न भोजन तैयार करने का प्रोग्राम बन गया। सबसे बड़ी खुशी की बात यह थी कि लखनऊ में नये ग्राने वाले लड़कों से श्री गणेश होते ही भोग मिल गया। सब वस्तुएँ ग्रा गईं। ग्रौर लड़कियों ने वकील साहब से छिपाकर सारे प्रबंध कर लिए ग्रौर भोजन पकाना ग्रारम्भ हो गया। लड़कियों की माता ने जब देखा कि लड़कियाँ न जाने धकाधक ग्राज भोजन ग्रादि बनाने में क्यों लीन हैं ग्रौर भोजन भी साधारण नहीं, कचौड़ी ग्रौर मोहनभोग के नीचे बात नहीं है तो ग्रन्त में माता जी ने लड़कियों से यह प्रश्न किया कि "किस खुशी में ग्राज यह भोजन तैयार किया जा रहा है। क्यों? क्या बात है? कहाँ से ये सब सामान मँगाया ग्रौर कौन इसे खाएगा?"

यह सुनना था कि लड़कियों ने प्रार्थना के स्वर में कहा कि हम लोग जब लखनऊ में थे तो हम लोगों के कक्षा की एक साथी लड़की के साथ बड़ी मित्रता थी। उसका नाम किशोरी दत्त है ग्रौर उसने कई बार हम लोगों को भोजन भी कराया है। ग्राज उसका भाई लखनऊ से ग्रपने किसी काम से ग़ाज़ीपुर ग्राया हुग्रा है। ग्रतः हम लोगों ने उसको ग्रपने घर ही खाना खाने के लिए बुलवा लिया है।

माता ने कहा "जब ऐसी ही बात थी तो वकील साहब ही से क्यों न कह दिया। वह भली-भाँति उसको ग्रपने साथ खिला देते।"

लड़कियों ने कहा "हम लोगों ने सोचा कि क्या ज़रूरत कि पिता जी को कष्ट दिया जाय। इसलिए कि पिता जी तो दस बजे ही भोजन करके कचहरी चले जायेंगे और वह लड़का तो बारह बजे भोजन करने का आदी है। इसलिए ज्यादा अच्छा है कि उसको बुलवा कर खाना खिला दिया जाय। यही बहाना बना कर लड़कियों ने वकील साहब की स्त्री को भी चकमा दिया और बड़ी धूम से खाना पकने लगा।

अब दिन के लगभग साढ़े ग्यारह बजे हैं। और लड़कियों ने भोजन आदि भी तैयार कर लिया है। गनपत साहब भी अपने घर से रवाना हो चुके हैं। मार्ग तेज़ी से समाप्त करते हुए गए। इसलिए कि सैयदबाड़ा मुहल्ला उसके घर से काफी दूर है और गर्मी सख्त पड़ रही है। चलते-चलते गनपत वकील साहब के घर पहुँच ही गया और बाँके ने लड़कियों की आज्ञानुसार उसका स्वागत किया और कमरे में ले जाकर एक कुर्सी पर बैठा दिया, पंखा झलने लगा और इसी समय अन्दर लड़कियों के पास जाकर कहलवा दिया कि गनपत बाबू आ गए हैं।

दाई ने लड़कियों से जाकर कहा कि गनपत आ गए हैं तो लड़कियों ने दिल में विचार किया कि लो शिकार आ ही गया। बहरहाल शीघ्र ही भोजन एक सेनी में सजाया गया और सब प्लेटें लगने के पश्चात् भोजन लाकर एक कमरे में रखा गया। उस पर चादर बिछी और फिर खाना चुना गया और दाई को आज्ञा हुई कि पंखा लेकर आ जाय। दाई आकर खड़ी हो गई और उसने बाँके से कह दिया कि अतिथि को इस कमरे में ले जाओ। खाना चुन दिया गया है। चुनांचे गनपत साहब उठे और चौकी पर आकर बैठ गए। लड़कियों ने कहलवा दिया कि श्री गणेश कीजिए। तो गनपत ने भोजन करना आरम्भ कर दिया।

दूसरी ओर दरवाज़े का पल्ला बन्द और पर्दा डाल कर लड़कियाँ खड़ी मुस्करा रही थीं और पुलकित हो रही थीं कि आज एक मूर्ख से हमने डिनर खा ही लिया। संक्षेप में यह है कि श्री गनपत ने भोजन किया तथा बहुत प्रशंसा की। और धन्यवाद देने के पश्चात् कहा "आप लोगों ने भोजन बहुत स्वादिष्ट बनाया है।" और उनके इस वाक्य पर लड़कियों ने जान करके अनजान बनकर कहा "हम लोग क्या पका सकते हैं। बस कुछ लोगों का हम लोग

खाना पका दिया करते हैं।" इस बात-चीत के तुरन्त ही बाद श्री गनपत ने कहा कि तनवीर बाबू के यहाँ आप लोगों ने भेज दिया अथवा नहीं ? लड़कियों ने कहा "लगभग इस समय एक बज रहा है अभी भेजे देते हैं आप बिलकुल निश्चिन्त रहिए उनके पास भोजन अवश्य पहुँच जायगा।" और अब श्री गनपत साहब नमस्ते करके, इस बात का वचन लेकर कि लखनऊ में भी ये ही लड़कियाँ उनका खाना पका देंगी, घर पहुँचे और अपने पिता महावीर राम को यह रिपोर्ट दी कि वकील साहब की लड़कियाँ बहुत स्वादिष्ट भोजन तैयार करती हैं और उन लोगों ने पूरा-पूरा वचन दिया है कि लखनऊ में भी हमारा भोजन तैयार कर देंगी।

यह सुनकर महावीर राम को भी कुछ सन्तोष हुआ। किन्तु उनके दिल में यह ख्याल आया कि लड़के के खाने का उचित प्रबन्ध तो हो गया। लेकिन यह बात तो अभी लड़के और लड़कियों के ही बीच पक्की हुई है। क्यों न मैं भी वकील साहब से मिलकर इस बात को और भी उचित ढंग से तै कर लूँ और उनसे कह दूँ कि ज़रा अपनी लड़कियों से कह दीजिएगा कि मेरे लड़के के खाने का ख्याल रखेंगी। यही ख्याल महावीर राम के हृदय में बार-बार आता गया। उन्होंने सोचा कि ऐसा कर देना बिलकुल ठीक होगा। अतः उन्होंने तै किया कि आज ही संध्या को यदि अवसर मिलेगा तो वकील साहब से भेंट करेंगे।

———

अध्याय तीसरा

दो लफ्ज़ों में पोशीदा कुल मेरी कहानी है !
एक लफ्ज़ मुहब्बत है एक लफ्ज़ जवानी है !!

जब गनपत भोजन करके चला गया तो अब लड़कियों ने स्वयं भोजन करना आरम्भ कर दिया। दोनों खाना खाती जाती थीं और कहती जाती थीं कि अच्छा मूर्ख बनाया गया। वह भी क्या याद करेगा किसी लखनऊ वाले से पाला पड़ा था। बहरहाल भोजन करने के पश्चात् फौरन खाना नाश्तेदान में रखकर बांके को बुलाया और आज्ञा दी कि इस खाने को मास्टर साहब के लड़के तनवीर को दे आए। इस बात की भी हिदायत करदी कि यह खाना तनवीर ही के लिए जा रहा है। इसके पश्चात् बांके ने नाश्तेदान लिया और चिश्तीपुरे की ओर अग्रसर हुआ।

इधर तनवीर बाबू जो प्रातःकाल घूमने के लिए निकले तो अभी तक नहीं आये। यद्यपि घड़ी अब डेढ़ बजा रही है फिर भी माता-पिता दोनों इस प्रतीक्षा में हैं कि बेटा आ जाय तो उसके साथ भोजन किया जाय और इधर बेटाजी बैठे हुए गप्पें मार रहे हैं तथा गप के सिलसिले में उनको खाने की कुछ सुध-बुध ही नहीं है। इनको इस बात का बिल्कुल ही ख्याल नहीं है कि उनके

घर पर प्रतीक्षा हो रही होगी और अजब इत्तफाक कि बांकेलाल इसी समय नाश्तेदान में खाना लेकर आते हैं जबकि तनवीर घर से गायब है। ज्योंही बांके ने प्रवेश किया त्योंही वह बुद्धू को ढूँढ़ने लगा परन्तु बुद्धू भी नहीं था। इसलिए उसने स्वयं ही आकर ड्योढ़ी पर आवाज दी। जब घर में आवाज पहुँची तो कल्लू की माँ बाहर निकल कर आई और पूछने लगी "क्या बात है?" बांके ने कहा "यदि तनवीर बाबू घर में हों तो भेज दो।" दाई ने कहा "वह नहीं हैं।" बांके ने कहा "वह नहीं हैं तो इस नाश्तेदान को घर में दे दो।" दाई ने नाश्तेदान को लिया और तनवीर की माताजी को घर में ले जाकर दे दिया। तनवीर की माँ इस समय पान लगा रही थीं। उन्होंने कल्लू की माँ से कहा "पूछो, कहाँ से आया है और किसने दिया है?" तनवीर के पिताजी चारपाई पर लेटे पुस्तक देख रहे थे। उन्होंने पुस्तक का देखना बन्द किया और लगे अपनी स्त्री से पूछने "यह कैसा नाश्तेदान है और कहाँ से आया है?" दाई बाहर आई और आकर बांके से पूछा। बांके इतने जोरों से दाई से बातें करने लगा कि अन्दर मास्टर रणवीर तथा उनकी स्त्री दोनों बांके की कही बातें सुनने लगे।

दाई—तुम कहाँ से आ रहे हो?

बांके—मैं रायबहादुर साहब के घर से आ रहा हूँ।

दा०—यह भोजन किसने भेजा है?

बां०—यह खाना रायबहादुर साहब की लड़कियों ने तनवीर बाबू के लिए भेजा है।

दा०—तो आखिर वह भोजन किस बात का है? कोई सगाई अथवा कथा।

बां०—नहीं भाई.........तुम समझती ही नहीं हो। लड़कियों ने बाबू के लिए वह भोजन भेजा है और कहा है कि केवल उन्हीं के हाथ में यह खाना पकड़ाना। ये सब बातें दाई पूछ कर अन्दर आई और जो कुछ सुना था बताया। यह सुनना था कि तनवीर की माताजी सोचने लगीं कि रायबहादुर साहब के घर से न तो हमारे कोई सगाई ही है और न हमने कभी उनको

लड़कियों को ही देखा है। यदि भोजन आना ही था तो उनकी स्त्री की ओर से आना चाहिए था। लड़कियों की ओर से आने का क्या अर्थ है? इन सब बातों को सोचते हुए तनवीर की माताजी ने कहा, "पूछो तो आखिर लड़कियों ने उनके लिए खाना क्यों भेजा है?"

दाई ने बाहर जाकर बाँके से पूछा—"यह बताओ कि लड़कियों ने आखिर बाबू के लिए खाना क्यों भेजा है?"

बाँके—(चिड़चिड़ाकर) अरे भाई, तुम तो मेरा सिर ही खाने लगीं। वकील साहब की बिटिया लोग लखनऊ में पढ़ती हैं और बाबू भी लखनऊ में पढ़ते हैं। इसलिए इनके लिए भेजा है और क्या बात हो सकती है?

दाई ने बाँके के यही वाक्य तनवीर की माँ से कह दिये। तनवीर के पिता चौंक पड़े और कहने लगे कि "जब ग़ाज़ीपुर में इनको यह लड़कियाँ खाना भेजती हैं तो लखनऊ में न जाने क्या-क्या देती होंगी?"

तनवीर के पिता तथा माता एक दूसरे का मुँह ताकने लगे और अन्त में नाश्तेदान खाली करके बाँके को दिया गया और वह रवाना हो गया। इधर तनवीर के माता-पिता भाँति-भाँति के सोच-विचार में तल्लीन हो गये........।

........लड़का जवान है............।

........कहीं आवारा न हो जाय............।

........जब यहाँ भोजन आता है तो लखनऊ में न जाने............

........परिवार का नाम अवश्य बदनाम............।

........दो-दो बजे दिन तक गायब रहता है............।

........न जाने कहाँ घूमता है...............।

........आने दो खबर ली जाती है...............।

तनवीर के पुराने विचार के घर में इस भोजन के आने से अच्छी खासी सनसनी फैल गई और एक विचित्र प्रकार की दशा घर की हो गई। तनवीर की भावज भी कुछ की कुछ विचार करने लगीं।

गर्मी अत्यन्त तेज पड़ रही थी। सूर्य नारायण अपनी अधिक चमक के साथ ठीक सिर पर थे। दोपहर सचमुच दोपहर बनी हुई थी। घड़ी भी अब

ढाई बजा रही थी कि तनवीर साहब इस कड़ी धूप में गपबाजी करने के पश्चात् घर के लिए रवाना हुए और ज्योंही घर पहुँचकर पहला कदम घर के अन्दर रखा, उनको घर की दशा में असाधारण परिवर्तन दिखाई पड़ा जिसको उन्होंने भी अनुभव किया। आकर तुरन्त चारपाई पर पंखे के नीचे लेट गया और पसीना आदि पोंछने लगा। लड़के से बोला—"पंखा जरा जोर से खींच ताकि पसीना सूख जाय।" इस तरह से दस-पाँच मिनट विश्राम करने के बाद फिर पूछा—"क्या पिताजी ने खाना खा लिया ?" कोई उत्तर नहीं मिला। केवल छोटी बहन कमला ने धीरे से उत्तर दिया—"नहीं, अभी नहीं खाया है।" "तो फिर खाना मँगवाओ। बड़े जोर की भूख लगी है। पिताजी ने झूठे ही इतनी प्रतीक्षा की।" यह कहते हुए तनवीर खड़ा हो गया। तनवीर के पिता से आखिर न रहा गया और उन्होंने एक बड़े ही मरे स्वर में पूछा—"तनवीर तुम्हें हो क्या गया है ? सदा इधर-उधर घूमा करते हो। दिन भर-रात भर कहाँ रहते हो ? कब आते हो कब जाते हो ? कौनसे मित्र हैं जिनके पास आते-जाते हो और कौन से मित्र हैं जिनके यहाँ जाये बगैर नहीं रह सकते ? इस आवारागी को कोई पसन्द करता है ? हमारे भी मित्र हैं परन्तु हम तो किसी के पास इतना नहीं जाते जितना तुम जाते हो। हम भी तो सुनें आखिर तुमने क्या सोच रक्खा है ? जब से तुम लखनऊ से आये हो तुम्हारा कार्य केवल यह है कि तुम कुछ घण्टे तो घर पर रहते हो और हर समय इधर-उधर बाहर घूमते हो।"

तनवीर थोड़ी देर तक तो इस बात पर सोचता रहा कि पिता ने यह असाधारण बातें कैसे कहीं। या तो वह हम से बातचीत ही बहुत कम करते थे या आज बातचीत की तो बिल्कुल एटम बम ही बरसा दिया। आखिर बात क्या है ? इस प्रकार के विचार तनवीर के दिमाग में घूमने लगे और उसका मुख पिता के इस अचानक परिवर्तन के कारण बिलकुल लाल होकर तमतमाने लगा और कुछ खींचातानी में हो गया कि क्या उत्तर दें। अन्त में उसने मौन धारण कर लिया।

पिता—आखिर बात क्या है कहाँ घूमते फिरते हो ?

तनवीर—क्या बताएँ हम तो कहीं नहीं जाते, केवल कुछ खास मित्रों के पास बैठते हैं।

पिता—बैठने का यह अर्थ नहीं होता कि तुम सारे का सारा दिन बेकार कर दो या कभी घर वालों को अपना मुख न दिखाओ.......... क्यों क्या इसका यही अर्थ है ?

त०—जो नहीं।...........

पि०—तो फिर इसका क्या अर्थ है ?

तनवीर घबरा गया कि क्या बात है। घर में इतना परिवर्तन कैसे हुआ। माता की ओर देखता तो उनकी भी आँखों में आज बहुत परिवर्तन मालूम होता था। उसकी समझ में नहीं आता कि क्या करे। माता से भी न रहा गया अतः उन्होंने भी पूछना आरम्भ कर दिया।

माँ—तुम रायबहादुर साहब के यहाँ भी जाते हो...........?

कौन रायबहादुर साहब—तनवीर ने पूछा

माँ—वाह, तुम तो ऐसा पूछ रहे हो कि जैसे कुछ जानते ही नहीं हो। मेरा अर्थ रायबहादुर श्री मोहनलाल वकील से है.......

त०—नहीं तो मैं उनके यहाँ कभी नहीं गया.........

माँ०—तुमने उनकी लड़कियों को कभी देखा है ?

त०—जी नहीं।

माँ—जानते हो ?

त०—जी नहीं।

माँ०—अच्छा, बिलकुल नहीं जानते ?

त०—जी नहीं ! बिलकुल नहीं जानते। मुझे उन लोगों से क्या मतलब ?

माँ०—तुम जानते हो वे लड़कियाँ लखनऊ में पढ़ती हैं ?

त०—मुझे क्या मतलब कि वे लड़कियाँ लखनऊ में पढ़ती हैं।

तनवीर की बातों से माता-पिता दोनों को यह मालूम हो गया कि दाल में काला अवश्य है क्योंकि पुत्र माता से सब कुछ छिपा रहा था। इस कारण से माता-पिता दोनों ने समझ लिया कि पुत्र हाथ से निकल रहा है।

माँ—तनवीर यदि तुम नहीं जानते कि श्री रायबहादुर की लड़कियाँ कौन हैं, कहाँ रहती हैं, तो उन्होंने तुम्हारे लिए खाना क्यों भेजा है ? जबकि उनके घर न कोई दावत है और न हमसे कोई सम्बन्ध है।

तनवीर—माता जी आप कमाल करती हैं। हमारे लिए कोई लड़की क्यों खाना भेजेगी ?

माँ—(खाने की ओर संकेत करते हुए) यह भोजन जो रखा हुआ है।

त०—यह खाना कहाँ से आया ?

माँ—श्री रायबहादुर की लड़कियों ने तुम्हारे लिए भेजा है !!!

यह सुनना था कि तनवीर भी चक्कर में पड़ गया। उसकी समझ में न आया कि अब क्या कहे, और क्या बात है ? यह भी उसकी समझ में न आता था। अतः वह चुप हो गया। उसका मौन धारण करना था कि माता-पिता दोनों ने उसकी अच्छी खासी ले-दे मचाई। पिता ने सूचना दे दी कि मैं तुमसे न बोलूँगा। माता ने भी स्पष्ट रूप से कह दिया कि अब तुम उसी के दरवाजे पर जाकर रहो। खबरदार, जो घर में पैर भी रक्खा। मैं तुम्हारा मुँह भी नहीं देखूँगी। तुम बहुत ही आवारा तथा दुष्ट हो गए हो।

तनवीर ने शीघ्रता से खाना खाया तथा इस खींचातानी के कारण उसने बहुत ही कम खाया और कमरे में जाकर चारपाई पर पड़ गया। उसका मस्तिष्क इस समय काफी चक्कर में पड़ा हुआ था कि आखिर बात क्या है।

(या इलाही ये माजरा क्या है !)

इन्हीं सब बातों पर सोचते २ वह सो गया और उसके मौन होने से माता-पिता को पूरा विश्वास हो गया। इस लड़के ने दुष्टता को जगह देना आरम्भ कर दिया। परमात्मा ही रक्षक है अब परिवार के सम्मान तथा नाम का। जिस परिवार पर कोई अंगुली नहीं उठा सका उस पर यह लड़का बट्टा लगा कर रहेगा। देखिये क्या होता है।

जब होते-होते चार बजने को आए तो गनपत के पिता महावीर राम को ख्याल आया कि आज उनको श्री रायबहादुर साहब के पास मिलने जाना है।

अतः तैयारी करने लगे और वस्त्र पहन कर बिलकुल तैयार हो गए और साढ़े चार बजते-बजते वह अपने घर से रवाना हो गए। रायबहादुर साहब का मुहल्ला चूँकि उनके घर से काफी दूर था अतः चलते-चलते देर हो गई और लगभग सवा पाँच बजे श्री रायबहादुर साहब के घर पहुँच गए। ज्योंही दरवाज़े पर पहुँचे होंगे बाँके ने सलामी दागी। महावीर राम ने बाँके से पूछा–"वकील साहब आ गये ? बाँके ने उत्तर दिया–"जी हाँ अभी-अभी कचहरी से आये हैं और इस समय घर में गए हैं।" उन्होंने बाँके से कहा—"ज़रा सूचित कर दो कि महावीर राम आए हैं।" आज्ञानुसार बाँके ने सूचित कर दिया। वकील साहब ने कहला दिया—"कह दो, आते हैं। ज़रा हाथ धो रहे हैं।" महावीर राम सामने 'सहन' में बैठ गए। थोड़ी देर के पश्चात् वकील साहब घर से निकले। महावीर राम को देखते ही साष्टांग प्रणाम हुआ। वकील साहब भी अपनी आराम कुर्सी पर बैठ गए। नौकर ने हुक्का लाकर रक्खा और थोड़ी देर बाद बाँके ने पान आदि रखा। वकील साहब ने पान महावीर राम की ओर बढ़ाया। उन्होंने पान व तम्बाकू लिया और खाया और फिर बातचीत प्रारम्भ हुई।

वकील—कहो जी महावीर राम कैसे भूल पड़े आज ? तुम्हारी तो कभी सूरत भी नहीं दिखाई देती। आखिर आजकल कहाँ रहते हो ?

महावीर राम—क्या कहें वकील साहब आजकल तो दुनियाँ विपत्ति में है। हम भी इसी दुनियाँ में रहते हैं। आखिर इस संकट से कैसे बचें। इधर हमारे घर में ज्वर से पीड़ित है। खैर परमेश्वर की दया है कि अब सब कुशल मंगल से हैं।

व०—हाँ भाई परमेश्वर की कृपा है जिस दशा में रहें बस उसी की दया है।

महा०—(दबे स्वर में) जी हाँ।............

व०—कहो आखिर कैसे चले।............

महा०—क्या बताएँ वकील साहब हमारे लड़के ने इस साल एफ० ए० बलिया से पास किया है। अब चाहता हूँ उसको लखनऊ भेज दें परन्तु साहब वहाँ खाने का प्रबन्ध कहने योग्य नहीं।

वकील—हाँ भाई इसमें कोई शंका नहीं। वहाँ भोजन का प्रबन्ध कुछ अजीब सा है। बहुत कष्ट उठाना पड़ता है लड़कों को।

महावीर राम—जी हाँ, इसीलिए तो उपस्थित हुआ हूँ कि यदि आप थोड़ी सी दया करदें तो आपकी बहुत कृपा होगी।

व०—वह क्या है?

महा०—सुना है आपकी लड़की और भतीजी वहीं पढ़ती हैं।

व०—हाँ, हाँ पढ़ती तो हैं।

महा०—और यह भी सुना है कि यह दोनों लड़कियाँ मास्टर रणवीर के पुत्र का भोजन तैयार करती हैं। यदि आप आज्ञा दें और लड़कियों से कह देते तो इसमें बात ही क्या थी हमारे पुत्र का भोजन भी यही लोग तैयार कर दें।

व०—(कुछ क्रोधित होकर) महावीर राम हमने अपनी लड़कियों को लखनऊ पढ़ने के लिए भेजा है न कि खाना पकाने के लिए।............

महा०—नहीं साहब, हमें तो मास्टर साहब के पुत्र ही ने बताया कि उनका खाना यही दो लड़कियाँ पकाती हैं।

व०—(बिगड़ कर) कौन कहता है? कहने वाला झूँठा है। ऐसा कहने वाले का मैं सिर तोड़ दूँगा।

महा०—वकील साहब ये सही बातें हैं। यदि आप नहीं विश्वास करें तो चलकर पूछ लीजिए............ताकि आपका नाम न हँसा जाय।

बस यह सुनना था कि वकील साहब को क्रोध आगया। तुरन्त उन्होंने टमटम के लिए आज्ञा दी। टमटम आई। इस पर स्वयं बैठे और महावीर राम के सहित मास्टर रणवीर साहब के घर पहुँचे क्योंकि वकील साहब को तो पूरा विश्वास था कि ऐसा तो हो ही नहीं सकता। अच्छा है कि यह बात महावीर राम के सामने ही स्पष्ट हो जाय तथा ग़ाज़ीपुर जैसे छोटे शहर में कोई उसकी बुराई न फैलने पाये। मकान पर मास्टर साहब का नोकर बुद्धू मिला। उससे कहा गया कि मास्टर साहब को बुला दो। रायबहादुर साहब मिलने आये हैं। चूँकि संध्या की पूजा का समय हो रहा था मास्टर साहब बिचारे सीधे-साधे

मनुष्य अब पूजा का सामान करने की तैयारी में लगे हुए थे कि बुद्धू ने आवाज दी कि वकील साहब मिलने आये हैं। श्री रायबहादुर का नाम सुनना था कि मास्टर साहब का माथा ठनका। उन्होंने अपनी स्त्री से कहा--"ईश्वर दया करें, आये परिवार पर लांछन।"

श्री रायबहादुर का मुख बिल्कुल लाल हो गया। महावीर शक में पड़ गया। मास्टर साहब निकले और दरवाजे पर आये और उन दोनों के मुख की दशा को देखा तो उनकी विचित्र दशा हो रही थी। मास्टर साहब आए, साष्टांग प्रणाम हुआ। बैठते ही वकील साहब ने पूछा—"क्यों साहब इस समय आपके पुत्र साहब कहाँ हैं ?"

रणवीर—मालूम नहीं.......इस समय वह कहाँ है ? तीन बजे घर से निकला है और अभी तक दिखाई नहीं दिया।

वकील—मैं यह पूछता हूँ कि कहाँ मेरी लड़कियाँ आपके लड़के का भोजन तैयार करती है ?

र०—(दबे स्वर में) लड़के की दुष्टता मुझे स्वयं ही मालूम है। आज ही आपकी लड़कियों ने उसके लिए पूड़ी, तरकारी आदि भेजी है।

यहाँ पर यह बात भी कहने योग्य है कि वकील साहब ने लखनऊ के खाने के बारे में पूछा था और मास्टर साहब ने जो कि भोजन आज पककर आया था उसके बारे में समझा। इस कारण उन दोनों के बीच एक बहुत बड़ी गलती पैदा हो गई जिसका परिणाम यह हुआ कि वकील साहब क्रोधित हो गये और बाहर आकर टमटम पर बैठ गये। जब वकील साहब टमटम पर बैठ रहे थे तब महावीर राम ने कहा—"देखिए वकील साहब मैं सही कह रहा था कि नहीं।" महावीर राम के इस वाक्य से वकील साहब का क्रोध हृदय के अन्दर और भी बढ़ गया। इसके बाद महावीर राम ने कहा—"मुझे काम से जाना है। अब मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं रवाना हो जाऊँ।" वकील साहब बिलकुल चुप रहे और टमटम पर बैठते रहे। महावीर राम अपने घर की ओर तथा वकील साहब टमटम पर अपने मुहल्ले की ओर अग्रसर हुए। यद्यपि टमटम तेजी से चल रही थी तथापि रायबहादुर साहब का मुख बिलकुल उसी

भाँति लाल था जैसा कि पहले था। भाँति-भाँति को विचारधारा उनके मस्तिष्क में आ रही थी। कभी कुछ सोचते थे कभी कुछ। एक विचित्र प्रकार की उलझन ने उनके मस्तिष्क में जन्म ले लिया। कभी सोचते थे कि न जाने किस-किस हद तक यह बात पहुँची होगी। न मालूम कहाँ-कहाँ तक यह किस्सा पहुँचेगा।

आखिर लड़कियों ने परिवार के नाम को उथल-पुथल कर दिया। हमारे नाम पर लोग हँसते होंगे। हमारे सम्मान की लोग हँसी उड़ाते होंगे। क्या-क्या किस्सा विख्यात होता होगा......लड़कियाँ आवारा हो गई हैं.......... परिवार की सब महिलायें ऐसी ही होंगी..........न मालूम ग़ाज़ीपुर के इस छोटे से नगर में क्या-क्या दास्तान फैली होंगी..........सम्बन्धी लोग क्या समझते होंगे..........लड़कियों का एक दूसरे लड़के से मेल-जोल......भोजन पकाना..........इसका केवल एक उपाय है..........लड़कियों को गोली मार दो..........। यही सब विचारधारायें उनके मस्तिष्क में आ रही थीं कि इतने में टमटम घर पर पहुँच गई। रायबहादुर साहब उतरे और सीधे घर में गये और जाते ही अपनी स्त्री को पुकारा।

रायबहादुर—(जोर की आवाज़ से) सुनती हो।

स्त्री—(त्योरी का बल देखकर धीरे से) कहिए क्या बात है ?

राय०—बन्दूक लाओ।

स्त्री—ख़ैरियत तो है, क्या बात है ?

राय०—(जोर से) मैं कहता हूँ बन्दूक लाओ।

स्त्री—बात भी तो बताइये क्या है ?..........

राय०—(और जोर के स्वर में) मैं कहता हूँ बन्दूक लाओ.......।

स्त्री—बन्दूक तो लाती हूँ आखिर बताइए भी तो कि इस समय बन्दूक की क्या जरूरत है ?

राय०—आज मैं उन दोनों लड़कियों को मृत्यु के घाट उतार दूँगा....... तो दम लूँगा।

स्त्री—क्यों ?..........

रायबहादुर—मैं कहता हूँ बन्दूक लाओ। वाद-विवाद न करो नहीं तो मैं तुमको भी गोली मार दूँगा। पति का इतना क्रोध देखकर डर से स्त्री ने शीघ्र ही बन्दूक लाकर दे दी। बन्दूक पाते ही रायबहादुर साहब ने पूछा—"लड़कियाँ कहाँ हैं ?"

स्त्री—वह सब उमेश बाबू (रायबहादुर के पुराने मित्र) के घर गई है। उनकी स्त्री कई दिन से बीमार है।

राय०—(बिगड़ कर) बिना मेरी आज्ञा के क्यों गईं ? नौकर को भेजो कि तुरन्त जाकर बुला लाये।

स्त्री—"अभी दाई भेजती हूँ"—यह कहते हुए स्त्री ने पतिया को पुकारा और आँखों के इशारे से कहा—"जा तुरन्त लड़कियों को बुला ला।" पतिया नेत्रों का संकेत समझ गई और ड्योढ़ी की ओर जाकर एक कमरे में छिप गई और जब अवसर मिला तो स्त्री ने धीरे से कमरे में जाकर पतिया से कहा—"देख खबरदार बुलाना मत और जाकर लड़कियों से कह देना कि खबरदार आज मत आना क्योंकि वकील साहब बन्दूक लिए हुए उन लोगों को गोली मारने के लिए खड़े हुए हैं और देख शीघ्रता से अपने साथ उमेश को भी बुलाती लाना कि छिपे तौर से हमसे मिल ले। ऐसे मिले कि रायबहादुर साहब को मालूम न हो वरना बड़ी गड़बड़ी होगी।"

यह सब बातें सुनकर पतिया झटपट चली गई और रायबहादुर के मित्र उमेश बाबू के घर पर पहुँची और अन्दर सहन में पहुँचते ही चिल्लाई—"अरे बड़ा गजब हो गया।" यह सुनना था कि लड़कियाँ और जितनी महिलाएँ वहाँ पर बैठी थीं सब चौंक पड़ीं और सब कहने लगीं—"क्या बात है ? शीघ्र बता.................।

पतिया—बात क्या है ? वकील साहब बन्दूक लिए हुए आँगन में टहल रहे हैं और कह रहे हैं कि लड़कियों को शीघ्र बुला लाओ सभी को गोली मार दूँगा। यह सुनना था कि लड़कियों का कलेजा धक से हो गया और खून सूख गया। श्रीमती जी ने कहा है कि उमेश बाबू को शीघ्र ही हमारे पास इस प्रकार भेजो कि वकील साहब न जानें। इन बातों का सुनना था कि श्रीमती उमेश

की सारी बीमारी दूर हो गई और महिलाओं में एक अच्छी खासी सनसनी मच गई। श्रीमती जी ने शीघ्रता से उमेश बाबू को बुलाया और कहा कि आप तुरन्त भाई साहब के घर जाइए। न मालूम क्या बात है। स्त्री की यह घबराहट और बात सुनकर उमेश बाबू भी व्याकुल हो गये और तुरन्त वस्त्र आदि धारण कर वकील साहब के घर की ओर रवाना हो गए। इधर लड़कियाँ बेचारी सहमी खड़ी थीं। उधर श्रीमती उमेश अलग खेद तथा घबहराहट की दशा में उठ बैठी थीं और उनकी श्वाँस अत्यन्त तीव्र गति से चल रही थी। पतिया अलग चुप बैठी थी। दूसरी महिलाएँ भी चुप बैठी हुई थीं। लालटेन जो कि तेज़ जल रही थी फिर भी हर एक को अँधेरा ही अँधेरा प्रतीत हो रहा था। वहाँ पर जितने थे सब भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। इसलिए कि रायबहादुर साहब के क्रोध को सब ही लगभग जानते थे क्योंकि उनका क्रोध सदा कुछ न कुछ बुरा ही परिणाम दिखाता है।

ग़ाज़ीपुर का छोटा सा व्यापार जगमगा रहा था किन्तु उमेश बाबू तेज़ी से पग आगे बढ़ाते हुए व्याकुल चले जा रहे थे। न किसी की तरफ देखते हैं और न किसी की सुनते हैं और पग है कि एक के बाद एक पड़ता जा रहा है। आखिर किसी तरह वकील साहब के घर पर पहुँच गए।

पहले तो फाटक में उन्होंने धीरे-धीरे प्रवेश किया और शान्ति के साथ बाँके को खोजने लगे। बाहर बाँके मिल गये। उसको किनारे ले जाकर कहा कि किसी प्रकार तुम स्त्री को ऐसे सूचित करा दो कि वकील साहब को पता भी न चले और उनको मालूम भी हो जाय कि मैं आया हूँ।

बाँके ने कहा—"बहुत अच्छा है।" यह कहते ही हुए बाँके अन्दर की ड्योढ़ी पर चला गया और जाकर दाई के लड़के को धीरे से बुलाया और कहा कि देखो जाकर वकील साहब की बीबी से कह दो कि उमेश बाबू आये हैं। उनसे मिलना चाहते हैं। देख, खबरदार वकील साहब को मालूम न होने पाये। लड़का शीघ्रता से अन्दर गया और बीबी जी से, जो कि इस समय वकील साहब के सामने बिल्कुल चुप खड़ी थीं और वकील साहब उसी भाँति बन्दूक लिये खड़े थे तथा टहल रहे थे, कहा कि बीबी जी उस कमरे में, जिसमें आज प्रातःकाल आपने वस्त्र रखे थे,

चलकर देख लीजिए ताकि हम धोबी को कपड़े दे आयें। बीबी जी धीरे धीरे कमरे में गईं और पीछे-पीछे लड़का भी गया और उसने धीरे से कहा कि उमेश बाबू आ गये हैं। आपसे मिलना चाहते हैं।

यह सुनना था कि श्रीमती जी ने लड़के से कहा कि जा उमेश बाबू को धीरे से वह जो सबसे किनारे वाला कमरा है उसमें चुपचाप बुलाला। लड़का बाहर जल्दी से गया और उमेश बाबू उस कमरे में धीरे-धीरे पीछे के दरवाजे से पहुँच गए तथा थोड़ी देर के पश्चात् श्रीमती जी भी कमरे में पहुँच गईं।

श्रीमती जी—बड़ी कृपा हुई कि आप आगए।…………

उमेश—क्या बात है ?…………

श्रीमती जी–बात तो अभी तक मालूम नहीं क्या है, किन्तु आपके मित्र अभी तक बन्दूक लिए टहल रहे हैं और कह रहे हैं कि आज लड़कियों के गोली मार देंगे। ईश्वर दया करे न जाने क्या होने वाला है। उनका क्रोध तो आप जानते ही हैं। आप किसी प्रकार उनसे बन्दूक ले लीजिए। नहीं तो विश्वास कीजिए यदि लड़कियां न आईं तो बन्दूक का निशाना हमीं को बना देंगे।

उ०—नहीं, ईश्वर न करे। ऐसा क्यों होने लगा ? अच्छा देखिए हम उधर से आते हैं। सब काम ईश्वर चाहेंगे तो ठीक हो जायगा।

यह कहकर उमेश बाबू बाहर निकले और घूमकर ड्योढ़ी की ओर चल दिए तथा उधर श्रीमती जी झट सहन में आकर खड़ी हो गईं।

थोड़ी देर बाद ड्योढ़ी में किसी के आने की आवाज आई और फिर थोड़ी देर के पश्चात् उमेश ने घर में प्रवेश किया।

उ०—नमस्ते जी।

रायबहादुर—नमस्ते भाई।

उ०—(धर्मपत्नी की ओर झुक कर) प्रणाम।

धर्मपत्नी—प्रणाम।

उ०—(रायबहादुर से) कहिये सब कुशल मंगल है न।

राय०—हां सब कुशल मंगल है। लड़कियां आ रही हैं या नहीं ?

उमेश—(आश्चर्य से) क्यों ?

रायबहादुर—(क्रोधित स्वर से) आज हमको उनकी आवश्यकता है।

उ०—आखिर क्या आवश्यकता आ पड़ी है ?

राय०—बहुत दिनों से शिकार नहीं खेला है, सोचता हूँ कि जरा यह तो देख लूँ कि निशाना कैसा है ?

उ०—यदि आप को निशाना देखने की आवश्यकता है तो मैं उपस्थित हूँ। क्यों न आप मुझी पर निशाना देख लीजिए। इसलिए कि मेरी स्त्री इतनी ज्यादा ज्वर से पीड़ित हो गई है कि मैं व्याकुल और मजबूर हो गया हूँ। इस जीवन से मुझे भी मुक्ति मिल जाय।

राय०—क्या भाभी अत्यन्त ज्वर से पीड़ित हो गईं। क्यों ?

उ०—हाँ साहब ऐसी सख्त पीड़ित हैं कि भगवान की कृपा हो। यदि इस समय यह लड़कियाँ बेचारी चली आएँ तो न मालूम सेवा कौन करेगा और सम्भवतः यह वियोग मुझे जिन्दगी भर सताता रहे।

राय०—ईश्वर दया करे। इतनी सख्त पीड़ित हैं ? (यह कहते हुए रायबहादुर कुर्सी पर बैठ गए और उमेश भी कुर्सी पर बैठ गए) यकायक इतनी पीड़ित हो कैसे गईं ? केवल दो दिन की बीमारी ने यह दशा कर दी है।

उ०—भाई, यह तो समय ही बीमारी का होता है। और डाक्टरों व वैद्यों के रोजगार का समय होता है। यदि इस समय में मनुष्यों की मृत्यु न हुआ करे तो उसका अर्थ यह समझिए कि यम का बाजार अब की वर्ष टाले में गुजरा।

राय०—(बातों में लीन होने के कारण उनका क्रोध ठण्डा होता जाता है तथा वह बन्दूक को बातों के सिलसिले में कुर्सी के किनारे लगाकर रख देते हैं) भाई, परन्तु उनके जी का यकायक खराब हो जाना, ईश्वर दया करे, बड़ा ग़जब है। इतनी शीघ्र रोग में वृद्धि हो गई। क्या कहा जाय आश्चर्य की बात है। श्रीमती जी ने जो यह देखा कि वकील साहब ने बन्दूक रख दिया और बातों में लीन हो गए और क्रोध का भी अन्त है तो धीरे से दबे पाँव आईं और बन्दूक उठाकर ले गईं और ले जा कर शीघ्रता से लड़के को दे आईं कि इसको

ले जाकर पड़ोसिन के घर रख आ और लड़का शीघ्रता से वन्दूक लेकर रवाना हो गया। इतने में रायबहादुर ने धर्मपत्नी से भाई साहब के लिए पान लाने को कहा। यह सुनना था कि श्रीमती के जान में जान आई और उत्तर दिया—"अभी लाती हूँ।" इतने में रायबहादुर ने फिर कहा—"और देखो बांके से यहाँ कहलवा दो कि हुक्का आदि भर कर भेज दे।" अब क्या था श्रीमती जी ने दांव जीत लिया। थोड़ी देर में हुक्का भी आ गया, पान भी आ गया और दोनों साहबों में फिर ऐसी वार्ता आरम्भ हुई कि न उसका आज अन्त हुआ न कल और श्रीमती जी अब आकर बैठ गईं और इधर-उधर से अपनी बातें जनाने और सुनाने लगीं। गरज़ ये कि इस समय मामला बिल्कुल समाप्त हो गया और सही मानों रायबहादुर श्रीमती जी के सामने अपनी बन्दूक हाथ ही में लिए रह गये।

लगभग नौ दस बजे तक उमेश बाबू वकील साहब और श्रीमती जी बात-चीत में लीन रहे और जब उमेश बाबू चलने को हुए तो श्रीमती जी और वकील साहब दोनों ने जोर दिया कि खाना खाकर जाइये। प्रेरित होकर उन्हें खाना खाना ही पड़ा और उसके पश्चात् वकील साहब की टमटम पर बैठकर अपने घर चल दिये। घर पर उमेश बाबू की प्रतीक्षा बड़ी बेचैनी से हो रही थी। खैर परमात्मा की कृपा से जब वे घर पहुँचे तब उन्होंने सारी बातें बता दीं कि यह दशा थी और उन पर इस भाँति से काबू जमाया जा सका।

———

अध्याय चौथा

कहने सुनने में जो नहीं आती !
वो भी इक दास्तान है प्यारे !!

इधर रायसाहब भोजन कर ही चुके थे, स्त्री ने भी भोजन कर लिया था और सहन में दोनों के पलंग बिछे हुए थे। चन्द्रमा भी पूरी चमक-दमक के साथ निकल आया। श्रीमती जी तथा वकील साहब दोनों के पलंगों पर उजली चादर इतनी सुन्दर दिखाई दे रही थी कि इस चाँदनी ने इन दोनों चारपाइयों को संगमरमर का तख्त बना दिया था। रायबहादुर साहब अपनी चारपाई पर लेटे हुए थे और लड़का उनका पैर दबा रहा था कि इतने में श्रीमती जी भी अपनी चारपाई पर आ गईं जो वकील साहब की चारपाई के बिलकुल करीब बिछी हुई थी और श्रीमती जी धीरे २ पंखा झल रही थीं। थोड़ी देर बाद जब वकील साहब ने देखा कि लड़का पैर दबाते-दबाते थक गया तो उन्होंने उससे कहा—"अब जा सो रह और देख लालटेन जरा कम कर देना।"

लड़के ने उठ कर लालटेन कम कर दी और दालान से होता हुआ दूसरी ओर के छोटे सहन में चला गया और जाते समय उसने नियमानुसार इस सहन के दरवाज़े को बन्द कर दिया और अपनी चारपाई पर जा पड़ा।

इधर इस कलेजा मार चन्द्रमा की ज्योति को देखकर और श्रीमती जी के पंखे की ठंडी-ठंडी हवा को खाकर रायबहादुर साहब का मस्तिष्क उमंग से भरने लगा। अतः बड़ी देर तक स्त्री से इधर-उधर की मनोरंजक बातें करने के पश्चात् वकील साहब ने कहा—"श्रीमती जी आज तुम्हारी तबीयत क्यों खराब है ?"

स्त्री—(चिड़चिड़ाकर) ईश्वर न करे, मैं क्यूं बीमार पड़ने लगी ? बीमार हों मेरे दुश्मन..........।

वकील साहब—नहीं ! नहीं ! लाओ तुम्हारी नब्ज भी तो देखें।

स्त्री—अरे आज तक हमने किसी डाक्टर को तो अपनी नाड़ी नहीं दिखाई, तो आप ठहरे वकील, आपको क्या दिखाऊँ।

व०—.......तुम जरा दिखाओ तो..........।

स्त्री—(नखरे के स्वर में) नहीं ! नहीं ! मैं नहीं दिखाऊँगी। अभी स्त्री यह कह रही थी कि वकील साहब ने झट अपना हाथ बढ़ाकर स्त्री के करों को पकड़ लिया और स्त्री ने भी अपने हाथ से पंखे को गिरा दिया और कहने लगी—"छोड़िये, छोड़िये। मेरा हाथ क्यों पकड़ रहे है आप..........।" वकील साहब हाथ को पकड़ कर जरा सख्त कर लेते हैं और कहते हैं—"श्रीमती जी जरा देखने तो दो..........।"

स्त्री—(धीरे-धीरे कहती है) नहीं ! नहीं ! मेरा हाथ छोड़िये मुझे तकलीफ होगी।

व०—जरा सन्तोष से काम लो..........नब्ज तो देखने दो..........
और वकील साहब यह कहते स्त्री की चारपाई पर आ धमकते हैं और फिर दोनों हाथों से स्त्री को पकड़ लेते हैं।

स्त्री—(दबे स्वर में) देखिये, देखिये आप अपनी चारपाई पर जाइये। मुझे गरमी लगती है। जाइये अपनी चारपाई पर..........।

व०—भाई सुनो तो सही..........सुनो तो सही कहते-कहते वकील साहब ने स्त्री का आंचल नीचे हटा दिया और फिर श्रीमती के शरीर को दोनों हाथों से पकड़ लिया।

स्त्री—देखिए यह हाथापाई हमको बिल्कुल नापसन्द है छोड़िये भी........।

वकील साहब—(अपना एक हाथ स्त्री की कमर के पास लाते हुए) बस के.प दिखादो............।

स्त्री—वकील साहब से लिपटती जाती है और कहती है आप समझते नहीं पतिया जग रही होगी............।

व०—तुम बिल्कुल नहीं समझ रही हो। इस समय क्या होना चाहिए... ।

श्रीमती जी यह कहती जाती हैं—"मुझे व्याकुल न कीजिए" और अपना लाल मुख वकील साहब के मुख पर रख देती है और वकील साहब भी उसके ऊपर ऐसी जोरदार मोहर लगा देते हैं जैसे कि उन्होंने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर खींच दिया है............धीरे-धीरे दोनों के दोनों ही श्वाँस भरने लगे............ और एक दूसरे को देखते रहे............।

इस क़दर प्यार से न देख हमें !
फिर तमन्ना जवाँ न हो जाय !!

दूसरे दिन प्रात:काल रायबहादुर साहब के लिए स्नान करना आवश्यक था। अत: उन्होंने स्नान किया और कपड़े बदले। आठ बजे टमटम में सवार होकर उमेश बाबू की स्त्री को देखने के लिए रवाना हो गए। वकील साहब उमेश बाबू के मकान पर पहुँचे तो अन्दर से वह स्वयं निकल रहे थे। तुरन्त ही साष्टांग प्रणाम हुआ और उमेश बाबू इनको लेकर अपने साथ ज़नाने घर में गए। ज़नाने घर में एक पलंग पर उमेश बाबू की स्त्री लेटी हुई थी और दूसरी चारपाई पर लड़कियाँ बैठी हुईं थीं। ज्योंही लड़कियों का सामना वकील साहब से हुआ वकील साहब उन लड़कियों को देखते ही क्रोध के ज्वर से लाल हो गए। चेहरा लाल होने लगा और लड़कियों के भी मस्तिष्क में घबराहट होने लगी परन्तु फिर भी लड़कियों को सन्तोष अवश्य था कि इस समय उमेश बाबू मौजूद हैं और उनकी पत्नी भी उपस्थित हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि पिता के हाथ में इस समय बन्दूक नहीं है। पिता ने भी बड़े क्रोध के स्वर में बहुत जोर से कहा—"क्यों कम्बख्तो लखनऊ में पढ़ने भेजा था या लड़कों का भोजन तैयार करने के लिए।"

वकील साहब की लड़की थोड़ी देर मौन साधने के पश्चात् बोली—"समझ में नहीं आता कि लखनऊ में लड़कियाँ लड़कों का खाना कैसे पका सकती हैं। क्या वहाँ के बबर्ची मर गये है ?"

पिता—क्यों, तूने नहीं पकाया ?

बेटी—पिताजी आप तो लखनऊ में स्वयं ही पढ़ चुके हैं। आप ही बताइये क्या यह सम्भव है कि कोई लड़की बोर्डिंग में रहकर सारे लड़कों का खाना पकाए ?

उमेश बाबू बोल उठे—वस्तुत: लखनऊ में तो मैं भी पढ़ा था। यह तो किसी दशा में सम्भव ही नहीं है कि लड़कियाँ लड़कों का भोजन तैयार करें। इसलिए ऐसा तो किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में नहीं होता। आखिर लखनऊ में कैसे हो सकता है ?

उमेश बाबू की स्त्री लगी रायबहादुर से कहने—"भाई साहब आप भी खूब आदमी हैं। कोई कह दे कौआ कान लिए जा रहा है तो आप कान को तो देखते ही नहीं और कौए के पीछे दौड़ पड़े…………।"

वकील साहब भी थोड़ी देर ग़ौर करते हैं और सोचते हैं—हाँ ऐसा कैसे हो सकता है ? बोर्डिंग की लड़कियाँ आखिर कैसे लड़कों का खाना तैयार कर सकती हैं ? और फिर यूँ बोले—"हाँ आप लोगों का ख्याल सही है।" बस यह सुनना था कि लड़कियाँ प्रसन्न होने लगीं और उनकी जान में जान आई और लगी उमेश और उनकी पत्नी के लिए प्रार्थना करने। परिणाम यह हुआ कि श्रीमती जी की लगभग आज कुछ हालत ठीक होने लगी। इस समय कमरे में केवल उमेश बाबू, वकील साहब और उमेश बाबू की स्त्री उपस्थित हैं। परन्तु बिस्तर पर लेटे हुए हैं। इतने में दाई तश्तरी में पान लाई। वकील साहब ने पान खाया और फिर उमेश बाबू की स्त्री से इस प्रकार बातचीत करने लगे—

वकील साहब—भाभी जब आपका जी खराब है तो लाइए जरा मैं आपकी नब्ज देखूँ। इसलिए कि अभी तक ही रात्रि में हमने आपकी बहन की नाड़ी देखी है। उमेश बाबू की स्त्री—(मुस्कराते हुए) "अरे हटिए भी। हर समय अपने ही लाभ की बात किया करते है और यहाँ जान पर बनी हुई है।"

वकील साहब—भाभी जान नब्ज दिखाने से तो लाभ आप ही का होगा। हम आपको दवा देंगे। आप अच्छी हो जायेंगी।

उमेश बाबू की स्त्री—(मुस्कान लिए हुए) क्षमा कीजिए। मैं वकीलों से अपना इलाज नही कराती हूँ ....।

और इधर सामने उमेश बाबू इस मजाक को सुन रहे थे और बैठे हँस रहे थे कि इतने में उमेश बाबू के लड़के रमेश बाबू अपनी एक साइकिल सहित पहुँच गये। उनके आने की आवाज पर वकील साहब ने पूछा "कौन आया ?"

"अरे रमेश आया है" और फिर रमेश को श्रीमती पुकारती है–"ऐ रमेश यहाँ आओ, देखो तुम्हारे चाचा आये है।"

रमेश शेरवानी पहने हुए कमरे में आ गया और अपने चाचा को प्रणाम करके इसी कमरे में बैठ गया।

व० (रमेश से)—कहो तेरा अब क्या इरादा है ? अब तो तुमने बी० ए० पास कर लिया।

रमेश—क्या बताऊँ मलाया जाने को सोच रहा हूँ। पासपोर्ट के लिए प्रार्थना-पत्र दिया है। पासपोर्ट आ जाय तो रवाना हो जाऊँ।

व०—अच्छा रमेश बाबू अब दस बज रहे हैं, कचहरी का भी समय हो रहा है, अब घर कौन जाय ? जो कुछ पका हो शीघ्र लाओ खाऊँ और इधर ही से कचहरी रवाना हो जाऊँ। ज्योंही वकील ने यह कहा—रमेश उठा और भोजन परोसने का प्रबन्ध करने लगा। उसके साथ ही उमेश बाबू की स्त्री ने भी ताकीद कर दी कि देखो रोटियाँ खूब गर्म हों। रमेश के जाने के बाद कमरे में तीनों रह गये यानी उमेश बाबू, उनकी स्त्री और वकील साहब। अब जो उमेश बाबू ने अवसर अच्छा देखा और पुरानी निर्धारित की हुई बातों को फिर छेड़ दिया।

उमेश बाबू की स्त्री—भाई साहब लड़कों का आजकल कुछ ठीक नहीं रहता। न जाने किस समय और किस दिन क्या कर डालें। अब रमेश मलाया जा रहा है। सोचती हूँ अब इसका विवाह-बन्धन आदि करा ही के जाने दूँ।

वकील—भाभी बात तो पहिले से ही तय है। मेरी लड़की तो आपकी लड़की है और आपका लड़का तो गोया कि आपका है ही। जब चाहिए आप व्याह का फर्ज अदा कर डालिए मुझे क्या ऐतराज हो सकता है। और न इस बात पर मुझे ऐतराज होगा कभी। लड़की को भी आप देख ही रही है।

उमेश—अजी तुम भी कमाल करती हो। इतनी शीघ्रता की क्या आवश्यकता है। कोई गुड्डे-गुड़िया का व्याह तो है नहीं। लड़का भी घर में है और लड़का भी। शान्तिपूर्वक व्याह होगा। जरा धूम-धाम के साथ ताकि किसी को कुछ कहने का मौका भी न मिले। इस वास्ते कि मेरा एक ही लड़का है और मोहन भाई के भी ले देके एक ही पुत्री है। हम लोगों को इन सबों के व्याह के अवसर पर हौसला निकालने का तो अवसर मिले ………।

व०—हाँ, भाभी मेरा भी यही विचार है। आप जानती हैं कि मेरी लड़की इस समय बी० ए० के अन्तिम वर्ष की परीक्षा देने जा रही है। और रमेश भी अभी नौकर नहीं हुए। ईश्वर की कृपा होगी तो ये शीघ्र नौकर हो जायेंगे और इतने में यह भी बी० ए० पास कर लेगी। फिर क्या है हमारे पास भी तो सिवाय इस लड़की के कोई नहीं है। जरा मुझे भी तो हौसला दिखाने का अवसर मिले।

इधर तो ये बातें हो रही थीं कि उधर रमेश बाबू रसोईघर में पहुँच कर अच्छी खासी धम्मा-चौकड़ी मचाये हुए थे। "यह निकालो, वह निकालो, यह दो और वह दो"………अपने चाचा के लिए भोजन निकलवा रहा था। एक अच्छा खासा तूफ़ान उठ रहा था कि यकायक वकील साहब की बेटी रसोईघर में आ पहुँची और उसको देखते ही रमेश मुस्कराने लगा और हँसते हुए स्वर में कहने लगा—

"आइए हुजूर आपने कहाँ तकलीफ उठाई…………।"

वकील की लड़की—बस-बस अपनी मूर्खता अपने पास रखिए……… यह सब गधापन दूसरों को दिखाइयेगा…………मेरे ऊपर…………इसका कोई प्रभाव नहीं होगा……………।

रमेश—(मजाक के स्वर में) अजी हुजूर से यह कहता हूँ कि अपने

पिताजी के साथ मत खाना खाइयेगा..............आपको खाना आज मेरे साथ खाना होगा।

वकील की लड़की—(ताने के स्वर में) क्षमा कीजिए मैं आपके साथ खाना नहीं खा सकती हूँ...........।

रमेश—(दोबारा बनाते हुए कहता है) क्यों हुजूर आखिर मेरी त्रुटि क्या है ?

ल०—जी हाँ.......आपकी सबसे बड़ी त्रुटि तो यह है कि आप बिलकुल भंगी है। आपके साथ कौन खाए.........।

र०—अजी साहब मैं भंगी सही यदि चिराग़ लेकर भी ढूँढेंगी तब भी मेरा जैसा चाहने वाला नहीं मिलेगा।

ल०—मुझे सब मालूम है यदि मेरा सैन्डिल सलामत है तो आपके जैसे सिर बहुत मिलेंगे।

र०—अजी तो मैं हुज़ूर हृदय को निछावर कर रहा हूँ सर नहीं ?

ल०—...........परन्तु मुझे तो आपके सिर की आवश्यकता है, हृदय की नहीं !!

इन दोनों के मज़ाक का वाद-विवाद बढ़ता गया। रमेश ने मुस्कराते स्वर में कहा—

मुहब्बत है क्या चीज मुझसे न पूछो !
मैं पूछूँगा तुमसे जो चाहा खुदा ने !!

जब कि वकील साहब की पुत्री ने यह सुना तो ताने के स्वर में हँसती हुई चली गई और कहती हो गई—"मँजनू बने बैठे रहिए मैं जाती हूँ।" इतने में दाई ने खाना सेनो में निकाल दिया और अब खाना रसोई घर से कमरे में पहुँचा दिया गया। इसके पश्चात् रमेश वकील साहब के पास गया और कहा—"चचा चलिए खाना लग गया।" वकील साहब, बाँके और उमेश बाबू की स्त्री धीरे-धीरे आईं। वकील साहब ने खाना खाया और उसके पश्चात् कचहरी रवाना हो गए।

यहाँ पर यह बात कहने योग्य है कि वकील साहब की बेटी और रमेश दोनों आयु में लगभग बराबर थे और दोनों का व्याह बाल्यकाल में तय हो

चुका था। एक तो वकील साहब की बेटी बहुत सुन्दर है और रमेश बाबू कुछ यूं ही से तथा श्याम रंग के थे। दोनों शिक्षित थे। अतः इन दोनों में खूब चला करती थी। वकील साहब की बेटी को सदा लड़कपन का विचार मस्तिष्क में रहता था। रमेश सदा उसके मस्तिष्क से ये बात निकाल देना चाहता था कि वह उससे अधिक योग्य है। रमेश ने परीक्षा में सफलता एक वर्ष असफल होने के पश्चात् प्राप्त की। और वकील साहब की बेटी आज तक किसी भी परीक्षा में असफल नहीं हुई है किन्तु यह बात भी कहने योग्य है कि रमेश बहुत बड़ा तैराक है और जैसा कि वकील साहब की बेटी तथा भतीजी का विचार है कि रमेश भाई को किसी मल्लाह अथवा मछुए के घर उत्पन्न होना चाहिए था। उसको तैराकी सुनकर विश्वास होता है (परन्तु अब रमेश ने इलाहाबाद से बी० ए० पास कर लिया है तथा मलाया जा रहा है केवल पोर्ट की प्रतीक्षा है)।

उस समय तो वकील साहब खाना खाने के तुरन्त बाद कचहरी चल दिये तथा उनके जाते ही रमेश ने फिर अपनी साइकिल उठा ली और बाजार रवाना हो गया। चूंकि अब लगभग ग्यारह बजे थे और उमेश ने भी वकील साहब के साथ ही भोजन कर लिया था इसलिए बाहर दरवाजे पर जा लेटे और नौकर ने हुक्का ले जाकर रख दिया और फिर वह अपने हुक्के सहित रवाना हो गए।

अब घर के अन्दर केवल श्रीमती जी ही रह गई थीं। वह भी पीड़ित होने के कारण अपने कमरे में जा कर सो रहीं और लड़कियां थोड़ी देर बैठ कर उनके करीब बातचीत करती रहीं, फिर अलग एक कमरे में उठ कर चलीं आईं और फिर वकील साहब की बेटी तथा भतीजी में बातचीत प्रारम्भ हो गई।

बेटी—क्यों............इस समय बड़ी कुशलता गुजारी नहीं तो इस समय हम लोग इस संसार में न होते, यूं समझो एक विपत्ति का पहाड़ टल गया वरना............।

भतीजी—अरे यह विपत्ति का ऐसा वैसा पर्वत न था बल्कि अपनी बनावट का हिमालय था, हिमालय ?

बे०—अब यह बता कि दुष्ट तनवीर से बदला कैसे लिया जाय।

भतीजी—हाँ यही चिन्ता मुझे भी है। उसको ऐसा मजा चखाना चाहिए कि उसे सदैव आयु भर याद रहे। ईश्वर की सौगन्ध ये लखनऊ के लड़के होते ही बड़े नम्बरी हैं। इन सभी को न जाने क्या सूझती है और जो सूझती है वह नई सूझती है····।

बेटी—जरा इस दुष्ट तनवीर की दुष्टता तो देख। उसने तो ऐसा प्रबन्ध किया था कि हम लोग यमराज के यहाँ बैरंग············।

भ०—परन्तु हम लोग उसको पहचानते जो नहीं। बहरहाल अब यह विचार करो किस तरकीब से उसको इस दुष्टता का मजा चखाया जाय।

बे०—ग़ाज़ीपुर में रह कर इस समय तो कोई बात करना बिलकुल ठीक नहीं··· ······ हाँ अब उन साहब की मरम्मत लखनऊ में पहुँच कर करनी चाहिए।

हाँ, अब यह तरकीब निकालें कि उसको हम लोग किसी भाँति पहचान लें और फिर लखनऊ पहुँच कर यहया गंज रोड पर उसको पकड़ा जाय और फिर उसका एक कान तू पकड़ना और दूसरा मैं और फिर खूब जोर से ऐंठा जाय कि बाबू को छठी का दूध याद आ जाय।

भ०—ना ! ना !··········· कभी भी ऐसा नहीं········इसलिए कि मान ले उसका एक कान हमने ऐंठना आरम्भ कर दिया ··············किन्तु उसके दोनों हाथ खाली रहेंगे और बजाय अपनी छठी का दूध याद करने के उसको हम लोगों कान याद आ गया तो अपने खाली हाथों से उसी को पकड़ के ऐंठने लगेगा···· ···········।

इस पर वकील साहब की लड़की बड़े जोर से हँसी और कहने लगी वास्तव में तूने अच्छा सोचा नहीं तो बड़ी गड़बड़ी होती। किन्तु यदि गौर से देखा जाय तो इसमें उस बेचारे की क्या गलती ?

भ०—(गर्दन हिलाकर) वाह रे तुम्हारा बेचारा। यदि वह अभी से बेचारा हो गया न, तो फिर आगे का ईश्वर ही रक्षक है।

बेटी—नहीं ! नहीं ! बता अस्तुतः इसमें उसकी क्या गलती है ?

भतीजी—उसकी गलती क्यों नहीं है............

बे०—क्या ?

भ०—उसने क्यों गनपत को हम लोगों के पास भेजा ? इसलिए कि उसको मूर्ख बनाना अवश्य था ? दूसरे उसने सोचा, क्यों न ग़ाज़ीपुर रहने वालों में से लखनऊ का हर व्यक्ति लाभ उठा ले। फिर मान लो यदि वह लोगों के पास गनपत को न भेजता तो हम लोग उसको मूर्ख बना कर कैसे भोग खाते ?

बे०—हाँ तेरी इस बात का उत्तर तो जरा कठिन है बहरहाल तनवीर की मरम्मत तो करनी ही होगी.................।

इसी प्रकार की बातें इन दोनों में हो रही थीं। फिर दोनों दाई के बुलाने पर खाने के लिए उठ गईं।

अध्याय पाँचवाँ

आदत बुरी बला है ये छुटती कभी नहीं !
दुनियाँ के ग़म उठाते हैं किस-किस खुशी से हम !!

कल जब कि तीन बजे दिन में तनवीर घर में से निकाल दिया गया तो बाहर आकर सो गया था और उसके मस्तिष्क में भाँति-भाँति की विचारधाराएँ उत्पन्न हो रही थीं कि आखिर बात क्या हुई ? माजरा क्या है ? खाने से मेरा क्या लगाव है ? हमने तो केवल गनपत को मूर्ख बनाने के लिए मज़ाक किया था।

और यही सब बातें सोचते-विचारते वह सो गया था और वह उस समय जगा जब कि श्री रायबहादुर साहब महावीर राम के सहित श्री रणवीर मास्टर से मिलने आये। उसने जो कमरे में झाँका तो देखता क्या है कि रायबहादुर साहब बड़े सख्त स्वर में बात कर रहे हैं। गनपत के पिता महावीर राम भी उपस्थित है और सामने उसके पिता रणवीर भी खड़े हुए लड़के की दुष्टता पर खेद प्रकट कर रहे हैं। अभी-अभी वह सोकर उठा था और चारपाई पर लेटा हुआ था कि यह दृश्य देखा और उसने बातचीत के विषय पर कान लगा कर सुना—वही भोजन का मामला चल रहा था। उसने तुरन्त विचार किया में अवश्य बुलाया जाऊँगा तथा मुझसे अवश्य जिरह होगी।

इस विचार के मस्तिष्क में आते ही यह मूर्ख तो है ही अपनी जान बचाने के लिये तुरन्त चारपाई के अन्दर घुस गया। सन्ध्या का समय था, सूर्य बिलकुल डूबने के करीब था। वायुमण्डल में अँधेरा छाया हुआ था। बाहर से देखने में वस्तुतः यह पता चलता था कि इस कमरे में कोई नहीं है।

तनवीर जो चारपाई के अन्दर छुप गया तो सायंकाल का समय, मच्छरों ने समझा कि परमात्मा ने आज उनको भोग दिया है। अतएव हर एक मच्छर ने बिलकुल पेट भर खून पिया तथा अब उनकी दशा का क्या वर्णन किया जाय। चारपाई के अन्दर छुपा हुआ बिलकुल अँधेरे कमरे में मच्छर काट रहे थे। गर्मी के दिन थे, पसीना ज़ोरों पर निकल रहा था, अभी-अभी वह सोकर उठा था। मस्तिष्क घटना से बिलकुल दूषित था। बिगड़ने की आवाज आ रही थी। उसका दिल घबरा रहा था कि पिताजी न जाने क्या कर बैठें। बस हृदय में वह केवल यही कह रहा था............।

जब कि रायबहादुर साहब चले गए, महावीर राम भी चले गए और दोनों के जाने के पश्चात् मास्टर साहब भी अपने जनाने मकान में चले गए, तब उनकी जान में जान आई और चारपाई के अन्दर से निकला। घण्टों अपना पसीना पोंछता रहा और पंखा झलता रहा। यद्यपि उसने कमरे की खिड़की को खोल रखा था तथापि उसको कुछ अजीब तरह की व्याकुलता तथा बेचैनी हो रही थी कि आखिर क्या करे ? क्या बात है ? खाने का क्या क़िस्सा है ? क्यों खान बहादुर आये और क्यों इतना क्रोधित होकर गये ? महावीर राम साथ में क्यों थे ? पिताजी के ऊपर इस बात का क्या प्रभाव पड़ा ? ग़रज कि यही सब बातें सोचता था और कमरे में टहला करता था...........।

जनाने मकान के अन्दर जब मास्टर साहब गए तो उनकी स्त्री ने पूछा—
"क्या बात है ? क्यों आये थे रायबहादुर साहब ?"

मास्टर साहब—तुम्हारे लाड़ले ने परिवार का नाम दूर-दूर तक फैला दिया है ; शहर में हर तरफ इस बात पर विचार हो रहा है (ये सब बातें मास्टर साहब ने कुछ उदासी तथा क्रोध के स्वर में कहीं)।

स्त्री—आखिर आपसे रायबहादुर से क्या बातचीत हुई ? कुछ बताइये तो ....।

मास्टर साहब—(खेद के साथ) क्या बताएं ?

स्त्री—तनवीर कहाँ हैं इस समय ?

मा० सा०—दरवाजे पर तो नहीं है। कहीं अवारगी करता होगा।

स्त्री—लड़का हाथ से निकल रहा है। इसका सुधार कीजिए।

मा० सा०—तुम्हारे ही लाड़-प्यार ने तो उसको चौपट कर रखा है।

स्त्री—खबरदार, अपना दोष हमारे ऊपर न लगाइए।

यही सब बातें पति तथा पत्नी में चल रही थीं कि घन्टे की आवाज आ गई और मास्टर साहब फौरन गंगाजली लेकर मन्दिर में चले गये परन्तु तनवीर की माता को बराबर इस बात की चिन्ता लगी रही कि आखिर तनवीर गया कहाँ है ? कहाँ गया होगा इस समय ? दरवाजे पर तो नहीं है। अपनी शान्ति के लिए कल्लू की माता के पास जाकर धीरे से कहा कि देख बाहर तनवीर है कि नहीं। यदि हो तो उससे कुछ कहना मत, चुपचाप चली आना और यदि न हो तो आकर शान्तिपूर्वक हमसे कह देना। कल्लू की माता बाहर आई और चुपचाप दालान और भीतरी दालान सब देखने लगी और जब कमरे की ओर देखा तो सामने ही तनवीर टहल रहा था। तनवीर ने उसको देखते ही तुरन्त पूछा—"कल्लू की माता तुम यहाँ क्या करने आई हो ?"

कल्लू की माँ ने कहा—"लालटेन खोज रही हूँ। वह मिलती नहीं, यदि मिल जाय तो जला दें। इसलिए कि सारा दरवाजा अँधेरा है।" यह कहती हुई कल्लू की माता जनाने मकान की ओर बढ़ी। अभी वह जा रही थी कि तनवीर उसके पीछे दौड़ा और उससे पूछने लगा—

"ए, कल्लू की माँ क्या एक बात बता सकती हो ?"

कल्लू की माँ—क्या बात है ? पूछो।

तनवीर—पिताजी क्या कर रहे हैं ?

कल्लू की माँ—पूजा कर रहे हैं।

तनवीर—और माता जी क्या कर रही हैं ?

कल्लू की माँ—बैठी हुई छालियाँ काट रही हैं।

त०—कल्लू की माँ, जरा कमला से कह देना कि हमको बड़ी भूख लगी है, कुछ पानी पीने को शीघ्र भेजे............।

इस बात का सुनना था कि कल्लू की माता का हृदय पसीज गया और उसने कहा—"घबराओ नहीं। बाबू मैं अभी लाती हूँ।" यह कहकर वह अन्दर चली गई।

अन्दर जाकर उसने तनवीर की माता को बता दिया कि तनवीर बाहर दरवाज़े के कमरे में मौजूद हैं और वहाँ पर बिलकुल अँधेरा पड़ा हुआ है और उसके पश्चात् कमला के पास जाकर धीरे-धीरे कहने लगी कि बाबू अत्यन्त भूखे हैं। उन्होंनेकहा है कि तुम उनके लिए कुछ पानी पीने को तुरन्त भेज दो। यह सुनना था कि बहन का हृदय भाई के प्रति मोम हो गया क्योंकि यह उस भाई का मामला था जिसने उसकी हर इच्छा को लखनऊ में पूरा किया था। तुरन्त एक प्लेट में कुछ हलुआ और कुछ सेव, दालमोंठ रखकर कल्लू की माँ को ऐसा छिपा कर दिया कि माँ को पता भी न चले तथा कल्लू की माँ भी इस नाश्ते को ऐसा ले गई कि जैसे कोई चीज़ चुरा कर भेज रही हो। बाहर तनवीर मारे भूख के व्याकुल टहल रहा था क्योंकि उसने दोपहर में बहुत कम खाया था। नाश्ता देखते ही शीघ्रता से खाने लगा। ऐसा प्रतीत होता था कि नाश्ता सामने से भागा जा रहा था। वह चुपचाप नाश्ता करता जा रहा था। इधर कल्लू की माँ ने गिलास में पानी लाकर रखा। नाश्ता कर लेने से उसकी कुछ जान में जान आई। हवास में हुआ। अब वह फिर इस मामले पर सोच-विचार करने लगा कि आखिर मामला क्या है। चुनांचे उसने उचित समझते हुए कल्लू की माता से यूँ पूछना आरम्भ किया—

तनवीर—माँ क्या कर रही हैं ?

क० की माँ—छालियाँ काट रही हैं।

त०—तुम ही देखो कल्लू की माँ इसमें हमारी क्या ग़लती है ? यदि कोई बलपूर्वक हमारे घर खाना पका कर भेज दे तो हम क्या करें।

फल्लू की माँ—ए, बाबू तुम झूठ क्यों बोलते हो आखिर इन लड़कियों ने क्यों तुम्हारे ही घर खाना पका कर भेजा ? क्यों नहीं दूसरे के घर भेजा ?

तनवीर—यही तो हमको भी आश्चर्य है कि आखिर हमारे पास खाना पका कर भेजना कौन से तुक की बात थी। न हमने उन लड़कियों को देखा है। सौगन्ध खाकर कहते है आज तक नहीं देखा है और न उन सबों को हम जानते हैं और न हमसे किसी प्रकार का लगाव है। न जाने हम किस विपत्ति में पड़ गए।

क० की माँ—बाबू यदि तुम सचमुच बात बता दो कि क्या मामला है तो हम जाकर श्रीमती जी से सब बात साफ कर दें और कोई बात की गड़बड़ न होगी और सब काम बिलकुल ठीक हो जायेगा।

त०—ईश्वर की कसम तो खा रहे है।

क० की० माँ—ना बाबू ! ना ! तुम हमसे झूँठ बोल रहे हो, तुम्हारे मामले में हम न पड़ेंगे नहीं तो हमारे सिर पर भी बन जाएगी। और यह कहती हुई कल्लू की माता ज़नाने मकान की ओर रवाना हो गई।

तनवीर शान्त हो गया और सोचने लगा कि इस समय घर के घर का मस्तिष्क दूपित हो गया है। इधर तनवीर के पिता संध्या की पूजा पाठ के पश्चात् श्लोक पढ़ने में लग गए और थोड़ी देर के पश्चात् कमला ने खाना लाकर सामने बिछे हुए तख्त पर रखना आरम्भ कर दिया और जब उसके पिता सब बात से फुर्सत पा गए तो उसने उनसे कहा कि आइए और खाना खाइए। ठंडा होता जा रहा है। पूजा पाठ के पश्चात् तनवीर के पिता सीधे खाने के तख्त पर जा बैठे और खाना शुरू कर दिया चूँकि चाँद की रोशनी भी काफ़ी थी। इसलिए तनवीर के पिता ने कहा कि लालटेन यहाँ से हटाकर दूर रख दो। बल्कि न हो तो कम कर दो। भोजन आरम्भ ही किया था कि तनवीर की माता जी भी आ गईं और धीरे-धीरे पति को पंखा झलने लगीं। तनवीर के पिता चूँकि बहुत सीधे-साधे चुप मनुष्य थे इसलिए खाना शान्ति पूर्वक खाते चले जा रहे थे परन्तु अब जो उनकी और श्री रायबहादुर की बातचीत हुई थी उसका उनके चेहरे से कुछ खेद भी प्रकट हो रहा था तथा

लड़के की दशा पर भी खेद हो रहा था और चूँकि तनवीर की माता जी अपने पति के दिल को बहुत अच्छी भाँति जानती हैं इसलिए वह भी शान्तिपूर्वक पंखा ही झल रही थीं। न किसी प्रकार की बात हो रही थी और न किसी प्रकार का शोर गुल किन्तु तनवीर की माता को भी लड़के की दुष्टता पर कुछ दुख अवश्य था क्योंकि अब लड़के की प्रशंसा होती और अब उसकी गिनती घर के योग्य लड़कों में होती। अभी तनवीर के पिता ने भोजन का अन्त भी न किया था कि कमला ने अपना तथा अपनी माता दोनों का भोजन पलंग पर चादर बिछाकर रख दिया और तब तनवीर के पिता भोजन करके पान के खाने और खेलाल करने में लीन हो गए तो कमला और उसकी माँ ने खाना खाना आरम्भ कर दिया।

इसके पश्चात् कल्लू की माता ने सबका बिस्तर लगाया तथा सब बिस्तर पर सोने के लिए जाने लगे। जब करीब-करीब सब सो चुके और केवल तनवीर के पिता और माता जी ही जाग रहे थे तब उन दोनों पति-पत्नी में बातचीत होना आरम्भ हुई।

पति—तनवीर की माँ जाग रही हो क्या ?

पत्नी—कहिए...... ....

इस कदर पाई है शोहरत मेरी रूसवाई ने !

पति—देखो इस लड़के ने तो अच्छी खासी ऊधम बाजी की है। मैं ठहरा कहीं स्कूल का मास्टर। जब हमारे ही लड़के की नालायकी को लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे। हमारा काम दूसरे लड़कों को विद्या देना और सही मार्ग पर लाना है न कि स्वयं अपना ही लड़का इस प्रकार की हरकतें करे तो इसके सिवाय क्या कहा जाय कि—चिराग़ ही तले अन्धेरा।

पत्नी—हाँ देखिए कुछ अजीब बात हुई। हमको तो उसके हाल पर दुख है। इतना खेद है उसकी ओर से कि हमें कभी भी इतना खेद आज तक नहीं पहुँचा था।

पति—तुमको उसके ऊपर खेद है और हमको तुम्हारे ऊपर खेद है :

पत्नी—क्यों ?

पति—अरे तुमने अपने पेट से एक लड़का भी उत्पन्न किया तो वह भी ऐसा ही उत्पन्न किया कि अभागा परिवार ही का बेड़ा डुबाने पर तुला है।

पत्नी—तो सारी ग़लती आप ही की है।

पति—अजी वाह तुम तो ऐसा कह रही हो जैसे कि लड़का हमारे ही पेट से उत्पन्न हुआ है। इस पर दोनों हँसने लगे।

इन दोनों की हँसी सुनकर कमला जो कि वहीं पर सो रही थी जग जाती है और लेटी-लेटी शान्तिपूर्वक अपना कान माता-पिता की बातचीत की ओर लगाये रखती है और ग़ौर से सुनती है कि इस समय क्या बात हो रही है यद्यपि उस पर भी निद्रा की दशा है।

पति—भाई इन सब खराबियों का मेरे ख्याल में केवल एक ही उपाय है। यदि तुम्हारी राय हो तो क्यों न इस पर ही कार्य आरम्भ हो।

पत्नी—वह क्या ?

पति०—वह यह कि रायबहादुर साहब की लड़की से उसका विवाह हो जाय।

पत्नी—बिलकुल ठीक ! सच पूछिए तो आपने हमारे मुँह की बात ले ली। मैं स्वयं आपसे कहने वाली थी और इसी बात को कहने जा रही थी।

पति—अच्छा कल तो नहीं परसों से इस बात के सिलसिले में कार्य आरम्भ कर दें और तुम अधिक से अधिक बातें लड़की के बारे में प्राप्त करो (कमला का कान उसी ओर लगा हुआ था। उसने जो यह बात सुनी तो हृदय ही हृदय में खुश होने लगी कि चलो दिलचस्पी के लिए एक भाभी तो मिली)।

पत्नी—परन्तु न जाने क्या बात है कि चाँदनी जैसी ठंडी रोशनी में विवाहित लोगों को गर्मी बहुत जोरों पर हो जाती है। आखिर मास्टर साहब इस चीज से पृथक् क्यों रहते हैं। चुनांचे उन्होंने भी अपनी स्त्री से कहना प्रारम्भ कर दिया।

पति—भाई जरा देखो तो चन्द्रमा निकला हुआ है। हवा चल रही है।

सब लोग सो गए हैं। केवल हम तुम जाग रहे हैं। तुम्हारी चारपाई हमारे बिलकुल नजदीक है। इस समय बस एक बात होती तो बस ग्रानन्द ग्रा जाय।

पत्नी—जरा तुम हमारी चारपाई पर ग्रा‌ग्रो तो बतायें। वस्तुतः मजाक नहीं क़ाफी दिलचस्प बात है।

स्त्री ने पति का ग्रर्थ समझ लिया ग्रौर कहा "बस ग्रब चुपचाप सो जाइये। रात्रि बहुत गुजर चुकी है। ग्राप की बातों का प्रभाव न होगा। ग्रौर यह कहते हुए उन्होंने ग्रपनी चादर उठाई ग्रौर ग्रोढ़ लिया। फिर परमेश्वर का नाम लेकर सो गईं। मास्टर साहब ने जो स्त्री का यह रंग देखा तो समझ गए कि ग्राज इतवार का दिन है तथा स्कूल बन्द है ग्रौर बेचारे शान्तिपूर्वक स्त्री की ग्राज्ञानुसार सो गए।

दूसरे दिन प्रातःकाल पूजा-पाठ के लिए मास्टर साहब उठे ग्रौर उन्होंने ईश्वर की ग्राराधना की। ग्रौर फिर वे प्रार्थना करने लगे कि परमात्मा उनके पुत्र ग्रौर रायबहादुर साहब की लड़की से नाता होने में सहायता दे। मास्टर साहब को ग्रपने परमेश्वर से बहुत ग्राशाएँ लगी हैं क्योंकि उनकी पूजा सत्य में डूबी हुई पूजा थी।

उधर रायबहादुर साहब ग्राज ही के दिन प्रातःकाल उमेश बाबू की पत्नी को देखने गये थे ग्रौर वहाँ पर उनकी सारी ग़लतफहमी दूर हो गई थी। चूंकि रात को इस ग्रनिच्छित बात का उपाय तनवीर के पिता तथा माता जी सोच चुके थे। इसलिए ग्राज उन लोगों के क्रोध में कुछ कमी थी।

दोपहर हुई ग्रौर सब लोग दोपहर का खाना खाकर सोने के लिए बिस्तर पर पड़ गये ग्रौर ग्रपने नियमानुसार कमला ने तनवीर को दोपहर का खाना भी कल्लू की माँ के हाथ भेज दिया ग्रौर वह भी खाना खा कर सो गया।

ग्रब लगभग चार बजने को ग्राए ग्रौर रायबहादुर साहब भी कचहरी से लौटकर वापस हुए थे। घर पर पहुँचते ही उनको ग्रचानक यह विचार ग्राया कि कल उन्होंने मास्टर साहब से जो बात की थी वह बिलकुल एक ग़लतफ़हमी पर ग्राधारित थी। इसलिए उन्होंने सारी बातें ग्रपनी स्त्री पर थोपते हुए एक

पत्र मास्टर साहब के नाम लिख कर बाँके के हाथ भेजा। बाँके उस पत्र को लेकर संध्या समय मास्टर साहब के घर गया। बुद्धू को पूछा किन्तु वह उपस्थित नहीं था। चुनांचे ड्योढ़ी पर आवाज़ देकर पत्र को अन्दर भिजवा दिया। तनवीर ने जब बाँके के हाथ में था रायबहादुर का एक पत्र देखा तो दिल में कहने लगा—लीजिए कोई नई विपत्ति फिर आई। रायबहादुर साहब का यह पत्र भी अजीब प्रकार का पत्र है। मास्टर साहब ने तथा उनकी स्त्री दोनों ने इस पत्र को पढ़ा। वह पत्र यह है—

मोहन भवन

सैयद वाड़ा,

गाज़ीपुर।

प्रणाम,

आशा है कि आप कुशल से होंगे। मैं अपनी गलती पर बहुत लज्जित हूँ। आज प्रातःकाल जबकि मैं अपने मित्र उमेश बाबू के पास गया तो मुझे मालूम हुआ कि मेरी सारी शिकायत केवल कुछ गलतियों पर आधारित थी। लड़कियों ने वास्तव में भोजन अपने किसी अतिथि के लिए पकवाया था। संयोग से नौकर की त्रुटि से वह आपके लड़के के नाम पर आपके यहाँ पहुँच गया। उनको हमारा आशीर्वाद कहिये और उनसे हमारी ओर से क्षमा माँग लीजियेगा। मेरे घर में आपकी स्त्री को प्रणाम कहती है और वह भी क्षमा चाहती है क्योंकि यह ग़लतफ़हमी उन्हीं के कारण उत्पन्न हुई थी। जब उन्होंने सारी घटनाएँ विस्तृत रूप से सुनाईं तो दूर हुई।

आपका

मोहनलाल

इस पत्र का आना था कि घर में धूम मच गई। बेटे तनवीर भी शीघ्र ही घर में बुलाये गये। सारी क्षमा को क्षमा हो गई और साथ ही साथ बहन ने भाई के कान में यह भी फूँक दिया कि तुम्हारी विवाह की बातचीत रायबहादुर की लड़की से हो रही है। यह सुनना था कि बाबू तनवीर भी दिल में प्रसन्न हो गये।

अध्याय छटवाँ

इक लफ़ज़ मुहब्बत का अदना फसाना है !
सिमटे तो दिले आशिक़ फैले तो ज़माना है !!

अब लड़कियाँ भी उमेश बाबू के घर से अपने घर पर आईं और अब सारा मामला हरहम-बरहम हो चुका था। माता ने अर्थात् श्री रायबहादुर की स्त्री ने सारी बातें सुलझादी थीं। बड़ी खुशी इसी बात की थी।

परन्तु लड़कियों में अभी तक तनवीर को पहिचानने और देखने की इच्छा हर समय मौजूद थी। अतः वकील साहब की बेटी ने वकील साहब की भतीजी से बात करके तनवीर बाबू के नाम एक पत्र लिखा और बारिन को बुलाकर एक रुपया दिया और सचेत कर दिया कि बहुत गुप्त रीति से इस पत्र को ले जाकर श्री रणवीर के पुत्र तनवीर को देना किन्तु खबरदार किसी और के हाथ में यह पत्र न देना और कभी भी इस बात को माता जी से न प्रकट करना। बारिन को चाहिए था रुपया। बस रुपया जो हाथ में पड़ा तो हृदय प्रसन्न हो गया और इस कार्य को तुरन्त करने और गुप्त से गुप्त रखने का वचन दे दिया और पत्र लेकर चल पड़ी।

यद्यपि दस बजे दिन की धूप गर्मी के समय में काफी सख्त होती है जिसका सहन करना असम्भव होता है फिर भी बारिन बहुत तेज़ गति से चली जा रही

थी। ग़जब है !!! रुपये ने उसकी गति में तेज़ी उत्पन्न करदी थी। धूप को सहन करती हुई आखिर वह श्री रणवीर के घर पहुँच गयी और फिर जनाने मकान में चली गई।

जब यह जनाने मकान में गई। तो रायसाहब की स्त्री को प्रणाम किया और पृथ्वी पर एक पटरा लेकर बैठ गयी। इधर-उधर की बातें करने के पश्चात् स्त्री जी ने पूछा—"कहो कैसे चली हो ?"

उसने कहा इधर ही से होकर शेखपुर जा रही थी। सोचा कि आपको बहुत दिन हो गये देखा नहीं है। आपको देख भी लूँ तथा नमस्ते भी कर लूँ। इस बातचीत के पश्चात् बारिन ने फिर पूछा—"तनवीर बाबू नहीं हैं क्या ? दिखाई नहीं देते, कहाँ हैं, आजकल ?"

स्त्री ने कहा—वह अभी तो यहीं था। थोड़ी देर हुई अभी बाहर गया है। इस वाक्य को सुनने के पश्चात् उसने थोड़ी सी बात इधर-उधर की की और फिर उठकर प्रणाम किया। स्त्री ने पान दिया। पान खाया और चल दी। ड्योढ़ी से गुज़र कर बाहर आई और सारे दालान पर एक सरसरी निगाह दौड़ाई परन्तु तनवीर नही मिला। फिर जो बढ़कर उसने कमरे में झाँका तो तनवीर ने उसको तुरन्त देखकर कहा—"क्या है ?"

उसने करीब बढ़कर धीरे से वह पत्र दिया और धीरे-धीरे कहने लगी—"बिटिया लोगों ने यह पत्र दिया है। तनवीर ने तुरन्त पत्र ले लिया। लिफ़ाफ़े पर अपना नाम पढ़ा और फिर लिफ़ाफ़ा फाड़ कर पत्र निकाला और एक साँस में पढ़ गया। पढ़ने के ही साथ उसके चेहरे पर मुस्कान की लहर दौड़ गई। पत्र इस प्रकार था—

मोहन भवन
सैय्यद बाड़ा, ग़ाज़ीपुर

नामाबर तू ही बता तूने तो देखे होंगे !
कैसे होते हैं वो खत जिनका जवाब आता है !!

श्री तनवीर,

प्रणाम !

हम लोगों ने तुरन्त ही समझ लिया था कि आपने गनपत को मूर्ख बनाया

है परन्तु हम लोगों ने विचार किया कि आखिर इसे मूर्ख बनाने से हम लोग भी क्यों न उचित लाभ उठालें अतः हम लोगों ने भी आपके नहले पर दहला लगा दिया और श्री गनपत से भोग खा लिया।

किन्तु बाद में क्या हुआ न पूछिये। प्राण पर बन गई और ऐसी बनी कि ईश्वर ही ने रक्षा की।

आपकी
"त"

तनवीर यह पत्र पढ़ कर मुस्कराने लगा और वारिन से कहने लगा— "इसका उत्तर भी लेती जाओ" और फिर इसके पश्चात् वह पत्र का उत्तर लिखने बैठ गया।

रणवीर कुटीर
चिश्तीपुरा

प्रिय "त"

आपका पत्र मिला। इस याद के लिये हृदय से धन्यवाद। मेरी समझ में नहीं आता कि आज आपको आवश्यकता क्या थी जो आपने मेरे नहले पर अपना दहला लगा दिया। मेरे नहले ही का हाथ बन जाने देतीं।

आपके ऊपर तो केवल ज़रा सी विपत्ति पड़ी। यहाँ तो यह समझिये कि घर से निकाल दिये गये। घर वालों का पुराने विचार का होना जो कुछ भी कर डालता थोड़ा था। हम क्या जानते थे कि हमारी त्रुटि का बोझ आपको उठाना पड़ेगा। हमने तो यह बात केवल मज़ाक के लिए की थी।

बहरहाल ! आप मुझ पर पूरा भरोसा कीजिए। किसी को भी ये बातें मालूम न होंगी, यदि आपकी प्रसन्नता जीतने ही में है तो हम अपनी हार मान ही लेते हैं।

खत किताबत की सदा रस्म को जारी रखना !
भूल मत जाना ज़रा याद हमारी रखना !!

आपका
"त"

यह पत्र तनवीर ने शीघ्र बारिन को दिया और पास में इस समय कुछ नहीं था केवल जेब में एक चवन्नी थी। उसको निकाल कर बारिन को दिया और कहने लगा—"केवल वकील साहब की बेटी के हाथ में ये पत्र देना।" पत्र लेकर बारिन चली गई।

गो कि धूप बहुत तेज थी और कुछ लूह भी चलने लगी थी परन्तु बारिन सोचती चली जा रही थी कि यह व्यवसाय तो सब व्यवसायों में अच्छा है कि एक ओर से रुपये मिलते है दूसरी ओर से चवन्नी। अब क्या चाहिये। बारह बजते-बजते तक बारिन रायबहादुर साहब के घर पहुँच गई और पत्र वकील साहब की बेटी को छिपे तौर से दे दिया। पत्र को पाते ही वकील साहब की बेटी उनकी भतीजी को धीरे-से बुलाकर कमरे में अलग ले गई कि तनवीर ने खत का उत्तर भेजा है देखो यह है।

भतीजी—शीघ्र पत्र खोलो, पढ़ा जाय। देखा जाय इस उल्लू ने क्या लिखा है ?

बेटी—पहले कमरे का दरवाजा बन्द कर। माता जी आजाएँगी तो आफत ही हो जाएगी।

भतीजी ने तुरन्त दरवाजा बन्द कर दिया और बेटी जोर के स्वर में तनवीर के पत्र को धीरे-धीरे पढ़ना आरम्भ किया।

बे०—रणवीर कुटीर, मुहल्ला चिश्तीपुरा, प्रिय "त"।

भ०—आह ! वाह क्या बात है। वाह बे चुग़द नाम भी नहीं मालूम।

बे०—देख यदि शरारत करेगी तो हम बिलकुल नहीं पढ़ेंगे।

भ—अच्छा रूठो मत, आगे पढ़ो।

बे०—आपका पत्र मिला। याद के लिए धन्यवाद।

भ०—(हँसकर कहती है) वास्तव में बिलकुल चुग़द है।

बे०—(फिर आगे पढ़ती है) मेरी समझ में नहीं आता कि आपको आवश्यकता क्या थी जो आपने मेरे नहले पर अपना दहला लगा दिया, मेरा नहला हो सर होने देती।

भतीजी—अरे दुःख है कि नज़दीक नहीं थी वरना आवश्यकता तो इस बात की थी कि दहले के बजाय सैंडिल लगा दी जाय।

बेटी—(फिर आगे पढ़ती है) हमें क्या मालूम था कि हमारी त्रुटि का बोझ आपको उठाना पड़ेगा............।

भ०—बड़ा दुष्ट है। इसकी मरम्मत अवश्य होनी चाहिए।

बे०—यदि आपकी प्रसन्नता जीतने में है तो मैं अपनी हार मान लेता हूँ।

भ०—पहिले ही मैदान में हार गया..........।

बे०—(फिर कविता की दो पंक्ति पढ़ती है)

खत किताबत की सदा रस्म को जारी रखना !
भूल मत जाना जरा याद हमारी रखना !!

भ०—(ताने के स्वर में) जी हाँ ! हम लोग तो स्वयं ही याद रखेंगे और पत्र व्यवहार करेंगे। आपको अच्छी भाँति पहिचानने के लिए करेंगे.......।

अब वकील साहब की बेटी ने पत्र को मोड़ते हुए कहा—"अब आगे नहीं पढ़ेंगे।" इस पर भतीजी ने झट कूदकर पत्र छीन लिया और पढ़ने लगी—आपका "त" और कहने लगती है—"लो भाई एक नहीं दो हो गए। अभी तक तो रमेश भाई ही इस दिया पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले थे। अब एक साहब और उत्पन्न हो गये। ईश्वर तेरी दशा पर दया करे.......... भाई अच्छा तो यह है कि रमेश भैया अपना नाम वापस ले लें !!!"

बे०—(बनावटी क्रोध के स्वर में) देख मैं मना किये देती हूँ यदि तू ये सब हरकतें करेंगी तो ऐसी पिटाई करूँगी कि तू भी उम्र भर याद करेगी।

भ०—(अपने सीने पर हाथ मारकर) हाय मेरी जान ! तुमको प्यार पर गुस्सा, हमको गुस्से पर प्यार आता है।

बे०—(झेंपकर फिर कहती है) देख तू नहीं मानेगी।

भ०—अरे जालिम इतनी क्रोधित क्यों होती हो ? केवल एक बात बता।

बेटी—(क्रोध के स्वर में) नहीं बताऊँगी।

भतीजी—नहीं तुझे हमारी सौगन्ध !

बे०—क्या बात है पूछ भी............

भ०—पूछें ?............

बे०—हाँ मेरी जान छोड़............पूछ भी ले............

भ०—यदि "त" को "त" से गुणा करदें तो गुणनफल "ब" होगा कि नहीं ?

बे०—(हल्की मुस्कान के साथ) इसका क्या अर्थ ?

भ—अरे जालिम इतना नहीं समझती, 'त" से तेरा नाम तथा "त" से उसका नाम। यदि तेरा उसका विवाह हो जाय तो "ब" से बच्चा होगा और यही गुणनफल होगा।

दो माइनस की जर्ब से होता है एक प्लस !
जालिम खुदा के वास्ते कहदे नहीं नहीं !!

बे०—(क्रोध में पकड़ने को दौड़ती है) शरारती कहीं की। ठहर तो सही-कह कर उसे पकड़ने दौड़ी और वह शीघ्रता से दरवाजा खोल कर कमरे के बाहर भाग निकली और अन्त में उसका बनावटी क्रोध उसको न पकड़ सकने के कारण ठंडा हो गया।

फिर दोनों रसोईघर में पहुँच कर भोजन आदि करने में लीन हो गयीं। भोजन करने के पश्चात् फिर दोनों अपने कमरे में वापस आ गयीं। रात्रि अधिक होने पर विस्तरों पर सोने के लिए दोनों गयीं। और इस समय भतीजी बात में बात पैदा करके उसका मजाक उड़ाने लगी कि न जाने वकील साहब की बेटी भी आज दिल में किस कसक का अनुभव कर रही हैं ?

भतीजी तो आखिर बात करते-करते सो गयी किन्तु बेटी है की नींद न जाने क्यों आज गायब है। बार-बार उस अनदेखे पत्र-लेखक के प्रति विचार उठने लगा। कभी बिस्तर पर उठ कर बैठ गयी कभी लेट गयी और कभी

दिल ही दिल में बातें करने लगी। आखिर इन सब बातों से व्याकुल होकर उसने एक हिन्दी की पुस्तक उठा कर पढ़ना आरम्भ किया। उसने इस किताब को बराबर पढ़ा परन्तु कभी उसको यह पुस्तक इतनी दिलचस्प न प्रतीत हुई जितनी कि यह पुस्तक आज उसको मालूम हो रही थी। इस पुस्तक के विषय का उसके हृदय पर आज अधिक प्रभाव पड़ रहा था। इस पुस्तक की जो पंक्तियाँ उसके हृदय की भावना को प्रकट कर रही थीं वह यह हैं—

मुहब्बत की आग जब किसी के दिल में लगने को होती है तो लगने के पहले वह चिनगारी के रूप में मनुष्य के हृदय में जा लगती है। यह चिनगारी धीरे-धीरे सुलगती रहती है और समय आने पर उसके अन्दर एक बहुत बड़ी लपट पैदा हो जाती है। इसके शोलों की लपट कुछ ऐसी तेज होती है कि बाद में यह अन्दाजा लगाना कठिन हो जाता है कि चिनगारी कैसे बुझे। इसीलिए कहा गया है—

मुहब्बत असर करती है चुपके चुपके !
मुहब्बत की खामोश चिंगारियाँ हैं !!

साथ ही साथ यह कहना मुश्किल है कि किसी का दिल किसी के ऊपर कैसे आ जाता है !

प्रेम एक अन्धा भिखारी है जो भिक्षा माँगने के लिए किसी भी द्वार पर जा सकता है और इस अन्धे भिखारी की आशा का अन्दाजा लगाना बहुत ही कठिन है क्योंकि वह किसी चीज को देखता नहीं। हर चीज को सुनता है और हर चीज जो उसको सुन्दर लगती है उसके हृदय में लगने वाली आग के ईंधन का काम देती है। यह कहना कठिन है कि प्रेम किस समय और कैसे होता है। यह किसी भी समय में और कभी भी हो सकता है क्योंकि प्रेम का अर्थ दो दिलों का मिल जाना ही है और कुछ भी नहीं।

पुस्तक को पढ़ती जाती है। भाँति-भाँति के विचार उसके हृदय में आते जाते हैं और अन्त में वह भी थक कर सो जाती है। जब प्रातःकाल होने पर भी ये दोनों नहीं उठीं, तो पतिया आयी और इन दोनों को उठाया और मुहँ

हाथ धुला कर इन दोनों के लिए चाय बनायी। ये सब चाय पीकर इधर-उधर की बातों में लीन हो गयीं। इतने में उमेश बाबू के पुत्र रमेश बाबू आ पहुँचे। रायबहादुर की स्त्री से "नमस्ते" किया और बैठ गये। आज वकील साहब की बेटी को भी रमेश के अन्दर वह आकर्षण नहीं दिखाई पड़ा जो बहुधा इसके पूर्व मालूम होता था। आज क्यों ?

घर की मुर्गी दाल बराबर !!

जहाँ तक रमेश तथा तनवीर का सम्बन्ध है दोनों न एक दूसरे को जानते हैं तथा न एक दूसरे देखे हुए हैं। इसका कारण यह है कि तनवीर के पिता चूँकि राजकीय हाई स्कूल में अध्यापक हैं अतः उनकी नौकरी का अधिकतर भाग बलरामपुर, गोंडा तथा बारहबंकी में गुजरा। केवल नौकरी के कुछ वर्ष अपनी मातृभूमि ग़ाज़ीपुर में व्यतीत कर रहे हैं क्योंकि बिलकुल अन्तिम काल में यह ग़ाज़ीपुर बदल कर आए हैं। अतः तनवीर की पढ़ाई भी दसवें कक्षा तक दूसरे नगरों में हुई है और उसके लिये ग़ाज़ीपुर परदेश बना रहा। दसवें के बाद उसकी पढ़ाई लखनऊ में हो रही है। इसके विपरीत रमेश की शिक्षा ग़ाज़ीपुर ही में हुई है और अब उसने इलाहाबाद से बी० ए० पास कर लिया है और एक सप्ताह के अन्दर मलाया जाने वाला है।

अध्याय सातवाँ

हुस्नो इश्क़ की लाग में अक्सर छेड़ उधर से होती है !
शमा ने शोला जब लहराया उड़के चला परवाना भी !!

लखनऊ विश्वविद्यालय तेइस जुलाई को खुलने वाला है। आज चार जुलाई हो चुकी है जिसका अर्थ यह है कि वहाँ पर पढ़ने वालों का वह नशा जो छुट्टी के कारण उनके मस्तिष्क पर चढ़ा रहता है अब समाप्त होरहा है और लखनऊ विश्वविद्यालय के मित्रों में अब परस्पर पत्रों द्वारा इस बात का निर्धारण हो रहा है कि लखनऊ किस तारीख को चला जाय ताकि यात्रा विश्राम और दिलचस्पी से कटे। चुनांचे तनवीर के सबसे प्यारे मित्र मिस्टर काशी नाथ, जो एक सुन्दर युवक है, का एक पत्र तनवीर के नाम आया।

मिस्टर काशी नाथ प्रतापगढ़ के विख्यात जज मिस्टर जोशी नाथ के पुत्र हैं। चूँकि अपने माता-पिता के इकलौते लड़के हैं इसलिए बहुत प्यारे भी हैं। इनकी मंगनी बचपन ही से शहर के एक प्रसिद्ध एडवोकेट मिस्टर रविन्द्रनाथ की पुत्री रंजन से हो गई है। श्री रविन्द्रनाथ काशी को बहुत मानते हैं और इनका मकान काशी के मकान से बिलकुल मिला-जुला है। केवल इन दोनों की मरदानी बैठक तो पृथक्-पृथक् है परन्तु जनाना घर

बिलकुल एक ही में मिला हुआ है और आना-जाना भी बराबर रहता है क्योंकि बीच में केवल एक लम्बी ड्योढ़ी पड़ती है।

मि० रविन्द्र वकील काशी को कई कारणों से बहुत प्रेम करते हैं। एक तो काशी बहुत ही सुन्दर तथा साधारण स्वभाव का लड़का है दूसरे उनका होने वाला दामाद है। शिक्षानुसार यह इस समय कानून की शिक्षा के अन्तिम वर्ष में है और लखनऊ विश्वविद्यालय के ओल्ड होस्टल में रहता है।

परन्तु रंजन भी गज़ब की लड़की है। एक तो सारा शरीर अपनी आप मिसाल है, नमक नाक, नक्श बहुत सुन्दर, चेहरे का रंग इतना गाढ़ा है कि यदि मुँह में पान खा लेती है तो गर्दन लाल दिखाई देने लगती है और शरीर इतना खूबसूरत कि—बस क्या कहूँ क्या समझिए वाला विषय है। हर काम में माहिर, सोना-पिरोना, पढ़ना-लिखना, लगभग सब आता है और मुख्य बात यह है कि इसको उर्दू साहित्य और संगीत से इतना प्रेम है कि यदि आज इसके घर वाले इसकी ऊँची शिक्षा कराए होते तो वह एक बार प्रसिद्ध कवि या अफसाना निगार अवश्य बनती। और मिस्टर काशी नाथ दिल के इतने अच्छे आदमी हैं कि यदि कोई एक बार या दो बार उनसे भेंट करे तो इनका बहुत गहरा मित्र बन जाता है।

इन दोनों की मंगनी हो चुकी थी। दोनों युवक भी थे और घर भी मिला-जुला। इसलिए अब खुल्लम-खुल्ला तो मिल-जुल नहीं सकते अलबत्ता एक बार या दो बार हृदय को सन्तोष देने के लिए दोनों कहीं न कहीं शान्ति से खड़े होकर अपनी झलक एक दूसरे को अवश्य दिखा देते हैं। इस तरीके से दोनों को बराबर सही गिज़ा मिलती रहती है। परन्तु साथ ही साथ दोनों को एक दूसरे की इज्जत का भी ख्याल रहता है ताकि बदनामी न हो जाय। यह भी वास्तविकता है कि दोनों कल होने वाले विवाह को चाहते हैं कि आज ही हो जाय, किन्तु क्या किया जाय। श्री रवीन्द्रनाथ विवाह के लिए उस समय तक तैयार नहीं हैं जब तक कि लड़का पूरी शिक्षा ग्रहण न करले और क़रीब-क़रीब यही राय श्री जोशी नाथ की भी है।

वियोग और तड़फन की रातें केवल इस आशा पर कट रही हैं कि एक

दिन मिलाप होगा तनवीर, सागर और श्रीमती सागर काशी के मुख्य मित्रों में से हैं और इन लोगों को काशी की इस मँगनी तथा मंगेतर की पूरी मालूमात है। और यह लोग इस सिलसिले की सारी बातें जानते हैं और काशी ने भी बातों ही बातों में रंजना से भी तनवीर, सागर और श्रीमती सागर का परिचय कर दिया है। इसलिये अब तनवीर के नाम काशी जो भी पत्र लिखता है उसमें इन लोगों के नाम रंजना का नमस्ते आना आवश्यक है। लखनऊ विश्वविद्यालय अब खुलने के करीब ही है या यूँ समझिए कि विदाई का समय करीब आ रहा है। इसलिए आदत के अनुसार वह तनवीर को एक पत्र लिखने बैठा कि बताओ किस दिन लखनऊ चल रहे हो।

प्रतापगढ़
ता० ५ जुलाई

माई डियर तनवीर !

अभी-अभी कल तुम्हारा ही खत मिला। हालत से आगाही हुई। विश्वविद्यालय खुलने का समय आ गया। मेरे लिए विदाई का ज़माना करीब आ गया है। अपनी जिन्दगी का क्या हाल लिखूँ। रात को एक आँगन में हम सोते हैं और दूसरे आँगन में क़ातिल सोता है। इसमें कोई शक नहीं कि अब की छुट्टियों में परमात्मा की बड़ी कृपा रही और रंजना से खूब बात हुई। रंजना और मेरे बीच बातचीत जो हुई है उसमें तुम्हारा भी जिक्र हुआ है। तुम्हारी हालत, और आदत को सुनकर रंजना ने तुमको बावला कहा है। मुझे नहीं मालूम कि तुम्हें इस पदवी के मंजूर करने में कहाँ तक सहमति होगी।

रात में हम दोनों मकान के पीछे वाली खाना–बाग में रोज़ाना मिलते हैं। घंटों धीरे-धीरे बातें होती रहती हैं। इन बातों के गवाह केवल आकाश पर चमकने वाला चन्द्रमा और हँसने वाले तारे हैं और कोई नहीं या हम दोनों के दिल।

दिन में हम केवल अपने दिल को रंजना की उस आवाज़ से, जो हम अपने कमरे में बैठकर सुना करते हैं, केवल उसी से अपने दिल को शान्ति दे लेते हैं या किसी की इन दो पंक्तियों में यूँ समझो कि :—

तुझे क्या पता बड़ी चीज़ है, तेरी इक अदा तेरी इक सदा !
जो बहक रहे थे बहल गये, जो गिरे थे गिर के सँभल गये !!

बड़ी खुशी की बात यह है कि इस बार तुम्हारी इच्छानुसार रंजना ने अब वचन दिया है कि वह अब हमको लखनऊ जरूर खत लिखा करेगी। लो अब यह भी प्रश्न हल हो गया। अब तो तुम खुश हो। रंजना तुमको बहुत-बहुत नमस्ते कहती है और इनको तुम्हारे देखने का बड़ा शौक़ है। इस खत का जवाब जल्द देना और इस बात से सूचित करना कि तुम किस दिन और किस तिथि में लखनऊ जाने का इरादा रखते हो। जवाब जल्द देना।

तुम्हारा मित्र
काशी

यह पत्र लिख कर काशी ने लिफ़ाफे में बन्द किया और नौकर को दे दिया कि डाकखाने में छोड़ आये। नौकर लिफ़ाफा ले गया और डाकखाने में छोड़ आया। दो दिन के पश्चात् यह पत्र तनवीर को मिला और उसने उसको खोल कर पढ़ना आरम्भ किया। काशी के इस पत्र के एक-एक वाक्य पर हँसता था। यद्यपि पत्र लिखने में उसके मित्र उसे आलसा समझते थे फिर भी काशी के इस पत्र का उसकी ताकीद के अनुसार उत्तर शीघ्र दे रहा है। लीजिए इसका भी पत्र पढ़िए जो कि काशी के इस पत्र का उत्तर है।

रणवीर कुटीर
ग़ाज़ीपुर

मेरे मित्र,

तुम्हारा पत्र मिला। ताकीद के अनुसार पत्र का जवाब शीघ्र दे रहा हूँ। आशा है कि इस बात का धन्यवाद दोगे। रंजना देवी को बहुत-बहुत नमस्ते कहना और मेरी ओर से उनको कविता की पंक्ति सुना दीजिएगा।

मेरी मुहब्बत का जवाब और ज्यादा!
मिलने है अभी मुझको खिताब और ज्यादा!!

अपनी क्या लिखूँ। हमारे माता-पिता को हमारे विवाह की चिन्ता नहीं है। यद्यपि आजकल रोज़ाना प्रातःकाल उठकर पिता के सामने धोती धोया करता हूँ किन्तु वह भी विचित्र आदमी हैं। इस धोती धोने की कुछ महत्ता ही नहीं समझते और तो और रोज़ाना दोपहर में हमको समझाते हैं कि अपनी

माता का कहना मानो। अपनी माता की आज्ञा पर चला करो। उनसे प्रेम करो। योग्य होने का यही अर्थ है। मित्र काशी अब तुम्हीं बताओ हम अपनी माता से क्या प्रेम करें इसलिए कि पिताजी के प्रेम से उनको फुरसत नहीं मिलती। वह हमसे क्या प्रेम करेंगी ?

सन्तोप का फल मीठा होता है केवल इसी आशा पर सन्तोष से काम ले रहा हूँ। देखिये कब आंधी चलती है और कब दो एक फल हमारे हाथ लगते है।

ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुज़री 'ग़ालिब' !
हम भी क्या याद करेंगे कि खुदा रखते थे !!

जैसा कि आजकल तुम समाचार-पत्र में पढ़ते होगे इस वर्षा की ऋतु में ग़ाज़ीपुर में वहुत जोरों की वाढ़ आई है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है। गंगा अपने पूरे जोश पर है। पानी मिनट-मिनट पर बढ़ रहा है। गाँव के गाँव बहते चले जा रहे हैं। इस पर तुर्रा यह है कि की वर्षा भी जोरों पर है।

नदी के किनारे पर जितने मोहल्ले थे सब खाली करा दिये गए हैं। घर धड़ाधड़ गिर रहे हैं। सब स्कूल बन्द हैं। और इन स्कूलों की इमारतों में सैलाब जदगान ठहरे हुए हैं। उनका रोना पीटना देखा नहीं जाता। शहर की हर बड़ी इमारत आजकल आदमियों से भरी हुई है। रेल की पटरियाँ हिल सी गई हैं। ग़ाज़ीपुर के इलाके में गाड़ी बहुत धीरे-धीरे चला करती है।

ऐसी सूरत में हम तुमको क्या लिखें। किस दिन लखनऊ चलेंगे। परमात्मा की दया है कि हमारे शहर में केवल हमारा मोहल्ला सैलाब की दृष्टि से बचा हुआ है। घर वाले आजकल रेल की यात्रा को रोकते हैं। क्योंकि ट्रेन का धीरे-धीरे चलना कुछ अजीब खतरनाक है। लखनऊ जाने की आज्ञा नहीं देते।

ज्योंही कि हालत ठीक होगी हम तुरन्त तुमको पत्र द्वारा सूचित करेंगे कि हम किस दिन चल रहे हैं। मालूम नहीं कि तुम्हारी ओर भी वाढ़ का प्रभाव है कि नहीं। समाचार-पत्रों द्वारा तो यही पता चला है कि तुम्हारी ओर बाढ़ का प्रभाव बिलकुल ही नहीं है। इस समय इस वर्षा ने ग़ाज़ीपुर की ओर भी नष्ट-भ्रष्ट कर रखा है।

—तनवीर

यह पत्र तनवीर ने लिखकर बुद्धू को दिया कि उसको अभी ले जाकर छोड़ आए। आज्ञानुसार उसने ऐसा ही किया और विचार करने लगा कि लगभग इस समय दो बज रहे हैं। यह पत्र आज संध्या को डाक से निकल जायेगा। यह सोच ही रहा था कि अपने हाथ में समाचार-पत्र उठाकर पढ़ने लगा और उसी समाचार-पत्र के पढ़ने में लीन था कि अचानक फाटक के अन्दर एक सिपाही प्रवेश करता है। खाकी वर्दी लाल पगड़ी। खैरियत आखिर क्या बात है?

आते ही उस सिपाही ने पूछा—मास्टर रणबीर हैं? तनवीर ने कहा—जी हाँ, हैं तो। तो सिपाही ने फिर बुलाने को कहा। तनवीर ने पूछा, क्यों? उसने उत्तर दिया—कुछ नहीं कचहरी से एक लिफ़ाफा आया है। तनवीर अन्दर गया। उसके पिता सो रहे थे। उनको जगाया और वह बाहर आये। सिपाही ने लिफ़ाफा दिया और उन्होंने लिफ़ाफा खोला। तनवीर वहीं सामने खड़ा था। यह लिफ़ाफा ग़ाज़ीपुर के जिलाधीश के यहाँ से आया हुआ था। और बहुत आवश्यक पत्र था। उसका मजमून इस तरह था—

श्री मास्टर रणबीर
मु० चिश्तीपुरा
गाजीपुर

श्रीमान्,

चूँकि शहर में भयानक बाढ़ आई हुई है, पानी हर समय बढ़ रहा है और बाढ़ग्रस्त भाग के लोग व्याकुल हैं, बहुत से लोग इधर-उधर बड़े-बड़े भवनों और घरों में ठहराये जा चुके हैं और बहुत से लोगों के लिये घर खोजे जा रहे हैं, पुलिस के थाने से खबर आई है कि आपके पास दो खन्ड मकान है। रायबहादुर श्री मोहनलाल वकील साकिन मु० सैयदवाड़ा ग़ाज़ीपुर के घर के चारों ओर पानी फैला हुआ है। अतएव उस घर में रहने वालों को यह आज्ञा तुरन्त दी गई है कि वह अपना घर छोड़ कर आपके घर कुछ दिनों के लिए ठहर जायँ। उनका राशन कार्ड उसी मुहल्ले की दुकान में बना दिया गया है।

इसलिए मैं ग़ाज़ीपुर के कलक्टर के नाते आपके नाम यह आज्ञा देता हूँ कि अपना एक खण्ड मकान तुरन्त खाली कर दें, जिससे बाढ़ग्रस्त लोग इसमें ठहरें। इस

सम्बन्ध में किराया आदि लेना सख्त अपराध है और इस आज्ञा-पत्र का पालन करना अति आवश्यक है।

हस्ताक्षर.............................

कलक्टर

अध्यापक श्री रणवीर ने लिफ़ाफे को लिया और उस पर लिख दिया कि मुझे कोई एतराज़ नहीं है। सिपाही ने नमस्ते किया और रवाना हो गया।

उसके जाने के पश्चात् मास्टर साहब भी अपने ज़नाने घर में चले गये ताकि घर की मालकिन को भी जिलाधीश का पत्र सुना दें। अब दरवाज़ा बिलकुल अकेला रह गया और तनवीर अपने कमरे में चला गया। यहाँ पर एक व्यक्ति के तुल्य आइने के सामने खड़ा होकर अपनी आइने वाली शक्ल से यूं बातें करता है।

वाह रे परमात्मा, खूब रूप दिखाते हो अपना। तुम्हारी कृपा परमात्मा! मैं लज्जित हूँ कि पूजा-पाठ नहीं करता। अब बराबर पूजा-पाठ कियां करूंगा। तुम्हें हमारी सौगन्ध है। हमारा सदा विचार रखा करो। और फिर कहता है—वाह रे नीली छतरी वाले!!

अध्याय आठवाँ

न सोचा न समझा न पाया न जाना !
हमें आ गया खुद बखुद दिल लगाना !!

दूसरे दिन सबेरा होते ही रायबहादुर साहब का सारा परिवार अपने नौकर-चाकर, सामान आदि सहित रणवीर साहब के दरवाजे पर आ गया है और सब आने वालों ने उनके जनाने घर के दूसरे खन्ड में प्रवेश करके अपना सारा सामान ठीक-ठिकाने से लगा लिया और अब उनके इस घर में रायबहादुर का दोपहर का भोजन पकना आरम्भ हो गया। रणवीर की स्त्री तथा उनके नाते की स्त्रियाँ, जिनका घर उनके घर से मिला हुआ है, इन सब घरों की स्त्रियाँ, रायबहादुर और रायबहादुर की स्त्री का स्वागत करने तथा मिलने के लिए आयीं। महिलाओं को तो केवल पान खाने तथा गप्प मारने के दूसरा कोई काम होता ही नहीं। इसलिए सभी गप्प मारने में लीन हो गयीं। इस मेल-मिलाप के हो जाने के कारण रायबहादुर साहब की स्त्री इस व्याकुलता में अपना घर छोड़ने का सारा खेद भूल गई और सबके साथ ऐसा मेल-जोल हो गया जैसे मालूम होता है कि बहुत पुरानी मुलाकात है, या बहुत पुराना मेल-जोल है और सबके सब अपने नाते वाले हैं।

बिलकुल इसी भाँति रायबहादुर साहब की लड़की तथा भतीजी से भी

कमला तथा दूसरे नाते की लड़कियों से ऐसा मेल-जोल हो गया कि कहना क्या। आपस में बहुत गहरी मित्रता हो गयी और इन लड़कियों ने अपने शौक के अनुसार इधर-उधर की बातें और धम्मा चौकड़ी भी आरम्भ कर दी।

अभी रायबहादुर की स्त्री को आए हुए तीन-चार ही रोज गुज़रे होंगे कि एक दिन तनवीर की चाची के घर पर कथा कहलवाने का कार्यक्रम निश्चित हुआ। इस कथा में सम्मिलित होने का न्यौता रायबहादुर की स्त्री और लड़कियों के पास भी आया। चाची का घर चूँकि मिला-जुला घर है परन्तु कई घरों से गुज़रने के बाद उनका घर आता है तथा रायबहादुर साहब जिस घर में ठहरे हुए हैं उस घर में किसी भी घर में जाने के लिए तनवीर के घर से होकर गुज़रना आवश्यक है। इस वास्ते कि इस घर का मार्ग तनवीर के घर की ओर से है।

जब चार बजे, संध्या का समय हुआ, कथा का भी समय यही था; अतः हर घर से महिलाएँ तनवीर की चाची के घर में एकत्र होने लगीं। वहाँ पर भीड़ लगने लगी। तख्त बिछा हुआ था। सुगंध तथा फूल की सुगन्ध से सारा घर झका-झक था। यह कथा भी क्या थी कि महिलाओं के वस्त्रों की नुमाइश। जो महिला आ रहीं थीं वह अच्छे-अच्छे वस्त्रों से लदी हुई थीं। प्रत्येक जो पहुँच रहा था एक नवीन सजावट-बनावट के साथ। रायबहादुर साहब की स्त्री, रणवीर साहब की स्त्री तथा कमला आदि सब पहुँच चुकी थीं। रायबहादुर की भतीजी भी कपड़ा पहिन कर चलने की तैयारी कर रही थी। भतीजी ने तो शीघ्र ही कपड़े पहिन लिये और बेटी अभी मुँह धोने ही में लगी थी। जल्दी कर जल्दी कर—कहते-कहते भतीजी झुँझलाकर चली गयी और कहती गयी—मैं जा रही हूँ, तू जब चाहना आना। वह तो जल्दी से रवाना हो गयी कि कहीं कथा का अन्त न हो जाय। भतीजी के चले जाने के पश्चात् बेटी ने जल्दी-जल्दी मुँह धोया और कपड़े बदलना आरम्भ किया और अपनी तैयारी में लग गई। उसने भी विचार किया यदि उस समय पहुँचे कि जब कथा का अन्त हो जाय तो सब लोग हँसेंगी और कहेंगी कि केवल प्रसाद लेने आई है। बहरहाल वह भी तैयार हो गयी और अपना कमरा आदि बन्द करके चल पड़ी। चूँकि मकान का मार्ग तनवीर के घर से है इसलिए वहाँ से होकर गुज़रना पड़ा। तनवीर के घर की जितनी महिलायें थीं वे सब इसी कथा को सुनने के लिए

जा चुकी थीं और ये अकेली इधर से उधर गुजर रहीं थीं। अभी वह तनवीर के घर के साहबान (खमिए) के कोने के पास ही पहुँची होगी कि यकायक अपनी ड्योढ़ी से होते हुए तनवीर ने अपने घर में प्रवेश किया। दोनों की अचानक मुठभेड़ हो गयी और दोनों ठिठक कर रह गये। लड़की ने अपने घर का द्वार वन्द कर दिया इसलिए उधर लौट कर नहीं जा सकी। आगे जाय तो तनवीर से मुटभेड़ हो जाती है। तुरन्त अपनी साड़ी का आँचल बिछा करके आड़ कर ली। तनवीर भी उसके सामने बिलकुल अचम्भे में खड़ा हो गया। घर बिलकुल खाली है क्यों न कुछ बात ही कर ली जाय।

दोनों के अचानक दिल धड़के, दोनों की निगाहें टकराईं !
वो अपनी जगह महजूब से हैं, मैं अपनी जगह शरमाता हूँ !!

तनवीर लड़की की सुन्दरता देखकर दंग रह गया। लड़की बेचारी अलग व्याकुल कि क्या करे। कथा में सम्मिलित होना भी आवश्यक है। सब जा चुके हैं, देर हो रही है और यह लड़का पर्वत की भाँति अटल खड़ा है। लज्जा से उसका मुँह लाल हो उठा। पसीना अलग तेजी से निकलने लगा परन्तु तनवीर बाबू ने यही सोचकर कि यह अवसर बहुत मूल्यवान है, बातचीत ही आरम्भ कर दी।

तनवीर—(धीरे से) आप कहाँ जा रही हैं ?............बोलिए............ अरे कुछ.......तो बोलिए.......बताइए न आप कहाँ जा रही हैं ?

(लड़की को पसीना तेज़ी से आने लगा और मुँह से आवाज़ नहीं निकलती थी। अन्त में बड़ी हिम्मत से कहती है)............आप रास्ता छोड़ दीजिये।

त०—क्यों............?

लड़की—हट जाइये न रास्ते से............।

त०—बताइए कहाँ जा रही हैं ?

ल०—(काँपते स्वर में) कथा के लिए देर हो रही है............।

त०—आपका नाम............?

ल०—हट जाइये कोई देख लेगा।............

तनवीर—(झट अपनी जेब से चाकू निकाल कर अपने हाथ पर रख कर दिखाता है) अच्छा यदि नाम नहीं बता रही है तो लीजिए, इस चाकू से मेरा गला काट दीजिये।..........

लड़की—(ज्योंही इस सीधी लड़की ने चाकू देखा, तो होश उड़ गये, घबरा कर कहने लगी) मुझे जाने तो दीजिये।

त०—नाम बताइए या गला काटिये..........।

ल०—आप ईश्वर के लिए मार्ग से हट जाइये।

त०—आपको ईश्वर की सौगन्ध, नाम बताइये।

ल०—(घबराये स्वर में कहती है) तारा।

त०—(मुस्कान के स्वर में) मुझे तनवीर कहते हैं।

यह कहकर ड्योढ़ी में होता हुआ वह बाहर चला गया और तारा भी घबराती हुई पग उठाती हुई कथा में चली गई। जिस समय कथा में पहुँची उसकी छाती धड़क रही थी। चेहरे से हैरानी तथा व्याकुलता प्रकट हो रही थी। कथा में पढ़े जाने वाले श्लोक आदि उसकी समझ में बिलकुल नहीं आये। मुख का रंग पीला पड़ गया था। लाख हृदय पर अधिकार पाने की कोशिश कर रही थी किन्तु एक कुँआरी कन्या की जो हैरानी तथा व्याकुलता नेत्रों से प्रकट हो सकती है, वह दिखाई पड़ रही थी। वह बिलकुल व्याकुल दशा में थी। उसने संकेत करके एक दाई से गिलास पानी माँगा और पी गई। अब जरा कुछ शान्ति हुई। उसके चेहरे और तरीके की इस सारी व्याकुलता को रायबहादुर साहब की भतीजी देख रही थी कि यह इतनी व्याकुल क्यों है। डर गई है क्या? क्यों उसके नेत्रों से परेशानी प्रकट हो रही है?

खैर, साहब कथा समाप्त हुई। सब लोग अपना-अपना प्रसाद लेकर अपने-अपने घर चल दिये। रायबहादुर की स्त्री अपनी पुत्री तारा तथा भतीजी सहित घर आयीं। मन्दिर में घण्टों की आवाज़ आना आरम्भ हो गयी तथा घरों में लालटेनें जलनी शुरू हो गयीं। रायबहादुर की भतीजी तारा से कहती है—आओ चलें, अब सन्ध्या हो रही है। पान लगा दिया जाय किन्तु तारा आज असाधारण तौर से इस समय चारपाई पर लेट गयी। वह कुछ प्रकट नहीं करना

चाहती थी परन्तु उसका मस्तिष्क किसी खास सोच-विचार में पड़ा हुआ था। बार-बार कोई विचार आता है और उसको परेशान कर रहा है। तथा भतीजी तारा के इस हिलने और थरथराने को बड़े विशेष तौर से ख्याल कर रही थी। सोचती है कि मामला क्या है। चुनांचे तारा जिस चारपाई पर पानदान लाकर रखती है और पान बनाना आरम्भ कर देती है वह तारा से इधर-उधर की बातें करने लगती है किन्तु वह किसी बात का उचित उत्तर नहीं पाती। ऐसा प्रतीत होता है कि तारा का मस्तिष्क इस समय कहीं और है।

रायबहादुर साहब की स्त्री मूर्ति के सामने पूजा-पाठ में लग गईं। इसके पश्चात् रणवीर की स्त्री के यहाँ गप्प लड़ाने चली गईं। भतीजी ने जो इधर दृष्टि डाली तो देखा कि मैदान खाली है। सहन में कोई नहीं है। इस अवसर से लाभ उठाने की सोचती है।

चुनांचे पहिले तो अधिक इधर-उधर की बातों से तारा को बिल्कुल अपनी बातचीत में लगा लिया। इसके पश्चात् जब उसने देखा कि तारा तो बिलकुल उसकी बातचीत में फँसी हुई है तो यूँ कहती है।

भतीजी—तारा एक बात पूछूँगी बताओगी ?

तारा—पूछ..................।

भ०—नहीं, तू नहीं बताएगी। वचन दो कि बताएँगे, तो पूछें।

ता०—सत्य कहती हूँ बताऊँगी।

भ०—खा ईश्वर की कसम।

ता०—ईश्वर की सौगन्ध ! सत्य बतायेंगे।

भ०—अच्छा तो बता जब तू कथा में आई थी तो उस समय तेरा मुख व्याकुल क्यों था ? तू कांप क्यों रही थी ? तुझे पसीना क्यों निकल रहा था तथा तूने पानी क्यों पिया था ?

ता०—मैं मार्ग में डर गई थी।

भ०—अरे पगली तू हमें बनाती है। चार बजे संध्या में कोई डरता है। सच बता क्या बात थी ?

तारा—(थोड़ी देर मौन साधकर) अच्छा ईश्वर की सौगन्ध खा तू किसी से कहेगी तो नहीं ?

भतीजी—नहीं, ईश्वर की सौगन्ध, बताओ।

ता०—हम कथा में सम्मिलित होने के लिए कमला के घर से होकर जा रहे थे। कमला का घर बिलकुल खाली था कोई भी नहीं था।

भ०—फिर क्या हुआ ?

ता०—(लज्जित हुए) मार्ग में अचानक तनवीर आगये। उनका और मेरा सामना हो गया। अब मैं बिलकुल कठिनाई में पड़ गई कि क्या करूँ। वह बेचारे भी सामने खड़े थे। कहने लगे नाम बताइये और यदि नहीं………… बताती तो ? हमारी ओर चाकू बढ़ाकर कहने लगे, लीजिए इस चाकू से मेरा गला काट दीजिए। मैं बिलकुल डर गई कि क्या करूँ…………?

भ०—तो फिर तूने क्या किया ?

ता०—हमने धीरे से कह दिया "तारा" और फिर वह चले गए।

भ०—ऐ हैं ऐसे अवसर पर हम न हुए।

ता०—क्यों !!!

भ०—वरना जिस समय चाकू उन्होंने बढ़ाया था कि लीजिए गला काट दीजिए तो तुरन्त चाकू लेकर बाबू साहब का कान ही काट लेते। यह कह कर हँसती है।

ता०—(मुस्कराकर) चल चुड़ैल कहीं की। वह ऐसे नहीं, उनके नयनों में आकर्षण है।

भ०—(चिल्लाकर) हाय !! अरे मेरी बन्नों तो हाथ से निकल गई। अब परमात्मा ही रक्षा करे रमेश भैया की। (मज़ाक के स्वर में कहती है) मेरी बिटिया ज़रा ख्याल रखना तुम्हारी मँगनी रमेश भैया से हो चुकी है।

ता०—(मुँह बनाकर) अरे चल, मँगनी का मतलब तो गवना विवाह नहीं। मंगनी तो होती ही रहती है और वह भी हम लड़कियों की। जब सौ जगह मंगनी होती है तब एक जगह विवाह होता है।

भतोजी—अच्छा ! मेरी बन्नो अभी तो !

इब्तदाये इश्क़ है रोता है क्या !
आगे आगे देखिये होता है क्या !!

तारा—(क्रोध में) कुछ नहीं होगा। जो हम चाहेंगे वह होगा। आगे ईश्वर की इच्छा है।

इतने में इधर भतोजी पान लगा चुकी। उधर श्रीमती जी भी घूम-घाम कर घर आ गईं और किसी आवश्यकता से पतिया को आवाज़ दी और सब बातें खतम हो गईं। फिर दोनों ने बातचीत का विषय बदल दिया और श्रीमती जी भी वातचीत में लीन हो गईं।

शुरूए मुहब्बत अरे तोबा तोबा !
क़यामत गुज़र जाय कोई न जाने !!

इधर तनवीर ने जब से तारा को देखा उसको बार-बार उसी का विचार आने लगा। उसके हृदय पर अजीब प्रकार का प्रभाव पड़ा था। कभी उसका गोरा चेहरा याद आता है तो कभी उसकी बड़ी-बड़ी आँखें। कभी गुलाबी गाल तो कभी उभरा हुआ सीना। हर दफा जो ख्याल आता है वह तारा ही का आता है। वह तारा की इस पहली भेंट ही में है।

अदायें लेके आई है वो फ़ितरत के खज़ानों से !
जगा सकती है महफ़िल को नज़र के ताज़ियानों से !!
वो मलका है खिराज उसने लिया है बोस्तानों से !
बताऊँ क्या तुझे ए हमनशी किससे मुहब्बत है !!

तनवीर कभी टहलता है, कभी बैठता है कभी मुस्कराता है। गरज़ कि संध्या हो ही गई थी। अब रात्रि दिन को अपनी गोद में ले रही है। इसी समय घर में से कल्लू की माता आती है और भोजन करने के लिए बुलाती है। तनवीर घर में गया। क्या देखता है कि पिता अभी पूजा-पाठ ही में लगे हैं। चुनांचे अपना भोजन मँगवाया और खा लिया। भोजन करने के पश्चात् तनवीर अपनी बहिन कमला से इधर-उधर की बातें करने लगा और फिर संकेत करके कमला को किनारे बुलाकर ले गया और धीरे-धीरे पूछने लगा।

तनवीर—कमला ! एक बात तो बताओ ।

कमला—पूछिए ।

त०—रायबहादुर साहब के घर में जो लोग आए हैं उनमें तारा किसका नाम है ?

क०—रायबहादुर साहब के साथ तीन महिलाएं आई हैं । एक उनकी स्त्री, दूसरी उनकी बेटी और तीसरी उनकी भतीजी ।

त०—तारा किसका नाम है ?

क०—उनकी पुत्री का नाम है ।

त०—भतीजी का नाम क्या है ?

क०—"चन्दा" ।

त०—अच्छा अब जाओ ।

ये सब बातें पूछने के पश्चात् तनवीर बाहर चला गया । परन्तु अब कमला के मस्तिष्क में भी यह बातें चक्कर काटने लगीं कि भाई ने इन लड़कियों का नाम क्यों पूछा ? क्या बात है ?

तनवीर बाहर जाकर बिस्तर पर लेट गया । इधर-उधर की बातों में ध्यान लगाने की कोशिश करने लगा किन्तु जब ख्याल आता है तो तारा ही का । कभी उसकी थर्राई हुई आवाज़, कभी उसका तिरछा घूंघट । यानी आज रात उसके दिल ही दिल में अच्छी खासी तड़पन है और बिलकुल उसी प्रकार आज तारा के साथ में अपनी मिसाल की पहली घटना है । माता जी ने लम्बी तान ली है । चन्दा भी सो गई है । रायबहादुर भी सोये हुए हैं । परन्तु तारा है कि रह कर तनवीर के ख्याल में डूबी हुई है । निद्रा उसके पास फटकती ही नहीं है । अब रात्रि के दो बजने को आए और किसी तरह तारा को भी नींद लग गई और वह सो गई । दूसरे दिन प्रातःकाल जब तनवीर उठा तो उसकी एक अजीब प्रकार की दशा थी । फिर वही तारा का ख्याल आ गया और आखिर में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों से प्रेरित हो उसने तारा के नाम एक पत्र लिखा ।

श्रीमती तारा देवी !

गुरूये इश्क़ की बेताबियों की है क़सम तुमको !!

कल हमारी आपकी अचानक भेंट हुई। न जाने इस भेंट का प्रभाव हृदय पर इतना ज्यादा क्या है कि रात की नींद हराम हो गई। न जाने क्या बात है ? आपने चाकू से मेरा गला क्यों नहीं काट दिया ? आप लखनऊ कब चलिएगा। यूनीवर्सिटी खुलने को आई। रवानगी की सही तिथि और दिन से कृपया सूचित कीजिए।

आपका

"तनवीर"

इस पत्र को लिखने के पश्चात् लिफ़ाफे में बन्द किया और घर में आकर धीरे से कमला को बुलाया और कहा कमला एक काम करदे।

कमला—कौन सा काम ?

तनवीर—पक्का वचन दे देते हैं, तुझे लखनऊ से बहुत सुन्दर चीज भेजेंगे।

क०—अरे ! काम भी बताइये।

त०—यह पत्र है, इसको छिपे तौर से ले जाकर तारा को दे देना। देख खबरदार ! किसी को पता न चले। कमला (पत्र हाथ में ले लेती है) और कहती है यह पत्र हम ले जाकर बाबू जी के हाथ में दे आते हैं। तनवीर (डर-कर) ईश्वर की कसम यदि ऐसा हुआ तो मारे जूतों के मेरी खोपड़ी रंग देंगे।

क०—खैर पत्र तो हम ले जाकर तारा को दे देंगे, किन्तु लखनऊ से हमारे लिए एक शृङ्गारदान लाना बहुत आवश्यक है।

त०—पक्का वचन दे देते हैं।

खैर ! कमला तो पत्र लेकर रवाना हो गयी और अवसर निकाल रायबहादुर साहब की स्त्री जिस घर में ठहरी हुई थीं उस घर में पहुँच गयी। वहाँ जाकर तारा और चन्दा के पास बैठ गयी। और जब देखा कि चन्दा किसी कार्य से रसोई घर में चली गई तो धीरे से पत्र निकल कर तारा के हाथ

में दे दिया और बतलाया कि भाई साहब ने इसका उत्तर माँगा है। तारा कमला के हाथ में पत्र देखकर धक से हो गयी और शीघ्र लेकर उसको अपनी छाती को चोली के अन्दर छिपा लिया और फिर बनावटी बातें इधर-उधर की करने लगीं। इतने ही में चन्दा भी आकर इन बातों में सम्मिलित हो गयी। थोड़ी देर बैठने के पश्चात् कमला फिर चलने के लिए तैयार हुई। तब तारा कहती है—अच्छा आप तो इस समय जा रही हैं किन्तु आप आइयेगा अवश्य ! कमला अर्थ समझ जाती है और कहती है—देखिए यदि फ़ुरसत मिली तो में अवश्य आऊँगी और फिर अपने घर में आ गयी।

इधर अब केवल तारा तथा चन्दा बैठी-बैठी बातें करने लगीं कि इतने में चन्दा को ख्याल आता है कि उसे आज साड़ी रंगनी है। चुनांचे उसने तारा से कहा—चलो साड़ी रंग ली जाय। तारा ने कहा—हमारे पास तो रंगी हुई साड़ी मौजूद है हम क्या करेंगे रंग कर। तुम जाओ अपनी साड़ी रंग लो। चन्दा टब में रंग घोल कर रंगने में लीन हो गयी और तारा धीरे से कमरे में चली गई और अब उसने तनवीर का पत्र खोल कर पढ़ना आरम्भ किया।

इस समय उसकी अजीब दशा थी। स्वयं ही लज्जित होती थी और उसके हृदय पर उसके पत्र का एक अक्षर आवश्यकाधिक प्रभाव डाल रहा था। विचार करने लगी कि इसका उत्तर कैसे लिखें और क्या लिखें। एक दूसरी जगह इस समय निवास स्थान है। कहीं बदनामी न हो। बहरहाल उसने इस अवसर को उचित समझ कर उसी कमरे में कुर्सी पर पत्र लिखना आरम्भ किया।

हैराँ हूँ ऐसे दोस्त को अलक़ाब क्या लिखूं ?

आपका पत्र मिला। याद के लिए धन्यवाद। हमारी आपकी जो भेंट हुई इस सिलसिले में सिवाय इसके क्या कह सकती हूँ।

पसन्द आए तो ले लो दिल हमारा !!

मेरे लिए स्थान-स्थान पर रुकावटें हैं। बदनामी से डरती हूँ। इस समय लखनऊ चलने की कोई तिथि निर्धारित नहीं की है। आप किस समय चल रहे हैं ?

इधर से भी सिवा कुछ उधर की मुश्किल है !
कि तुमने बात तो की मुझसे बात भी न हुई !!

आपकी—'तारा'

तारा अभी यह पत्र लिखकर समाप्त ही कर रही थी कि इधर चन्दा साड़ी रंग चुकी और अब चाहती थी कि तारा-आरा तो उसके हाथ में साड़ी पकड़ा कर झटकायें और सुखायें परन्तु फिर उसे ख्याल आया कि आखिर इतनी देर से तारा मौन साधे हुए कमरे में बैठी हुई क्या कर रही। चुनांचे वह दबे पाँव कमरे में गयी। और अचानक तारा की दृष्टि चन्दा पर पड़ी। तारा अपना तथा तनवीर दोनों का पत्र अपने हाथ में छुपाने का उपाय करने लगी। पत्र को छुपाते हुए देखकर चन्दा तुरन्त अपने आगे बढ़ी और पत्र को छीनने का उपाय करती हुई पूछने लगी—

दिखाओ हमको, तू क्या लिख रही थी।

तारा—नहीं दिखाऊँगी।

चन्दा—क्यों ?

ता०—पहिले एक बात का वचन दो।

च०—वह क्या ?

ता०—किसी से भेद को प्रकट तो नहीं करोगी।

च०—पक्का वचन।

ता०—पक्का वचन ?

च०—हाँ।

ता०—खाओ ईश्वर की सौगन्ध खा जान की कसम।

चन्दा—चुड़ैल कहीं की लगी भूत ही स्वीकार कराने। खा तो रही हूँ, भगवान की कसम कि किसी से नहीं कहूँगी।

अब तारा ने पहिले तनवीर का पत्र और बाद में अपना पत्र दोनों चन्दा के हाथों में दे दिया। चन्दा दोनों पत्रों को पढ़ने लगी और पढ़ने के बाद बड़े आश्चर्य की दृष्टि से तारा की ओर ताकने लगी। तारा ने अपनी दृष्टि नीची कर ली परन्तु चन्दा से मौन न साधा गया। वह बोल उठी।

चन्दा—देख, तारा अब तक तो मैं इन बातों को दिल्लगी समझती रही किन्तु अब तो समझ ले और अच्छी तरह समझ ले कि तू अंगारों से खेल रही है।

तारा—जीवन तो स्वयं एक अग्नि का खेल है।

च०—नहीं! तारा समझ जा। अभी अवसर है। रमेश भाई से तेरी मंगनी लग चुकी है।

ता०—तो इससे क्या होता है। मंगनी तो समाप्त भी हो सकती है। चन्दा नतीजे पर सोच विचार करले। तू बड़े संकट का खेल खेल रही है।

ता०—अब तो पासा पड़ हो गया है। चन्दा अब तू ही बता एक दुकान पर बहुत से खिलौने बिक रहे हैं। एक लड़की के लिये कौन सा खिलौना अच्छा होगा। वह जो कि स्वयं अपनी पसन्द से खरीदेगी अथवा वह खिलौना जो माता-पिता खरीद कर देंगे।

च०—वह खिलौना जो उसके माता-पिता खरीद कर देंगे।

ता०—कभी नहीं।

च०—क्यों नहीं ?

ता०—इसलिए कि जो खिलौना लड़की खरीदेगी वह खिलौना वह होगा जो कि उसको सबसे अच्छा प्रतीत हुआ और जिसे वह सर्वश्रेष्ठ समझती है और जो खिलौना कि उसके पिता खरीद कर देंगे वह खिलौना वह होगा जो सबसे सस्ता होगा। उसी भाँति रमेश हमारे दिल को नहीं भाता।

च०—परन्तु रमेश से तो पुरानी मंगनी है।

ता०—यह क्या बात हुई। जिसको दिल अपना ले वही प्रिय है। चन्दा ने आगे बोलना उचित नहीं समझा, इसलिए कि अब फूंस में अग्नि लग चुकी है और चिनगारी को दबाना मुश्किल है। अतः इसकी रोक-थाम कठिन है। और चूँकि अब तारा ने चन्दा के सामने आँसू का कपड़ा भी इसी बातचीत के सिलसिले में गिरा दिया है अतः चन्दा ने उसका साथ देने का वचन दे दिया। उसने इस सिलसिले में चन्दा से काम लेने की सोची। चुनांचे तारा ने चन्दा से कहा—तू हमारा पत्र ले जाकर कमला को दे आ। इस पर चन्दा ने कहा—यह

पत्र अभी मत भेज। चल देख हमारी साड़ी भीगी है। पहिले हम दोनों मिलकर सुखा लें। इसके पश्चात् फिर हम दोनों ही चलेंगें और यह पत्र कमला को दे देंगे।

अतएव ये दोनों अब कमरे से बाहर आयीं। और साड़ी के दो कोनों को एक ने पकड़ा और दो कोनों को दूसरी ने पकड़ा और हिलाकर सुखाने लगीं। यद्यपि करने को तो इस कार्य को कर रही थी परन्तु उसका ध्यान न जाने कहाँ है। बार-बार उसके हाथों से साड़ी छूट कर पृथ्वी पर आ गयी है जिस पर चन्दा कहने लगी—न जाने आज तेरा ध्यान कहाँ है। ज़रा साड़ी अच्छी तरह से पकड़े रहो।

वाह रे ईश्वर, ईश्वर करके साड़ी सूख गयी और ये दोनों पत्र छिपाये हुए कमला के घर गयीं। कमला इस समय लेटी हुई पुस्तक पढ़ रही थी। तारा और चन्दा को देखते ही तुरन्त उसने किताब रख दी और कहने लगी— आइये, आइये! अब तीनों बैठकर बात करने लगीं। इतने में चन्दा ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ा कर जो देखा कोई भी सामने दिखाई नहीं दिया। उसने तुरन्त तारा से कहा—निकाल कर पत्र दे दो। चुनांचे ब्लाउज के अन्दर से तारा ने पत्र निकाल कर कमला को दे दिया और कमला ने भी झट पत्र को लेकर छिपा लिया। फिर थोड़ी देर तक ये दोनों बातचीत करती रहीं फिर उठ कर चल पड़ीं।

दोपहर में जब तनवीर भोजन करने घर में आया और कमला ने खाना आदि लगाकर उसके सामने ला रक्खा और खाते समय जब तनवीर ने देख लिया कि माता जी मौजूद नहीं हैं तो धीरे-धीरे कमला से बातचीत आरम्भ कर दी—

तनवीर—क्यों कमला पत्र पहुँचा दिया?

कमला—(हँसकर) नहीं! अभी फुरसत नहीं मिली।

त०—पगली कहीं की, तुझ से कहा था न कि शीघ्र पहुँचा देना; तू बहुत उल्लू है।

क०—(कर्कश स्वर में) अरे धमकी क्यों देते हो? पत्र पहुँचा भी दिया है और उसका उत्तर भी आ गया।

तनवीर—(प्रसन्नता के स्वर में) कहाँ है ? ला मुझे जल्दी दे।

कमला—अच्छा तो मिठाई खिलाइये।

त०—(मज़ाक के स्वर में) बात-बात पर तुम्हें मिठाई का ज्वर आने लगा, कह तो दिया कि लखनऊ से एक बहुत सुन्दर चीज़ लायेंगे।

क०—पक्का वचन।

त०—कह तो रहे हैं पक्का वचन।

बस यह सुनना था कि कमला ने तारा का पत्र भाई के हवाले कर दिया और भाई ने खाना छोड़ कर शीघ्रता से हाथ धोया और खाने के कमरे से बाहर हो गया और शीघ्र बिजली की तरह अपने कमरे में पहुँच कर पहिले दरवाज़ा बन्द कर लिया और फिर लिफ़ाफे का श्रीगणेश किया और पत्र पढ़ना प्रारम्भ कर दिया।

ज्योंहीं उसने तारा के पत्र की पहली दो पंक्तियाँ पढ़ीं अपने आपे से बाहर हो गया और पत्र को सीने से लगा लिया। जब कि उसने तारा के पत्र की यह पंक्ति पढ़ी—

'पसन्द आए तो ले लो दिल हमारा' तो मारे खुशी के पागल हो गया और यह प्रतीत होता था कि आज मारे प्रसन्नता के वह पागल हो जाएगा। इसलिए इस पंक्ति को बार-बार पढ़ने लगा।

पत्र का एक-एक अक्षर उसके सीने में ऐसा चुभ रहा था जैसे संगमरमर के पत्थर पर कोई कलाकार किसी मूर्ति को अंकित कर रहा हो। वह पत्र को पढ़ने के पश्चात् कमरे में टहलने लगा और उसके चेहरे से प्रसन्नता प्रतीत होने लगी। अपने दिल में भिन्न-भिन्न प्रकार की तरकीबें सोचने लगा। इसका अन्दाजा लगाना बहुत कठिन है कि बिजली के लिए नींव रखी गई है। तीन-चार दिन के पत्र-व्यवहार ने यहाँ तक जोर पकड़ा कि दिन भर में छः-सात पत्र आने-जाने लगे। इसी के साथ-साथ स्थान तथा पत्र खिड़कियों आदि से आने-जाने लगे जहाँ पर भेंट, बातचीत और संकेत होने लगे। गंगा में बाढ़ तो घटने लगी परन्तु

इन दोनों के प्यार का सैलाब बहुत तेजी से बढ़ने लगा। तारा बिलकुल भूल गई कि उसका निवास स्थान दूसरी जगह पर है। तनवीर से ऐसे मिलती थी जैसे वर्षों बाद भेंट हुई है और अब तनवीर को अपना जनाना घर बहुत पसन्द आ रहा है। कहां तो दिन भर इधर-उधर घूमा करता था लेकिन अब मित्र चाहें कितना ही आएँ और बुलायें घर से निकलने का नाम नहीं लेता। उसके विचार में आजकल उसका घर वैकुंठ है और उस वैकुंठ की सुन्दरी तारा है।

तनवीर और तारा के विचार में चार-पांच दिन बहुत शीघ्र गुज़र गए, न जाने समय इतना शीघ्र क्यों गुजर गया इस बात की शिकायत दोनों को है।

—— ——

अध्याय नौंवा

गुज़रे हुए दिलकश लमहों की, भूली हुई याद ऐसी आई !
जैसे कोई प्रीतम परदेसी, सोते में अचानक आ जाय !!

तनवीर को आज से चार-पाँच दिन गुज़रे जबकि उसने काशी के पत्र का उत्तर दिया था। चुनांचे आज जब कि वह दोपहर का खाना खाकर दरवाज़े पर आकर बैठा तो डाकिया आया और उसने तनवीर के नाम एक पत्र उसको दिया। तनवीर ने लिफ़ाफा फाड़ने के पश्चात् पत्र को पढ़ा तो काशी का पत्र था।

प्रतापगढ़

प्रिय तनवीर !

बहुत-बहुत धन्यवाद कि तुमने हमारे पत्र का उत्तर शीघ्र दिया। इस दफा भी तुम ताकीद का अत्यधिक ख्याल रखना और हमारे पत्र का उत्तर शीघ्र से शीघ्र देना। शायद तुमको भी विश्वास न हो परन्तु यह बिलकुल सत्य है कि हमारी और रंजना की बातचीत के विषय में बहुधा तुम हुआ करते हो।

मेरी और रंजना की समझ में यह नहीं आता कि आखिर उजली कमीज़ और उजली पतलून से क्यों इतना ज्यादा प्रेम है।

रंजना कहती है कि यदि तनवीर साहब मुझे मिठाई खिलाने का वचन दें तो मैं उनके हाल पर कृपा करूँ और अपनी सहेलियों में से एक-दो पारसल कर दूँ। क्यों भाई तैयार हो ?

गंगा की बाढ़ के बारे में हमेशा समाचार-पत्र में पढ़ता रहता हूँ। बड़ी परेशानी थी किन्तु परमात्मा की दया है कि समाचार-पत्रों द्वारा पता चलता है कि सैलाब में अत्यधिक कमी है।

भाई, अब तो विश्वविद्यालय खुलने का समय बहुत करीब आ गया है। ईश्वर के लिए इस बात से सूचित करो कि तुम किस तिथि को लखनऊ चल रहे हो। रंजना से हमने दोबारा इस बात का वचन ले लिया है कि हमको लखनऊ अवश्य पत्र लिखा करेगी।

शेष सब कुशल मंगल है। रंजना तुमको नमस्ते कहती है और तुम्हारे लिए प्रार्थना करती है कि ईश्वर तुम्हारा पागलपन दूर करे। उत्तर शीघ्र देना।

नमस्ते

काशी।

तनवीर का आजकल क्या पूछना है ! हर दिन होली और हर रात दीपावली है। घर से नहीं निकलते। प्यार का धंधा जोरों पर है। काशी का पत्र मिला और पढ़ा। पढ़ने के पश्चात् कहता है—ये बाबू अपनी रंजना का बेड़ा ही डुबाने पर तुले हुए हैं। ये नहीं समझते कि तनवीर उनसे भी आगे निकल गया। बहरहाल तुरन्त पत्र लिखने के लिए बैठ जाता है और वह पत्र यह है—

ग़ाज़ीपुर

प्रिय मित्र काशी,

तुम भी अजीब आदमी हो। ईश्वर तम्हारी रंजना को बैकुण्ठ में जगह दे। हमारे लिए उनकी प्रार्थना खूब रही। आजकल नदी की बाढ़ तो निश्चय घट गयी है परन्तु मेरी उल्फत का सैलाब बड़े जोरों पर है। विस्तृत बात बाद को बताऊँगा। कविता की कुछ पंक्ति यह हैं—

हंगामए दिल से तंग आकर, इज़हारे मुहब्बत कर बैठे !
मशहूर थी अपनी जिन्दादिली, दानिस्ता शरारत कर बैठे !!

तक़दीर की गर्दिश क्या कम थी, उस पर ये क़यामत कर बैठे !
बेताबिये दिल जब हद से बढ़ी, घबरा के मुहब्बत कर बैठे !!

यह है अपने प्रेम का श्रीगणेश। अब सुनो तफ़सील। बाढ़ के आने के कारण सैलाबजहाँ भागों के लोग शरण के लिए दूसरे स्थान पर ठहरा दिये गये हैं। यहाँ के रायबहादुर साहब, अपनी स्त्री तथा दो लड़कियों सहित हमारे यहाँ ठहरे हैं। जो लड़की उनकी बेटी है उसका नाम तारा है और उनकी भतीजी जो है उसका नाम चन्दा है। दोनों लखनऊ में बी० ए० के अन्तिम वर्ष में पढ़ रही हैं।

तारा से हमारी अचानक भेंट हो गई, हम दोनों की मित्रता बहुत बढ़ती जा रही है। हम लोगों की भेंट दिन के अलावा रात में भी हुआ करती है। सूरत-शक्ल, आदत तथा चाल-चलन के विचारने से निहायत ही सुलझी हुई लड़की है। तुम देखने के पश्चात् निश्चय मेरे चुनाव की प्रशंसा करोगे।

अब तुम एक बात बताओ कि यदि हम एम० ए० पास हो जायें तो तारा प्रसन्न और यदि तारा बी० ए० पास हो जाय तो हम प्रसन्न होंगे किन्तु तुम यदि कानून पास करने के पश्चात् वकील बन गये तो जानते हो कौन प्रसन्न होगा।

पैदा हुए वकील तो शैतान ने कहा !!
लो आज हम भी साहेबे औलाद होगये !!

अब लखनऊ पहुँचकर यदि कोई हमारी सहायता कर सकता है तो सागर और श्रीमती सागर। तुम भी लखनऊ चलने के लिए तैयार रहना। मेरा चलना तारा के चलने की तिथि पर निर्भर है। हम तुमको तुरन्त तार देंगे।

रंजना से हमारे पारसल के प्रबन्ध के सिलसिले में धन्यवाद देना और नमस्ते कहना।

आपका
तनवीर

यह पत्र लिखकर तनवीर ने बुद्धू को देकर डाकखाने में डाल आने को कहा और वह पत्र लेकर डाकखाने को रवाना हो गया। इधर शाह (के ताबे

समाचारों से मालूम हुआ कि सैलाव बिलकुल कम हो गया है और नदी का पानी भी बिलकुल घट गया है। रायबहादुर साहब का मकान भी ईश्वर की कृपा से बिल्कुल पृथक हो गया और कल रायबहादुर साहब का परिवार तनवीर के घर से चला जायेगा और अपने घर पर रहेगा। यह समाचार तनवीर और तारा के लिए कैसा है। इन दोनों का हृदय ज्यादा अच्छी तरह जानता होगा किन्तु करना क्या है। परमात्मा को यही स्वीकार है।

तनवीर के दिल में आज की रात का जो महत्त्व हो सकता है, वह कोई नहीं अन्दाज़ लगा सकता। यदि उसकी चलती तो वह रायबहादुर साहब के परिवार को कभी भी अपने घर से न जाने देता परन्तु करे क्या? इनका परिवार तो जाकर रहेगा चुनांचे आज रात को जब तनवीर भोजन करके आया तो बाहर दरवाज़े पर आकर आंगन की चारपाई पर लेट गया। इतने में चन्द्रमा भी कुछ ऊपर आगया है और चारों ओर चांदनी फैल गई है और रात के करीब बारह बज रहे थे और न जाने तनवीर को निद्रा क्यों नहीं आ रही थी। अब वह कुछ सोचकर सिद्धान्तानुसार अपनी चारपाई से धीरे-धीरे उठा। क्रीप सोल का जूता पहिने चोरों की भांति धीरे-धीरे अपने घर के फाटक पर आ गया। दरवाज़े पर जितने सोने वाले थे सबकी नाक निद्रा के खर्राटों से बोल रही थी। अब जब कि वह फाटक पर दरवाज़े की कुण्डी खोलने का उपाय करने लगा कि इतने में बुद्धू के खांसने की आवाज़ आयी। तुरन्त ही दबकर वहीं चुपचाप खड़ा हो गया। पसीना भी शरीर से स्फुटित होने लगा। उसका हृदय इस भय से कि किसी को मालूम न हो जाय धक-धक कर रहा था।

काटी है मुहब्बत में हर एक तरह की रातें!
दिल आज धड़कने लगा क्यों मिलने से पहले!!

आखिर उसने तीसरी बार दरवाजे को खोलने का प्रयत्न किया और कोई आवाज़ नहीं आयी। दरवाजा खोला और फिर दरवाज़े का एक पल्ला। सामने सड़क पर मैदान में केवल चांदनी का खेत ही खेत दिखलाई पड़ा या मेंढ़क तथा झींगुर आदि की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। परन्तु तनवीर धीरे-धीरे शीघ्र से शीघ्र अपने कदम बढ़ाये हुए आगे बढ़ता गया। क्योंकि इसके अपने सिद्धान्त

में काफी देर हो गई है। दस-पन्द्रह कदम चलकर पुरानी चहार दीवारी की दीवार को फाँदने के पश्चात् फिर एक छोटा उजाड़ सहन मिला। इस सहन से गुज़रने के पश्चात् घर की खिड़की के पास पहुँच गया। यह खिड़की उसके घर की है जिस घर में रायबहादुर साहब का परिवार ठहरा हुआ है परन्तु सड़क के चलने वालों को यह खिड़की बिलकुल नहीं दिखलाई देती। इसका कारण यह है कि यह चहार दीवारी के बिलकुल आड़ में पड़ती है। न चहार दीवारी के अन्दर प्रवेश करने वाला आदमी ही किसी को दिखाई देता है।

अब चूंकि तनवीर खिड़की के पास पहुँच गया, अतः तुरन्त पहुँचने के साथ ही धीरे से खिड़की के दरवाज़े पर कंकड़ से ठक, ठक, ठक तीन चार बार बजाया। इस तीन बार बजाने का नतीजा यह हुआ कि तारा बिलकुल बेचैन हो गई। वह बड़ी देर तक इस आवाज़ को सुनने की प्रतीक्षा में थी। वह बार-बार यही सोच रही थी कि मालूम नहीं तनवीर आज क्यों नहीं मिलने आया। आखिर-कार उसके साथ हुआ क्या। मैं कल चली जाऊंगी। अतः उससे मेरा मिल लेना अत्याधिक आवश्यक है। ज्योंही उसने खट-खट की आवाज़ सुनी उसकी सारी निद्रा हवा हो गई जो कि अब उस पर हावी हो रही थी। वह अब चारपाई से उठने का प्रयत्न करने लगी। परन्तु अब क्या करे चारपाई की कमी के कारण चन्दा और तारा एक चारपाई पर सोया करती थीं और उस समय चन्दा का हाथ तारा की गर्दन पर आ गया। चन्दा की निद्रा बहुत ही नाज़ुक थी। यदि हाथ को हटाने में ज़रा भी उसे पता चल गया तो वह तुरन्त जग उठेगी। अन्त में तारा ने धीरे से अपनी गर्दन से हाथ हटा दिया और अपनी गर्दन ही को धीरे से उसके हाथ के नीचे से निकाल लिया और चारपाई से उठकर जमीन पर खड़ी हो गई। अब क्या करे क्योंकि पिताजी सो रहे हैं, माताजी भी सो रही हैं परन्तु दुपट्टा चन्दा की कमर के नीचे दबा पड़ा है। यदि वह दुपट्टा ज़रा भी खींचती है तो चन्दा जग जायेगी। क्यों न बिना दुपट्टा ही के चल पड़े? परन्तु तनवीर सीना खुला देखेगा !! करे :क्या? बक्स से दूसरा दुपट्टा निकाले तो बक्स खोलने की आवाज़ से लोग जाग जायेंगे। अचानक उसकी दृष्टि एक खूंटी पर जाती है। बस वह नंगे पाँव ही दौड़ती है और फौरन उस खूंटी पर से उजले रंग की तौलिया, जो उस पर लटक रही

थी, उतार लिया और दुपट्टे के बजाय उसे ओढ़ लिया और फिर धीरे-धीरे चलकर नंगे पैर लैम्प के पास पहुँची। पहिले तो उसको कम किया और उसके पश्चात् बहुत ही हल्की फूँक से उसको बुझा दिया और इस तरीके से सारा घर अन्धेरा हो गया और अब धीरे-धीरे कमरे में प्रवेश किया। इधर तनवीर यह समझने लगा कि तारा ने खट-खट की आवाज़ नहीं सुनी या वह सो गई। अतः कंकड़ से दोबारा बजाया कि इतने में तारा कमरे से होती हुई खिड़की पर पहुँची और फिर खिड़की के दोनों पल्ले धीरे से खोल दिए। खिड़की चूँकि कुछ ऊँचाई पर थी इसलिए तनवीर नीचे खड़ा हुआ अपनी उजली कमीज और उजली पतलून में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसने खिड़की खोली तो उस उजले संगमरमर की बनी हुई मूर्ति को देखकर तारा के हृदय की अजीब दशा हो गई और इस समय भी उज्ज्वल तथा निर्मल चाँदनी उजली तौलिया ओढ़े हुए आने वाली तारा की सुन्दरता को बढ़ा रही थी। और इसका प्रभाव तनवीर के दिल पर पड़ा जो भी हो कम है। जब कि सारी दुनियाँ मीठी नींद के मज़े ले रही थी, हर ओर शान्ति छाई हुई है उस समय दो प्रेम के मारे हुए एक दूसरे से मिलने के लिए इच्छुक थे। किसी ने उस समय के बारे में खूब कहा है—

ये रातें आह ! जिनकी गोद में हम छुपके मिलते हैं !
ये रातें जिनके पर्दों में दिलों के तार मिलते हैं !!

अब दोनों एक दूसरे को अजीब प्रेम की दृष्टि से देखने लगे। इन दोनों में से किसी की समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे। न जाने ये दोनों प्रसन्नता की अधिकता के कारण इतना चुप क्यों हैं। आखिर तारा ने बातचीत करना आरम्भ किया।

तारा—(धीरे से) आज आपको आने में देर क्यों हुई ?

तनवीर—क्या कहूँ बुड्ढ़ा जाग गया था। इस प्रतीक्षा में था कि सो जाय तो चलूँ।

ता०—हमको तो बड़ी लज्जा है कि केवल हमारे कारण आपको इतनी परेशानी उठानी पड़ती है।

तनवीर—परन्तु आपको मुझसे भी ज्यादा संकट मोल लेना पड़ता है।

तारा—आपके लिए यदि जीवन को भी संकट में डालना पड़े तब भी मैं अपने उद्देश्य से विचलित नहीं हो सकती।

त०—धन्यवाद..............आप से आज एक बात कहें मान लीजियेगा।

ता०—आप बात कहें और मैं न मानूं। बात तो कहिये।

त०—नहीं, पहिले वचन दीजिये कि मान लीजियेगा।

ता०—अरे आप बात तो कहिए।

त०—नहीं, पहिले आप वचन दीजिये।

ता०—नहीं, पहिले बात कहिये।

त०—नहीं, वचन दीजिये।

ता०—अच्छा, वचन देती हूं।

त०—हमको शंका है, पक्का वचन दीजिए।

ता०—अच्छा पक्का वचन देती हूं।

त०—आज आप खिड़की के बाहर कूद आइये।

ता०—(अचम्भे में) अरे आप सोचते नहीं क्या कर रहे हैं........ खिड़की इतनी ऊँचाई पर है यदि कूदूंगी तो घायल हो जाऊंगी।

त०—(तुरन्त अपने दोनों हाथ फैला कर) मेरे हाथों पर कूद आइये।

ता०—देखिये, आप नहीं समझते किसी ने देख लिया तो क्या होगा।

त०—देखिये, आप वचन दे चुकी हैं।

ता०—आपके हाथों को कष्ट होगा।

त०—इसका कुछ भी ख्याल न कीजिये, देखिए आप वचन दे चुकी हैं।

ता०—देखिये, आप समझते नहीं।

त०—वचन याद कीजिये।

चारोनाचार बहुत ही हुए तारा खिड़की के ऊपर चढ़ी है और फिर उसके बाद कूदने का प्रयत्न करने लगी कि लज्जा ने उसके पैरों को रोक लिया। तनवीर उसे रुका हुआ देख बड़ी निराशा के स्वर से धीरे-धीरे रुक-रुक कर कहने लगा........आइये........चली आइये........डरिये मत........कूद आइये।

थोड़ी-थोड़ी देर पर तारा फिर तनवीर को देखने लगी और जब उसकी आँखों की ओर उसकी दृष्टि गयी तो वह आकर्षण से प्रेरित हो गयी। लज्जा उसको रोकती है। अन्त में फिर तारा घबड़ा कर कहने लगी—डर लगता है।

तनवीर फिर गिड़गिड़ा कर कहने लगा—आपको हमारी क़सम और फिर अपने दोनों हाथ फैला दिये।

तारा का सारा शरीर काँप रहा था। चेहरे पर पसीना था कि रुकने का नाम ही नहीं लेता था। क्या करे तनवीर कहता है—आपको हमारी कसम। तारा फिर तनवीर की ओर देखती है और आकर्षण से प्रेरित होकर कूद पड़ी। तौलिया उसके सीने से हट कर जमीन पर गिर पड़ी परन्तु तारा इस समय तनवीर की गोद में पहुँच गयी। तारा का सीना इस समय बिना दुपट्टे के ही था। तारा लज्जा से अपना सीना छुपाने का उपाय करने लगी परन्तु तनवीर ने अपने सीने से उसके सीने को ढक लिया। तारा पृथ्वी पर गिरी हुई तौलिया उठाने का प्रयत्न करने लगी कि तनवीर तारा को गोद में लेकर उसी तौलिया पर बैठ गया। तारा की आँखों में लाल डोरे बढ़ते जा रहे थे, चेहरा पसीने से पूर्ण होता जा रहा था, सारा शरीर काँप रहा था, मस्तिष्क में बार-बार यह विचार आरहा था कि यह हमने क्या किया ? उधर तनवीर उसके हाथ को बड़ी सख्ती से पकड़े अपनी गोदी में बैठाये है।

तनवीर का सीना तारा के सीने से बिलकुल मिला है और इन दोनों का सीना बार-बार ऐसे मिल जाता है जैसे दिल के दो अक्षर मिलते हैं। तारा नहीं समझती कि अपने हाथों को कहाँ रखे, वह केवल यही कहती जा रही है—अच्छा अब हमको छोड़ दीजिए। ईश्वर के लिए छोड़ दीजिए। मेरा हृदय काँप रहा है। माता जी जाग जायेंगी। अभी तारा उससे यह सब कह रही थी

कि तनवीर तारा को उस लम्बे तौलिये पर ऐसे लिटा देता है कि तारा का आधा धड़ बिलकुल तनवीर के सीने और गर्दन के नीचे आ जाता है। तनवीर तुरन्त पतलून की जेब से रूमाल निकल लेता है और तारा का पसीना पोंछता है। तनवीर स्वयं भी पसीने में डूबता चला जा रहा था, उसकी कोई आवाज नहीं निकल रही थी। वह खूब समझ रहा है कि तारा घबड़ा रही है और प्रेरित होकर तनवीर बोलता है, तारा भी घबड़ाई हुई आवाज में कहती जाती है।

........आप इतनी क्यों घबड़ा रही हैं ?...........

........अब मुझे छोड़ दीजिए..........

........घबराती क्यों हैं..............

........ईश्वर के लिए छोड़ दीजिए.......माताजी जाग जावेंगी...........

........घबराइये मत...........

........मेरा दम घुटा जा रहा है...........

........घबराइये मत...............

.... छोड़ दीजिए..............

...... व्याकुल मत होइये...............

........सीना जोर से दबाए हुए है...........

........जरा शान्तिपूर्वक रहिए...........

...... मैं व्याकुल हूँ, मुझ पर कृपा कीजिए..........

........परन्तु जरा शान्ति लीजिए...........

........ईश्वर के लिए चुप रहिए...........

........अरे यह क्या कह रहे हैं...........

........बस अब छोड़ दीजिए...........

बढ़ कर लाल होठ मेरे होठ से मिला दीजिए।

........मुझ पर दया कीजिये, मेरी दशा खराब हो रही है.........

...... केवल एक बार................

........क्या चीज़..................

...... केवल एक होठों का.............

........क्या चीज़..................

अब तनवीर ने उसके होठ पर अपना होठ इतने जोर से रख दिया कि तारा का सारा शरीर झूम उठा। तनवीर मुँह को दबाये हुए है। तारा के मुँह से आवाज़ निकले तो कैसे। और फिर तनवीर के हाथों की पकड़ भी सख्त है और फिर यह प्रतीत होता था कि तारा थोड़ी देर में बेहोश हो जावेगी। क्या करे जब कि तनवीर ने उसके होठों को चूम लिया तो तारा गिड़गिड़ा कर कहने लगी—अब इससे आगे बढ़ने की कोशिश मत कीजिए नहीं तो मृत्यु हो जायेगी। तनवीर कहता है—कभी नहीं, जो कुछ मैंने इस समय तक प्राप्त कर लिया वही बहुत है .....

परन्तु तनवीर आदत के अनुसार तारा का पसीना पोंछता जाता है और अब हाथों की पकड़ ढीली कर देता है। तारा का शरीर आज़ाद हो जाता है। तारा बहुत ज्यादा थक चुकी थी। बेहोशी की दशा है। तौलिये पर पड़ जाती है। तनवीर उसका चेहरा बराबर रूमाल से पोंछता रहता है। तारा कुछ अजीब थकी हुई है और तनवीर की ओर देखती है।

कुछ शान्ति होने के पश्चात् तारा फिर तौलिया ओढ़ लेती है और वहीं घास पर दोनों चुप-चाप बैठे रहे। दोनों इस समय हैरानी तथा परेशानी में थे कि न जाने आज वह किस मंजिल पर जा रहे हैं। दोनों सोच रहे थे कि उन्होंने इस समय एक दूसरे से क्या प्राप्त किया। अन्त में बातचीत होने लगी और तनवीर ने कहा—एक बात की क्षमा चाहते हैं यदि आप क्षमा कर दीजिये।

तारा—किस बात की क्षमा ?

तनवीर—है एक बात।

ता०—कहिये भी।

तनवीर—क्षमा कर दीजियेगा ?

तारा—बात भी तो कहिये या यूँ ही वचन दे दूँ। आखिर आपने क्या किया है ?

त०—मैं केवल एक बात को क्षमा चाहता हूँ।

ता० - वह क्या ?

त०—वह यही कि लाल होठ की एक चीज चुराली।

ता०—(मुस्कान भरे स्वर में) इस अपराध को क्षमा नहीं कर सकती।

त०—क्यों ?

ता०—बड़ा संगीन अपराध है।

त०—मुजरिम तो दया का इच्छुक है, न्याय कब चाहता है।

ता०—परन्तु तारा न्याय ज्यादा पसन्द करती है।

त०—मैं पूछता हूँ कि क्या तारा मुजरिम से भी ज्यादा न्याय को पसन्द करती है।

ता०—परन्तु यह युद्ध तो न्याय तथा दया में है; मुजरिम से क्या मतलब ?

त०—परन्तु दया चाहने वाला तो मुजरिम है।

ता०—हाँ तो मुजरिम साहब को दण्ड दिया जायेगा।

त०—हुजूर ने क्या दण्ड नियुक्त किया है ?

ता०—आप मुर्गा बन जाइये—यह कह कर हँस देती है।

त०—अच्छा मुजरिम मुर्गा बन जाय और मुन्सिफ मुर्गी बन जाय।

इस बात पर दोनों को हँसी आ गयी और तनवीर ने अपने दोनों हाथों से तारा का एक हाथ पकड़ लिया और दबाने लगा। तारा अपना हाथ खींचने की कोशिश करने लगी। किन्तु क्या करे फिर चुप हो गयी। इस समय दोनों अजीब दशा में बातें कर रहे थे।

ता०—छोड़िये भी मजाक की बातें। यह बताइये आप लखनऊ किस दिन चलेंगे ?

तनवीर—जिस दिन आप चलेंगी ।

तारा—मेरी चलने की तो कोई तिथि निर्धारित नहीं है । देखिये पिताजी कब चलने के लिए कहते हैं और मेरे लिए सब से बड़ा प्रश्न तो इसका है कि मैं जाऊंगी किसके संग ? इसलिए हर वर्ष तो मुझे रमेश भैया पहुँचा दिया करते थे किन्तु परसों उनका पासपोर्ट आ गया और वह सिंगापुर चले गये ।

त०—यह रमेश कौन साहब हैं ?

ता०—यह हमारे पिता के मित्र के लड़के हैं जो इलाहाबाद से बी० ए० पास करके परसों मलाया चले गये ।

त०—तो फिर मेरे साथ चलिये ।

ता०—(मुस्कराकर) नहीं पिता जी जिसके साथ उचित समझेंगे उसके साथ भेज देंगे ।

त०—हमको अपने चलने की तारीख से एक दिन पहिले अवश्य सूचित कीजियेगा ।

ता०—अच्छा तो मैं किसी वारिन या नौकरानी के द्वारा अवश्य पुर्जा भेजूंगी । अभी वह यह वाक्य कही रही थी कि ग़ाज़ीपुर से चार बजे गुजरने वाली एक्सप्रेस ट्रेन के गुजरने की आवाज आयी ।

बस दोनों आश्चर्य से यह कहते हुए उठ गये । उफ ! रात्रि समाप्त होने को आई । तनवीर ने तुरन्त अपना हाथ नीचे की ओर लगाया और तारा उसके हाथ पर पांव रखकर खिड़की पर चढ़ गयी और खिड़की पर से कमरे की जमीन पर उतर गयी । फिर मुड़ कर तनवीर की ओर देखने लगी और तनवीर उसकी ओर । अब तारा ने धीरे-धीरे खिड़की को बन्द कर दिया और तनवीर वापस होने लगा । धीरे-धीरे पहुँचकर चहार दीवारी के करीब पहुँचा । फिर दीवार फांद कर बाहर सड़क पर निकल आया । दस-पन्द्रह पग चलने के पश्चात् अपने घर के फाटक पर जा पहुँचा और धीरे-धीरे अन्दर प्रवेश करके द्वार की कुन्डी बन्द कर ली । और अब अपनी चारपाई पर जाकर पड़ गया ।

तनवीर आज मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहा है। आज की रात्रि उसकी प्रेम पुस्तक का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसकी जितनी भी महत्ता मन में दी जाय, कम है। इसलिए कि आज उसने तारा के दिल में बहुत जगह ले ली है और तारा को उसने क्या दिया है.........................यह सोचते विचारते वह सो गया।

नहीं मिलता मिज़ाजे दिल हम से !
ग़ालबन दूर तक यह बात गई !!

इधर तारा जब तनवीर से भेंट के पश्चात् चारपाई पर लेटी तो ऐसे धीरे-धीरे दबे पाँव लेटी कि चन्दा को कुछ भी पता नहीं चले और बहुत ज्यादा वह थकान का अनुभव कर रही थी। जो बातें आज उसके साथ हुई थीं उनका विचार करके अभी भी उसका दम फूल रहा था। वह सोचने लगा कि आज उसने क्या किया है। आज उसने तनवीर को करीब से देखा है। तारा को आज उसकी आखों में कितना आकंषरण दिखाई दिया। किसी को क्या मालूम।

अगर कारे उल्फ़त को आसान समझूँ !
तो क्या तर्के उल्फ़त में आसानियाँ हैं !!

........सोचते-सोचते और थकती गयी। निद्रा नहीं आ रही थी। इस समय उसको स्वप्न में भी तनवीर ही दिखाई दे रहा था। तनवीर ही के वाक्य तथा आवाज़ और सारी बातें उसके कानों में गूँज रही थीं करवटें बदलने लगी फिर भी निद्रा देवी पास नहीं फटकीं। बाध्य होकर वह चन्दा से लिपट गयी और फिर ऐसी नींद आयी कि उसे कुछ भी खबर न रही।

अध्याय दसवाँ

हँसते हुये इन्सां को रुलाना नहीं अच्छा !
रोते हुए इन्सां को हँसाते हुये जाओ !!

दूसरे दिन दस बजते ताँगा आदि आ गया और रायबहादुर साहब का सामान आदि लदना आरम्भ हो गया। जब सामान इक्का तथा ताँगे पर लद गया तो एक दूसरे ताँगे पर महिलाओं को जाने के लिए तैयार किया गया। उधर रायबहादुर साहब की स्त्री तथा लड़कियाँ तनवीर की माता जी, बहन तथा चाची आदि से मिलने गईं और इस बात का तनिक भी अनुभव न हुआ कि वह लोग एक-दूसरे के घर ठहरी थीं और अन्त में वह लोग ताँगे पर जा बैठीं।

ताँगे पर सामान आदि रखवाने में तनवीर भी सहायता दे रहा था। यह भी वहीं खड़ा था। तनवीर के पिता तथा चाचा आदि भी इस कार्य में सहायता दे रहे थे। ये लोग भी वहीं खड़े थे। इतने में रायबहादुर साहब तथा बाँके भी ताँगे पर बैठे और उनकी स्त्री, दोनों लड़कियाँ सहित ताँगे पर जाकर बैठ चुकी थीं। अतः अब साष्टांग प्रणाम हुआ और ताँगे का चलना आरम्भ हो जाता है। तारा ने आँखें बचाकर तनवीर की ओर देखा और अपने कोमल

करों को माथे तक लाकर मुस्करा कर रह गई। इस समय तनवीर के घर का वह प्रकाश जो अब तक उसके घर को उज्ज्वल किये था वह बुझ कर गायब हो गया। ....

कुछ दिल वाले हो इस दृश्य का अनुमान लगा सकते हैं। दूसरा भला क्या समझता है।

इस समय तारा के चले जाने का खेद जितना तनवीर के दिल को हुआ है और उसका चेहरा काफी दुखित हो गया उतना किसी का नहीं है। यद्यपि समाचार-पत्र उसके हाथों में है किन्तु फिर भी पढ़ने को जी नहीं है और न काम हो में मन लगता है। जो कुछ उसे याद आ रहा है वह तारा का चलते समय का नमस्ते।

अरे जाने वाले जरा ढूंढ़ देना !
अभी खो गया दिल यहाँ जाते जाते !!

रायबहादुर साहब, उनकी स्त्री तथा सब लोग इस बात से प्रसन्न हैं कि वह लोग आज अपने घर पर आ गये। सब लोग अपना अपना सामान ठीक करने और इधर-उधर हर चीज को रखने में लीन हो गये। श्रीमती रायबहादुर पतिया से अपने घर को साफ़ कराने लगीं और श्री रायबहादुर बाहर का दरवाजा तथा बैठक साफ़ करवाने में लग गये। गरजे कि घर की पूरे तौर से सफाई की जा रही है। सब लोग प्रसन्न हैं। तारा को घर पहुँचने की प्रसन्नता अवश्य है परन्तु उसके मस्तिष्क में विचार किसी और के बारे में आ रहे थे। उसको अपने घर की सब चीजें सुन्दर प्रतीत हो रही हैं किन्तु हर चीज में एक त्रुटि का अनुभव करती है।

जैसे हर शय में किसी शय की कमी पाता हूँ मैं !!

तारा के चले जाने के पश्चात् तनवीर ने बहुधा सोचा कि यदि हम रायबहादुर साहब के घर का चक्कर रोज लगालें तो शायद किसी न किसी ओर से तारा की झलक दिखाई पड़ जाय और हृदय को शान्ति मिले। परन्तु फिर भी तारा हमारे यहाँ ठहर चुकी हैं। उनके घर का चक्कर लगाना अपने को बदनाम कराने के सिवा कुछ भी नहीं। ज्यादा अच्छा तो वही है कि—

यही सोच कर वह चुपचाप था और कुछ दिन ऐसे गुज़रे जैसे पहाड़। उनको उसने बड़ी कठिनाई तथा व्याकुलता से काटा। इस प्रकार वह अभी इसी विचार में था कि बीस जुलाई को लगभग आठ बजे प्रातः सबसे पहिले तारा का नौकर बाँके आया और एक पत्र चुपचाप।

............तनवीर............

नमस्ते

हम लोग परसों दस बजे की गाड़ी से उमेश बाबू के साथ लखनऊ जा रहे हैं। सैकिंड क्लास का टिकट खरीदेंगे। आशा है कि यात्रा में साथ अवश्य दोगे।

आखों से ख़ूने दिल खाँ चेहरे से तेरा ग़म अयाँ !
तेरे बगैर इस तरह कटती है जिन्दगी मेरी !!

"तारा"

तनवीर के लिए तारा का यह पत्र क्या था कि खुशी तथा प्रसन्नता का वह परवाना था जो कम ही लोगों के भाग्य में होता है। कई बार उसने इस चिट्ठी को पढ़ा और तुरन्त तार का फार्म लेकर लिखा और बुद्धु से कहता है यह तार डाकखाने जाकर दे आओ। इस तार का विषय यह है :—

बाईस जुलाई

'रवानगी' अपर इन्डिया एक्सप्रेस
इलाहाबाद जकंशन पर मिलो—"तनवीर"

इस तार को देने ने पश्चात् तनवीर तुरन्त अपने घर में चला गया और और माता-पिता को इस बात से सूचित कर दिया कि विश्वविद्यालय २२ जुलाई को खुल रहा है अतः २२ जुलाई को वह लखनऊ जायेगा। इसके पश्चात् वह अपने वस्त्र तथा दूसरे समान को ठीक करने में लग गया।

इधर काशी को जब यह तार मिला तो सारे घर में यह समाचार बिजली की भाँति फैल गया कि वह लखनऊ के लिए रवाना होगा। अतः आज की रात्रि उसके लिए प्रतापगढ़ में अन्तिम रात होगी। धीरे-धीरे यह खबर रंजना को भी मालूम होगई कि काशी कल जा रहा है। इस समाचार से उसको इस बात

की प्रसन्नता तो है कि काशी अपनी शिक्षा को पूर्ण करने जा रहा है किन्तु काशी का वियोग उसके लिए दुख का कारण है। रंजना ने तो पत्र लिखने का वचन दे दिया था और कहा था कि पत्र-व्यवहार भेंट के बराबर होती है।

काशी तार को पाते ही अपने सामान को ठीक करने में लग गया और हर चीज़ ठीक करना आरम्भ कर दिया। इतने में सन्धा हुई। इधर-उधर ठहरने के पश्चात् मित्रों, साथियों स्वयं नाते के लोगों से मिलने के बाद घर नौ बजे आया। आज उसको देर हो गयी। जनाने घर में खाना खाने चला। हर चन्द ही खाने में लीन है परन्तु उसका कान उन महिलाओं की आवाजों की ओर लगा हुआ है जो रंजना के सहन में बैठी हुई बातें कर रही हैं। उनकी सभी आवाजें सुनाई देती हैं किन्तु आज उसको रंजना की जो आवाज सुनाई देती है उसमें दहक नहीं बल्कि उसकी जो आवाज़ आ रही है बिलकुल दबी हुई है। उसका कारण वर्णन करना इस समय व्यर्थ है क्योंकि काशी स्वयं ही उस चीज़ का भेद समझ रहा था परन्तु करना क्या है शिक्षा भी तो प्राप्त करना उसके लिए अनिवार्य है।

भोजन करने के पश्चात् काशी अपनी चरपाई पर लेट गया और हर एक सोने वाले लगभग खा चुके और अपनी-अपनी चारपाई पर लेट गये। अब घड़ी भी ग्यारह बजा रही है। होते-होते अब बारह बजना शुरू होगया था परन्तु काशी को नींद नहीं आ रही थी। उसको कभी-कभी अपना घर याद आ रहा था। कभी चार सौ मील की यात्रा और कभी रजंना से वियोग और दूरी। कभी कुछ और कभी कुछ। इस समय उसका मस्तिष्क भिन्न-भिन्न ख्यालों का स्टेशन बना था। आखिर अन्दर की लगी हुई घड़ी ने बारह घन्टे टन-टन करने बजा ही दिए और काशी ने इस बात का अन्दाजा लगाना आरम्भ किया कि सहन के सोने वालों में से कोई जाग तो नहीं रहा है। पता चलता है जितने लोग हैं सब गहरी नींद में सो रहे हैं। काशी धीरे से दबे पाँव से उठा और पीछे बगीचे में चला गया। चाँद के प्रकाश में बगीचे की हरियाली बड़ी भली मालूम पड़ती थी। ज्यों-ज्यों वह बाग से आगे बढ़ता गया देखता है कि दूसरी ओर से कोई उसी बगीचे के सहन की ओर आगे बढ़ता चला आरहा है। यह धीरे-धीरे

बढ़ता चला जा रहा है श्रौर नज़दीक जाकर पूछता है—कौन, रजंना ? रजंना श्राज तुम इतना पहिले श्रागईं ? क्षमा करना मुझे देर हुई।

रजंना—श्राज पहिले श्राने का श्रर्थ केवल इतना है कि श्राप न जाने कहाँ रहेंगे। यहाँ केवल श्राप की याद दिल में बसी रहेगी।

तेरी याद है या है तेरा तसौव्वर
कभी "दाग़" को हमने तनहा न देखा !!

काशी—तुम बातें तो श्रवश्य ज्यादा करोगी परन्तु करोगी वही जो तुम्हारे जी में श्रावेगी। हम जिस बात को कहेंगे करोगी नहीं।

रं०—क्यों कभो श्रापने इस चीज़ को परखा है ? या यूँ बेसुर की ताल बजाते हैं।

का०—श्रच्छा श्राश्रो चलें। इस पेड़ की छाया में चलकर गोलम्बर पर बैठें।

रं०—नहीं, वहाँ नही चलूँगी। चाँदनी जोरों पर है। कोई देख लेगा तो क्या होगा ?

का०—देख लेगा तो क्या होगा ?

रं०—बदनाम हो जाऊँगी।

का०—बदनाम हो जाश्रोगी तो क्या होगा ? हमारे ऊपर तो इस बात का प्रभाव न होगा। हमारे लिए तो वैसी ही रहेगी जैसी कि हो।

रं०—श्ररे चलिए भी लगे बात ही बनाने। मर्द बड़े ही बेवफा होते हैं।

का०—व्यर्थ बेवफा कहती हो, केवल ज़बरदस्ती या यूँ ही।

रं०—(मुहं वना कर) ऐं।

का०—श्रच्छा चलो गोलम्बर पर।

(काशी के कहने से रंजना काशी के साथ धीरे-धीरे गोलम्बर की श्रोर बढ़ने लगी। काशी श्रौर रंजना दोनों श्राकर गोलम्बर पर बैठ गये श्रौर फिर दोनों में बातें शुरू हो गईं)

का०—श्रच्छा तुम्हारे बाल क्यों खुले हुए हैं ?

रंजना—चूँकि चार बजे शाम को स्नान किया है, वाल भी थे सोचा अब सन्ध्या हो गई है कल सवेरे तेल डालेंगे।

काशी—मैं कह नहीं सकता कि इस खुले हुए बालों में तुम कितनी सुन्दर प्रतीत हो रही हो।

रं०—(मुस्कराकर) अच्छा अपनी कविता बन्द कीजिये। जब कभी अवसर मिला लगे बनाने। यह बताइये कि आप कितने बजे वाली गाड़ी से जायेंगे।

का०—कल ढाई बजे दिन की गाड़ी से जायेंगे। अपर इण्डिया एक्सप्रेस से जाना है क्योंकि तनवीर तथा उसकी तारा भी तो साथ चल रही है।

रं०—हमको बड़ा खेद है कि हमारे घर वालों ने हमें उच्चतर शिक्षा नहीं दिलवाई वरना मैं भी आपके साथ लखनऊ चलती।

का०—कुछ समय यह विचार करते हैं कि तुम्हें उच्चतर शिक्षा देना आवश्यक था।

रं०—परन्तु हम यह नहीं समझते कि हम पढ़ लिख कर करते क्या ?

का०—वाह ! तुम्हारी समझ ही में कोई कार्य नहीं आता। सबसे बड़ा कार्य अपनी............की सेवा करना है। देखी हैं तुर्की महिलाएँ ? खालदा अदीब खानम का नाम सदा जीवित रहेगा।

रं०—क्या मालूम कि हम खालदा अदीब बन जाते।

का०—क्या मालूम कि तुम खालदा अदीब न बन जातीं।

रं०—(अच्छी तरह समझती नहीं ! वास्तव में ऐसा है) अच्छा हटाइए इन बातों को। आपने कहा था कि इन छुट्टियों में तनवीर को बुलायेंगे। आपने बुलाया नहीं।

का०—हम बुलाने वाले थे; केवल इसी कारण नहीं बुलाया कि तुम देखना चाहती हो।

रं०—क्यों............?

का०—हमको डर है कि तुम बजाय हमारे कहीं उससे प्रेम न करने

लगो (काशी के इस वाक्य पर दोनों हँसने लगे और फिर काशी ने बातचीत चलाई)।

काशी—रंजना तुम हमको पत्र लिखोगी न·········?

रंजना—क्या आपको मेरे ऊपर विश्वास नहीं, कितनी बार वचन दिया ?

का०—रंजना एक बात और कहें, मानोगी ?

रं०—पहिले बात कहिये तब बताऊँगी कि इसको मानूँगी या नहीं।

का०—नहीं, पहले वचन दो।

रं०—नहीं, पहिले बात तो कहिये।

का०—पहिले वचन।

रं०—पहिले बात।

का०—············वचन············

रं०—············बात············

का०—············रंजना············

(फिर उसकी ओर ललचाई हुए दृष्टि से देखता है)

रं०—अच्छा कहिये।

का०—नहीं, पहिले वचन दीजिये।

रं०—अच्छा वचन देती हूँ।

का०—देखो तुम लेट जाओ और मैं तुम्हारा सिर अपने जानू पर रख लूँ अथवा मैं लेट जाऊँ और तुम मेरा सिर अपने जानू पर रख लो।

र०—दोनों अस्वीकार।

का०—(घबराकर) क्यों ?

र०—इसलिए कि दोनों बातों में आप ही का लाभ है।

का०—तुमने वचन जो दिया। यह कह कर स्वयं ही लेट जाता है और रंजना के जानू पर अपना सिर रख देता है और फिर रंजना के हाथों को और खुले हुए बालों को खींच कर अपने ऊपर रख लेता है। परन्तु काशी ने जब रंजना के जानू पर अपना सिर रखा तो रंजना के सारे शरीर में बिजली दौड़

गई और काशी ने तो न जाने क्या ही महसूस किया। रंजना के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए काशी पूछता है।

काशी—हमारी बातों पर तुम्हारा दिल पसीजता है ?

रंजना—क्यों मेरा दिल क्या पत्थर का बना हुआ है जो न पसीजेगा। आखिर यह ख्याल आपको क्यों आया ?

का०—इसलिए कि महिलायें बड़ी जालिम होती हैं।

रं०—और मर्द।

का०—दयालू !

रं०—इसका अर्थ ?

का०—(उठ बैठता है) इसका अर्थ यह है कि हम बैठ जाते हैं और तुम अब लेट जाओ।

रं०—नहीं..........नहीं..........

परन्तु काशी जबरदस्ती उसका आधा धड़ अपने जानूँ पर रख लेता है और अब काशी अपना हाथ रंजना के सीने पर रखता है तो रंजना कहने लगती है अपने हाथों को हटा लीजिये।........अच्छा लो, कहकर अपने हाथों को हटा लेता है। परन्तु मेरे हाथों को अपने हाथों से जरा दबाओ। रंजना मुस्करा देती है और फिर काशी के हाथों को अपने हाथों से धीरे-धीरे दबाने लगती है—

देखना जजबे मुहब्बत का असर आज की रात !
मेरे शाने प है उस शोख का सर आज की रात !!
मजहबे इश्क़ में जायज है यकीनन जायज !
चूम लूँ मैं लबे लाली भी अगर आज की रात !!

काशी फिर अपने हाथों को रंजना के हाथों में डाल देता है और फिर दोनों अपने जीवन के भविष्य के बारे में बातचीत करने लगे। आखिरकार इन दोनों की बातें उस समय अचानक समाप्त हुईं जब पौ फटना आरम्भ हो गया और दोनों एक दूसरे को देखते हुए और आँसू बहाते हुए एक दूसरे से बिदा हुए और अपने-अपने घर जाकर अपनी चारपाई पर पड़ गये।

अध्याय ग्यारहवाँ

पैवस्त है जो दिल में वो तीर खेंचता हूँ।
एक रेल के सफ़र की तसवीर खेंचता हूँ॥

आज २२ जुलाई है। रायबहादुर साहब के घर पर तारा और चंदा का बिछौनाबन्द तैयार हो चुका है। गाड़ी का भी समय हो रहा है लेकिन स्टेशन पर समय से पहिले पहुँचना ठीक है। बाहर टमटम पहिले ही तैयार थी। इस पर सब सामान रखा जाने लगा। नाश्ता आदि भी रख दिया गया। तारा तथा चन्दा भी बिल्कुल तैयार हैं। इन लोगों के चाचा उमेश भी आ गए। खैर अब चलना चाहिये। माता ने दोनों लड़कियों को सीने से लगाया और फिर लड़कियाँ बाहर आकर टमटम पर बैठ गईं। अब टमटम चलने ही वाली थी कि वकील साहब ने दोनों लड़कियों को आशीर्वाद दिया कि कुशलता के साथ पहुँच जायें और कुशलता पूर्वक आयें और टमटम रवाना हो गई। टमटम भी रायबहादुर साहब के साथ हवा से बातें करने वाले घोड़ों की थी कि मिनटों में स्टेशन पर पहुँचते ही उमेश साहब ने प्रतीक्षा-भवन खुलवाया और उसके अन्दर लड़कियों को बिठलाया। परन्तु इस समय तारा की आँखें केवल एक आदमी को ढूंढ़ रहीं थीं और वह तनवीर है किन्तु वह दिखाई नहीं दे रहा है। आखिर कब चलेगा, कहाँ है? इधर तनवीर बाबू भी अपनी पतलून और उजली कमीज पहिने हुए ताँगे

पर सामान रखवा रहे हैं कि नाते की महिलाओं ने तनवीर को घर में बुलवाया और सबने आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् तनवीर ने सब महिलाओं को प्रणाम किया और बाहर आया। बाहर पिता, चाचा और बड़े चाचा आदि खड़े थे। सबसे मिला और फिर तांगे पर बैठा और तांगा रवाना हो गया। मार्ग में उसने तांगे वाले से पूछा—अभी कितनी देर में आयेगी? उसने कहा—मालूम होता है कि गाड़ी आज देर में आयेगी। आखिर तनवीर का तांगा स्टेशन पर पहुँचा और वह सामान को तांगे ही पर छोड़ कर पहिले टिकट-घर से टिकट खरीदने गया। उसके बाद प्रतीक्षा-भवन में सामान रखवाया। चूँकि ग़ाज़ीपुर एक बहुत ही छोटा शहर है इसलिए इसके स्टेशन पर केवल एक ही प्रतीक्षा-भवन है जिसमें मर्द तथा स्त्रियाँ दोनों ही रह सकते हैं। चुनांचे तनवीर का सामान भी प्रतीक्षा-भवन में रखा गया और यह दोनों महिलाओं को देख कर मुस्करा उठा। परन्तु सामने ही एक वृद्ध मनुष्य को देखा और उसको देखते ही सारी मुस्कराहट का अन्त हो गया और चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गया और सिगरेट निकाल कर पीने लगा।

थोड़ी ही देर के पश्चात् तारा ने अपने चाचा को अपने पास बुलाया और कहा, प्यास बड़ी तेज़ लगी है ज़रा पीने के लिए पानी ला दीजिये। चाचा तुरन्त लोटा लेकर नल की ओर रवाना हो गये। अब मैदान बिलकुल खाली है। तारा ने अपनी साड़ी का ओट हटा कर मुस्करा दिया और यह देख तनवीर भी मुस्करा देता है। चन्दा भी अपना घूँघट सरका कर कहती है तनवीर साहब आपके हुज़ूर में सलामी दीजिये। तनवीर हँस देता है और कहता है आपके हुज़ूर में हम सलामी ही नहीं बल्कि दिल भी न्योछावर करते हैं। फिर चन्दा मुस्करा कर कहती है—हमको ऐसी प्रजा की तलाश भी है। इस पर सब हँस पड़े और थोड़ी ही देर में उमेश के पानी लेकर आने की आवाज़ सुनाई पड़ी। तब तारा और चन्दा ने अपने मुँह पर घूँघट खींच लिया। तनवीर अब दूसरी सिगरेट जलाने लगा और कनखियों से कभी तारा को देख लेता। इतने में लाइन क्लियर की घंटी बजी और थोड़ी देर में गाड़ी आ गयी। जल्दी-जल्दी सब लोगों ने अपना-अपना सामान उठाया और गाड़ी के डिब्बों की ओर चले।

स्टेशन पर कुली-कुली की आवाज़ से सारा स्टेशन गूंजने लगा। फेरी वाले अलग अपनी आवाज़ें गला फाड़-फाड़ कर निकाल रहे थे। द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में उमेश और लड़कियां जाकर बैठीं। इसके बाद तनवीर भी अपना सामान लेकर उसी डिब्बे में पहुँच गया। सैकिण्ड क्लास के डिब्बे में आमतौर से आदमियों की संख्या कम होती है। चुनांचे इस डिब्बे में भी आदमियों की संख्या बहुत कम थी। इस डिब्बे में केवल तीन सीट हैं। एक सीट पर उमेश बाबू और दोनों लड़कियां बैठीं। और दूसरी पर एक बंगाली बाबू अपनी स्त्री, तीन लड़कियां और दो बालकों सहित बैठे थे और जो सीट खाली थी उस पर तनवीर पाँव फैलाए हुए बैठा और सिगरेट पीता हुआ अखबार पढ़ने लगा। अब गाड़ी ने सीटी दी और दरवाजा बिलकुल बन्द हो गया। गाड़ी ने एक बार झटका दिया और धीरे से चल कर फिर तेजी से चलने लगी और अब खिड़कियों से हवा भी आने लगी।

अभी गाड़ी थोड़ी ही दूर चली होगी कि तनवीर ने अपना समाचार-पत्र किनारे पर रख दिया। उसका मन समाचार-पत्र पढ़ने में नहीं लगता था। तारा जो कि अपना मुंह छुपाए हुए थी परन्तु उसका मुंह केवल एक ही ओर रहता है और वह तनवीर की ओर है। तनवीर उमेश से दृष्टि बचा कर जब भी अवसर पाता है तो तारा की ओर देखता है और चन्दा जब भी तनवीर की ओर देखती है तो ठेंगा दिखा देती है। कभी अपना पैर उठा कर सैंडिल दिखा देती है और कुछ नहीं तो अपने हाथों की अंगुलियों से कान ऐंठने की धमकी देती है परन्तु यह सब बातें चन्दा उस समय करती है जब उमेश बाबू खिड़की से बाहर झांकने लगते हैं या जब इधर-उधर की बातों में लीन हो जाते हैं किन्तु तनवीर और तारा दोनों ही इन हरकतों पर मुस्करा देते हैं।

स्टेशन पर स्टेशन आता जाता है। अब औढ़ियार का स्टेशन आ गया। यहां पर समाचार-पत्र वाले से उमेश बाबू ने समाचार-पत्र खरीदा और पढ़ने में लीन हो गये तो फिर क्या था चेहरे से घूंघट हटा दिया और इस तरीके से बैठ गई कि देखने वाले यह समझें कि खिड़की के बाहर देख रही है। किन्तु वास्तव में उसका चेहरा तनवीर के चेहरे के आमने सामने पड़ रहा है। दोनों

एक दूसरे को कभी टकटकी बाँध कर देखने लगते हैं और कभी मुस्करा देते हैं और कभी मायूसी के अन्दाज में बना लेते हैं।

इसके विरुद्ध चन्दा ने भी मुख से घूंघट हटा लिया परन्तु उसका मुख खिड़की की ओर और पीठ तनवीर की ओर है। तारा और तनवीर द्वारा बातचीत हो रही है और साथ-साथ चन्दा तारा का मज़ाक उड़ाती जा रही है। लेकिन क्या करे मजबूर है वरना तनवीर दूर न होता तो चन्दा को खाने भर देता। तनवीर अपनी सिगरेट फिर जलाता है और धुंआ निकालने के पश्चात् तारा की ओर देखता है। इन दोनों को नयनें आपस में टकराती हैं। दोनों आपस में आखों को मिला कर अपने हार्दिक भावों को प्रकट करते हुए तीव्र गति से चलने वाली रेल में चले जा रहे हैं।

खामोशी का तो नाम होता है।
वरना यूं भी कलाम होता है।।
इश्क़ को पूछता नहीं कोई।
हुस्न का एहतेराम होता है।।
आंख से आंख जब नहीं मिलती।
दिल से दिल हमकलाम होता है।।
हुस्न को शर्मसार करना ही।
इश्क़ का इन्तक़ाम होता है।।

इस दशा में तनवीर, तारा और चन्दा तीनों यात्रा कर रहे हैं। ट्रेन अपना मार्ग वही स्वाधीनता से पार करती चली जा रही है और होते-होते बनारस का स्टेशन आ गया। यहाँ पर बंगाली बाबू अपनी स्त्री एवं बच्चों के साथ उतर गये। अब डिब्बे में तीन या चार यात्री रह गये। एक तो उमेश बाबू, दूसरे दो लड़कियाँ, तीसरे तनवीर और कोई भी नहीं। गाड़ी थोड़ी देर ठहरने के उपरान्त फिर रवाना हो गयी। ये लोग ग़ाज़ीपुर से दस बजे रवाना हुए थे और बनारस पहुँचते साढ़े बारह बज गये। उमेश बाबू कुछ थकन का अनुभव करने लगे किन्तु उनकी सीट के सामने वाली सीट जिस पर बंगाली बाबू बैठे थे बिलकुल खाली है इसलिए वह उस पर जाकर लम्बी तान लेते हैं। थोड़ी

देर बाद उनकी नाक से खर्राटों की आवाज़ आना सुनाई देनी आरम्भ हो गयी और वह गहरी नींद के मज़े लेने लगे। यूँ समझिये कि चन्दा और तारा को लड़ने के लिये पूरी आज़ादी मिल गई।

अब काशी का हाल सुनिए। दिन के ढाई बजने को आए। ट्रेन का समय करीब हो आया। सब सामान ताँगे पर रख दिया गया। चूँकि यह काशी की रवानगी का समय है इसलिए रंजना घर वालों से बिलकुल अलग चुपचाप अपने घर की छत पर चली जाती है और छत पर जाकर छोटी वाली खिड़की को ज़रा सा खोल देती है ताकि वहाँ से जाने वाले की सूरत देख ले परन्तु बाहर मौजूद होने वाले लोग उसकी सूरत न देख सकें। जब काशी का सब सामान आदि रखा जा चुका तो उसके पास खड़े होने वाले वृद्धों ने उससे मुलाकात की और आशीर्वाद दिया। पहिले वह अब अपने पिता से मिलता है। फिर रवीन्द्र बाबू काशी को सीने से लगाते हैं और बातों ही बातों में जोर देते हैं कि बेटा बहुत जी लगा कर पढ़ना और पहुँचते ही अपनी कुशलता का पत्र भेज देना ताकि हृदय को शान्ति मिले। यात्रा में सामान आदि से सावधान रहना। परन्तु काशी बहुत प्रसन्न है क्योंकि यात्रा में उसके साथ तनवीर भी रहेगा। इसलिए भगवान की कृपा से यही आशा है कि यात्रा बहुत सरलता से समाप्त हो जायगी। रंजना ऊपर से यह सब कुछ देख रही है। अब काशी रवाना होता है और रंजना के नेत्रों में नयन-जल भर जाते हैं।

काशी स्टेशन पर पहुँचता है। उसकी गाड़ी आ जाती है और उसमें बैठ कर वह इलाहाबाद जंकशन पर प्लेटफार्म पर पहुँच जाता है। यहाँ पर सामान रखवा कर इधर-उधर टहलना आरम्भ कर देता है। अब उसको केवल अपर इन्डिया एक्सप्रेस की प्रतीक्षा है। दूसरे यात्रा करने वालों से पूछने पर ज्ञात होता है आज अपर इन्डिया कुछ देर से आयेगी। गाड़ी की प्रतीक्षा में समय काटना पर्वत के शिखर पर चढ़ने के समान प्रतीत होता था परन्तु ईश्वर-ईश्वर करके लाइन क्लियर की घंटी बजती है और प्लेटफार्म के सभी यात्री अपना सामान आदि ठीक करने लगते है। इतनेमें कुछ दूर से इंजन का धुंआ दिखाई देता है। एक कुली झट से काशी का सामान लेकर तैयार हो जाता है।

ज्योंही अपर इन्डिया इलाहाबाद जंकशन पर पहुँचती है यात्रा करने वालों को दौड़-धूप के तथा शोर-गुल आरम्भ हो जाता है परन्तु जिस समय ट्रेन स्टेशन पर पहुँचती है तनवीर ने अपना आधा धड़ बाहर निकाल कर रूमाल हिलाना आरम्भ कर दिया है। काशी रूमाल का हिलना देख कर शीघ्र ही तनवीर को पहिचान गया और कुली से कहता है—इस डिब्बे में सामान ले चलो। कुली तुरन्त उस डिब्बे की ओर सामान लेकर भागता है। तनवीर तथा काशी एक दूसरे के समीप पहुंच कर मिलते हैं। सामान रक्खा जाता है और तनवीर तथा काशी दोनों सामान को ठिकाने से रखते हैं। हर सामान को नीचे ऊपर रख कर सुरक्षित स्थान ढूंढ़ कर सब बैठ जाते हैं। इस जगह दो यात्रा करने वाले और आकर इस डिब्बे में बैठ जाते हैं परन्तु स्टेशन का शोर-गुल धक्कम-धुक्की की आवाज सुन कर उमेश बाबू जाग जाते हैं। हाथ धोने लगते हैं। नाश्तादान से नाश्ता निकाल कर खाने लगते हैं, तारा और चन्दा भी नाश्ता करती हैं। बहरहाल होते-होते गाड़ी के ठहरने का समय समाप्त हो जाता है। सीटी देने के पश्चात् गाड़ी ने झटका दिया और रवाना हो गई।

चलो है रेल स्टेशन से लहराती हुई।

अब डिब्बों के यात्रियों की बैठक इस प्रकार है। एक बर्थ पर उमेश बाबू तथा लड़कियां और दूसरे पर नये दो यात्री और किनारे वाली तीसरी बर्थ पर तनवीर तथा काशी।

तनवीर और काशी बहुत दिनों के पश्चात् मिले हैं। दोनों अत्यन्त ही प्रसन्न हैं। तारा तथा चन्दा ने काशी को पहिचान लिया कि यही काशी है जिसकी प्रशंसा में तनवीर कविता गाया करता था। बहरहाल इस समय काशी तथा तनवीर दोनों धीरे-धीरे बातों में लीन हो गये और दोनों चन्दा तथा तारा की ओर बार-बार देख लिया करते हैं और केवल मुस्करा कर ही रह जाते हैं।

काशी—अबे यार तनवीर : सुना है आजकल तू धनवान हो रहा है।

तनवीर—हाँ देख वह सामने घूंघट डाले हुए हमारा धन रखा है।

का०—अच्छा यही वह सुन्दरी (कह कर एक मिनट मुस्कराता है और फिर तारा, चन्दा की ओर देखता है)।

काशी के ताकने पर तारा तथा चन्दा समझ जाती हैं कि तनवीर हम सबों को काशी से पहिचनवा रहा है और दिल ही दिल में मुस्कराती हैं। चेहरे पर घूंघट पड़ा हुआ है। इस बात को कौन जान सकता है।

तनवीर—(काशी से कहता है) कहो रंजना का कैसा हाल है ?

काशी—तुमको नमस्ते कहा है।

त०—मेरा भी नमस्ते।

और अब फिर काशी तथा तनवीर में इधर-उधर की बातें होने लगीं और बातचीत में तनवीर कभी तारा की ओर देखता है और कभी काशी तथा चन्दा की ओर। परन्तु चन्दा है कि कभी काशी को धमकाती है और कभी तनवीर का कान ऐंठने का संकेत करती है। चन्दा की इस बात पर तनवीर तथा काशी दोनों हँसते हैं और फिर तनवीर कहता है—यार इन लौंडियों ने नाक में दम कर रक्खा है।

ट्रेन बहुत तीव्र गति के साथ चली जा रही थी, कोयले के छोटे-छोटे कण काशी की ऐनक पर एकत्र होने लगे। जिसको वह बार-बार रूमाल से साफ़ करता जाता है। दोनों में खूब ऐसी मज़ाक होती जा रही थी और दोनों ही खूब इधर-उधर की बातें करते जा रहे थे। वास्तव में तनवीर के लिए केवल इस समय दो कार्य थे—एक तो काशी से बात करना और दूसरे सिगरेट का धुँआ उड़ाना। सिगरेट की अधिकता को देखकर काशी कहता है—तनवीर आखिर तू इतना सिगरेट क्यों पीता है ?

त०—(मुस्करा कर उत्तर देता है) धन को राख करने का यह सर्व-श्रेष्ठ साधन है।

तनवीर की यह बात सुनकर काशी कहता है, अरे वाह रे मेरे धनवान।

फिर तनवीर कहता है—न सही चांदी का धन, सुन्दरता का धन तो है।

काशी—(ताने के स्वर में कहता है) जी हाँ ठीक कह रहे हैं यह बात है आपकी।

काशी का यह वाक्य सुनकर तनवीर झेंप गया।

इन दोनों की यात्रा खूब कट रही है गो कि तारा तथा चन्दा से इन दोनों की वातचीत हो रही है किन्तु संकेत तथा इशारे का क्या काम है। ट्रेन है कि तीव्रता के साथ मीलों की दूरी मिनटों में समाप्त कर ले जा रही है। इधर सूर्य नारायण भी थक चुके थे और संसार के थके हुए लोग विश्राम का प्रबन्ध कर रहे थे। चूँकि सूर्य का आखिरी समय हो रहा है और वह डूब रहा है इसलिये सोने की किरणें डाल कर अपनी निधि लुटा रहा है और पृथ्वी इन सुनहरी किरणों को इस तेज़ी से समेट रही है कि हर ओर अँधेरा फैलता जा रहा है। पेड़ों पर रहने वाले पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड अपने बसेरे के पेड़ों की ओर आ रहे हैं। सुनहरी किरणों के पड़ने से रेल के आस-पास पड़ने वाले सरोवर का जल भी सुनहरा होता जा रहा है। किसी कवि ने इसी दृश्य को इस प्रकार वर्णन किया है—

तूफ़ान चहचहों का चिड़ियों का था बसेरा !
गुंजान झाड़ियों के साये में था अन्धेरा !!
तेज़ी से जंगलों में यूँ रेल जा रही थी !
लैला सितार अपना गोया बजा रही थी !!
कुछ दूर पर था पानी मौजें रुकी हुई थीं !
तालाब के किनारे शाखें झुकी हुई थीं !!
ख़ुरशीद झुक रहा था रंगी पहाड़ियों में !
ताऊस पर समेटे बैठे थे झाड़ियों में !!
मस्ती आब की सी आँखों में छा रही थी !
हर साँस इक छलकता साग़र पिला रही थी !!

बिलकुल अन्धेरा होते-होते रात्री ने संसार को गोद में ले लिया। आकाश पर तारे दिखाई देने लगे और डिब्बे के अन्दर की रोशनी भी जल गई। घड़ी भी अब रात के आठ बजा रही है। लगभग घण्टे आध घण्टे में फतहपुर का स्टेशन आने वाला था। अभी स्टेशन के आने के बारे में बातचीत हो ही रही थी कि गाड़ी की गति अचानक धीमी हो गई। लीजिए बातों ही बातों में समय भी कट गया और फतहपुर का स्टेशन आ गया। यहां पर गाड़ी थोड़ी

देर दम लेती है। फिर इंजन की सीटी की आवाज़ आती है और गाड़ी थोड़ी देर बाद रवाना हो जाती है और पुनः उसी तीव्र गति से चलने लगती है। अब रात के दस बजने को आये। कुछ यात्रा करने वाले थकान के कारण सोना चाहते हैं। लम्बी यात्रा है, उमेश बाबू अधेड़ आयु के मनुष्य हैं। लड़कियों को सामान की देखभाल की आज्ञा देकर फिर सोने में लीन हो जाते हैं और आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर अपने खर्राटे भरना आरम्भ कर देते हैं। नीचे तारा तथा चन्दा बैठी रह गईं और उमेश बाबू सबों के ऊपर के बर्थ पर जाकर सोने में ऐसे लीन हुए कि फिर पूछिए नहीं। उमेश बाबू के ऊपर जाकर सोने का अर्थ यह था कि चन्दा तथा तारा को स्वाधीनता का पासपोर्ट मिल गया। चन्दा ने तुरन्त अपना घूंघट हटा दिया और तारा से कहने लगी—तुम भी अपना घूंघट हटा दो। तारा कहने लगी—देखती नहीं सामने दो लखनवियन बैठे हैं। तब चन्दा कहने लगी—तू इस बात की चिन्ता कुछ भी न कर। यदि ये लौंडे ज़रा भी बोलेंगे तो लखनऊ चलकर इन सबों की ऐसी मरम्मत करूंगी कि उम्र भर याद करेंगे। गरज़े कि इन सब वाद-विवाद के पश्चात् तारा भी अपना घूंघट हटा देती है। इधर तनवीर तथा काशी इन सब बातों का बहुत ध्यान से अन्दाज़ा ले रहे हैं। मुस्करा-मुस्करा कर उन लोगों की सारी हरकतें देख रहे हैं। चन्दा का क्रोध और चैलेंज, हिम्मत तथा दावा हर चीज़ का दृश्य ये लोग देखते जा रहे हैं और प्रसन्न हो रहे हैं।

शमा ने शोला जब लहराया उड़के चला परवाना भी !

काशी ने कहा—तनवीर जब उधर से प्रारम्भ हो गई है तो हम अब तुमसे भी कुछ कहेंगे।

फिर तनवीर कहता है—भई कह डाल, तेरी हृदय की कामना भी निकल जाय किन्तु कोई मूर्खता की बात न कहना।

काशी फिर कहता है—अबे तू निरा मूर्ख है। हमने आज तक कोई मूर्खता की बात कही है ?

तनवीर फिर कहता है—इसलिए तो अधिक आशा है कि तू इस समय न कोई मूर्खता की बात कह दे। तनवीर के इस वाक्य पर दोनों आपस में

हँस पड़ते हैं और इन दोनों को हँसता देख तारा तथा चन्दा भी मुस्करा देती हैं। काशी बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए फिर कहता है—तनवीर कोई गाना सुना।

तनवीर—यार तू जानता तो है कि हमारा मैदान कविता तथा गीत से मनोरंजित होता है न कि फिल्मी गानों से।

काशी—अबे तू निरा बोट है। मैं यह कह रहा हूँ कि गाना सुना। गाना सुनायेगा या मार खाएगा।

त०—अच्छा, अच्छा सुनाते हैं।

वह शकील का लिखा हुआ गाना—"ये प्यार की बातों में सफ़र भूल न जाना"—सुनाता है। इस गाने का सबसे अधिक प्रभाव तारा पर पड़ा और उसके पश्चात् तनवीर ने फिर अपनी दूसरी सिगरेट जलाई। यह देखकर काशी कहने लगा—यार तनवीर बहुत से सिगरेट पीने वाले देखे किन्तु तेरे जैसा सिगरेट पीने वाला कम ही देखा। तनवीर बोला—क्यों ?

का०—वस्तुतः मैं तेरे सिगरेट पीने का तरीका भी निराला है। तू अजीब तरीके से सिगरेट जला कर पीता है और फिर धुँआ भी कुछ अजीब अन्दाज से निकालता है। लाख कोशिश की परन्तु नकल न कर सका और न किसी को ऐसे पीते देखा।

तनवीर ने कहा—काशी, मेरी समझ में नहीं आया कि आज तू इतनी बोरियत क्यों फैला रहा है ? आखिर तू आजकल इतना मेरे और सिगरेट के पीछे क्यों पड़ा हुआ है ? जानता तो है कि अनेकों मनुष्यों का केवल सिगरेट ही साथी है। इसी प्रकार की इन दोनों में बातचीत होती जाती है कि एक साधारण से स्टेशन पर गाड़ी रुकती है। वहाँ पर चाय वाला आवाज देता हुआ गुजरता है। यह देख काशी तुरन्त डलिये में से चायदान निकालता है और उसमें सात-आठ प्याली चाय खरीदता है। इसके उपरान्त डलिये में से तीन-चार चाय की प्याली निकालता है। पहिले दो प्याली चाय बनाकर तनवीर से कहता है कि ले जा दे आ। तनवीर मुस्कराकर चाय की प्याली

उठाता है और उसके पश्चात् उमेश साहब की ओर देखता है कि वह जग तो नहीं रहे हैं। जब उसको पता चलता है कि वह बिलकुल नींद में हैं तो धीरे से दोनों हाथ में दोनों प्यालियाँ लेकर तारा तथा चन्दा के पास ले जाता है और दोनों को एक-एक प्याली बढ़ा देता है। तनवीर को दो प्यालियाँ लिये हुए देखकर चन्दा बोलती है—तारा को चाय मत दो इसलिए कि हम दोनों एक प्याली की चाय पीयेंगे। चन्दा के इस वाक्य पर हँस देते हैं और फिर तारा कहती है—मेरे हिस्से की चाय तू कौन होती है पीने वाली ?

चन्दा—अच्छा हमारी ही बिल्ली और हमीं से म्याऊँ। गरज़ कि धन्यवाद देने के पश्चात् दोनों चाय ले लेती हैं और पीना आरम्भ करती हैं।

इन चारों की यात्रा तो इन सब मनोरंजन के साथ कट रही है परन्तु उमेश साहब हैं कि प्रतीत होता है कि उनकी यात्रा सोते ही सोते कटेगी और वह लखनऊ में जाकर उठेंगे। अभी तक पड़े सो रहे हैं। अब सुबह के चार बजने आये और गाड़ी बारहबंकी पहुँची परन्तु ज्योंही गाड़ी बारहबंकी के आगे चली उमेश बाबू जग गये। अगले स्टेशन तक पहुँचते-पहुँचते उन की पूजा का समय हो गया। ज्योंही लड़कियों ने देखा कि उनके चाचा उमेश बाबू अब हिल रहे हैं और करवट बदल रहे हैं तुरन्त अपना-अपना घूँघट काढ़ कर उसी पुराने ढंग से बैठ गईं। उमेश बाबू भी ऊपर की बर्थ से नीचे उतर कर आ गये। मुँह हाथ धोकर पूजा में लीन हो गये। अब प्रातःकाल हो गया था। डिब्बे के अन्दर प्रातःकाल की वायु के झोंके आ रहे थे। उमेश बाबू आसनी बिछाकर पूजा करने लगे। सत्य है ऐसे ही लोगों के लिए बैकुण्ठ बना है।

पूजा करके उमेश बाबू खिड़की के पास बैठ गये ताकि सबेरे की हवा का आनन्द लें। दिन बिलकुल निकल आया और अब होते-होते गाड़ी लखनऊ के स्टेशन पर पहुँच गई। जिस भाँति इस दुनियाँ में मनुष्य अक्सर अपने जीवन की यात्रा हँसते-गाते समाप्त कर देता है, इसी प्रकार इन यात्रा करने वालों ने भी अपनी यात्रा हँसते-गाते समाप्त की। लखनऊ के स्टेशन पर उतर कर दोनों झुण्डों ने अपनी-अपनी मंज़िल के लिए ताँगे ठीक किये और रवाना हो

गये। उमेश बाबू उन लड़कियों को एक ताँगे पर सवार कराकर स्वयं बैठ गये और उन लोगों का ताँगा यहियाँ गंज रोड की विख्यात कोठी स्वराज भवन की ओर चल पड़ा। ये लड़कियाँ उस स्वराज भवन की इमारत में रहती थीं। यह घर रायबहादुर साहब के एक मित्र का है जो कि पेन्सन पाये हुए एस० पी० हैं। उनके न कोई लड़का है, न कोई लड़की, केवल पति-पत्नी ही इस घर में रहा करते हैं। चुनांचे रायबहादुर साहब ने उचित समझ कर अपने मित्र ही के घर पर रहने को कहा और बोर्डिग को उचित नहीं समझा। ये लड़कियाँ एस० पी० साहब को चाचा कहती हैं और वे भी इन लड़कियों की देख-रेख ऐसी करते हैं जैसे कि ये उन्हीं की लड़कियाँ हैं। अतः उन लोगों का ताँगा स्वराज भवन की ओर चल पड़ा।

————

अध्याय बाहरवाँ

न अब वो आँखों में बरहमी है न अब वो माथे प बल रहा है।
हम उनसे खुश हैं वो हमसे खुश हैं ज़माना करवट बदल रहा है !!

स्टेशन पर तनवीर तथा काशी भी ताँगे पर बैठे। पहिले आनन्द होस्टल पहुँचे जहाँ पर तनवीर रहता है। उसके पश्चात् उसका सामान उतारा जाता है। उसके बाद तागा आगे बढ़ता है। और गोल गेट से प्रवेश कर आगे बढ़ता है और ओल्ड होस्टल पहुँच जाता है। वहाँ काशी सामान उतरवाता है। दोनों अपने-अपने कमरों में पहुँच कर अपने कमरों की सफाई करते हैं और फिर भली-भाँति हर सामान को उचित रूप से रख देते हैं। इसके बाद नहाते हैं और फिर दोपहर के भोजन के बाद सो जाते हैं। सन्ध्या समय लगभग पाँच बजे काशी के कमरे पर ओल्ड होस्टल पहुँचता है। दोनों कैफडी जमील में जाकर पहिले चाय पीते हैं और चाय पीने के पश्चात् सागर से मिलने को चल देते हैं। श्री सागर तनवीर तथा काशी के घनिष्ट मित्रों में से हैं। कानून के अन्तिम वर्ष में हैं। गोंडे के बहुत बड़े जमीदार के पुत्र हैं इसलिए दोनों पति-पत्नी की मित्रता तनवीर तथा काशी से है। सागर जिस घर में रहते हैं उस घर का नाम लाल भवन है। यह

मकान ग्रति सुन्दर है जो यहियाँ गंज रोड पर स्थित है। जी हाँ उसी यहियाँ रोड पर जिसके बारे में किसी ने इस भाँति लिखा :—

खरामे नाज़ की खातिर यहाँ दिल को लुटाता जा !
यह यहया गंज है ऐ दिल यहाँ सजदे लुटाता जा !!

यह मकान तो बहुत ही शानदार है परन्तु घर के निवासी भी इस घर की सुन्दरता को बढ़ा देते हैं ग्रौर ये पति-पत्नी का ग्रापस का व्यवहार भी मन को लुभाने वाला रहता है। श्रीमती सागर सुन्दर तथा ग्रच्छे व्यवहार की हैं। तनवीर तथा काशी उनको भाभी कह कर पुकारते हैं। उनके पति से चूँकि उन लोगों का सम्बन्ध काफ़ी है इसलिए उन लोगों से ये ज़रा भी झिझक नहीं रखतीं। उन लोगों के लिए ये लोग बिलकुल घर वाले हो चुके हैं।

जब कि तनवीर तथा काशी दोनों लाल भवन पहुँचे तो धड़धड़ाते घर में पहुँच गये। इस समय श्रीमती सागर मुँह धो रही थीं ग्रौर सागर मेज़ पर लगी हुई चाय के सामने बैठे हुए थे ग्रौर श्रीमती सागर की प्रतीक्षा कर रहे थे वह ग्रा जावे। तो चाय बनायें। श्रीमतो सागर तथा श्री सागर दोनों उन लोगों को देखते ही उछल पड़ते हैं कि खूब ग्राये।

तनवीर ग्रौर काशी कुर्सी लेकर मेज़ के पास बैठ गये ग्रौर श्रीमती सागर ने भी शीघ्रता से मुँह हाथ धोने के पश्चात् तौलिये से पोंछा। उसके पश्चात् वह भी मेज़ के पास एक कुर्सी लेकर बैठ गयीं ग्रौर चाय बनाना ग्रारम्भ कर दिया।

श्रीमती सागर—कहो भाई ग्रच्छे रहे तुम लोग ?

काशी—जी हाँ, ग्रापका ग्राशीर्वाद रहा।

श्री० सा०—(मुस्कराकर) रजंना भी ग्रच्छी है ?

का०—(मुस्कराकर) जी हाँ ग्रच्छी है ग्रापको प्रणाम कहा है।

श्री० सा०—(तनवीर की ग्रोर मुड़कर) कहो तनवीर, तुम्हें भी कोई जीवन साथी मिला ?

तनवीर—(मुसकरा कर) आप माल सप्लाई कीजिये कमीशन तो माल पर ही मिलेगा।

तनवीर के इस वाक्य पर सब लोग हँस पड़े। श्रीमती सागर कुछ झेंप सी गयीं। इतने में काशी बोल उठा हाँ भाभी अबकी बार इस दुष्ट तनवीर का भाग्य जाग गया है।

श्रीमती सागर—वास्तव में ?

का०—अरे साहब चीज देखने योग्य है।

श्री० सा०—तो इसका अर्थ यह हुआ कि तनवीर का कार्य बिना किसी मजदूरी के ही करना होगा।

का०—वह तो है ही, वरना इस प्रकार समझ लीजिये कि सारे राष्ट्र का बेड़ा डूब जायेगा।

काशी के इस वाक्य पर फिर बड़े जोरों की हँसी। हुई अब यूँ ही इधर-उधर की बात होती रही। श्री सागर जो कि सीधे-साधे मनुष्य हैं वह भी इधर-उधर की बात-चीत करने में लगे रहे और इसी बातचीत में सन्ध्या के सात बज गये और आठ बजते-बजते तनवीर और काशी सब वापस होकर चलने को उठे। मार्ग में इन दोनों में खूब बातचीत होती रही और केवल यह बात तै हुई कि तारा के सिलसिले में यदि कोई कार्य पूर्ण करने योग्य हो सकता है तो वह केवल उन लोगों की भाभी ही कर सकती है। इन्हीं सब बातों में पूरा रास्ता कट जाता है और वे गोल गेट पर पहुँच गये कि काशी कहता है—चलो तनवीर आज तुम्हारे ही कमरे पर सो रहें। तनवीर कहता है—चलो। और फिर दोनों आनन्द होस्टल की ओर मुड़ पड़े। तनवीर काशी के साथ सिगरेट का धुँआ उड़ाते हुए अपने कमरे में पहुँचा। नौकर ने चारपाई बाहर दालान पर निकाल कर बिस्तर लगा दिया। तनवीर कुर्सी मँगाकर उस पर बैठ गया और काशी तनवीर की चारपाई पर लेट गया। गप्पबाज़ी प्रारम्भ हो गयी। जब रात काफ़ी गुज़र जाती है तो दोनों खाना खाते है और फिर खाकर सो जाते हैं।

दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों उठते हैं और नहाने-धोने के पश्चात् चाय

पीते हैं। इतने में ख्याल आता है कि घरवालों को पत्र लिख दें कि कुशलता के साथ घर पहुँच गये। इसलिये तनवीर चारपाई पर बैठे ही बैठे पत्र लिखना आरम्भ कर देता है। अभी ये दोनों पत्र लिखने में लीन थे ही कि इन दोनों से मिलने के लिय सागर लाल भवन से चलते हैं और पहिले काशी के कमरे पर पहुँचते हैं। काशी का कमरा बन्द पाते ही तुरन्त समझ जाते हैं। यहाँ पर आते ही बरामदे में साइकिल रखते हैं और जब कमरे में प्रवेश करते हैं तो उन दोनों से मुलाकात होती है और नमस्ते होती है। इसके पश्चात् सागर भी कुर्सी घसीट कर बैठ जाते हैं और फिर बातचीत का सिलसिला जारी होता है।

सागर—कहो भाई तुम लोग क्या कर रहे हो ?

तनवीर—यार पिताजी को पत्र लिख रहा हूँ।

सा०—और काशी तुम क्या कर रहे हो ?

का०—हम भी पत्र लिख रहे हैं।

सा०—रजंना को भी पत्र लिखोगे ?

का०—हाँ, क्यों नहीं.................... ।

सा०—तो फिर हमारा भी प्रणाम लिखना।

इतने में तनवीर अपना पत्र लिखना समाप्त करके कहता है—देखो काशी रंजना को मेरा बहुत-बहुत नमस्ते कहना।

का०—अरे वाह रे तेरा कहना हवे लिखना कह लिखना—सब लोग हँसते हैं। अन्त में दोनों पत्र लिखना समाप्त कर देते हैं। फिर सागर की साइकिल लेते हैं और तीनों कैफडी जमील की ओर रवाना हो जाते हैं और वहाँ चाय के ऊपर अच्छी खासी बातचीत होती है और एक घन्टा बैठक के पश्चात् ये दोनों फिर कैफडी जमील से वापिस आते हैं और तनवीर के कमरे में चले आते हैं। यहाँ सागर कहते है—आओ चलें घर। इसलिए फिर तीनों उठते हैं। काशी सागर की साइकिल लेकर चलता है और लाल भवन की ओर रवाना हो जाते हैं। धीरे-धीरे टहलते हुए चलकर सब के सब लाल भवन

पर पहुँचते हैं तो क्या देखते हैं कि श्रीमती सागर बैठो हुई पुस्तक का अध्ययन कर रही हैं। वह उठ जाती हैं और कुर्सी आदि ठीक करने लगती हैं। सबके पश्चात् श्रीमती सागर कहती हैं—यदि तुम लोग भी आज यहीं खाना खाओ तो एक मजेदार चीज़ पकी है, खिलायें !

श्रीमती सागर के इस वाक्य पर सब बोल उठे—भाई, नेकी और पूछ-पूछ। इस प्रकार श्रीमती सागर सबसे अपने घर भोजन करने का वचन ले लेती हैं फिर बातचीत होने लगती है। और जब रंजना के बारे में बात समाप्त होती है तो तनवीर के बारे में बातचीत प्रारम्भ हो जाती है। और इसी बीच में काशी श्रीमती सागर से कहता है।

काशी—भाभी देखिये अब तनवीर का मामला बहुत संगीन हो गया है और अब इस सिलसिले में आपकी सहायता की आवश्यकता है।

श्रीमती सागर—भई वाह, वह तो अपना कर्त्तव्य है।

का०—कर्त्तव्य नहीं। वास्तव में वचन दीजिये कि सहायता करूँगी।

श्री० सा०—भई कहती तो हूँ कि तन, मन धन हर प्रकार से सहायता करूँगी।

का०—और सागर तुम।

सागर—भई यह भी कोई पूछने की बात है। मामला क्या है ? हम भी तन, मन, धन से इसके लिए उपाय करेंगे।

का०—बात तो बहुत मजे की है।

सारांशत: सबका वचन देने दिलाने के पश्चात् काशी ने कहना आरम्भ किया—यही यहियागंज रोड पर जो इमारत स्वराज भवन है कि नहीं ? इसी में रायबहादुर के घर की दो लड़कियाँ हैं। एक तो उनकी बेटी है जिसका नाम तारा है दूसरी उनकी भतीजी चन्दा नामक है। दोनों बी० ए० के अन्तिम वर्ष में पढ़ रही हैं। तनवीर तथा तारा से मित्रता है। बहुत बढ़ चुकी है। अब यदि आप ज़रा सी सहायता कर दें तो यह मित्रता पूरी हो जाय। हमने भी लड़की

को देखा है। वास्तव में बहुत सुन्दर तथा गंभीर लड़की है। केवल आप सहायता कर दीजिये।

काशी की यह बात सुन कर श्रीमती सागर तनवीर की ओर देखकर मुसकराने लगीं और फिर कहती है—तनवीर बाबू यदि तुम चाय का वचन दे दो तो तारा से तुम्हारी मुलाकात करा दूं।

इस पर तनवीर कहता है भाभी आप भी क़माल ही करती हैं। आखिर आप कितनी चाय पीजियेगा ?

श्रीमती सागर—अच्छा तो फिर यह मुहायदा सौ प्रतिशत स्वीकार। इतने में सागर तथा काशी दोनों बोल उठते हैं—खैर परमात्मा ने एक चाय पीने का साधन तो निकाला।

अब बारह बजने लगे और सागर के नौकर ने आकर कहा कि भोजन बगल के कमरे में मेज़ पर लगा हुआ है। यह सुनना था कि सब के सब अपनी कुर्सी उठाये हुए वहीं पर पहुँच गये और आज के खाने में मुख्य वस्तु मोहनभोग है। इसका खूब आनन्द ले लेकर खाने लगे। भोजन करने के पश्चात् फिर बैठक के कमरे में आ गये और थोड़ी देर बातचीत होती रही और फिर सागर की साइकिल लेकर काशी तथा तनवीर दोनों बोर्डिंग की ओर रवाना हो गए। दोपहर तो हो ही चुकी थी। श्रीमती सागर तथा सागर भी अपनी-अपनी चारपाइयों पर जाकर सो गये और सन्ध्या समय जब श्रीमती सागर सोकर उठीं तो चाय ज़रा शीघ्रता से पीती हैं क्योंकि आज सन्ध्या समय बहुत देर से सोकर उठी हैं। चूंकि चाय देर से बनी हुई थी इसलिए वह भी ठण्डी हो चुकी है इसलिए उन्होंने शीघ्र ही चाय पी। पीने के पश्चात् स्वराज भवन की ओर रवाना हो गईं। चलते-चलते स्वराज भवन जो कि थोड़ी ही दूर के फासले पर था पहुँच गईं। इसके बाद जब इस इमारत में प्रवेश करती हैं और ज़नाने घर में पहुँचीं तो उनको एक नौकरानी मिलती है। उससे पूछती है कि यहाँ पर तारा तथा चन्दा रहती है ? वह लोग कहाँ हैं ? वह नौकरानी श्रीमती सागर को तारा तथा चन्दा के कमरे में पहुँचा देती है। एस० पी० साहब की स्त्री इस समय घर में उपस्थित नहीं थीं। किसी से मिलने गई थीं। उस समय

इस सारे घर में था कोई तो तारा और चन्दा या नौकर, दाई आदि। बहरहाल श्रीमती सागर ने तारा तथा चन्दा जिस कमरे में रहती थीं उसी कमरे में प्रवेश किया तो क्या देखती हैं कि तारा एक कुर्सी पर बैठी एक छोटे से कागज पर कुछ लिख रही है और चन्दा लेटी हुई समाचार-पत्र देख रही है। गो कि दिन अभी काफी है फिर भी कमरे में अच्छा अन्धेरा था इसलिये बिजली का प्रकाश फैला हुआ है। उनके प्रवेश करते ही दोनों झट से उठ बैठीं और नमस्ते होती है। इसके पश्चात् इन तीनों में बातचीत का सिलसिला आरम्भ होताा है।

तारा—(श्रीमती सागर से) आपका नाम ?

श्रीमती सागर—(मुस्कराकर) वैसे तो मेरा नाम निर्मला है किन्तु हमारे पति का नाम सागर है इसलिए मुझे श्रीमती सागर कहते हैं।

चन्दा—(अचरज से) अच्छा आप हो श्रीमती सागर हैं गोया तुम्हारी भाभी।

श्री० सा०—(हँसकर) तुम लोग भी हमको भाभी ही पुकारोगी ? नहीं, नहीं, तुम लोग हमको बहिन पुकारो।

चन्दा और तारा—जी नहीं ! जी नहीं ! हम लोग तो भाभी का नाता रखेंगे और आपको भाभी पुकारेंगे। आपका परिचय तो हम लोगों से तनवीर पहिले ही करा चुके हैं। हम लोगों को आपको देखने की बड़ी इच्छा थी।

यह बातें सुनकर श्रीमती सागर हंस पड़ीं और कहने लगीं—अच्छा भई जिन बातों से तुम लोग प्रसन्न हो वही सर्वश्रेष्ठ। इसके पश्चात् इन तीनों में इधर-उधर को बहुत सी बातें होती रहीं और लगभग आधे घन्टे के पश्चात् आखिर में श्रीमती सागर अपने मतलब पर आयीं। इसका विषय इस प्रकार लाती हैं कि परसों सन्ध्या समय तुम लोग हमारे घर पर चाय पिओगी। यह सुनना था कि चन्दा बोल उठी और हँसकर कहती है—अच्छा तो देखिये तनवीर मौजूद होंगे तो हम लोग नहीं आएँगे। यह सुनकर तारा तथा श्रीमती सागर सब ही हँस पड़े। और फिर श्रीमती सागर इस प्रकार कहने लगीं—तनवीर तथा काशी दोनों ही उपस्थित रहेंगे। फिर चन्दा कहती है—अच्छा तो देखिये आप रहिये, सागर भाई रहें, तारा रहे, काशी रहें और मैं रहूँ

किन्तु तनवीर न रहे। यह सुनकर श्रीमती सागर और ज़ोर से हँस पड़ीं और कहने लगीं—अरे यह भी तुमने खूब कहा, बिना दूल्हा के बारात कैसे होगी ? श्रीमती सागर के इस वाक्य पर चन्दा बहुत ज़ोर से हँसी और तारा झेंप गई और चन्दा फिर कहती है—सोच होगा उसको जिसके बाबू तनवीर दूल्हा होंगे। हमको क्या पड़ी है ? थोड़ी देर तक उन लोगों में यों सब बातें होती रहीं। इसके पश्चात् श्रीमती सागर चाय की दावत में आने का वचन लेकर गईं और लाल भवन की ओर रवाना हो गईं और थोड़ी देर में अपने घर पर पहुँच गईं।

दूसरे दिन काशी और तनवीर लगभग आठ बजे सबेरे फिर लाल भवन में आ गये। सागर भी अपने कमरे से बाहर निकल बैठक में आ पहुँचे और श्रीमती सागर भी रसोई घर की देखभाल करने के बाद आकर बैठ गयीं और गपशप आरम्भ हो गयी। सागर के घर में सबसे सुन्दर कमरा उनकी बैठक का कमरा है। उसकी सजावट अति सुन्दर है। पृथ्वी पर लाल रंग के वस्त्र का फर्श भी लगा हुआ है। एक ओर सिंगारदान और आइना आदि भी लगा हुआ है। अभी उन भिन्न-भिन्न विषय के ऊपर गपशप जारी थी कि काशी कहता है—हाँ भाभी जान, तनवीर के नक्शे कैसे हैं ? इस पर श्रीमती सागर ने कहा—अरे हाँ यह तो कहना ही भूल गई। मैं कल उन लोगों के पास गई थी। यह सुनना था कि तनवीर अचरज से पूछता है—वास्तव में ? परन्तु सागर बोल उठते हैं—निर्मला देखो अभी कुछ न बताना जब तक तनवीर पैर न दबायें। इस पर काशी भी हँस कर कहता है—हाँ ! हाँ ! ऐसा अवश्य होना चाहिए। श्रीमती सागर भी काशी की ओर देखकर मुस्करा देती हैं और तनवीर की ओर मुड़ कर कहती हैं—हाँ तनवीर देखो हम वहाँ गये तो हमारे पैरों में दर्द होने लगा है। अब पैर दबाओ तो बतायें।

यह सुनकर तनवीर हँसने लगा और कहने लगा कि यदि फ़रहाद ने प्रेम के चक्कर में पड़कर पर्वत खोद डाले तो हम भाभी जी का पैर नहीं दबा सकते हैं। और तुरन्त फर्श पर बैठ गया और श्रीमती सागर का पैर दबाने लगा। इस पर चारों ओर से बड़े जोरों से हँसी हुई। और फिर काशी कहने लगा—

देखिये भाभी, यह ठीक नहीं दबाता है। इस दुष्ट को लात लगाइये। यह सुन तनवीर तुरन्त बोलता है—कोई परवाह नहीं, भाभी जैसी दुधारी गाय की दो लात भी सह लेंगे। इस पर और जोरों की हँसी हुई और श्रीमती सागर ने झेंप कर अपना पैर खींच लिया और कहने लगीं—चलो हटो बेकार बात मत करो। अब तनवीर हँसता हुआ अपनी कुर्सी पर बैठ गया। यह सब मजाक हो जाने के बाद बातचीत का सिलसिला इस प्रकार आरम्भ होता है :—

काशो—हाँ भाभी क्या बात रही ?

श्रीमती सागर—(मुस्करा कर) बात क्या है, बस यूँ समझो कि लखनऊ में ठहरी है मंगनी किसी की।

का०—यानी फिर भी कुछ तो।

श्री० सा०—हम कल सन्ध्या समय तारा तथा चन्दा से मिले।

तनवीर—अच्छा फिर क्या हुआ ?

श्री० सा०—वास्तव में लड़की बहुत सुन्दर है। यूँ समझो कि गुलाब का फूल है। परन्तु एक बात है कि उसके साथ तुम्हारा जोड़ ठीक नहीं रहेगा।

त०—(घबराकर) क्यों ?

श्री० सा०—तुम कहीं लाओ वाली आदमी हो और वह बड़ी सुन्दर लड़की।

त०—अरे इस बात की चिन्ता आप बिलकुल न कीजिये।

श्री० सा०—क्यों नहीं…………

त०—अरे इस बात की तनिक भी चिन्ता न कीजिये। विवाह हो जाने के बाद या तो हम गम्भीर हो जायेंगे और वह लाओ वाली हो जावेगी या हम लाओ वाली हो जायेंगे और वह गम्भीर।

तनवीर के इस वाक्य पर सब लोग हंस पड़े और फिर श्रीमती सागर पूछती है तो फिर बात क्या हुई ?

तनवीर फिर कहता है—आपकी समझ ही में कोई बात नहीं आई। इतनी बड़ी बात हो गई।

श्रीमती सागर—आखिर क्या बड़ी बात हो गई ?

तनवीर—यानी हमारा उसका विवाह हो गया और क्या बात हो गई। तनवीर के इस वाक्य पर फिर सब लोग हँस पड़े और काशी कहने लगा—अच्छा भाभी आगे क्या हुआ ?

श्री० सा०—आग यही हुआ कि कल सन्ध्या समय तारा तथा चन्दा इसी लाल भवन में चाय पिएँगी।

तनवीर बड़े जोर से चिल्लाकर कहता है—अरे वाह रे मेरी भाभी। ईश्वर भला करे आपका। ये सुनकर सागर तुरन्त बोल उठे—निर्मला इस समय साधु से बच्चा माँग लो। यह सुनकर श्रीमती सागर बोलीं—हाँ जब तुम नहीं बच्चा दे सके तो तनवीर ही से बच्चा मांगना पड़ेगा। इस पर तनवीर कहता है—भाभी घबड़ाइए मत। नौ महीने बाद आपके ही पेट से स्वयं बच्चा उत्पन्न होगा यह मेरा आशीर्वाद है। इस पर श्रीमती सागर कुछ अजीब अन्दाज से झेंप गईं और सब हँस पड़े।

इन लोगों की बातचीत इतनी लम्बी हो गई कि अब दिन के दस बज गये हैं और काशी और तनवीर सागर की साइकिल लेकर होस्टल वापस आगये।

तनवीर काशी को ओल्ड होस्टल छोड़कर अपने होस्टल पहुँचता है। आज तनवीर बहुत प्रसन्न है। अपने भाग्य पर घमंड कर रहा है। आज उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं है। उसको अपने कमरे की हर चीज हँसती हुई दिखाई दे रही है। उसकी समझ में नहीं आता कि अपनी प्रसन्नता को कैसे प्रकट करे। इतने में नौकर खाना लेकर आता है, तनवीर खाना खाता है और खाना खाने के पश्चात् बिछौने पर सो जाता है। उसको नींद नहीं आती है, भाँति-भाँति के विचार उसके मस्तिष्क में आते रहते हैं। आज वह प्रसन्नता के कारण बेचैन है। प्रसन्नता को प्रकट कैसे करे। प्रसन्नता की दशा में उस पर निद्रा देवी का प्रकोप होता है और वह सो गया किन्तु आज वह दोपहर की नींद से शीघ्र हो उठ गया और लग-भग चार बजे होंगे कि तौलिया तथा साबुनदान लेकर स्नान गृह में पहुँचता है। इतने में काशी आता है। काशी की दृष्टि तौलिया और साबुन दान की ओर दौड़ती है और समझ लेता है कि तनवीर नहाने गया हुआ है। वह कमरे में ही बैठ कर समाचार-पत्र पढ़ने लगता है। थोड़ी देर बाद तौलिया

से सिर पोंछते हुए तनवीर आता है। दोनों में नमस्ते होती है। तनवीर आइने को सामने रख कर विना तेल वाले वालों को ठीक करता है और फिर काशी को साथ लेकर कैफेडे जमील की ओर रवाना हो जाता है। इतने में सागर काशी के कमरे में आता है। काशी गायब, फिर तनवीर के कमरे पर आते हैं तनवीर भी ग़ायब। विचारते हैं कि निश्चय दोनों कैफेडी जमील गये होंगे। इसलिये वह भी शमहशाह बिल्डिग की ओर रवाना होते हैं। क्या देखते हैं कि तनवीर तथा काशी दोनों बैठे चाय पी रहे हैं। अब तीनों चाय पीने में तल्लीन हो जाते हैं। चाय पीने के पश्चात् सब उठते हैं और इधर-उधर टहलने के लिए चल देते हैं और खूब घूमने घामने के बाद फिर तीनों तनवीर के कमरे पर बातचीत करना आरम्भ कर देते हैं।

बातों ही बातों में सागर कहने लगे—यार निर्मला बतलाती है कि तारा बहुत गम्भीर है परन्तु चन्दा बहुत तेज है। इस पर तनवीर कहता है—यार हमको भी डर उसी दुष्ट चन्दा से लगता है। इस वाक्य पर काशी तथा सागर दोनों हँस पड़ते हैं और कहने लगते हैं कि वाह बे डरपोक, इतना डर गया। उसी प्रकार की इन सबों में बातचीत होती रहती है और अन्त में सागर फिर काशी तथा तनवीर से कल सन्ध्या समय की चाय पर आने का वचन लेकर साइकिल से लाल भवन को रवाना हो गये।

अध्याय तेरहवाँ

उसे देख कर और को फिर जो देखे !
कोई देखने वाला ऐसा न देखा !!

राम-राम करके दूसरा दिन आता है और तीन बजते हैं कि काशी और तनवीर दोनों ही लाल भवन रवाना हो जाते हैं। बैठक के कमरे में कुर्सियाँ क़ायदे के साथ रखी हुई है और खाने के कमरे में हर चीजें रखी हुई हैं। केवल चाय नहीं आई है। श्रीमती सागर इधर-उधर की हर चीज को देख-रेख कर रही थीं और तनवीर, काशी तथा सागर इसी बैठक में बैठे हुए बातें कर रहे हैं कि सब कार्यों से उद्धार पाकर श्रीमती सागर भी आकर बैठ जाती हैं और बातों में भाग लेना आरम्भ कर देती हैं। काशी घड़ी देखता है तो चार बजने में सत्तरह मिनट कम हैं और तनवीर का हृदय है कि न जाने कहाँ हैं। श्रीमती सागर बार-बार तनवीर के मुख को देख रही हैं और प्रसन्न हो रही हैं कि आज तनवीर उनका एहसान मान रहा है क्योंकि वह किसी का एहसान किसी सिलसिले में लेना स्वीकार नहीं करता है। श्रीमती सागर यह देख कर आज प्रसन्न हैं कि आज उसका एहसान न उठने वाला सिद्धान्त अपनी मंजिल पर दम तोड़ रहा है। श्री सागर भी बहुत ही खुश है कि आज तनवीर जो उनका प्रिय मित्र है उसके जीवन के लिए नई दाग़ बेल डाली जा रही है। परमात्मा

मुबारिक करें और काशी का तो कुछ पूछना ही नहीं क्योंकि तनवीर तो काशी को अपने जीवन का गुरू मानता है। वह बहुधा काशी से कहता था और काशी के नाते वालों से कहता था कि काशी बहुत अच्छा मनुष्य है। उसकी जिन्दगी का प्रभाव उस पर बहुत पड़ा। वह काशी को अपने जीवन का गुरू केवल एक कारण से मानता है। वह यह है कि काशी भी भाग्य की चोट को मानता है और तनवीर तो गोया बहुत पहिले से भाग्य की बेवफ़ाई को स्वीकार करता है।

अभी यूँ ही ये सब कुछ बातें हो रही थीं कि दो महिलायें आ उपस्थित हुईं। श्रीमती सागर उन महिलाओं को तुरन्त देखते ही स्वागत करने के लिये यकायक खड़ी हो गयीं। काशी, तनवीर तथा सागर ये लोग भी महिलाओं को देख कर व्यवहार के नियमानुसार खड़े हो गये। तारा तथा चन्दा लाल भवन में आई हैं। इन दोनों का श्रीमती सागर से परिचय कराया और फिर काशी से और जब तनवीर की बारी आई तो कह दिया कि इनको तो तुम लोग जानती ही हो। इस पर चन्दा कहने लगी—जी, हाँ। संसार में दो ही तो बहुत प्रसिद्ध हैं। पहला परमात्मा और दूसरा शैतान। ये परमात्मा तो हैं ही नहीं अलबत्ता······ ······ अवश्य हैं। इस बात पर तनवीर कहता है कि यदि ईश्वर नहीं समझती हो तो सांसारिक ईश्वर समझ लो। यही बहुत है।

तनवीर की और चन्दा की इस बात पर बहुत हँसी हुई। इसके पश्चात् श्रीमती सागर फिर कहती हैं—तुम लोगों ने मुझे तो बहिन नहीं पुकारा। अब बताओ इनको (सागर की ओर संकेत करते हुए) क्या कहोगी ?

च०—काशी भाई।

श्री० सा०—काशी को क्या पुकारोगी ?

च०—काशी भाई।

श्री० सा०—और तनवीर को क्या कहोगी ?

च०—केवल तनवीर।

श्री० सा०—यह क्यों ?

तनवीर बोल उठता है—इसका कारण हम बतायें।

श्री० सा०—हाँ बताओ।

तनवीर—(मुस्करा कर) क्योंकि ये एक दिन हमको दूल्हा भाई कह कर पुकारेगी।

तनवीर का यह वाक्य सुनना था कि सभी हँस पड़ते हैं और तारा तथा चन्दा दोनों अपना मुँह ढाक कर अपनी लज्जा मिटाती हैं। इसके पश्चात् चन्दा कहती है—देखिये भाभी जान इसीलिये हमने कहा था कि तनवीर को न बुलाइयेगा। इस पर तनवीर फिर बोला—हमने भी भावज से कह दिया था कि भोग में केवल तारा को ही बुलाइयेगा। इसके उत्तर में चन्दा कहती है—बहरहाल अँगूर खट्टे हैं। तनवीर बोल उठता है, अच्छा भाई तुम लोग अपना लड़ाई-झगड़ा समाप्त करो और चलो बगल के कमरे में चाय पीयें।

सब उठ कर खाने के कमरे में चाय पीने के लिए आ जाते हैं और फिर चाय पीनो आरम्भ हो जाती है। तब सब चाय पी लेते हैं तब लोग फिर उस कमरे से उठकर बैठक में आ जाते हैं। थोड़ी देर तक भिन्न-भिन्न विषय पर बात-चीत होती रहती है। और चन्दा तथा तारा चलने के लिये तैयार होती हैं तो श्रीमती सागर अगले रविवार को आने का वचन फिर लेती हैं। इसके बाद तनवीर तथा काशी भी चल देते हैं।

काशी जिस दिन प्रतापगढ़ से लखनऊ आया था उसके दूसरे दिन उसने तनवीर के कमरे में बैठ कर एक पत्र अपने पिता को लिखा था और दूसरा पत्र रंजना को लिखा था। काशी को आये हुए आज तीसरा दिन है और काशी का पत्र आज रंजना को मिलता है। रंजना पत्र को पाते ही सीने से लगाती है और अनेक बार पत्र को चूमने के उपरान्त लिफ़ाफा खोलती है और फिर पूरा पत्र पढ़ती है। काशी का पत्र क्या था रंजना के लिये जादू का कार्य कर रहा है। कई बार हैं पढ़ती परन्तु शान्ति नहीं होती है दिल ही दिल में शिकायत करती है कि बहुत संक्षेप में पत्र लिखा है। लाख बार ताकीद किया कि पत्र विस्तार पूर्वक लिखा कीजिये किन्तु ये है कि अपनी आदत से बाज़ नहीं आते। अजीब आदमी हैं। न जाने इनको किसी के दिल को तड़फाड़ने में क्या मजा आता है, आखिर ऐसा क्यों करते हैं? बहरहाल जब रात को सारे घर वाले सो जाते हैं रंजना लालटेन उठा कर कमरे में ले जाती है और काशी के पत्र का उत्तर

देती है। रंजना काशी के नाम यह पहिला पत्र लिख रही है। कोई नहीं बतला सकता कि इस समय उसके हृदय की क्या दशा है। कितने जोश होंगे उसके दिल में कोई क्या जाने। यदि वह स्वयं ही बताना चाहे तो नहीं बता सकती। अन्त में उसका पत्र पूरा हो जाता है। वह उसको लिफ़ाफे में वन्द करती है। इसके पश्चात् वह अपने छोटे भाई सुरेन्द्र को दे देती है और ताकीद कर देती है कि किसी को दिखाना मत। सुरेन्द्र पत्र को लेकर लेटर-बक्स में छोड़ देता है। दो दिन बाद रंजना का यह पत्र काशी को लखनऊ में मिलता है। तीन बजे दिन में काशी सागर के यहाँ से लौटकर ओल्ड होस्टल में अपने कमरे में वातचीत कर रहा है कि डाकिया लाकर पत्र देता है। सागर पूछता है—यह पत्र किसका है? केवल पते की लिखाई देख कर काशी कहता है—शायद रंजना का है। काशी का यह कहना ऐसा था जैसे सागर के शरीर में बिजली दौड़ गई। सागर तुरन्त वोले—भई अभी इस पत्र को न खोलना। आओ चलें तनवीर को भी ले लिया जाय। चुनांचे ये दोनों तनवीर के कमरे पर पहुँचते हैं परन्तु यहाँ आकर क्या देखते हैं कि इस समय तनवीर के कमरे पर सुरेश, नरसिंह, नगीना, विश्वनाथ, रामजन्म तथा बैजनाथ सब बैठे हुए हैं और चाय का दौर चल रहा है और अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पर वाद-विवाद हो रहा है कि इतने में सागर तथा काशी भी पहुँचते हैं। इन दोनों के पहुँचते ही आओ भाई, आओ की आवाज़ गूँज जाती है। चुनांचे सागर तथा काशी भी इसी जमघट में सम्मिलत हो जाते हैं और फिर चाय का दौर तथा वाद-विवाद दोनों ही इतना बढ़ जाता है कि अब सन्ध्या के साढ़े छः बज जाते हैं। अब सब लोग चल देते हैं। कमरे में केवल काशी, सागर तथा तनवीर रह जाते हैं। यह देखकर श्री सागर कहते हैं—तनवीर एक प्रसन्नता की बात बतायें। यह सुनकर काशी मुस्कराता है और तनवीर कहता है—हाँ बताओ। सागर कहते हैं—आज काशी के नाम रंजना का पत्र आया है। यह सुनना था कि तनवीर बड़े जोर से हँसता है और काशी से कहता है—भई यह पत्र यहाँ नहीं पढ़ा जायेगा बल्कि चलो किरनट होटल में बैठ कर चाय भी पी जायेगी और पत्र भी पढ़ा जायेगा। सागर की इस राय का सब समर्थन करते हैं और सब लोग अमीनाबाद पार्क से होते हुए स्टेशन पर पहुँच जाते हैं और फिर किरनट होटल में प्रवेश करते हैं। चाय

आती है और फिर श्री गणेश करके काशी ने रंजना का पत्र खोला और पढ़ना आरम्भ किया। लीजिये आप भी सुनिये।

प्रतापगढ़

............काशी

आपका संक्षेप मगर आनन्द का पत्र सुरेन्द्र के हाथ मिला। आज उसका उत्तर लिख रही हूं। इस समय रात में सब लोग सो गये हैं; और मैं केवल कमरे में बैठी हुई आपकी याद हृदय-पटल पर ला रही हूं।

लैलाएं राजे शौक़ का महमिल है हाथ में !
यानी क़लम बजाये मेरा दिल है हाथ में !!
अहवाले दिल लिखूं खालिशे मुद्दुआ लिखूं !
रुकती हूं लफ्ज लफ़्जे पें आखिर मैं क्या लिखूं !!
दिल अपनी धड़कनों को छुपा जाये किस तरह !
पहली पहल का खत है लिखा जाये किस तरह !!
गुस्ताखी का ख्याल जो आये तो क्या करूं !
दिल शर्म से जो हाथ दबाये तो क्या करूं !!
खत के ख्याल ने मुझे तुमसे मिला दिया !
और मेरी बेखुदी प क़लम मुसकुरा दिया !!
तारी जो एक होजूमे ख्यालात दिल में है !
इक हाथ में क़लम है और इक हाथ दिल पे है !!

मैंने आज सन्ध्या की पूजा में परमात्मा को याद इसलिये किया कि सुरक्षा से लखनऊ पहुंच गये। ईश्वर शिक्षा का ध्येय पूरा करे। आपकी याद किसी के दिल को किस भांति तड़फाती है आप क्या जानें। उनसे पूछिये जो इस समय कोसों दूर हैं।

यहां पर सब लोग कुशल हैं। पिता जी आप की प्रशंसा किया करते हैं। आप जब वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेंगे तब पिता जी आपको अपने साथ रख कर वकालत के व्यवसाय में किस प्रकार उन्नति की जा सकती है,

बतायेंगे। चाची कल हमारे घर पर आई थीं। माता जी ने उनसे आपकी बहुत प्रशंसा की और आपके बारे में बहुत कुछ बात की। परमात्मा करे वह लखनऊ जिसके प्रमाण पत्र की इज्जत आज संसार कर रहा है, आपको भी सनदयाफ़ता करें। हर चन्द ऋतु सुहावना है किन्तु आपके यहाँ उपस्थित न होने से कहीं भी दिल नहीं लगता। लखनऊ से हमारे लिए कोई चीज़ अवश्य लाइयेगा वरना मैं आप से नहीं मिलूँगी। देखिये मैं दूर पड़ी हुई हूँ मुझे भूलियेगा मत। कभी भी मत भूलियेगा। श्री तनवीर, श्री सागर तथा श्रीमती सागर को मेरा बहुत-बहुत नमस्ते कहियेगा।

आपकी
"र"

पहिले तो इस पत्र के लिखने वाले "र" का अक्षर इतना सुन्दर था कि क्या पूछना था। उसके पत्र का विषय इतना अच्छा था कि सुनने वाले दङ्ग रह गये। काशी इस समय वह प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है कि शायद ही किसी भाग्यवान के भाग्य में होगी। तनवीर ने इस पत्र को देखकर दांत के नीचे अंगुली दबाली और श्री सागर हक्का-बक्का रह गये।

तनवीर से न रहा गया और बोल उठा—काशी वस्तुतः रंजना तुम्हारे लिए उत्पन्न हुई है। और इसी प्रकार की दो-एक बातें करने के पश्चात् फिर तीनों अपने ठहरने के स्थान पर चल देते हैं। मार्ग में इस पत्र पर खूब वाद-विवाद होता है। काशी के हृदय में जो प्रसन्नता और उमंगें लहरें ले रही हैं कैसी होंगी कौन जाने ?

अब होते-होते इतवार का दिन आता है। चन्दा तथा तारा ने आने का वचन दे दिया है। चाय पीने में खास आनन्द रहेगा। अतः आज फिर तीन बजे दिन में जल्दी-जल्दी स्नान करने के पश्चात् तनवीर काशी को साथ लेकर शाम की चाय के सिलसिले में दोनों लाल भवन रवाना हो जाते हैं किन्तु मार्ग में कुछ दूसरे मित्र तथा साथी मिलते हैं। जिससे कि काफ़ी देर हो जाती है। गरज़ कि ठीक साढ़े चार बजे में, तनवीर तथा काशी लाल भवन पहुँच रहे हैं।

अब इधर लाल भवन में चाय आदि तैयार हो गई है। तारा और चन्दा भी आ गई हैं और उन लोगों के भाई जान सागर भी बैठे हुए हैं। ये सब

काशी और तनवीर की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जब वह जाये तो चाय का पीना आरम्भ हो। श्रीमती सागर यही कहती हैं कि न जाने ये लोग कहाँ रह गये। यह सुनकर सागर भी कहते हैं—हाँ न जाने ये लोग कहाँ रह गये। इतने में तनवीर तथा काशी नमस्ते करते हुए कमरे में प्रवेश करते हैं और अचानक तनवीर की दृष्टि पहले जो मिलती है वह तारा ही से मिलती है और इन दो नयनों का मिल जाना दोनों के लिए बहुत कुछ रह गया।

बस चुपके ही चुपके नेत्रों द्वारा नमस्ते होता है। सागर उनको देखते हैं—भई तुम लोगों को बहुत देर लग गई, कहाँ रह गये थे? यह सुनकर काशी उत्तर देता है—क्या बतायें मार्ग में कुछ लोग ऐसे मिल गये कि पीछा छुड़ाना कठिन हो गया। अभी ये सब बातें हो हो रही थीं कि तनवीर ने इस प्रकार बातचीत आरम्भ कर दी।

तनवीर—(श्रीमती सागर से) भाभी आज तो काशी से तारा और चन्दा को मिठाई खिलवाइये।

श्रीमती सागर—क्यों?

त०—अरे इतना बड़ा किस्सा हो गया आपको मालूम ही नहीं।

श्री० सा०—भई सुनें भी तो आखिर क्या बात हो गई।

त०—अरे साहब काशी के नाम जो रंजना का पत्र आया है।

श्री० सा०—(हँसती हैं) हाँ काशी मिठाई खिलाने से बच नहीं सकते। इसलिये कि इस बात की कामना तुम्हें वर्षों से थी।

काशी—तो ऐसी प्रसन्नता के अवसर पर हम बचना कब चाहते हैं? इतने में श्रीमती सागर तारा तथा चन्दा की ओर मुड़ीं और फिर कहने लगीं—तुम लोग जानती हो रंजना कौन है?

चन्दा—बताइये।

श्री० सा०—प्रतापगढ़ के एक वकील श्री रविन्द्र हैं। रंजना उन्हीं की पुत्री है और साथ ही साथ वह काशी की मंगेतर भी है और हृदय की स्वामिनी भी।

चन्दा—तो उनसे मुलाकात कराइये।

श्रीमती सागर—भई भेंट तो होगी पहिले यह तो बताइये कि रंजना को तुम पुकारोगी क्या ?

च०—बहिन।

श्री० सा०—हैं ! क्यों ? काशी को भाई श्रोर रंजना को बहिन।

च०—उसका कारण यह है कि हमारे पिता का नाम भी रविन्द्र है श्रोर वह भी वकील थे। श्रतः हम पिता के नाते को ही चलायेंगे।

सागर—श्रच्छा तो तुम्हारे श्रोर रंजना के पिता का नाम एक है श्रोर केवल दोनों की माता के नाम में श्रन्तर है। तो यूँ कह लीजिये कि श्राप लोगों का खाने की भाँति पकाने वाला बवर्ची एक ही है। केवल हँडिया इत्तफ़ाक़ से बदल गई।

सागर के इस वाक्य पर बहुत हँसी हुई श्रोर चन्दा कुछ लज्जित हो जाती है श्रोर उसके बाद लज्जा की श्रावाज में कहती है—श्ररे श्रपनी हँडिया की खबर लीजिए जिसके निरंतर तीन बबर्ची हैं।

सा०—इसका श्रर्थ ?

चन्दा फिर कहती है—इसका श्रर्थ यह है क्या एक बेचारी भाभी श्रोर हँडिया में पकाने वाले काशी, तनवीर तथा श्राप। चन्दा के इस वाक्य पर फिर बड़े जोरों की हँसी मचती है श्रोर फिर श्रीमती सागर कहती हैं—चन्दा श्राखिर हमने तुम्हारा कौन सा श्रपराध किया है जिसके बदले में तुमने यह चोट हम पर कर दी। चन्दा फिर कहती है—क्यों नहीं, श्रापका सबसे बड़ा श्रपराध यह है कि श्राप सागर भाई के मुँह पर लगाम नहीं लगाती हैं। चन्दा की बात पर फिर हँसी मचती है श्रोर तारा बोल उठती है—भाभी ! दुष्ट चन्दा चुप रह ही नहीं सकती है। फिर चन्दा तारा का उत्तर इस प्रकार देती है—चुप रह तू श्रोर चुप रहें बाबू तनवीर (मैं क्यों चुप रहूँ)।

इन्हीं सब बातों में काफी समय समाप्त हो जाता है श्रोर फिर सभी चाय पीने के लिए उठ जाते है। मेज पर चाय लाकर रखी गई श्रोर सब श्रपनी-

अपनी कुर्सी ले जाकर चाय पीने के लिए तैयार हो गए। इस समय चाय की मेज़ पर सब लोग बैठे हुए हैं परन्तु आज कुछ अजीब इत्तफ़ाक़ है कि तारा बिलकुल तनवीर की दाईं ओर बग़ल की कुर्सी पर बैठी हुई है और तनवीर बार-बार घूमकर तारा का कभी चाय पीना देखता है, कभी उसके चेहरे की सुन्दरता और लाल भवन में इतने नज़दीक-नज़दीक बैठे हुए हैं कि कुर्सी मिल रही है। इस दृश्य को जितना भी सुन्दर कहा जाय, कम है। घन्टे दो घन्टे के पश्चात् चाय का पीना समाप्त होता है और इधर-उधर की बातें फिर आरम्भ हो जाती हैं। तारा तथा चन्दा चलने के लिये तैयार होती हैं। अब की बार तारा तथा चन्दा जब चलने लगती हैं तो श्रीमती सागर उन दोनों से वचन ले लेती हैं कि हर दो-तीन दिन पर वह दोनों लाल भवन अवश्य आया करेंगी। इसके पश्चात् फिर कुछ बातचीत होती है और फिर काशी तथा तनवीर भी उठकर अपने-अपने होस्टल चले जाते हैं और अब इस समय रात्रि के नौ बज रहे हैं।

———

अध्याय चौदहवाँ

वो आईने में देख रहे थे बहारे हुस्न !
आया मेरा ख्याल तो शर्मा के रह गये !!

काशी अपने कमरे में प्रवेश करने के पश्चात् कमरे का दरवाज़ा बन्द करता है क्योंकि आज वह रजंना के पत्र का उत्तर देगा। चुनांचे वह मेज़ के पास बैठ कर रंजना के पत्र का उत्तर लिखता है। सामने बिजली का लैम्प तेज़ी से जल रहा है और काशी पत्र लिखने में बिलकुल लीन दिखाई दे रहा है।

लखनऊ, ओल्ड होस्टल

प्रिय रंजना,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कोसों दूर हो इसके कारण मुझे जो कष्ट उठाना पड़ रहा है उसका तुम कैसे अन्दाज़ा लगा सकती हो।

न तो रोने की इजाज़त न तो फ़र्याद की है !
घुट के मर जाऊँ ये मर्ज़ी मेरे सैंय्याद की है !!

मेरी लखनऊ की यात्रा लगभग अच्छी हुई इसका कारण यही था कि तुमने भगवान से विनती कर रक्खी थी। बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम्हारे पिता

हमारी प्रशंसा करते हैं यह उनकी कृपा है वरना मैं किस योग्य हूँ। हमने तनवीर, श्री सागर तथा श्रीमती सागर से तुम्हारा नमस्ते कह दिया। जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है तुम्हें इन लोगों के बारे में सब कुछ बता चुके हैं। अब सुनो हम अपने कुछ नये मित्रों से तुम्हारा परिचय करा रहे हैं। एक श्रीमती तारा नामक हैं जो यहाँ पर बी० ए० में पढ़ती हैं। बहुत सचरित्र तथा सुन्दर हैं। ग़ाज़ीपुर की निवासी हैं और तनवीर के दिल पर छाई रहती हैं। सुन्दरता के सम्बन्ध में तुम में तथा तारा में कौन आगे है यह नहीं कहा जा सकता परन्तु शिक्षा के सम्बन्ध में तारा अवश्य तुमसे आगे है। बहरहाल विवाह के पश्चात् तुम्हारी भी शिक्षा होना आवश्यक है।

दूसरी श्रीमती चन्दा हैं। ये भी बी० ए० में पढ़ती हैं। बहुत चंचल हैं और इन्हीं के संग रहती हैं। जब कभी हम सब मित्र एक जगह बैठ जाते हैं तब चन्दा सबके मज़ाक का विषय बनती है परन्तु यह भी विचित्र साहसी महिला हैं। कभी अपनी हार मानने को तैयार नहीं होतीं। आप सबका उत्तर तुरन्त ही तुरन्त देती हैं। यूँ समझो कि यह हम लोगों से चौमुखी लड़ाई लड़ती है।

दिलचस्प बात यह है कि चन्दा तुमको अपनी बहिन कहती है क्योंकि उनके तथा तुम्हारे पिता का नाम एक ही है। अब तुम भी इनको अपनी छोटी बहिन समझ लो।

तुमने हमको ताकीद लिखी है कि मैं तुम्हारे लिए लखनऊ से कोई चीज अवश्य लाऊँगा। हमारे विचार में हमारा दिल तुम्हारे लिये सर्वश्रेष्ठ उपहार है यदि तुम पसन्द करो। तारा, तनवीर तथा श्रीमती सागर सब तुम्हें नमस्ते कहते हैं, और चन्दा अपनी बहिन को खास तरीके से नमस्ते कहती है।

तुम्हारा..................

काशी

यह पत्र लिखने के पश्चात् काशी उसे लिफ़ाफे में बन्द करता है और शेरवानी की जेब में रखता है ताकि इस पत्र को छोड़ न आये।

कल सन्ध्या समय चाय आदि पीने के पश्चात् तारा तथा चन्दा अपने घर स्वराज भवन पहुँचीं तो मार्ग में दोनों में खूब बातचीत हुई और फिर कमरे में

पहुँच कर दोनों की बातचीत इतनी बढ़ी कि रात का एक बज गया किन्तु इन दोनों की बातचीत का विषय कभी-कभी श्री सागर और उनकी स्त्री होती थी और कभी श्री सागर की गम्भीरता होती थी। और फिर कभी तनवीर पर आलोचना। अब तनवीर के बारे में बात होने लगी तो चन्दा बोल उठी — तारा वास्ताव में तनवीर के अन्दर खिचावट अवश्य है। मुझे खिचावट उसकी कुछ ही चीजों में मिलती है। एक उसकी आँखें, दूसरी उसकी बातें किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं भी उससे प्रेम करने लगूं। प्रेम का मैदान तो हमने केवल तुम्हारे लिये छोड़ दिया।

चन्दा की ये बातें सुनकर तारा कहती है—चन्दा इसके अतिरिक्त हम तुझसे क्या कह सकते हैं कि················

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय··········'

चन्दा फिर कहती है हाँ इसका मुझे अन्दाज़ा अवश्य है और मैं इसका अनुभव भी कर रही हूँ कि तनवीर से उलफत करने में तू कहाँ तक ठीक है किन्तु एक बात बता। काशी तथा रंजना का किस्सा तो कुछ समझ में नहीं आया। इस पर तारा कहती है—यह भी कोई समझाने की बात है, वह तो काशी की हो चुकी है। गरज़ कि दोनों में इसी प्रकार की बातें होती रहती हैं और फिर दोनों चूंकि रात काफ़ी बीत चुकी है इसलिये सो जाती हैं। अब तारा तथा चन्दा के लिये न श्री सागर नये थे न श्रीमती सागर। केवल चन्द ही दिनों में भिन्न भाव इतने बढ़ गये कि जैसे वर्षों का नाता है और मित्रता है। तारा, चन्दा दिन में दो-दो और तीन-तीन बार लाल भवन जाया करती थीं। चूंकि सूरज भवन लाल भवन के बिलकुल निकट था इसलिये दिन-दिन इन लोगों में मित्रता बढ़ती जाती थी और झिझक समाप्त होती जाती थी और सबके सब एक दूसरे से बिलकुल निःसंकोच आपस में मिलते थे।

इधर रंजना को उसके भाई सुरेन्द्र ने काशी का पत्र दिया तो उसने तुरन्त उसे सबसे पृथक किनारे बैठ कर पढ़ना आरम्भ किया और हर सम्भव तरीक़े से उसने काशी के इस पत्र से आनन्द उठाना शुरू किया। पत्र को बार-बार पढ़ना उसकी आदत थी तुरन्त वह न जाने किस-किस प्रकार से कितनी-कितनी

बार पढ़ती थी। उसको केवल इस समय एक बात का विचार आता था और केवल इस बात के कारण वह दिल मसोस कर रह जाती थी कि काश कि वह भी लखनऊ में होती और काशी की मित्रता में काफ़ी भाग लेती।

किसी तरह तारा दिन काटती और रात के समय सिद्धान्तानुसार जब आधी रात गुज़र जाती है अब लालटेन उठाती है और अन्दाज़ा लगाती है कि घर में सब लोग सो रहे हैं या नहीं। जब पता चलता है कि सब लोग सो रहे हैं तो धीरे से कमरे में चली जाती है और लालटेन रख कर काग़ज़ कलम और दवात सम्भालती है और काशी के पत्र का उत्तर लिखने लगती है।

प्रतापगढ़

रंजना के प्राण ! काशी !

आपका पत्र मिला, बहुत-बहुत धन्यवाद। चन्दा हमारी छोटी बहिन है उनको हमारा आशीर्वाद कहियेगा। श्रीमती सागर, श्री तनवीर तथा श्री सागर को प्रणाम कहियेगा। आप की अनुपस्थिति में हृदय की क्या दशा है नहीं प्रकट कर सकती हूँ। दिल की दशा कुछ पंक्तियों द्वारा प्रकट कर सकती हूँ।

प्रियतम प्राण अधिक परमेश्वर जीवन नाथ हमारे !
कैसे लिखूँ चरण छूती हूँ बहुत दूर हो प्यारे !!
काँप रहे हैं हाथ नाथ अब आगे लिखने क्या पाऊँ !
पंख लगादे मुझको। पंक्षी बन उड़ आऊँ !!

पुस्तकें आदि पढ़कर दिल को बहलाने का उपाय करती हूँ परन्तु क्या करूँ जी नहीं लगता। इस बात की अकेले जिम्मेदार मैं केवल आपको समझ रही हूँ। क्यों, आप हैं न जिम्मेदार ? आप अपने मित्रों के साथ रहकर क्या याद करते होंगे लेकिन आप अपने मित्रों की जो घटनायें और लखनऊ जीवन के बारे में जो कुछ भी लिखते हैं मेरे लिये वह दिलचस्पी का कारण अवश्य होती हैं। आशा है कि आप इसी तरह सदैव पत्र अवश्य लिखेंगे। पिता जी आपको बहुत याद करते हैं। वह तो यह चाहते हैं कि बजाय कल के आज से ही चले आयें और उनके संरक्षण में वकालत आरम्भ कर दें। और क्या लिखूँ समझ में नहीं आता। आपके दूर होने का जब भी ख्याल आता है तब ही नेत्रों से

आंसू निकलना आरम्भ हो जाते है। कैसे बतायें आपको कि हृदय पर क्या बीत रही है। पत्र बहुत देर से लिख रही हूँ। अब रात का समय है कोई जग न जाय इसलिये पत्र को समाप्त करती हूँ।

तुम्हारी
"र"

किलनर होटल में तीन-चार दिन के पश्चात् रंजना का यह पत्र फिर पढ़ा जाता है। काशी ने जब रंजना का यह पत्र पढ़ा तो उसके हृदय की विचित्र दशा हो गई। वह थोड़ी देर तक तो चुप रहा किन्तु सागर ने कहा—तुम बहुत ही भाग्यवान हो कि तुम्हें ऐसी स्त्री से प्रेम है। तनवीर ने कहा—सत्य कहते हो भाई। जब पत्र का विषय समाप्त हो गया तो दूसरे विषयों पर बात-चीत होना आरम्भ हो गई और इतने में चाय भी समाप्त हो गई थी। इसलिए फिर किलनर होटल से उठ कर अपने स्थान पर आ पहुँचे।

अध्याय पन्द्रहवाँ

मुझे याद है अभी तक तेरे साथ का ज़माना !
कभी बे पिये बहकना कभी पी के लड़खड़ाना !!

एक दिन तनवीर, काशी, सागर, श्रीमती सागर तथा तारा सब के सब बैठे हुए थे कि हलवे पर बात आई। चन्दा ने कहा—अच्छा कहो तो हम यहीं लाल भवन में आप लोगों को हलवा खिलायें। सबने कहा वाह भाई नेकी और पूछ-पूछ। चुनांचे दूसरे दिन चन्दा ने श्रीमती सागर के बवरचीखाने में हलवा बनाया किन्तु चालाकी यह की कि दो प्रकार का हलवा बनाया। एक जो बहुत अच्छा और मज़ेदार था उसको किनारे रख दिया। दूसरा जो अच्छा नहीं था उसको ठिकाने से सजा कर और चांदी का वर्क लगा कर सबके सामने रखा। सबने हलवे को खाना आरम्भ किया। यद्यपि यह हलवा मज़े में ज्यादा अच्छा नहीं था परन्तु फिर भी उसको सब खा रहे थे। इतने में जितने खाने वाले थे सब का मुँह लाल रंग से रंगा हुआ प्रतीत होने लगा और मुँह बिल्कुल लाल हो गया। यह देखकर चन्दा बड़े जोरों से हँसने लगी और जितने खाने वाले थे सब एक दूसरे का चेहरा देखकर आश्चर्य करके हँसने लगे और आश्चर्य करने लगे और चन्दा है कि हँसती जा रही थी। बारी-बारी से हर एक का मज़ाक उड़ाती है। सब लोग झेंपते जा रहे हैं कि चन्दा ने आज खूब मूर्ख बनाया।

इन्हीं सब बातों पर हँसती हुई अंत में चन्दा काशी की ओर देखती है और कहती है—क्यों काशी भाई, इस समय तो आप बहुत सुन्दर मालूम हो रहे हैं। तो रंजना बहन को बुलवा दूँ वह ज़रा आप का मुँह देख लें।

काशी—(झेंपकर) अरे तुम क्या बुला सकती हो।

चन्दा—ऐसे में कोई क्षम से जो आजाय तो क्या हो ?

का०—तुमको भी मूँछ निकल आये तो क्या हो ?

तनवीर—अरे यार। चन्दा के बालों की वेणी किसकी मूँछ से कम है।

च०--अरे बाबू तनवीर हमारे सामने जरा संभल कर बातचीत किया करो। वरना ऐसी मरम्मत करूँगी कि जीवन भर याद करोगे।

त०—अजी वाह लाट साहब। अंग्रेज चला गया और मेम छोड़ गया।

च०--देखो बाबू समझ जाओ। मेरी बात मानो वरना बहुत पिटाई होगी।

इसमें तो मैंने बहुत दिलचस्पी प्रकट की। अब चन्दा ने बताया कि उसने इस खराब हलवे में हवाई रंग मिला दिया था। जिसके कारण सबका मुँह लाल हो गया था। बहरहाल अब सबने मुँह धोया। चन्दा ने अच्छा वाला हलवा लाकर रखा और यह हलवा बहुत अच्छा तथा मजेदार था इसलिये सबने बड़े चाव के साथ खाया।

अब चूँकि दूसरे दिन रविवार की छुट्टी है इसलिए यह आवश्यक है कि चन्दा तथा तारा लाल भवन आईं। इसलिए तनवीर तथा काशी दोनों सबेरे ही लाल भवन पहुँच जाते हैं। इन लोगों का इतने सबरे पहुँचना देखकर श्रीमती सागर कहती हैं—तुम लोग आज इतने सबेरे कैसे चले। तनवीर कहता है—कुछ नहीं आज इस दुष्ट चन्दा की मरम्मत करनी है।

श्रीमती सागर--कैसे ?

त०--बस देखती जाइये, कुछ बोलिये मत। हमने काशी को सब कुछ समझा दिया है।

यह कह कर तनवीर श्रीमती सागर की निवाड़ की बुनी हुई चारपाई को उठा लाता है और उसकी सारी निवाड़ खोल कर एक आलमारी में बन्द कर

देता है और फिर चारपाई के ढांचे पर एक दरी लाकर बिछाता है और दरी के चारों कोनों को कच्चे धागे से बान देता है। उसके पश्चात् उसके ऊपर एक उजली चादर लाकर बिछा देता है। सब कुर्सियों पर बैठकर बातचीत करते हैं और दो खाली कुर्सियाँ लाकर रख दी गई हैं ताकि तारा तथा चन्दा उस पर बैठेंगी। लगभग आधे या एक घंटे बाद तारा तथा चन्दा आ धमकती हैं और इन्हीं खाली कुर्सियों पर आकर बैठ जाती हैं और फिर बातें होना आरम्भ हो जाती हैं। इतने में अचानक काशी इस प्रकार बातचीत के विषय को बदल कर बातचीत का सिलसिला आरम्भ करता है।

काशी--(चारपाई की ओर देखकर) तनवीर तुम इस चारपाई के ऊपर दो फीट की दूरी से कूद कर चढ़ सकते हो।

तनवीर—भई मुझसे एक फीट की भी दूरी से नहीं कूदा जाएगा।

च०—(ताने के स्वर में) अरे ये क्या कूदेंगे बिल्कुल चुगद हैं।

त०—(ताव दिलाने के स्वर में) यदि तुम बड़ी मर्दानी हो तो ज़रा तुम ही कूद जाओ। देखें तुम्हारी वीरता।

चन्दा—और क्या जब तुम्हारे जैसे मर्द ज़नाने हो गए तो हमारे जैसी महिलायें तो अवश्य वीर होंगी ही।

त० –(ताव में) ज़रा देखें तुम्हारी वीरता।

च० – कूदना क्या ! काशी भाई कहते हैं दो फीट से कूदने को हम तीन फीट और चार फीट से कूद सकते हैं।

सागर—भई तो हाथ कंगन को आरसी क्या है। कूद ही जाओ ताकि तनवीर का सन्देह दूर हो जाय।

च०—अच्छा देखिये।

यह कह कर जल्दी उठती है और तीन चार गज की दूरी पर आकर खड़ी होजाती है और तनवीर पास ही खड़ा होकर कहता है—"एक....दो....तीन।" ज्यों ही तनवीर ने तीन कहा चन्दा बिजली की भाँति दौड़ी और निकट आकर चारपाई पर बड़े ज़ोर से कूदी। उसका कूदना था कि धागे टूट गये और वह

तुरन्त पृथ्वी पर बड़े धमाके के साथ चारों खाने चित्त गिरी। यह देखना था कि सब में बड़ी जोर से हँसी ठट्टा हुई ग्रौर चन्दा की दशा न पूछिये झेंपकर रह गई ग्रौर उसी दरी पर बैठकर ग्रपना कूल्हा मलती रही ग्रौर मुँह को दुपट्टे से ढाँके रही ताकि झेंप मिट जाय। चन्दा ग्रपना कूल्हा मलती रही ग्रौर दिल में ग्राह-ग्राह करती रही।

इतने में तनवीर चन्दा को चिढ़ाने के स्वर में हाथ हिला कर कहता है—

"पड़ी प्रेम की टाप रे टाप रे ग्ररे बाप रे बाप रे बाप रे।"

इस पंक्ति के पढ़ने पर सब लोग हँस देते हैं। इसके पश्चात् काशी चन्दा से कहते हैं-"एक बार फिर चलो कूल्हा उछाल कर।" गरज़ यह कि वह चन्दा को कोंचता चला जा रहा है ग्रौर चन्दा बेचारी लज्जित होती चली जा रही थी। उसका कोई भी साथ नहीं दे रहा था।

ग्रन्त में पृथ्वी पर से चन्दा कमर टेढ़ी किये हुये उठती है। ग्रौर कहती है—"ये सब कुछ इस दुष्ट तनवीर का किया हुग्रा है। ग्रच्छा मैं भी बदला लूँगी।" यह सुनकर तनवीर कहता है—"ग्रौर मेरी हलवे में रंग हमी ने खिला दिया था।"

ग्राज चन्दा को सब लोगों ने ग्राड़े हाथों लिया ग्रौर वह बेचारी मूर्ख बनने के कारण लज्जित रही। वह ग्रकेली ग्रौर सब एक ग्रोर, ग्राखिर कितनों का मुकाबला करे।

इसी प्रकार की कोई न कोई हरकत चन्दा उन लोगों के साथ किया करती थी या ये लोग चन्दा के साथ किया करते थे।

अध्याय सोलहवाँ

न तो माह बनके फ़लक पे रह न तो फूल बनके चमन में आ !
ये तमाम जलवे समेट कर किसी दिलगुदाज़ बदन में आ !!

प्रेमियों के लिए रात बड़ा महत्त्व रखती है; दो कारणों से—एक तो अंधेरी होती है और दूसरे यह कि इस समय सारी दुनियां आनन्द के साथ सोती रहती है। चुनांचे रंजना का पत्र काशी के पास आ चुका है इसका उत्तर देना अति आवश्यक है। इसलिए आज दस बजे रात में बैठा काशी रंजना को पत्र लिख रहा है।

लखनऊ

काशी के प्राण,

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार विदित हुआ। यदि हम लाख बार भी प्रयत्न करें तब भी तुम्हारे जैसा पत्र नहीं लिख सकते और मेरे हार्दिक भाव शायद तुम्हें बता सकें।

मैं तुमसे ज़ब्त का वादा तो करलूं !
मगर दिल है क़रार आये न आये !!

लखनऊ में रह रहा हूँ किन्तु तुम्हारी ही याद के सहारे। मेरा हृदय तुम्हारे पास है। बहरहाल समय को किसी प्रकार काटना ही है। और क्या

लिखूँ किन्तु एक बात अवश्य लिखूँगा कि यहाँ पर हमको और साथ में हमारे सब मित्रों को तुम्हारी कमी अवश्य मालूम होती है।

तुम्हारी छोटी बहिन चन्दा काफ़ी दिलचस्प और चंचल हैं। उनको विशेष भाँति तुमसे मिलने की कामना है। देखो यदि कोई भी अवसर आया तो तुम्हारी उनकी मुलाकात अवश्य होगी। तनवीर को तो तुम जानती हो; उसमें और चन्दा में खूब चला करती है। ये दोनों बहुधा सिनेमा हाल में बैठे-बैठे लड़ा करते हैं और अब हम लोगों का सारा समय उन दोनों के मुक़द्दमों का फैसला करने में कटता है।

परन्तु तारा बहुत गम्भीर लड़की है। उसकी गम्भीरता वस्तुतः काफ़ी आकर्षण रखती है। देवी के समान महिला है। कम खाने और कम बोलने की आदी है। गज़ब की सुन्दरता पाई है। जो कि तनवीर अपने आप को अभागा कहता है परन्तु विश्वास रखो कि उसका भाग्य तारा के कारण जगता हुआ प्रतीत होता है। चन्दा ने अपनी बहिन को बहुत-बहुत प्रणाम कहा है। तारा, तनवीर सागर तथा श्रीमती सागर तुमको नमस्ते कहते हैं। रंजना तुमको कैसे विश्वास दिलायें कि हमको तुम्हारी याद बराबर आती रहती है।

तुम्हारा
काशी

यह पत्र लिख कर काशी ने लिफ़ाफे में बन्द किया और दूसरे दिन डाकखाने के सुपुर्द कर दिया। यह पत्र रंजना को उसके भाई सुरेन्द्र द्वारा तीन चार दिन के पश्चात् मिल जाता है और फिर वह उसका उत्तर देती है। इसी प्रकार कई पत्र आते-जाते हैं। इधर तनवीर और तारा की मुलाकात मित्रता से आगे बढ़ कर न जाने किस मंजिल पर पहुँच गई है।

होते-होते यूँ ही दिन कटते-कटते बड़े दिन के अवकाश का समय आ गया। अतएव छात्रों में छुट्टी होने के कारण एक विशेष प्रकार की लहर दौड़ गई है। काशी ने रंजना को सूचित कर दिया है कि वह बहुत शीघ्र इस बड़े दिन की छुट्टियों के होने पर आ रहा है और तारा तथा तनवीर ने भी इस बात से अपने

पिता को सूचित कर दिया है कि उमेश बाबू को भेजिये ताकि सब उनके साथ ग़ाज़ीपुर पहुँच जायें। तनवीर भी जाने की तैयारी कर रहा है।

सारांश यह है कि सप्ताह के बाद बड़े दिन की छुट्टी होती है और काशी, तारा, तनवीर तथा चन्दा सभी लखनऊ से रवाना होते हैं। गाड़ी में कुछ अजीब इत्तफ़ाक कि फिर वही सबके सब मुसाफिर जो साथ आये थे उसी भांति साथ ही वापस जा रहे हैं और अबकी बार तो उमेश बाबू का काशी तथा तनवीर से अच्छा खासा परिचय भी हो गया है। उमेश बाबू इस बात से बहुत प्रसन्न हैं कि उनको ग़ाज़ीपुर तक के लिये एक साथी यात्रा में मिल गया और तनवीर भी प्रसन्न कि तारा के पास बैठने का पासपोर्ट मिल गया। चन्दा भी खुश कि यात्रा को काटने के लिये तनवीर जैसा मूर्ख मिल गया।

बहरहाल यह छोटा सा समूह गाड़ी में बैठा हुआ आपस में गप्पें करता हुआ रवाना हो रहा है। रेल है कि तेजी के अतिरिक्त आलस को जानती ही नहीं और लगातार कई घंटों की यात्रा के बाद इलाहाबाद का स्टेशन आता है। यहाँ पर काशी उतर आता है। जब डिब्बे से इतनी दूर चला गया कि उमेश बाबू न देख सकें तो तारा तथा चन्दा को बहुत झुक कर नमस्ते करता है और तारा तथा चन्दा भी इस नमस्ते का उत्तर ऐसे संकेत से देती हैं कि उमेश बाबू इस बात का अनुभव भी न कर सकें और बाबू तनवीर ये सब कुछ हरकतें बैठे देख रहे हैं और शान्ति के साथ बैठे हुए सिगरेट का धुँआ उड़ा रहे हैं। गाड़ी इलाहाबाद से रवाना हो जाती है।

रंजना बार-बार अपने घर की छत पर आकर खिड़की में से झाँक कर देखती है कि दिन के ढ़ाई बजने वाले हैं और अभी तक काशी नहीं आये आखिर मामला क्या है। गाड़ी दुष्ट को आज ही देर से आना था। लौट कर वापस उतर आती है। परन्तु अब की बार जो देखने गई तो ताँगे के आने की आवाज सुनाई देती है। बस तुरन्त आ खिड़की को ज़रा सा खोल देती है और उसमें से अपने हरे रंग की साड़ी के आंचल को थोड़ा खिड़की में निकाल कर बाहर लटका देती है। खैर साहब यह ताँगा काशी का ही है। आते ही रुकता है और काशी साहब अपनी काली शेरवानी पहिने हुए ताँगे से उतरते हैं। उनकी दृष्टि

तुरन्त खिड़की की ओर जाती है। हरे रंग का आंचल देख कर हल्की सी मुस्कराहट चेहरे पर आ जाती है। और काशी को भी मुस्कराता हुआ देख कर रंजना दिल ही दिल में अपने भावों को अपने ही पर न्योछावर कर रही है।

तुम आगये जहे किसमत तुम्हारी उम्र दराज़!
अभी-अभी तुम्हारा नाम लिया था मैंने!!

अतएव जब काशी मुस्कराता है तो रंजना भी अपने आंचल को हिला देती है। इस हरे आंचल का हिलाना बस काशी के हृदय के लिए अन्धेर था। बस भाव उमड़ पड़े और आंखों में प्रेम भाव झलकने लगा।

इधर बेचारे ग़ाज़ीपुर के यात्री चले जा रहे हैं और उनकी ट्रेन बनारस पहुंच कर आगे बढ़ चुकी है और अब ग़ाज़ीपुर का नम्बर है। अतः चन्दा और तारा सभी तैयार बैठे हैं कि अब ग़ाज़ीपुर का स्टेशन आये और उतरें और तनवीर तथा उमेश बाबू भी सामान आदि ठीक कर रहे हैं।

चन्दा तथा तारा की यह यात्रा जीवन में सबसे दिलचस्प यात्रा रही। इतनी सुन्दर यात्रा का अन्त भी निकट है परन्तु चूंकि तनवीर को तारा तथा चन्दा ने कुछ बातें बता दी हैं इसलिये ग़ाज़ीपुर में भी उन सबों की भेंट होती रहेगी और भेंट का होना आवश्यक है। इसलिये काफ़ी से ज्यादा संतोष भी है और प्रसन्नता भी है कि अपना घर होगा, अपनी मातृभूमि होगी और अपने मित्र होंगे। हर कार्य सिद्धान्त तथा विचार के अनुसार हुआ करेगा।

अब निरन्तर दो घन्टे यात्रा के पश्चात् लीजिये ग़ाज़ीपुर का स्टेशन भी आ गया और ये चारों यात्री भी उतर गये। उतरते समय उमेश बाबू ने तनवीर से कहा—"समझ में नहीं आता कि आपको धन्यवाद दूं या दुआ दूं।" इस पर तनवीर कहता है कि यदि देना है तो दोनों को दे दीजिये। यह सुनकर उमेश बाबू हँस देते हैं परन्तु चन्दा ने धीरे से तारा के कान में कहा—"बहुत ही दुष्ट है। हम लोगों को हमारे वृद्धों के सामने भी बनाता है।" इसके पश्चात् उमेश बाबू टमटम पर लड़कियों सहित रवाना हुए और तनवीर अलग तांगे पर रवाना हो जाता है।

तनवीर जब अपने घर पहुँचता है तो अपने माता पिता से मिलता है और फिर

दूसरे नाते वालों से मिलने के पश्चात् स्नान करने के लिये स्नानगृह में जाता है। फिर नहाने के वाद जलपान करता है और सो जाता है। जब तारा तथा चन्दा अपने घर पहुँचती हैं तो तुरन्त माता जी उन दोनों को गले लगाती हैं और शिकायत करती हैं कि तुम दोनों बहुत दुबली हो गईं। बहरहाल इसके पश्चात् लड़कियाँ अपने वस्त्र बदलती हैं और चाय पीती हैं कि रायबहादुर साहब कचहरी से चार बजते-बजते आ जाते हैं और लड़कियों को देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं, सबकी कुशलता पूछते हैं।

इधर चूँकि बाबू काशी घर पर दिन के ढ़ाई बजे पहुँचे थे इसलिए उनको अवसर था। स्नान आदि में लग गये। यद्यपि सर्दी की ऋतु थी। सन्ध्या का स्नान कर रहे थे इसलिए उनको विशेष आनन्द मिला। स्नान करने के बाद दूसरे वस्त्र धारण किये तथा अपने आस-पास के नाते वालों से मिलने चले गये। अब होते-होते सन्ध्या समय भी हो गया।

रात का भोजन करने के पश्चात् चूँकि सर्दी का समय है इसलिए उनका बिस्तर दरवाज़े पर ही कमरे में लगा हुआ है और यह जाकर चारपाई पर लेट जाता है। परन्तु किसी की याद है कि दिल में चुटकियाँ ले रही है और नींद नहीं आती है। काशी बाबू केवल इधर-उधर करवट बदल रहे हैं कि इतने में घड़ी बारह बजाती है और काशी पीछे वाली वाटिका में चला जाता है किन्तु बगीचे में काशी से मिलने के लिये रंजना बहुत पहिले ही से अपने बिस्तर से उठ कर आ गई है। यद्यपि रंजना की चारपाई भी माता की चारपाई के बिल्कुल ही निकट हमारे में बिछी हुई थी परन्तु यह इतने धीरे से उठी और आई कि माता के कानों को भी खबर न हो सकी। रंजना ने पहिले उठकर लैम्प बढ़ाया और फिर कमरे से निकल कर दालान में आई और मेज़ पर से टार्च ली और फिर सहन में से होकर अपनी शाल को ओढ़ते हुए दरवाज़े में से निकल कर वाटिका में जा पहुँची। इस जाड़े की अंधेरी रात में रंजना शाल ओढ़े हुए हाथ में टार्च लिये हुए चुपचाप बैठी हुई है। इस समय सारी वाटिका सांय-सांय कर रही है। एक महिला के हृदय में इतनी हिम्मत होना सोच विचार से बाहर है। वाह रे प्रेम! प्रेम में मनुष्य जो भी करे सब कम है। अब

सामने से किसी के आने की चाल सुनाई देती है। रंजना तुरन्त टार्च का प्रकाश उस ओर डालती है। यह काशी है जो केवल कमीज़ पैजामा तथा स्वेटर धारण किये चला आता है। ज्यों-ज्यों काशी सामने आता जा रहा है रंजना उसके आगे टार्च का प्रकाश बढ़ाती जा रही है और अन्त में काशी उसके बिलकुल निकट आ जाता है।

रंजना—(धीरे से) नमस्ते।

काशी—(धीरे से मुस्कराते हुए) नमस्ते................(और फिर काशी कुछ मिनट तक केवल रंजना की ओर देखता है..........)।

रं०—(धीरे से) आप आ गये।

का०—हाँ रंजना, कहो अच्छी रहीं तुम।

रं०—आपका आर्शीवाद रहा........आप ?

का०—तुम्हारा आर्शीवाद।

रं०—चलिए भी आपने आते ही मज़ाक शुरू कर दिया।

का०—नहीं रंजना मज़ाक नहीं वास्तविकता है।

रं०—मेरी क्या बात है ?

का०—क्यों नहीं...................।

रं०—अरे हटिये भी....... ....यह बताइये इस सर्दी में बिना शाल तथा चेस्टर के क्यों चले आए ?

का०—चूँकि तुमसे मिलना था।

रं०—तो हमने कब कहा था कि आप बिना शाल और चेस्टर के आया कीजिये ?

का०—बहरहाल स्वेटर तो पहिने हुए हूँ, अब क्या चाहिये।

रं०—केवल स्वेटर काफ़ी नहीं है, लीजिये हमारी शाल लीजिये (यह कह कर वह अपनी शाल देने लगती है)।

का०—नहीं, नहीं ! तुम ओढ़े रहो।

रं०—नहीं लीजिये, आपको हमारी सौगन्ध है।

काशी——अच्छा तो एक काम करो ।

रंजना——क्या ?

का०——आओ इसी शाल को हम भी ओढ़ लें और तुम भी ।

रं०——नहीं, नहीं ऐसा नहीं । लीजिए केवल आप ही ओढ़े रहिये ।

का०——नहीं रंजना तुम हमारा कहना मानो ।

रं०——अच्छा तो लीजिये ओढ़िए परन्तु वचन दीजिये कि कोई दुष्टता तो नहीं कीजियेगा ।

का०——(हँस कर कहता है) नहीं, नहीं ।

रं०——नहीं, पक्का वचन दीजिये ।

का०——पक्का वचन भाई, पक्का वचन ।

इस प्रकार काशी तथा रंजना दोनों शाल को आधा-आधा ओढ़ कर बैठ जाते हैं । फिर पत्र-व्यवहार के बारे में बातचीत चलती है और इसके पश्चात् तनवीर, तारा तथा चन्दा आदि की कहानी आरम्भ होती है । बातों के सिलसिलों में रात काफ़ी गुज़र गई और सर्दी भी काफ़ी बढ़ गई अतएव अब दोनों अपने-अपने घर एक दूसरे से पृथक होकर विस्तर पर जा लेटते हैं ।

रायबहादुर की लड़कियाँ घर तो पहुँच गईं और माता-पिता आदि से भेंट भी हो गई । पहिले दिन तो ये दोनों अपनी चाची के कमरे में ही सोईं क्योंकि इसी कमरे में रायबहादुर और उनकी स्त्री भी सो रहे थे परन्तु दूसरे दिन यह कह कर कि हम लोगों को कुछ पढ़ाई लिखाई भी करनी है, अतः दोनों लड़कियों ने अपने सोने का कमरा उस कमरे को बना लिया जो कि घर से बिलकुल कोने पर है और जिसका एक दरवाजा बाहर की ओर बग़ीचे में पड़ता है किन्तु यह दरवाज़ा सदैव बन्द रहता है और इसके ताले की कुंजी श्रीमती जी के पास रहा करती है । इसलिये पहिले तो कमरे की सफ़ाई आदि हुई इसके पश्चात् दोनों की चारपाइयाँ वहाँ बिछीं और विस्तर आदि लगा दिया गया । अब इन दोनों के लिये केवल कुंजी प्राप्त करना था सो वह भी कोई मुश्किल काम न था । चन्दा ने रायबहादुर की स्त्री की बेखबरी से लाभ उठाते

हुए कुंजी ग़ायब कर दी। चलिये इस प्रकार से यहां पर भी हर एक प्रवन्ध मौजूद है। रात में लगभग बारह वजे तनवीर बावू ने सर्दी में बाहरी दरवाज़े का फाटक खोला और धीरे से बाहर निकल आये। हाथ में टार्च है और कन्धे पर एक छोटे मुँह वाला थर्मस लटक रहा था और तनवीर बाबू भिन्न-भिन्न मुहल्लों तथा मार्गों से होते हुए चले जा रहे थे, कि अब सैयदवाड़ा मुहल्ला आ जाता है और वहां पर रायबहादुर के घर की पीछे की दीवार के पास खड़े हो गये और क्या देखते हैं कि कमरे की केवल एक खिड़की खुली हुई है और उस खिड़की का एक पल्ला तो खुला है परन्तु दूसरा पल्ला बन्द है। इसका अर्थ यह था कि कोई भी संकट नहीं है, दरवाज़े से आ जाओ। इसलिये तनवीर फूलों के झंगाड़ और क्यारियों को पार करते हुए दरवाज़े के पास पहुँच गये। तीन बार अपनी टार्च से दरवाज़े पर धीरे-धीरे खट-खट मारता है। अन्दर तारा तथा चन्दा जग रहीं थीं। समझ जाती हैं कि कौन है। अतः तारा बहुत धीरे से उठी और दरवाज़ा खोल दिया। तनवीर ने दरवाज़े के अन्दर प्रवेश किया और फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। दरवाज़ा बन्द करने में बड़ी शीघ्रता से काम लिया गया ताकि कोई देख न ले। अब सन्तोष हो गया और ये तीनों बिस्तर। र जा।ं

थर्मस को टेबुल पर रखा हुआ देख कर चन्दा कहने लगी, "तनवीर इसमें क्या है ?" तनवीर कहता है, "चाय है।" यह सुन कर चन्दा तुरन्त कहती है, "यह अच्छा किया तुमने, हमको इस समय चाय का मूड भी था।" चन्दा के इन शब्दों पर आई तो सबको वड़े जोर की हँसी परन्तु सबके सब बहुत धीरे से हँसते हैं कि कोई इन दोनों की आवाज़ न सुन ले। फिर इन सबों में इधर-उधर की गप्पें आरम्भ हो जाती हैं किन्तु सारी बातें बहुत धीरे से होती हैं ताकि दूसरा कोई उन सबों की बात भी न सुन पाये। तनवीर का क्या पूछना वह तो ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में ही था। उसकी हार्दिक कामना पूरी हो गई। इतने में चन्दा ने कहा—

चन्दा—तनवीर, तो अब थर्मस उठाना चाहिये ताकि चाय का दौर चले।

तनवीर—हां, हां, यह भी कोई पूछने की बात है।

तारा—परन्तु प्यालियां जो नहीं हैं।

तनवीर—कोई वात नहीं, इसी थर्मस के ढक्कन में एक-एक करके पी ली जायगी।

यह वात सबको पसन्द आई और धीरे-धीरे चाय का दौर भी चलने लगा इसी के साथ-साथ बातचीत का सिलसिला भी जारी हुआ।

ता० घर पर आपकी खोज तो नहीं होती होगी ?

त०—आपके घर पर आपकी खोज हो रही है ?

ता०—मैं तो अपने घर पर हूँ।

त०—मैं भी तो अपने घर पर ही हूँ।

चन्दा—अपने घर पर नहीं, यूं कहो कि सुसराल में हूं।

यह सुनना था कि तनवीर हँसने लगा और तारा ने लज्जित होकर अपना मुंह दुलाई से ढांक लिया। कहने को चन्दा यह शब्द कह गई मगर वह स्वयं भी इन शब्दों से झेंप सी गई.......अन्त में तारा कहती है—

ता०—(मुस्करा कर) यह बहुत दुष्ट है। इसकी बातों का ख्याल मत कीजिये।

त०—इस समय तो हम चन्दा की बातों ज्यादा ख्याल करेंगे।

ता०—जैसी हुज़ूर की इच्छा।

त०—धन्यवाद...............

इसी प्रकार मिल कर तीनों लगभग तीन बजे रात तक बातचीत करते रहे और तनवीर ने सिगरेट इतनी ज्यादा पी कि कमरा धुंऐ से भर गया। तब तारा ने उठ कर खिड़की का एक पल्ला जो बन्द था उसको भी खोल दिया और तनवीर से कहने लगी "आप सिगरेट क्यों पीते हैं ?" तारा के इस वाक्य पर तनवीर ने निम्न पंक्ति सुनाई :—

इस वास्ते पीता हूँ कि जल जाय जवानी !
वल्लाह किसी शोक के मारे नहीं पीते !!

तनवीर के मुख से ये पंक्तियाँ सुनना था कि तारा बड़े नम्र तथा धीरे स्वर में बोली—"ईश्वर न करे।" अब साढ़े तीन हो रहे थे। इसलिये बाबू तनवीर उठे और हाथ का टार्च लिया, कन्धे पर थर्मस रखा और फिर तारा तथा चन्दा से हाथ मिला कर रवाना हुए। जब तनवीर जाने लगा तो तारा तथा चन्दा ने कहा—"ईश्वर रक्षक।"

तनवीर के जाने के पश्चात् तारा ने मेज़ पर जितने सिगरेट के टुकड़े तथा दियासलाइयों की काटियाँ पड़ी थीं उनको एक कागज़ में पुड़िया बनाकर रख दिया और फिर दोनों सो गईं। तनवीर भी अपनी टार्च के प्रकाश में अन्धेरी तथा ठंडी रात्रि के साये में तेज़ी के साथ चलते-चलते आखिर अपने घर पहुँच ही गया और चुपचाप फाटक के अन्दर प्रवेश करके विस्तर पर पड़ा रहा।

दूसरे दिन सबेरे चन्दा तथा तारा दोनों सोई पड़ी थीं यद्यपि कि नौ बज चुके थे, धूप भी काफ़ी निकल आई थी परन्तु फिर भी सोई पड़ी थीं। माता जी को बनावटी शिकायत होती थी कि लड़कियों ने प्रतीत होता है कि काफ़ी रात तक पढ़ा है जिसके कारण आज अभी तक सो रही हैं। यह बातें श्रीमती जी ने कुछ इतने ज़ोर से कहीं कि रायबहादुर ने भी सुन लीं और कहने लगे–"भाई इन लड़कियों से कह दो कि ये स्वास्थ्य का ख्याल रखें और इतना परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं।" अवकाश तो विश्राम करने के लिये ही होता है। गरज़े कि दाई ने दोनों को जाकर जगाया और दोनों उठ तो गईं किन्तु उनकी नींद पूरी न हुई थी।

———

अध्याय सत्तरहवाँ

बहुत भूल जाने की आदत है तुमको !
हमें भी अगर भूल जाओ तो जानें !!

इधर काशी अपनी रंजना से बराबर रात को मिलता था और इधर बाबू तनवीर रोज़ाना तारा तथा चन्दा के कमरे में आ जाया करते थे और इस प्रकार इन लोगों के दिन सोते हुये और रात जगते हुए व्यतीत होती थी और बड़े दिन की छुट्टियाँ थीं कि लहर की भाँति आनन फ़ानन कट गईं और वह समूह जो लखनऊ से वापस आया था फिर कुशलता के साथ लखनऊ पहुँच गया। लाल भवन फिर मित्रों के मिलने का स्थान हो गया।

रंजना के पत्र भी बराबर आया करते थे, तनवीर की तो कोई बात ही नहीं। बराबर भेंट हुआ ही करती थी। इस सिलसिले में तनवीर श्रीमती सागर का विशेष प्रकार से कृतज्ञ था। हर दिन कालेज के घंटों की भाँति बड़ी शीघ्रता से कटता जाता था और अब लखनऊ की बहुत प्रसिद्ध बीमारी का समय आया अर्थात् यह वह बीमारी है जिसमें लखनऊ का हर छात्र अपनी सुध-बुध और हर चीज को त्याग कर विश्राम की प्रार्थना करता है। यानी प्रदर्शनी का समय आ गया और प्रदर्शनी के मैदान में सारा प्रबन्ध होगया। श्रीमती सागर, तनवीर, तारा

तथा चन्दा सबके लिए प्रदर्शनी का रोज़ाना देखना आवश्यक हो गया। पूड़ी, कचौड़ी भी आवश्यक है। इसी समय रंजना का एक पत्र भी काशी के नाम आया। काशी पत्र खोल कर पढ़ने लगा। उसका विषय यह है—

प्रतापगढ़

याद आने वाले, काशी !

आपका पत्र मिला। यह जान कर प्रसन्नता हुई कि अब आपने ज़ुकाम से छुटकारा पाया। ईश्वर की कृपा रहो। इधर माता जी को भी खांसी तथा बुखार की शिकायत थी। किन्तु अब वह ईश्वर की दया से बिलकुल अच्छी हैं। पिताजी की तो कोई बात ही नहीं, वह तो हर समय आपकी प्रशंसा करते रहते हैं।

इधर मिर्ज़ापुर के पिता जी के बहुत पुराने मित्र के यहाँ से पत्र आया है। उनके यहाँ उनके भतीजे का स्वास्थ्य-स्नान बड़े धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस सिलसिले में उन्होंने हम लोगों को विशेष तौर से बुलाया है। इसलिये माता जी तथा मैं मिर्ज़ापुर जाने की तैयारी में लगे हैं। सुरेन्द्र भी हम लोगों के साथ चले जायेंगे। इसलिये पत्र का उत्तर एक सप्ताह के अन्दर दीजियेगा वरना आपका पत्र न पा सकूँगी। देखिये हर बात का ख्याल रखियेगा। यदि ईश्वर ने चाहा तो आप परीक्षा में अवश्य सफल रहेंगे और आपको मुझे मिठाई खिलानी पड़ेगी। मैं अपने भाग की मिठाई छोड़ूँगी नहीं।

तनवीर बाबू, श्रीमती सागर, श्री सागर, कुमारी तारा को प्रणाम कहियेगा। हाँ देखिये चन्दा को आशीर्वाद कहियेगा। इस पत्र का उत्तर शीघ्र दीजियेगा क्योंकि इसी सप्ताह में हम लोग मिर्ज़ापुर चले जायेंगे।

अफ़साना किसी तौर मुकम्मल नहीं होता !
आता है तेरा नाम मेरे नाम से पहले !!

आपकी
"र"

इस पत्र को काशी ने जब पढ़ा तो तुरन्त इसका उत्तर लिखने बैठ गया इसलिये कि रंजना मिर्ज़ापुर जा रही है। हो सकता है कि उसके जाने के पश्चात् काशी का पत्र प्रतापगढ़ पहुँचे। इसलिये तुरन्त पत्र का उत्तर जाना आवश्यक है।

लखनऊ

न भूलने वाली, रंजना !

तुम्हारा पत्र मिला। प्रसन्न हूँ इस बात से कि तुम और तुम्हारी माता जी दोनों कुशलता से हो। अच्छा तुम भी मिर्ज़ापुर घूम आओ। एक स्थान पर बैठी हुई तुम भी बहुत घबरा गई होगी। हम लोग तो आजकल रोज़ाना प्रदर्शनी देखने जाते हैं। लखनऊ में अब की वर्ष प्रदर्शनी हर वर्ष से अधिक सुन्दर लगी हुई है। वास्तव में पूछो तो प्रदर्शनी में हमको केवल तुम्हारी कमी का अनुभव होता है। तुम्हीं बताओ रंजना, ऐसी सुन्दर प्रदर्शनी लखनऊ में लगी हुई है, साथ में सब मित्र तथा साथी मौजूद हैं, केवल तुम नहीं हो। अन्दाज़ा करो मेरे हृदय पर क्या गुज़रती होगी। बहुधा प्रदर्शनी की सारी रौनक़ मुझे अच्छी नहीं लगती क्योंकि तुम नहीं होती हो। मैंने अभी किसी से तुम्हारे इस पत्र का वर्णन नहीं किया है। जब मिलूँगा तो उन लोगों से तुम्हारा नमस्ते और आशीर्वाद कह दूँगा। अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला है, इसलिये तुम्हारी आज्ञा का पालन करके अभी इस पत्र का उत्तर दे रहा हूँ।

तुम्हारा

"काशी"

दो रोज़ के पश्चात् काशी का यह पत्र रंजना को मिला। वह पढ़ती है और दिल मसोस कर रह जाती है। क्या करे? पहिले तो काशी दूर है दूसरे प्रदर्शनी अच्छी लगी हुई है। काशी के साथ प्रदर्शनी कैसे देखें। आखिर पत्र को बक्स में बन्द कर दिया और फिर सामान आदि के ठीक करने में लग गई क्योंकि मिर्ज़ापुर जाना है और अपनी माताजी का सामान इत्यादि ठीक करने में हाथ बँटाने लगी।

अध्याय अठारहवाँ

ज़मीने चमन गुल खिलाती है क्या क्या !
बदलता है रंग आसमाँ कैसे कैसे !!

रंजना के पिता के मित्र श्री कुबेरनाथ की गिनती मिर्जापुर के बहुत बड़े रईसों में है। वैसे तो ये बहुत बड़े पूंजीपति हैं परन्तु एक बहुत बड़े जमींदार भी हैं। नगर के अन्दर सहस्रों घर किराये पर चलते हैं और हज़ारों बीघा ज़मीन खेती-बाड़ी के लिये है। साथ ही साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के और भी व्यापार होते हैं जिससे कि धन उत्पन्न करने के कार्य जारी हैं। इनका घर क्या है पूरा क़िला है। पक्का मकान है, और बहुत बड़ा है। इसके दरवाजे से बढ़ने का उपाय करता है। सारे मकान में बिजली लगी है और जल का प्रवन्ध अति सुन्दर है। लोग इस घर में प्रवेश करते हैं तो समझते हैं कि पृथ्वी का बैकुन्ठ यहीं है। चारों ओर फूल की क्यारियाँ इस सुन्दरता से लगी हैं कि वर्षा की ऋतु में तो यह अजीब ही स्थान होता है।

भला एक ऐसे पूंजीपति की ऐसी कोठी देख कर एक इनक्लाबी कवि का हृदय क्यों न चोट खाता जब कि इसी घर के नीचे लाखों मकान खपरैल तथा

फूंस के हैं। चुनांचे एक कवि ने श्री कुबेर की कोठी के वारे में लिख ही डाला। वह चौपाई यह है—

ये कोठी जो तुझको नज़र आ रही है!
कमालों पे अपने जो इतरा रही है!!
कोई इसके गमले के फूलों को सूंघे!
तो ख़ूने ग़रीबाँ की बू आ रही है!!

आज ऐसा घर रखने वाले, इतनी दौलत रखने वाले, के भतीजे ने बीमारी से छुटकारा पाया जो कि लगभग दो वर्ष से बीमार था। आज उसका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हुआ है। सारे घर में धूम है और केवल—गुस्ले सेहत या वह स्नान कह लीजिये जो बीमारी से उद्धार पाने के पश्चात् किया जाता है कि खुशी मनाने के लिये और साथ-साथ जलसा और जलूस करने के लिये बहुत उच्च कोटि के प्रबन्ध किये जा रहे थे। हर ओर लोग प्रबन्ध में लीन थे। और दूर-दूर के जितने भी नाते वाले तथा मित्र थे उन सब को निमंत्रण देकर बुलाया गया था। इसलिये रंजना के घर वाले कैसे छूट जाते। इन लोगों को भी निमंत्रण पत्र भेजे गये और रंजना तथा उसकी माता जी भी आ गई हैं और साथ-साथ इस बात के लिये क्षमा चाहती हैं कि श्री रविन्द्र नहीं आ सके क्योंकि आजकल वे एक मुक़द्दमे के सिलसिले में लगे हुए हैं। आज सन्ध्या समय चार बजे श्री कुबेरनाथ के भतीजे मिस्टर पन्नालाल का स्नान होने जा रहा है और चूंकि नहाने की रीति-रिवाज होने ही वाली है, इसलिये सारे अतिथि आंगन में बैठे हुए हैं। सर्दी की ऋतु होने के कारण गर्म पानी पतीली में रखा हुआ है। दालान के द्वार पर चिलमन पड़ी है और महिलायें इन दालानों में खचाखच भरी हुई हैं। ढोलक जोरों से बज रही है। गाने बजाने का शोर अलग मच रहा है। लगभग प्रत्येक स्त्री पर्दे की ओट में झांक-झांक कर श्री पन्नालाल का दर्शन कर रही है। छोटे-छोटे बालक बालिकायें इधर-उधर अलग दौड़ रही हैं। बाहर का प्रबन्ध करने वालों में श्री कुबेरनाथ के इकलौते बेटे श्री परवेज़ तथा उनके बहनोई बसन्त बाबू भी मुख्य प्रबन्धक हैं। परन्तु जनाने घर का प्रबन्ध आदि को ठीक करने वाली बसन्त बाबू की स्त्री सरोजनी देवी हैं। ये श्री कुबेरनाथ की इकलौती बेटी हैं।

हर ओर एक खुशी की धूम मची हुई है और साढ़े चार बजते-बजते पन्नालाल का स्नान आरम्भ हुआ और नहान के आरम्भ हो जाने के पश्चात् पन्नालाल को नये कपड़े पहिनाये गये और फिर उनके ऊपर से रुपया तथा अशर्फ़ियाँ दान की गईं। इसके पश्चात् उनके गले में फूलों की माला डाली गई और हर ओर से श्री कुबेरनाथ के लिए बधाई की आवाज़ गूँज उठी। संक्षेप में यह कि सारा जलसा भिन्न-भिन्न प्रकार का रिवाज़ हो जाने के पश्चात् समाप्त हो गया और नगर के आये हुये अतिथि, स्त्री तथा पुरुष सभी चले गये हैं। उसके बाद एक-एक, दो-दो दिन के पश्चात् बाहर के आये हुए अतिथि भी धीरे-धीरे जाने लगे और तीसरे दिन रंजना तथा उनकी माताजी ने जाने की आज्ञा माँगी परन्तु श्री कुबेरनाथ और उनकी श्रीमती जी ने बहुत प्रार्थना की और ज़ोर दिया कि रोज़-रोज़ का आना-जाना तो होता नहीं, एक सप्ताह और ठहरने के पश्चात् जाइयेगा। रविन्द्र बाबू की श्रीमती ने जाने के लिये बहुत ज़ोर दिया परन्तु किसी ने न सुना और उनको एक सप्ताह के लिए ठहरना ही पड़ा। अब लगभग श्री कुबेरनाथ के सारे अतिथि जा चुके हैं केवल मुख्य-मुख्य अतिथि रह गये जिनमें से रविन्द्र बाबू की स्त्री तथा उनकी बेटी रंजना भी हैं।

एक तो बाहरी अतिथि का उपस्थित होना, दूसरे हर प्रकार सन्तोष, इसलिये अभी तक जलसे का नशा इस घर में रहने वालों पर बाकी ही था। हर ओर खुशी मनाना, धार्मिक रिवाज़ होना, गीत गाना उसी प्रकार जारी था जैसा आप एक रईस से आशा कर सकते हैं। चुनांचे इसी सिलसिले में जितने लड़के तथा लड़कियाँ थीं सबने मिल-जुल कर संगीत का एक प्रोग्राम बनाया और संगीत की यह महफ़िल खूब ही थी। एक बड़े कमरे में सब लोग एकत्र हो गये जिसमें घर के सभी लड़के और लड़कियाँ मौजूद थीं। वैसे तो इस सभा में विमला, किशोरी, मालती, बीना और पार्वती सभी थीं, किन्तु इन सब लड़कियों में अति सुन्दर जो थी वह थी रंजना। उसका शरीर, उसका चेहरा, उसके बाल, उसके नेत्र सभी उपमा देने योग्य थे। यद्यपि रंजना, किसी कालेज या स्कूल में नहीं पढ़ी थी तथापि इसको साहित्य तथा संगीत से बड़ा गहरा लगाव था। इस सभा में बैठने वाले लड़कों में कृष्णा, बिहारी, भ्रमर,

केशव और जगदीश सभी मौजूद थे और इनमें से सभी को संगीत से कुछ न कुछ लगाव था। इस सभा में बैठने वालों में परवेज़ भी था मगर इसकी भी निराली शान थी। पहिली बात तो यह कि यह संगीत तथा उर्दू साहित्य का दीवाना और प्रेमी था और साथ ही साथ यह संगीत और साहित्य के प्रेम में इस प्रकार लीन हुआ कि अपनी शिक्षा को भी पूरा न कर सका और एक स्थान पर इसने अपने सार्टीफिकेट को अपनी एक शेर में यूँ कह दिया है। उसका शेर यह है :—

हम से शबे विसाल वे बेमेल हो गये !
अफ़सोस इन्ट्रेन्स में हम फ़ेल हो गये !!

इनका हृदय एक शायर का हृदय था और एक कलाकार होने के कारण ये हर चीज़ को कला की दृष्टि से देखते थे। इनके हृदय की भावना हर एक से बिलकुल अलग थी।

अब सभा में चूँकि सब लोग आ ही गये थे इसलिए संगीत का प्रोग्राम आरम्भ करने के लिए जल्दी होने लगी और अन्त में यह निर्धारित हुआ कि इस सभा में जितने भी लड़के तथा लड़कियाँ हैं सभी को गाना सुनाना ही पड़ेगा। ज्योंही इसका निर्धारण हो गया, तबले खड़कने लगे और हारमोनियम तथा झाँझ बजने लगे। संगीत की यह सभा कुछ ऐसे अन्दाज़ से आरम्भ हुई कि वहाँ पर बैठने वाले सब लड़के तथा लड़कियों का हृदय अपने आप गाना सुनाने के लिए उछलने लगा। एक-एक करके सबने गाना सुनाना आरम्भ किया और अन्त में रंजना को गाना सुनाने के लिए कहा गया क्योंकि इसका निर्धारण हुआ था कि रंजना के गाने के पश्चात् परवेज़ स्वयं अपने सितार के ऊपर ग़ज़ल सुनायेंगे। इसलिए बाध्य होकर रंजना को गाना पड़ा और रंजना की इच्छानुसार उसको परवेज़ का सितार दे दिया गया। उसने सितार लेकर उसका एक सिरा कन्धे पर रखा और बजाना शुरू किया और बजाते हुए उसने एक ग़ज़ल गाना शुरू किया। यह ग़ज़ल उर्दू के प्रसिद्ध कवि अख़्तर शेरानी की है। इस ग़ज़ल को उसने ऐसे दर्द भरे स्वर में गाया कि सभी सुनने वाले मस्त हो गये। लीजिए अब आप भी सुनिये—

सेयह पैरहन पर सितारों का रंग !
कि तारों भरी रात शर्मा गई !!
अदाओं से फ़ितने बरसते रहे !
निगाहों से मैखाने छलका गई !!
बढ़ी जैसे सुबहे बनारस बढ़े !
उठी जैसे शामे अवध छा गई !!
वो आँखें कि रक़्सां शबे मैकदा !
वो नज़रें कि बिजली सी लहरा गई !!
वो उम्रेशमी बाल किरनों का हाल !
वो चोटी कि नागिन सी बल खा गई !!
बदन जैसे कलियों का मासूम ख़ाब !
कमर या कोई शाख लच खा गई !!
निगाहों ने देखीं न वह बिजलियां !
जो नीची निगाहों से दिखला गई !!
मेरी हसरते बोसा पर नाज़ से !
"बुरी बात है !" कहके बहला गई !!

रंजना ने इस ग़ज़ल को गाया क्या था कि पूरी सभा पर जादू कर दिया। वैसे तो सभी लोग इसके प्रभाव में डूबे थे परन्तु रंजना की आवाज़, गाने का निराला अन्दाज़ और साथ ही साथ उसके शरीर तथा चेहरे की सुन्दरता सबसे ज्यादा प्रभाव परवेज़ पर कर रही थी और उस समय जब कि उसने इस ग़ज़ल की पंक्ति "बुरी बात है कहके बहला गई" गाया तो परवेज़ अपना होश खो बैठा। रंजना के गाने के पश्चात् जब उसकी ओर सितार बढ़ाया गया तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या गाये। वह उस समय अपनी संगीत-कला और साहित्य सभी भूल बैठा था। उसने सितार को उठाकर फर्श पर रख दिया और कह दिया कि इस समय मेरा जी अचानक खराब हो गया है, और जा रहा हूँ। यह कहकर वह उठा और चला आया। रंजना भी परवेज़ की यह बातें देखकर हक्का-बक्का सी रह गई। बहरहाल

करना [illegible] था सभा का तो अन्त होने ही वाला था और समाप्त हो गई। लोग दोपहर का भोजन करने के लिए उठ गये।

अब भोजन परोसा गया। सभी लोग खाने के स्थान पर आ गये। लोग भोजन करने लगे। इसी के साथ-साथ मज़ाक भी होता जा रहा था।

परवेज़ ने भी दोपहर का खाना खाया और बाहर जाकर लेट गया परन्तु अब उसके हृदय में रंजना ही घूम रही थी। वह स्वयं भी व्याकुल है कि आखिर क्या करे? क्या बात है?

रंजना अति सुन्दर है उसे हर प्रकार का तरीक़ा आता है। साहित्य से भी लगाव है। इसी प्रकार के सहस्त्रों ख्यालात उसके दिल में आने लगे। यही सब बातें विचार करते-करते वह फिर ज़नाने घर में गया और फिर एक चारपाई पर लेट गया और वह शान्ति पूर्वक लेटा हुआ था। केवल रंजना की ओर उसके चाल चलन को बहुत आलोचना की दृष्टि से देख रहा था। उसको रंजना के अन्दर किसी प्रकार त्रुटि नहीं मालूम होती थी।

बाबू परवेज़ उर्दू साहित्य का अधिक विकसित अध्ययन रखते हैं कि शायद ही आजकल के नवयुवक इतना अधिक अध्ययन रखें। परन्तु कवि प्रकार के व्यक्ति होने के कारण इन्ट्रेन्स में चार वर्ष फ़ेल हो गये और स्कूल पढ़ना छोड़ दिया। अब केवल घर का कार्य सम्भालते हैं और इनके पिता केवल शान्ति पूर्वक पुस्तकों का अध्ययन करते रहने के लिये उन्हें तीन सौ रुपया जेब खर्च के नाम से देते हैं। लीजिये एक पूंजीपति के पुत्र बाबू परवेज़ एक आई० सी० एस० के बराबर वेतन यूं ही पाया करते हैं।

अब क्या चाहिये परन्तु अब बाबू परवेज़ का ध्यान केवल रंजना की ओर है, मस्तिष्क पर केवल रंजना छाई हुई है आजकल उसकी विचित्र दशा हो गई है।

जब कभी परवेज़ अवसर पाता है तो अपना कमरा बन्द करके केवल शान्ति पूर्वक अपने कमरे में या तो सिग़ार पिया करता है या टहला करता है। एक तो बेचारा पहिले से चुप रहने वाला व्यक्ति है बजाय नाच के हारने के दिल ही

हार गया। करे तो क्या करे। जीवन अशान्त हो गया है, न जाने प्रेम उसको किस मंज़िल पर ले जायेगा।

जिस दिन से बंधा है ध्यान तेरा घबराये हुये से रहते हैं!
हर वक़्त तसोव्वर करके तेरा शर्माये हुये से रहते हैं!!
कुम्हलाये हुये फूलों की तरह कुम्हलाये हुये से रहते हैं!!!

ग़मगीं न बना नाशाद न कर!
ए इश्क़ हमें बर्बाद न कर!!

रंजना और रंजना की माता को केवल एक सप्ताह ठहरना था सो वह भी समय व्यतीत हो गया। अब ये माता तथा बेटी चलने की तैयारी करने लगीं। हरचन्द कि दोबारा फिर श्री कुबेरनाथ जी ने रोका परन्तु अब की बार श्री कुबेरनाथ, श्रीमती रविन्द्र के निवेदन को न टाल सकीं और सप्ताह के अन्तिम दिन माता तथा पुत्री मिर्ज़ापुर से चल दीं और प्रतापगढ़ से अपने घर आ गईं। अब शान्ति प्राप्त हुई।

परन्तु इधर परवेज़ बाबू को कुछ अजीब प्रकार की दशा हो गई। कभी तो केवल एक समय भोजन करके रह जाते हैं और कभी केवल चौबीस घन्टे चाय पर रहते हैं। सिग़ार अधिकता से पीने लगे हैं और कमरा बन्द करके या तो केवल टहला करते हैं या खामोशी से लेटे रहते हैं।

उनका शान्त रहना कोई नई बात नहीं थी किन्तु अचानक उनका चुपचाप रहना, खाने का कम हो जाना, घर में आना-जाना कम हो गया। वह भी एक दिन से नहीं दो तीन सप्ताह से ऐसी दशा है? आखिर बात क्या है? माता को चिन्ता होती है, बहिन को भी चिन्ता होती है और धीरे-धीरे यह खबर श्री कुबेर-नाथ तक भी पहुँच जाती है। वह भी चिन्ता में पड़ जाते हैं कि आखिर बात क्या है? ईश्वर न करे, कहीं बीमार तो नहीं है। आखिर मामला क्या है? केवल यही तो इस घर का दीया है, वह भी इतना उदास रहता है कि कुछ कहने की बात नहीं। उनके रहन-सहन में इतना परिवर्तन क्यों हुआ?

इन सब बातों का पता लगाने के लिए परवेज़ के बहनोई बसन्त बाबू ठीक समझे गए। इसलिये बसन्त बाबू की सास ने बसन्त को इस बात पर तैयार

किया कि वह परवेज़ के रहस्य को बतलादें। हरचन्द माता जी ने, बहिन ने, हर एक ने इस भेद को मालूम करने का प्रयत्न किन्तु परवेज़ ने किसी को कुछ नहीं बताया। बसन्त बाबू इस कार्य के लिये तैयार तो कर लिये गये हैं परन्तु सबको यही ग्राशा है कि यह मालूम नहीं कर सकेंगे। चुनांचे बसन्त बाबू ने भेद को मालूम करने का बीड़ा उठाया है।

एक दिन परवेज़ ने बिलकुल ही खाना नहीं खाया ग्रौर केवल चाय पीकर रह गया ग्रौर दिन बीतते-बीतते रात्रि के बारह बज गए परन्तु वह है कि शान्ति पूर्वक बैठा हुग्रा सिगार पी रहा है। इतने में बसन्त ने यह ग्रवसर उचित समझा क्योंकि दरवाज़े पर के सब लोग सो रहे थे। धीरे से चारपाई से उठे ग्रौर परवेज़ के कमरे का दरवाज़ा धीरे से खटखटाया ग्रौर बसन्त बाबू ने प्रवेश किया ग्रौर फिर उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया। पहिले उन्होंने इधर-उधर की बातें कीं फिर ग्रपने मतलब पर ग्राये।

बसन्त बाबू—हम तुमसे एक बात पूछते है। ग्राशा है तुम हमसे छिपाग्रोगे नहीं ग्रौर साफ़ बता दोगे।

परवेज़—कहिये..........क्या बात है ?

ब० बा०—ग्राखिर ऐसी कौन सी मुसीबत है जिसकी वजह से ग्रचानक ही तुम्हारे रहन सहन में इतना बड़ा ग्रन्तर ग्रा गया है ?

प०—कैसा परिवर्तन ?

ब० बा०—क्यों नहीं, यह परिवर्तन नहीं है कि तुम खाते भी नहीं हो ग्रौर दिन भर कमरे में पड़े रहते हो। केवल ग्रौर सिगार पीया करते हो। न हंसते हो, न बोलते हो, न घर में जाते हो। क्या बात है ?

प०—दिल............

ब० बा०—दिल को तो हम मानते हैं परन्तु इस दिल में इतना बड़ा ग्रन्तर क्यों हुग्रा ? दिल ने क्यों बाध्य किया कि तुम ऐसे रहो ग्रौर दिल से तुम क्यों इतना दुखित हो गये ?

प०—कुछ भी नहीं यूंही....................

बसन्त बाबू—नहीं, कुछ तो अवश्य है। तुम्हें बताना होगा। हम बिना पूछे जायेंगे नहीं।

परवेज़—जाइये, आनन्द से सोइये, अपनी नींद क्यों खराब कर रहे हैं?

ब० बा०—नहीं-नहीं, आनन्द आदि को छोड़ो। पहिले यह बताओ कि बात क्या है और मैं तुमसे ईश्वर की शपथ खा कर कहता हूँ कि हर मामले में तुम्हारी सहायता करूँगा।

प०—देखिये मुझे व्याकुल न कीजिये। जाइये आनन्द से सो जाइये। मुझे यूँ ही जिस दशा में हूँ रहने दीजिये।

ब० बा०—बिना पूछे मैं नहीं जाऊँगा•••····(परवेज चुपचाप रहा)।

ब० बा०—बोलो क्या बात है (परवेज़ फिर मौन साधे रहा)।

ब० बा०—बोलो परवेज मैं कहता हूँ परमात्मा की शपथ तुम्हारी सहायता करूँगा।

प०—अच्छा तो सुनिये मैं साफ़-साफ़ आपसे कहे देता हूँ। मैं रंजना से विवाह करना चाहता हूँ और केवल दो मास में विवाह हो जाये तो अच्छा है वरना मैं अपने जीवन से ऊब गया हूँ और मेरे जीवन का अन्त कैसा होगा कह नहीं सकता।

यह सुनना था कि बसन्त बाबू ने अपने दाँतों तले अंगुली दबा ली और फिर परवेज से बोले—"देखो परवेज़ तुम बात नहीं समझते हो। यह तो तुम जानते ही हो कि रंजना और काशी की मँगनी बाल्यकाल ही से हो चुकी है और काशी इस समय लखनऊ में पढ़ रहा है। यदि यह मान भी लिया जाय कि रंजना के माता-पिता काशी की मँगनी को समाप्त कर देंगे फिर भी उन लोगों को काशी से पूछना ही होगा और काशी आ भी सकता है तो परीक्षा के बाद।"

प०—बहरहाल जो कुछ भी मुझे कहना था मैंने साफ़-साफ़ कह दिया है अब आगे आपकी इच्छा।

व० बा०—परवेज़ तुम किसी दूसरी लड़की के लिये कहो तो मैं तुरन्त तै करा दूँगा।

प०—दूसरी लड़की से मैं विवाह करूँगा ही नहीं। ऐसा विचार मैंने निश्चय पूर्वक किया है। यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है।

हरचन्द कि बसन्त बाबू ने समझाने का उपाय किया परन्तु परवेज़ अपने इरादे पर अटल रहा और अन्त में हार कर बसन्त बाबू कमरे से वापस आ गये और सवेरे सारा माज़रा अपनी सास तथा अपनी स्त्री अर्थात् परवेज़ की बहिन को सुनाया।

जब यह खबर सरोजनी तथा परवेज़ की माता जी को मालूम हुई तो घर में एक विशेष कुहराम मच गया। इसके साथ-साथ परवेज़ बाबू ने समय भी दो मास का दिया था यह एक और भी घाव पर नमक था। उस समय पूँजीपतियों के घरों में तो दो मास के अन्दर गुड्डे और गुड़ियों का व्याह भी नहीं तय हो पाता था; जिसमें तो एक किले को तोड़ कर दूसरा किला तैयार करना था। सब यह सुनकर परेशान हो गये परन्तु जब यह खबर श्री कुबेर को मिली तो वह इस बात से तो व्याकुल नहीं हुए कि परवेज़ अपने जीवन से हाथ धो बैठेगा। बल्कि इस बात से व्याकुल अवश्य हो गये कि उनको अपने इकलौते बेटे से हाथ धोना पड़ेगा। घर वाले एक अच्छी खासी व्याकुलता में पड़ गये और इधर बाबू परवेज ने फाकों की गति अति तेज कर दी, जिससे कि उनका मुँह दिन-दिन सूखने लगा। इन बातों का प्रभाव परवेज़ के नाते वालों पर जितना भी होता कम था। प्रत्येक तरीके से श्री कुबेर ने चाहा कि परवेज़ अपने इरादे से लौट जाये परन्तु परवेज ने तो अपना इरादा पक्का बना लिया था, बिलकुल दृढ़ बना रहा।

———

अध्याय उन्नीसवाँ

अमनो अमाँ के रुख को बे आबो रंग करदे !
दुनियाँ को हुस्न तेरा मैदाने जंग करदे !!

जब श्याम सुन्दर परवेज के वैरागी जीवन का भेद सब पर खुल गया तो अब उसके इलाज पर विचार करने का उपाय भी होने लगा। चुनांचे सबसे पहिले तो सारे घर वालों ने बड़े ज़ोर से इस बात का उपाय किया कि परवेज अपने इरादे से झुक जाय। परन्तु वह रण भूमि का मर्द प्रेम की चट्टान बना समुद्र के थपेड़ों को सहता रहा और परिणाम यह हुआ कि इस बात का बोझ सरोजनी देवी के सिर पर थोपा गया कि यदि सरोजनी चाहे और मोर्चे को सर करने का वीड़ा उठा ले तो शायद ऊँट किसी करवट बैठ जाय। बहरहाल दशा से प्रेरित होकर सरोजनी इस सिलसिले में अग्रसर हुई और मार्के के सिलसिले में सरोजनी ने पहिला क़दम बढ़ाया। उसने एक पत्र सुन्दरी देवी अर्थात् श्री रविन्द्र की स्त्री के नाम लिखा। लीजिये इस पत्र को आप ही पढ़ते चलिये।

मिर्ज़ापुर

आदरणीय सुन्दरी देवी जी,

आपके तथा रंजना के घर पर कुशलता से पहुँच जाने का पत्र मिला।

हम लोगों को अत्यन्त प्रसन्नता तथा सन्तोष है कि आपकी यात्रा ईश्वर की दया से शान्ति तथा सुगमता से व्यतीत हुई। माता जी का जी इधर कुछ अशान्त था तथा मेरा बड़ा पुत्र केशव भी आजकल कुछ पीड़ित है परन्तु अब दोनों भगवान की दया से अच्छे हैं। ईश्वर सदा उसे सुखी रखे। परवेज़ बाबू भी कुशलता से हैं और आपको नमस्ते कहते हैं। केशव के पिता आपको बहुत याद करते है और रंजना को आशीर्वाद कहते हैं। चूंकि आजकल मेरा जी मिर्ज़ापुर में रहते-रहते घबड़ा गया है इसलिये जलवायु के परिवर्तन के लिये ईश्वर ने चाहा तो होली के दो तीन दिन पश्चात् आपकी सेवा में उपस्थित होऊँगी। श्री रविन्द्र को हमारा बहुत-बहुत नमस्ते और सुरेन्द्र को बहुत-बहुत आशीर्वाद।

आपकी

सरोजनी

आज सरोजनी के भाई के विवाह के सिलसिले में यह पहिला क़दम है। यह पत्र लिख कर पहिले सरोजनी ने अपनी माता जी को दिखाया और इसके पश्चात् फिर अपने पति को दिखाया और इनकी राय लेने के पश्चात् श्री रविन्द्र का पता लिख कर प्रतापगढ़ के लिये रवाना कर दिया। इधर रंजना जब मिर्ज़ापुर से अपने घर पहुँची तो उसने पहुँचने के साथ ही तुरन्त काशी को इस बात से सूचित कर दिया कि वह मिर्ज़ापुर की यात्रा से वापिस आ गई है और अब वह प्रतापगढ़ ही रहेगी किसी और स्थान पर जाने का इरादा नहीं है। किन्तु रंजना को प्रतापगढ़ पहुँच कर यह पत्र लिखे हुए कई दिन व्यतीत हो चुके थे। चुनांचे आज के दिन वह काशी के आये हुए पत्र का उत्तर लिख रही है। लगलभग रंजना का यह पत्र काशी को तीन दिन के पश्चात् मिलेगा।

प्रतापगढ़

रंजना के काशी,

"जब कभी होता है दिल में दर्द याद आते हैं आप !!"

अभी-अभी आपका पत्र मिला। दशहरा तो आपको देख कर आपके साथ मनाया था। परन्तु अब दो दिन बाद होली आ रही है। सारा संसार प्रसन्नता

का राग गायेगा लेकिन आप मेरे पास नहीं होंगे। यह बसन्त ऋतु मेरे लिये कैसी होगी क्या कहूँ।

'आये न तुम बहार में—बीत चली बहार भी !!'

होली जब आती है सहस्त्रों दिलों के लिये आनन्दमयी होती है। आपके न होने से होली कैसी होगी यह ईश्वर ही जानता है या मेरा हृदय। आपकी होली तो आपके लखनऊ के मित्रों के साथ ईश्वर करे आनन्ददायक हो और हमारी होली के प्रसन्नता के कारण केवल आप ही हैं।

मिर्जापुर की यात्रा का सारा हाल आपको पहिले ही लिख चुकी हूँ अब ज्यादा क्या लिखूं। परमात्मा आपको होली का आनन्द दे और आपके सिलसिले में मुझे भी।

आपकी........
"र"

तीन दिन के पश्चात् रंजना का यह पत्र ठीक होली के दिन काशी को लखनऊ में मिला। काशी के दिल की दशा इस पत्र को पढ़ कर कुछ अजीब सी हो गई और सन्ध्या समय वह रंजना के पत्र का उत्तर लिखने बैठा।

लखनऊ

काशी की रंजना,

तुम्हारा पत्र मिला। होली मुबारक। इसमें सन्देह नहीं कि अपने मित्रों के साथ आज होली अच्छी मनाई। लाल भवन में श्रीमती सागर की ओर से आज हम लोगों को न्योता दिया गया था। सबने तुम्हें होली का मुबारकवाद कहा है।

परन्तु देखो मेरा भाग्य भी अजीब है। दशहरा तुम्हारे साथ मनाया किन्तु होली तुमसे बिलकुल दूर रह कर। शायद तुम्हें विश्वास न हो तो कुछ कविता की पंक्तियाँ मेरे हृदय की कामना को प्रकट कर रही हैं।

'गुज़रे हुये लमहात उड़ा लाता जमाना !!
वह चांदनी शब हुस्न के दिलकश वह नज़ारे !
निखरा हुआ वह चाँद वह हँसते हुये तारे !!
और हलके सुरों में वह हसीं गीत तुम्हारे !!!

गुज़रे हुये लमहात उड़ा लाता जमाना !!

बेकैफ़ फ़ज़ा फीका जहा जिन्दगी भारी !
तुम जो नहीं अफ़सुर्दा है दुनियाँ मेरी सारी !!
तस्वीर है एक सामने और याद तुम्हारी !!!

गुज़रे हुये लमहात उड़ा लाता ज़माना !!

वह सुबह हसीं शमा हसीं रात हसीं थी !
इन सब से सिवा तेरी मुलाक़ात हसीं थी !!
वह दिन था खुशा जिसकी हर एक बात हसीं थी !!!

गुज़रे हुये लमहात उड़ा लाता ज़माना !!

रंजना जो कि होली मैंने तुमसे दूर तो रहकर मनाई है लेकिन विश्वास रखो कि तुम दिल में सदा मूर्ति के समान बनी हो और पिछले होली के अवसर पर जो गाने तुमने गा कर सुनाये थे वह आज भी मस्तिष्क में और कान में उसी प्रकार गूंज रहे हैं। हमारी याद तुम्हारे हृदय में है। इससे बढ़ कर हमारा क्या भाग्य हो सकता है। रंजना तुमको एक बार फिर तुम्हारे होली के लिये बधाई देता हूँ।

तुम्हारा........
काशी

होली के दो दिन बाद रंजना को काशी का यह पत्र मिला और आज ही के दिन परवेज़ की बहिन सरोजनी एक बहुत बड़े पूँजीपति की पुत्री श्री रविन्द्र वकील के घर आने वाली हैं। ढ़ाई बजे दिन की गाड़ी से आएँगीं। उनका तार आ चुका है। इस समय दिन के दो बज रहे हैं। सुरेन्द्र नौकर के साथ ताँगा इत्यादि लेकर स्टेशन जा चुका है। रंजना तथा उनकी माता जी ताँगे के आने की प्रतीक्षा कर रही हैं। ताँगा अब आता है, तब आता है कि तीन बजते-बजते ताँगा श्री रविन्द्र के घर आ लगता है। अन्दर बाहर प्रसन्नता की हल-चल सी मच जाती है। शीघ्रातिशीघ्र हर प्रकार का प्रबन्ध होता है और सरोजनी देवी उतर कर श्री रवीन्द्र के घर में आगईं। सरोजनी की सबसे भेंट और बातें हुईं। सुन्दरी देवी ने सरोजनी को छाती से लगाया। सरोजनी को देख कर प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न तथा आनन्द से पूर्ण दिखलाई देने लगा।

थोड़ी देर में चाय बन कर आ गई। सरोजनी देवी ने हाथ-मुँह धोया और हम सब के सब चाय आदि पीने के लिये बैठ गये। जब सब लोग नाश्ते की चीजें खा चुके तब रंजना ने सबको चाय बनाकर देना आरम्भ किया और सब लोगों ने चाय पीना आरम्भ किया और फिर सरोजनी देवी ने रात का भोजन किया और इसी तरीके से जब दो-तीन दिन व्यतीत हो गये तो दोपहर में जब कि रंजना मौजूद नहीं थी और एक कमरे में केवल सुन्दरी देवी तथा सरोजनी रह गई थीं तब सरोजनी बातों ही बातों में अपने मतलब पर आई।

सरोजनी—काकी हमारे प्रतापगढ़ आने का तात्पर्य केवल जलवायु का परिवर्तन ही नहीं बल्कि कुछ और भी है।

चाची— कहो वह क्या ?

स०—पहिले वचन दीजिये कि इस बात को मान लेंगी तब कहूँगी।

चा०—भई बात भी तो कहो............बात कहने के पहिले तुम वचन चाहती हो।

स०—नहीं पहिले वचन दीजिये कि आप मान लेंगी।

चा०—अच्छा कहो भी मान लूँगी।

स०—विशेष बात यह है कि यदि आप स्वीकार करें तो रंजना से परवेज़ का विवाह हो जाय तो क्या बुरा है ?

चा०—हैं.......यह कैसे हो सकता है ? तुम जानती हो रंजना की मँगनी काशी से लग चुकी है। काशी के माता-पिता इस चीज़ को कब गँवारा करेंगे।

स०—क्यों नहीं ? उन लोगों को तो गँवारा करना ही पड़ेगा क्योंकि लड़की तो आपकी है।

चा०—अवश्य लड़की हमारी है परन्तु जब मँगनी हो चुकी तब तो लड़की पर उनका ही हक़ होता है और वह भी मँगनी आज की नहीं बल्कि दस-पन्द्रह साल की पुरानी मँगनी हो चुकी है। आखिर तुम्हीं बताओ कि उन लोगों को जवाब क्या दिया जाय ?

स०—चाची आप ठीक कहती है किन्तु मँगनी का अर्थ यह तो नहीं कि

आपने रंजना का काशी के साथ विवाह कर दिया। मँगनी इत्यादि सदा न मालूम कितनी बार लगती हैं और कितनी बार छूटती हैं।

चाची—नहीं सरोजनी तुम भूलती हो। काशी या रंजना की मंगनी इतनी पुरानी है कि तोड़ने के लिए कई और नाते वालों भी प्रयत्न किया परन्तु नहीं तोड़ सके। इसका कारण केवल यह है कि काशी की माँ को हमारी लड़की रंजना बहुत पसन्द है।

सरोजनी—नहीं चाची देखिये मँगनी तो बराबर हुआ करती हैं और टूटा करती हैं, अब रहा काशी की माताजी का प्रश्न तो वास्तव में रंजना ऐसी लड़की है कि उसको काशी की माताजी हो पर क्या निर्भर है, हर एक पसन्द करेगा। सुन्दरता व सलीक़ा उसके अन्दर भली भाँति है। उसके अन्दर आखिर किस बात की कमी है।

चा०—यह बात तुम ठीक कहती हो किन्तु जानती हो कि नातेदारी का मामला है। फिर काशी कोई बुरा लड़का भी तो नहीं है कि उसकी बुराई के कारण हम मँगनी तोड़ दें।

स०—आपका कहना ठीक है परन्तु आप देखिये तो कि काशी के अन्दर अच्छाई क्या है। सिवाय उसके कि वकालत का सार्टीफिकेट लेकर वापस आयेंगे और वकालत का क्या पूछना, चले तो सब कुछ न चले तो वकील जो होता है भिखारी हो जाता है। ईश्वर न करे काशी की वकालत न चली तो काशी के साथ-साथ बेचारी रंजना भी भूखी रहे और वकालत का चलना क्या? शहर के जितने ज़मीदार, रईस और सेठ होते हैं उन्हीं के घर से सलाना दक्षिणा मुक़द्मावाज़ी के नाम से निकलती है। वकील इन्हीं दक्षिणा को एकत्र करके अपना पेट पालता है। इसके विरुद्ध इसकी आय ही देखिये। परवेज़ के पास क्या नहीं है—धन, जायदाद, घर, सूरत शक्ल आदि। यदि काशी से अच्छे नहीं हैं तो बुरे भी नहीं और रहा शिक्षा का सार्टीफिकेट का प्रश्न तो उनको सार्टीफिकेट की आवश्यकता ही क्या थी? कोई नौकरी तो करनी थी नहीं। ईश्वर ने यूँ ही ही बहुत खाने पीने को दिया है और अपना कार्य चलाने भर के लिए वह काफ़ी पढ़ चुके हैं। बस अब इस

मगाई के ऊपर हाँ कह दीजिये। कुछ सोचिये मत, हम लोग रंजना के अच्छा चाहने वालों में से हैं। चाची बस हाँ कह दीजिये। मेरी चाची........।

चाची—भई तुम समझती नहीं हो, भला हाँ, कैसे कह दूँ?

सरोजनी—अच्छा तो यदि आप हाँ नहीं कहती तो इस बात का वचन दीजिये कि यदि रविन्द्र चाचा को यह मँगनी पसन्द आ जाये और वह मँगनी स्वीकार कर लें तो आप उनका विरोध न करेंगी।

चा०—(रुकते हुये) हाँ इस बात का वचन देती हूँ।

इस प्रकार सरोजनी ने अपनी चाची के विरुद्ध आवाज़ को रोक दिया। सत्य है पूँजीपति की बेटी का क्या पूछना। पूँजीपति के घर के बिल्ली कुत्ते भी बड़ी जोरदार आवाज़ निकालते हैं। सरोजनी एक पूंजीपति की लड़की थी। उसकी बातों का वज़न घर रखे हुए सोने चाँदी के बोझ से भी ज्यादा था। आखिर श्रीमती रविन्द्र पर इसका प्रभाव कैसे नहीं पड़ता। प्रभाव पड़ना तो अवश्य था और प्रभाव अवश्य पड़ भी गया। चाची और भतीजी में इस बात-चीत के समाप्त होने के पश्चात् कुछ दूसरे प्रकार की मनोरंजन की बातचीत होने लगीं और फिर दोनों को रंजना खाना खाने के लिये बुलाने आयी और सभी भोजन करने के लिये एकत्र हो गये और फिर दोपहर को सो गये।

दिन ढलते-ढलते अब सन्ध्या के चार बजे हैं और श्री रविन्द्र वकील कचहरी से आये हैं। हाथ-मुंह धोने पर उनकी स्त्री चाय और कुछ नाश्ता आदि ले आयीं। नाश्ता करने के पश्चात् वे बाहर चले गये। थोड़ी देर तक तो वह दरवाज़े ही पर बैठे रहे परन्तु घंटे दो घंटे के पश्चात् वह हवा खाने निकल गये। मार्ग में अपने कई मित्रों के यहाँ भी बात के लिये बैठ गये। इस घूमने में श्री रविन्द्र को देर हो गयी और वे घर पर नौ बजे रात को पहुँचे। वैसे तो श्री रविन्द्र रोज़ाना रात को नौ बजे भोजन करने के बाद घर ही में रहते थे परन्तु जब से सरोजनी देवी आ गई हैं उस समय से वे बाहर ही सोया करते हैं ताकि घर में उनकी मौजूदगी के कारण लड़कियों की स्वतन्त्रता में बाधा न पड़े। चुनांचे अपने नियमा-नुसार आज भी वकील साहब ने इस समय रात के नौ बजे खाना खाया और भोजन करने के पश्चात् बाहर जाने लगे तो स्त्री वकील साहब को संकेत से घर

के दूसरे भाग के सहन में बुला ले गईं। वकील साहब भी स्त्री का संकेत समझ गये थे चुनांचे धीरे से उठे और दूसरे घर के दूसरे सहन में जा पहुँचे। वहाँ सहन में दो तीन कुर्सी पड़ी थीं उन्हीं कुर्सियों पर वकील साहब जाकर बैठ गये। इधर वकील साहब की स्त्री भी लड़कियों को सरोजनी के साथ बात करता हुआ छोड़ कर दूसरे सहन की ओर धीरे से रवाना हो गयीं। जब दूसरे सहन में प्रवेश किया तो दरवाजे की दूसरी कुन्डी धीरे से बन्द कर दी और सहन में वकील साहब के पास जा पहुँची।

ज्योंही स्त्री वकील साहब के पास पहुँची वकील साहब ने कहा, "देवी आज तो तुम बहुत सुन्दर प्रतीत होती हो।" जिसके उत्तर में स्त्री ने कहा, "अरे हटिये भी, आप भी बेकार की बातें करते हैं।" अभी स्त्री अपनी बातें कह ही रही थी कि वकील साहब ने झट स्त्री का हाथ पकड़ कर खींच लिया और उनको अपनी गोद में बैठा लिया। श्रीमती जी भी वकील साहब से लिपट गयीं और कहने लगीं—"आप यह क्या कर रहे हैं? ठन्डी-ठन्डी गर्मी अच्छी नहीं मालूम होती। उधर लड़कियाँ हैं छोड़िये भी।" परन्तु वकील साहब कब सुनने वाले थे उन्होंने अपना होंठ स्त्री के गालों पर चिपका दिया और स्त्री को बड़े ज़ोर से अपने हाथों से दाब लिया।

स्त्री "नहीं—नहीं" कहती जाती थी। वास्तव में यह भी लिपटाती जाती थी और वकील साहब कभी उनका बाँया गाल चूमते थे और कभी दांया। थोड़ी देर तक यही सिलसिला जारी रहा..........थोड़ी देर के बाद जब वकील साहब को शान्ति हुई तब श्रीमती जी वकील साहब की गोदी से निकल कर एक दूसरी कुर्सी पर जा बैठीं और फिर इन दोनों में बात-चीत होने लगी।

स्त्री—हमने आप को एक आवश्यक बात के लिये बुलाया है।

वकील साहब—वह क्या?

स्त्री—यही कि आपने सरोजनी के आने का अर्थ भी समझा है?

व० सा०—हाँ, हाँ क्यों नहीं।

स्त्री—क्या ?

वकील साहब—यही तो, जलवायु के परिवर्तन के लिये।

स्त्री—जी नही आप ने खाक नहीं समझा।

व० सा०—तो फिर क्या ?

स्त्री—ये आई है रंजना की मंगनी श्याम सुन्दर परवेज से करने के लिये।

व० सा०—ऐसा कैसे हो सकता है ? रंजना की मँगनी काशी से आज दस-पन्द्रह वर्ष हुए लग चुकी है। ऐसा कैसे हो सकता है ?

स्त्री—बरहहाल अब मामले को आप ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं।

व०सा०—भई यह प्रश्न ही नहीं पैदा होता है। यह तो साफ़-साफ़ खुली हुई बात है कि रंजना की मंगनी लग चुकी है जिसका तोड़ना असम्भव है।

स्त्री—हमारा कार्य आपको सूचित करना था सो मैंने कर दिया आगे फैसला आपका।

व० सा०—भई देखो मैं शिक्षा को धन से ज्यादा महत्त्व देता हूँ। धन तो आज है कल नहीं परन्तु शिक्षा का सार्टीफिकेट तो एक बार मिल गया वह जा नहीं सकता फिर तुम्ही बताओ काशी और परवेज की तुलना क्या ? कहाँ काशी एम० ए०, एल० एल० बी० और कहाँ परवेज बिलकुल अशिक्षित किसी सुसाइटी में बैठने के योग्य नहीं। यदि कहीं किसी ने कह दिया कि वकील साहब का दामाद अनपढ़ है तो मेरी तो नाक कट जायगी, दूसरे रंजना को कितना दुख होगा कि हमने उसका विवाह एक अनपढ़ से कर दिया। कोई बात भी हो तब तो सोचूँ या यूँ ही। काशी जैसे अच्छे लड़के को अपने हाथों से व्यर्थ खो दूँ। नहीं, नहीं मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता, ऐसा करना तथा सोचना बिलकुल व्यर्थ है।

स्त्री—बरहहाल आप सोचे रहियेगा कि यदि सरोजनी ने आपसे कहा तो क्या कहियेगा।

व० सा०—अरे सब सोचे हुए है। मैं स्त्रियों की बातों में आने वाला नहीं। वह मुझे तो मूर्ख समझती है।

इस बातचीत के हो जाने के पश्चात् पति-पत्नी दोनों एक दूसरे से पृथक हो गये। स्त्री बड़े सहन में आ गयी और पति ने धीरे से अपना रास्ता लिया।

दूसरे दिन वकील साहब के कचहरी जाने का समय हो रहा था और वे खाना खाने के लिये अन्दर गये। खाना तख्त पर लगा दिया गया था और उन्होंने आकर खाना खाना आरम्भ कर दिया। उनकी स्त्री भी पास बैठी रहती थी कि यदि किसी चीज की कमी हो तो मँगवा दे। थोड़ी देर बाद सरोजनी आ गयीं और अपने पिता के पुराने मित्र से इधर-उधर की बातें करने लगीं। वकील साहब तेज़ी से भोजन करने लगे, इसलिए कि कचहरी का समय हो रहा था। इतने में सरोजनी ने अपने ध्येय के लिये इस प्रकार छेड़ा।

सरोजनी—चाचा मेरे यहाँ आने के दो अर्थ हैं—एक तो जलवायु परिवर्तन, दूसरे एक विशेष मतलब से, यदि कहिये तो कहूँ।

वकील साहब—हाँ बेटी कहो पूछने की क्या बात है।

स०—देखिये माता जी तथा पिता जी यह चाहते हैं कि रंजना का विवाह परवेज़ के साथ हो जाय।

व० सा०—ऐसे कैसे हो सकता है? तुम जानती हो कि उसकी मंगनी काशी से लग चुकी है। मंगनी तोड़ने पर दुनियाँ आखिर क्या कहेगी।

स०—चाचा मंगनी कोई विवाह तो है नहीं। मंगनी तो यूँ ही लगा करती है और छूटा करती है..................

व० सा०—नहीं, नहीं बेटी तुम बात को ज़रा समझो। यदि हम मंगनी तोड़ना स्वीकार भी करलें तब भी काशी के घर वाले यह कब चाहेंगे? और यदि मंगनी दो एक दिन की ही हो तो एक बात भी है, कई वर्षों की लगी है, फिर काशी की शिक्षा देखो, अपनी वकालत के स्थान पर उसको बैठाना चाहता हूँ ताकि उसका नाम हो। रंजना की इज़्ज़त में भी चार चाँद लगें।

स०—आप ठीक कहते हैं परन्तु आप ही बताइये यदि काशी आयु भर वकालत करें और वकालत चल भी जाय तब भी वह क्या इतना रुपया कमा सकते हैं जितनी सम्पति, घर और धन परवेज़ को मिला है।

वकील साहब—तुम्हारा कहना भी ठीक है, बेटी किन्तु तुम्हीं बताओ कि यदि हम मंगनी तोड़ने के लिये कहें भी तो जोशी भाई को क्या मुंह दिखायेंगे।

सरोजनी—अच्छा तो एक बात बताइयेगा। यदि काशी के घर वालों को कोई एतराज़ न हो तो आपको कोई एतराज़ तो नहीं होगा ?

व० सा०—हाँ! जब ऐसी सूरत में दस पन्द्रह वर्ष की लगी हुई मंगनी को जोशी भाई स्वयं तोड़ना चाहेंगे तो मुझे एतराज़ करना भी मूर्खता है इसलिए कि वह लड़के वाले हैं। मैं लाख कुछ भी कहूँ, लड़की वाला हूँ। लड़के वाले की राय सर्वश्रेष्ठ होती है।

स०—आप ही देखिये चाचा यह सब कुछ हम लोग रंजना के प्रेम ही में कर रहे हैं। हम लोग रंजना को अपने साथ लेना चाहते हैं। तब ही तो यह सब कुछ निवेदन आपसे किया गया है। खैर अब तो आपने बात साफ़ ही कर दी है। काशी के घर वालों को यदि कोई एतराज़ नहीं होगा तो आप मंगनी तो देंगे।

इतने में वकील साहब भोजन कर चुके और शीघ्रातिशीघ्र शेरवानी इत्यादि पहिन कर कचहरी रवाना हो गये। सरोजनी ने भी दो तीन दिन और प्रतापगढ़ में व्यतीत किये इसके पश्चात मिर्ज़ापुर के लिए चल पड़ीं।

अध्याय बीसवाँ

एक दिल और ये होजूमे सोगवारी हाय ! हाय !
एक दिल और ये सितम सर्मायादारी हाय ! हाय !!

सरोजनी के चले जाने के पश्चात् काशी का पत्र रंजना के नाम फिर आता है । चूँकि अब लखनऊ में परीक्षा आरम्भ होने वाली है इसलिये प्रत्येक विद्यार्थी अपनी-अपनी परीक्षा की तैयारी में लगा हुआ है परन्तु श्री काशी तो एक साथ दो प्रकार की परीक्षा दे रहे हैं। एक तो उनकी शिक्षा की परीक्षा, दूसरे उनके प्रेम की परीक्षा बराबर होती रहती है। उनकी शिक्षा की परीक्षा को तो अभी एक मास बाक़ी है । किन्तु वह अपने प्रेम की परीक्षा का प्रश्न-पत्र लगभग हर सप्ताह में एक पत्र के रूप में रंजना जैसे परीक्षक के पास भेज देते हैं । चुनांचे इस सप्ताह में भी उन्होंने रंजना के नाम पत्र लिखा है जो कि रंजना देवी को सरोजनी के चले जाने के पश्चात् मिला है—

लखनऊ

काशी की दुनियाँ रंजना !

तुम्हारा पत्र मिला । परमात्मा तुम्हें कुशल मंगल रखे । अब आजकल लखनऊ में परीक्षा की फ़सल आ रही है। केवल एक मास परीक्षा के लिये

रह गया है। अतएव यहां का प्रत्येक विद्यार्थी अपनी परीक्षा की तैयारी में लगा हुआ है। हमारा सारा ध्यान सच पूछो तो तुम्हारी याद में लगा रहता है। पढ़ाई में बिलकुल जी नहीं लगता है परन्तु फिर भी लगाना ही पड़ता है क्योंकि तुम्हारी आज्ञा है कि मैं पढ़ने की ओर से असावधान न रहूँ। और फिर मेरे लिए तुम्हारी आज्ञा को न मानना कितना बड़ा धोखा देना होगा।

यहां इस समय गर्मी बहुत है। प्रत्येक समय बिजली के पंखे के नीचे बैठा रहता हूँ। ऐसे में पढ़ाई क्या खाक हो सकती है।

न जाने आजकल प्रतापगढ़ में तुम लोगों की क्या दशा है। हमारा तो विचार है कि वहां पर इतनी ज्यादा गर्मी नहीं पड़ती होगी।

तनवीर, सागर, तारा एवं चन्दा सभी अपनी परीक्षा की तैयारी में लीन हैं और तुम्हें नमस्ते कहते हैं।

तुम्हारा
"काशी"

रंजना ने काशी के इस पत्र का उत्तर तुरन्त दिया जिसमें अत्यन्त ताकीद के साथ यह भी लिखा कि ईश्वर के लिये अपनी पढ़ाई पर काफ़ी ध्यान दीजिये। रंजना का यह पत्र पाते ही काशी पढ़ाई में ऐसा लीन हो गया है कि देखने वाले दंग रह गये।

उधर सरोजनी देवी अपने घर मिर्ज़ापुर पहुँची और देखा कि भाई भोजन इत्यादि बिलकुल त्याग कर बैठा हुआ। दाढ़ी के बाल भी बढ़ गये हैं। सिर के बालों का तो कुछ पूछना ही नहीं बिलकुल बिखरे हुए हैं जैसे वर्षों से बालों को तेल ही प्राप्त नहीं हुआ है और केवल चाय एवं सिग़ार ही भोजन बन कर रह गया है। वस्त्र बिलकुल मैले है। हफ्तों से स्नान को त्याग दिया है। जब बहिन पहुँची और भाई की यह दशा देखी तो तुरन्त भाई को ज़नाने घर के अन्दर बुलवाया और कहने लगी—"यह सब क्या कर रहे हो?"

भाई—तुम कौन होती हो, पूछने वाली?

बहिन—क्यों नहीं, हमको अधिकार ही नहीं है? अरे उठो, चलो नहाओ धोओ, और भोजन करो। मैं प्रतापगढ़ गई थी, सब का मन बिलकुल ठीक है। यदि

ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारा विवाह रंजना ही के साथ होगा। इस पर भाई ने कहा—"परन्तु तुम्हें मालूम है कि हमने विवाह के लिये केवल दो महीना दिया था जिसका एक मास बीत गया है और दूसरे मास का प्रथम सप्ताह चल रहा हैं।"

इस पर बहिन कहती है—"हमको सब मालूम है। तुम इसकी चिन्ता मत करो हम पिताजी को दो एक दिन में भेजे देते हैं। भगवान चाहेगा तो तुम्हारे विवाह की तिथि निर्धारित करके आयेंगे। तुम केवल यह समझ लो कि केवल विवाहकी तिथि के निर्धारित होने की देर है।"

खैर बहिन की बातों का प्रभाव भाई पर हुआ और उन्होंने उठ कर भोजन किया। इतने दिनों में यह प्रथम दिन था कि उन्होंने पूरे तौर से भोजन किया और भोजन करने के पश्चात् फिर बाहर चले गये। उनको केवल यही चिन्ता है कि यदि विवाह इस मास में नहीं हुआ तो फिर कभी न होगा। इसलिये कि काशी परीक्षा देकर तुरन्त प्रतापगढ़ चला जायगा। इसलिये परवेज की शीघ्र विवाह के सिलसिले में उचित बात थी। भाई को सुधारने के पश्चात् बहिन स्वयं भोजन आदि करती है और फिर पिता से जा कर मिलती है। पिता से सारी बात जाकर कही और फिर कुछ बातें अपने पिता को सिखाईं। पिता ने भी बेटी की राजनीति पसन्द की और उसे हर दृष्टिकोण से देखा। कुबेरनाथ ने पुत्री की समझाई हुई बात पर चलने का वचन दिया। उनको इधर दो तीन दिन बहुत आवश्यक कार्य था इसलिये वह नहीं जा सके और महीने के दूसरे सप्ताह के आरम्भ में उन्होंने प्रतापगढ़ अवश्य जाने का इरादा कर लिया।

होते-होते दो तीन दिन और भी बीत गये और कुबेरनाथ प्रातःकाल उठे। स्नान करने के पश्चात् वस्त्र बदले और उसके बाद अपनी कार में बैठकर सीधे प्रतापगढ़ रवाना हो गये। प्रतापगढ़ पहुँचते-पहुँचते दिन के बारह बजे। सूर्यनारायण ठीक सिर पर है और सख्त गर्मी पड़ रही है। बरहहाल चलते-चलते अब उनकी मोटर श्री रविन्द्र के घर पर पहुँची। चूँकि आज रविवार का दिन है इसलिये श्री रविन्द्र तो कचहरी नहीं गये थे अलबत्ता अपने कमरे में बिस्तर पर लेटे-लेटे समाचार-पत्र पढ़ रहे थे कि इतने में कमरे में प्रवेश करके कोई कहता है, "जय राम जी की।"

श्री रविन्द्र ने जो इनको अचानक देखा तो आश्चर्य में पड़ गये कि न चिट्ठी न पत्र अचानक भाई कुबेर कैसे आगये। बरहहाल उनको कुर्सी पर बैठाया और नौकर को आवाज़ दी—"जलपान लाओ।" नौकर शीघ्र घर में से शर्बत लाया परन्तु इसके शर्बत लाने का कारण रंजना तथा उसकी माता जी दोनों को मालूम हो गया कि श्री कुबेरनाथ का आगमन हुआ है।

सुन्दरी देवी तो उनके आने का अर्थ समझ गईं किन्तु रंजना के लिये यह बात बिलकुल पहेली बन गई कि आखिर मामला क्या है कि अभी सरोजनी आकर रही और चली गईं और अब उसके बाद श्री कुबेरनाथ जी आये हैं।

श्री कुबेर ने शर्बत आदि पिया और फिर श्री रविन्द्र से इधर-उधर की बातें कीं। उसके बाद उन्होंने कहा कि श्री रविन्द्र मैं आपके पास उपस्थित इसलिये हुआ हूँ कि आप ने सरोजनी को यह वचन दिया है कि यदि परवेज़ एवं रंजना का विवाह हो जाने पर काशी के घर वालों को कोई एतराज़ न होगा तो आपको भी इतराज न होगा।

श्री रविन्द्र ने कहा—"हाँ मैंने कहा तो था (परन्तु दिल में सोचते जाते थे कि यह बात तो हमने केवल टालने ने लिये कही थी)। खैर कोई बात नहीं। यद्यपि जोशी भाई से हमने अपनी तथा सरोजनी की बातचीत का कोई ज़िक्र नहीं किया है किन्तु फिर भी वह मानेंगे नहीं।" फिर श्री कुबेरनाथ ने कहा, "तो मैं इसीलिये प्रस्तुत हुआ हूँ कि क्यों न हम और आप इसी समय चलकर जोशी भाई से मिलें और इस मामले को इसी समय तै करलें।"

श्री रविन्द्र—किन्तु अभी जल्दी क्या है ?

श्री कुबेर—नहीं भाई जो बात जितनी शीघ्र निर्धारित हो जाये उतना ही अच्छा है। कहते हुए तुरन्त कुर्सी से उठ गये और श्री जोशी नाथ के भवन पर श्री रविन्द्र को लेकर चल पड़े। श्री रविन्द्र भी बेचारे क्या करते। पूँजीपति की शर्मा हजूरी में साथ-साथ चले गये।

श्री जोशी नाथ एक योग्य जज थे। बड़े सुलझे हुए आदमी हैं। गर्मी की तेज़ी से व्याकुल होकर आजकल मई के मास में विश्राम के लिये अवकाश लेकर प्रतापगढ़ में थोड़े दिन के लिए आये हुए हैं। और इस समय दोपहर का

भोजन करके विश्राम करने के लिये लेटे ही थे कि कुछ देर आराम करलें किन्तु नींद नहीं आई और गर्मी की तीव्रता से व्याकुल होकर कमरे में हाथ मुँह धो ही रहे थे कि श्री रविन्द्र तथा श्री कुवेर दोनों ने कमरे में "नमस्ते" करते हुए प्रवेश किया। श्री कुवेर साहब यह देखकर कि जज साहब उपस्थित हैं दिल ही दिल में बहुत प्रसन्न हुए।

जज साहब इन दोनों को देखते ही खुश हो गये। तुरन्त इन लोगों के प्रणाम का उत्तर दिया और कहा, "आप लोग थोड़ी देर पधारिये तब तक मैं हाथ–मुँह धो लेता हूँ। चुनांचे ये दोनों साहब एक-एक कुर्सी पर बैठ गए। और नौकर शीघ्र पान लाया। दोनों ने पान खाया और कुछ मिनट के अन्तर्गत जज साहब ने अपना मुँह-हाथ धोना समाप्त कर दिया और वह भी आकर कुर्सी पर बैठ गये। जब कुछ बातें इधर-उधर की हो चुकीं तो उसके पश्चात् श्री कुवेर ने अपने विशेष तात्पर्य की बात आरम्भ कर दी।

कुवेरनाथ—(जज साहब को अपनी ओर मुखातिब करते हुए) देखिये जोशी भाई मुझे यह मालूम हुआ है कि काशी तथा रंजना की मंगनी आज से दस पन्द्रह वर्ष की पुरानी है फिर भी मैं यह चाहता हूं कि यदि मेरे परवेज से रंजना का विवाह हो जाये तो क्या बुरा है। इस बात पर भाई रविन्द्र तथा उनकी स्त्री को कोई इतराज़ नहीं है। अब केवल आप से पूछने के लिए उपस्थित हुए हैं।

जज साहब—(श्री कुवेरनाथ के ये शब्द सुन कर चुप रहे और थोड़ी देर सोचने के बाद श्री कुवेर से कहते हैं) भई देखिये ! काशी तथा परवेज़ दोनों लड़के अपने हैं। रहा लड़की का मामला वह श्री रविन्द्र को है। यदि उनको इस बात पर कोई इतराज नहीं है तो मुझे इतराज़ करना बिलकुल व्यर्थ है। इसलिए कि लड़की तो उनकी है, ये जिसके साथ चाहें विवाह कर दें। मैं क्या कह सकता हूँ।

श्री कुवेरनाथ—(रविन्द्र से) लीजिए. सुन लिया आपने। भाई जोशी नाथ का इस सगाई पर कोई इतराज़ नहीं है।

श्री कुवेर का यह वाक्य सुन कर श्री रविन्द्र ने मौन साध लिया और

फिर श्री कुबेर ने दो चार बातें और यहाँ-वहाँ की कीं और फिर उठ कर श्री रविन्द्र को साथ लिए हुए उनके घर पर चले आये और यहाँ आकर कहा— "भई विवाह शीघ्र हो जाना चाहिए। अतः मैं १७ मई की तिथि निर्धारित करता हूँ।" इस पर रविन्द्र ने कहा—"इतनी शीघ्रता क्या है, विवाह होना है देखा जायेगा।"

कुबेरनाथ—तुम रविन्द्र विचित्र आदमी हो। जब हम लोग युवक थे तो चाहते थे कि कल के बजाय विवाह आज ही हो जाय तो इसी प्रकार अपने-अपने बच्चों की हार्दिक उत्कंठाओं का भी विचार रखना चाहिए और हम लोगों को उनके विवाह में देर नहीं करनी चाहिए।

इसी प्रकार की कुछ और बातें करते रहे। बहरहाल श्री कुबेर ने १७ मई विवाह के लिए पक्की कर ली और फिर कमरे के बाहर निकले। इस समय सन्ध्या के चार बज गए थे। मोटर में बैठे, एक बार हार्न बजाया और कार श्री रविन्द्र साहब के घर से धीरे-धीरे चल कर तेज़ी से मिर्ज़ापुर रवाना हो गयी। श्री कुबेर अपनी सफलता पर दिल ही दिल में बहुत प्रसन्न थे और मोटर को बहुत तेज गति के साथ चलाते जा रहे थे। श्री रविन्द्र धीरे-धीरे कुछ कुम्हलाई हुई सूरत बनाए हुए अपने ज़नाने मकान में गए और अपनी स्त्री से सारा माज़रा कह दिया—"अब करता क्या?" बात पक्की हो चुकी है अब विवाह चूँकि शीघ्र होने वाला है अतः कल ही से घर की सफ़ाई आदि आरम्भ हो जाती है।

मशवेरे हैं मेरे मिटाने के !
होसले देखना ज़माने के !!

सरोजनी देवी का आना और रहकर चला जाना, श्री कुबेर का आना, काशी के घर जाना और काशी के पिता से मिलना यह सब बातें रंजना के लिए पहेली बन रही थीं। लेकिन जब दूसरे दिन घर की सफ़ाई, सजावट आदि आरम्भ हो गई तब उसको हर चीज़ साफ मालूम होने लगी कि यह सारा फन्दा उसकी मृत्यु के लिए तैयार किया गया था। जिस समय उस पर यह प्रकट हो ही गया कि उसका विवाह परवेज़ से हो चुका है और कुछ ही

दिनों के पश्चात् वह एक पूंजीपति के अधिकार में दे दी जायेगी तो उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसको कोई सर्प सूंघ गया है और वह उसके विष के प्रभाव से दिन-दिन पीली होती जा रही है। बिलकुल उदास तथा दुखी रहने लगी।

'तनहाई हो तो रो लेना तनहाई न हो तो घबराना !'

अपनी ऐसी दशा को आखिर वह किससे बताए उसकी कौन सुनेगा। माता-पिता ने अपना कर्त्तव्य अनोखे ढंङ्ग से अदा कर दिया। क्या करे। उसके हृदय में अग्नि उठती है। अपने भाग्य पर रोना आता है। क्या करे।

चुनांचे उसके लिए यह आवश्यक था कि अपने जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण और पहिली घटना की खबर वह काशी को करे क्योंकि वह काशी को अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ साथी मान चुकी थी और आज रात को उसने अश्रुपूर्ण नेत्रों से एक पत्र काशी के नाम लिखा। यद्यपि यह जानती है कि अब उसकी परीक्षा इस सप्ताह में आरम्भ हो जाएगी। किन्तु करना क्या है। वह सोचती है कि मेरे दुख को उसके अतिरिक्त कौन सुनेगा। वही अब मेरा एक मात्र सहारा है।

प्रतापगढ़

मेरे जीवन के स्वामी काशी !

ईश्वर आपको कुशलपूर्वक रखे। आपकी कुशलता का समाचार सुनकर हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। न जाने हमारे इस पत्र से आपको कितना दुःख होगा।

काशी, विश्वास कीजिए मेरा जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो गया। मुझे एक पूंजीपति अपने लिए ले जा रहा है। मैं क्या करूं ? मेरी जीभ पर ताला लगा हुआ है। मैं किसको अपना दुखड़ा सुनाऊं ? एक पूंजीपति मेरे जीवन पर डाका डाल रहा है। वह हैं परवेज़, जो मिर्ज़ापुर के एक पूंजीपति के एक पुत्र हैं। आपके साथ मेरी 'मंगनी लगी थी वह तोड़ दी गई है। काशी, आपका प्रेम हृदय में सदा रहेगा कोई उसे छीन नहीं सकता। काशी, आपका प्रेम मेरे दिल में मरते दम तक रहेगा। मेरा विवाह परवेज़ के साथ

१७ मई का तय हो गया है। घर में सब सामान आ रहा है। काशी.........
प्यारे काशी..................मेरे काशी..................मुझे बचाइये..................मैं
नर्क में झोंकी जा रही हूँ..............मुझे नर्क की अग्नि से बचाइये............काशी
मुझे बचाइये..................मेरे हृदय में उथल-पुथल मची हुई है। मेरे मस्तिष्क
से शान्ति चली गई। काशी मुझे बचाइये............काशी मुझे बचाइये.........
वरना मैं मर जाऊँगी। काशी मेरी मृत्यु सिर पर है। काशी मुझे बचाइये
वरना मैं मर जाऊँगी............काशी प्यारे काशी............मेरे काशी.........
आपको हमारी कसम बचाइये.........प्यारे काशी बचाइये, मुझे.........बचाइये।

मेरी किश्ती की नाकामी तो देखो !
किनारे आके डूबी जारही है !!

आपकी अभागिनी
"रंजना"

काशी की परीक्षा के केवल कुछ ही दिन रह गये हैं। वह परीक्षा की तैयारी में लीन है और बुरी तरह लगा हुआ है। दिन रात की पढ़ाई से उसका दिमाग़ थका हुआ रहता है कि इसी समय तीन दिन के पश्चात् रंजना का यह पत्र आज दोपहर में काशी को मिलता है। वह इस पत्र को पढ़ता जाता है और उसके नेत्रों से आँसू बहते जाते हैं। आखिर क्या करे ? इधर परीक्षा उधर रंजना की व्याकुलता, अपने पिता का अलग डर है। करे तो क्या करे ? तीन सौ मील की दूरी पर है। आखिर क्या करे ? वह तुरन्त बिस्तर पर गिर जाता है। आँखों से आँसू जोरों से निकलना प्रारम्भ हो जाते हैं। श्वास तेज गति से चलने लगती है। हिचकियाँ बँध जाती हैं आँखें लाल हो जाती हैं। वह किससे अपना दुख कहे। उसका साथी सहानुभूति करने वाला कौन है ? घर पर माता-पिता से वह सदा डरता है। वह डर आज भी उसके लिए रुकावट बन रहा है। क्या बात हो गई कि मंगनी तोड़ दी गई और परवेज से कैसे और क्यों विवाह हो रहा है ?

लगातार एक घन्टे तक पड़ा रोता रहा और उसके पश्चात् उठकर मुँह धोया और उसी दुखित सूरत में वह आनन्द होस्टल से होकर तनवीर के

कमरे में पहुँचा। वहाँ तनवीर भी पढ़ाई में लीन है क्योंकि उसकी परीक्षा आरम्भ हो गई है और उसके कई परचे हो चुके हैं। उसके दो एक परचे अभी होने को बाकी हैं। वह अपना कमरा बन्द किये हुए अपने आपको लूह से बचा कर बैठा पढ़ रहा है कि इतने में दरवाज़े पर खटखट की आवाज़ होती है।

तनवीर कमरे का दरवाजा खोलता है। उसने काशी की इतनी दुखित सूरत कभी नहीं देखी थी। काशी ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। तनवीर फिर कमरे का दरवाज़ा बन्द कर देता है। काशी तनवीर से लिपट कर रोना आरम्भ कर देता है। तनवीर पूछता जाता है—"काशी, क्या बात है ? कुछ कहो भी·······क्या है ?" जब काशी तनवीर से लिपट खूब रो लेता है तब उसके पश्चात् तनवीर उसका मुँह धुलाता है और तब काशी रंजना का पत्र तनवीर को दे देता है। तनवीर भी उस पत्र को पढ़कर हक्का-बक्का रह जाता है। उसके मुँह से अचानक आवाज़ निकलती है—"अरे यह क्या हुआ ? ऐसा कभी नहीं हो सकता।" चुनांचे तनवीर तुरन्त साइकिल अपने कमरे से बाहर········ ··· निकालता है और उस पर काशी को बैठा कर तुरन्त लाल भवन पहुँच जाता है। वहाँ पर श्रीमती सागर तथा सागर के सामने उस पत्र को सोच-विचार के लिये रख देता है।

पहिले तो सब लोग काशी को ढाढ़स व धीरज देते हैं और फिर इस मामले को सुलझाने के लिए भाँति भाँति का सोच विचार करते हैं परन्तु श्रीमती सागर ने जो कुछ कहा वह सबसे उचित राय प्रतीत हुई और उनकी राय से सब सहमत हुए। उन्होंने कहा—"देखो काशी एक मनुष्य का हृदय तथा मस्तिष्क आज़ाद है। संसार का कोई भी बल उसे आधीन नहीं कर सकता तो फिर पूँजीपति का रुपया क्या चीज़ है। रंजना का हृदय तथा मस्तिष्क दोनों तुम्हारी ओर लगा हुआ है तो फिर परवेज़ को सफलता कभी भी सम्भव नहीं। अब रहा यह प्रश्न कि परवेज़ तथा उसके पिता को इस हरकत से कैसे रोका जाय तो इसका सर्वश्रेष्ठ ढंग यह है कि अब तक तुम्हारे पास रंजना की जितनी चिट्ठियाँ आई हैं और तुमने जो रंजना को चिट्ठियाँ लिखी हैं उनकी नक़लें एक लिफ़ाफ़े में एकत्र करलो और उसी के सहित एक गुमनाम पत्र श्री कुबेरनाथ

को लिखा जाय कि रंजना के साथ तुम्हारी केवल मँगनी ही नहीं है बल्कि तुम्हें उससे और उसको तुमसे प्रेम भी है। इसलिये आप अपने इरादे से रुक जाइये। यदि श्री कुबेर अपने इरादे से बाज़ आ जायें तो ठीक है वरना ग्यारह मई को तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो रही है और तुम तुरन्त १२ मई को प्रतापगढ़ पहुँच जाओ और रात के समय तुम तथा रंजना दोनों प्रतापगढ़ से यहाँ लखनऊ चले आओ। हम लोग यहाँ पर सब प्रबन्ध ठीक रखेंगे। बस तुरन्त तुम्हारा सिन्दूर बन्धन रंजना से कर दिया जायेगा। बाद में जो होगा ईश्वर मालिक है। इसलिये कि हम लोगों की कोई बुरी नीयत तो है नहीं।''

श्रीमती सागर की राय लोगों को इतनी उचित और नियमानुसार प्रतीत हुई की सभी इस राय से सहमत हुए। चुनांचे तनवीर ने काशी के कमरे की कुंजी ली और चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने उसका बक्स खोला और उसमें से रंजना की सब चिट्ठियाँ निकालीं और साथ ही काशी की रद्दी नक़लें निकालीं और तुरन्त ही उन सब चिट्ठियों को लेकर लाल भवन में आ पहुँचा और सब पत्रों को पहिले एक लिफ़ाफ़े में रखा गया और उसके पश्चात् श्री कुबेर साहब के नाम एक गुमनाम चिट्ठी लिखी जाने लगी ताकि वह अपने इरादे से बाज़ आ जायें तो ठीक है।

लखनऊ

पूज्य श्री कुबेरनाथ

आप एक वृद्ध मनुष्य हैं यह ठीक है। इसलिये आपका यह फ़र्ज़ होना चाहिये कि आप हर एक चीज़ को गहरी दृष्टि से देखें। आशा है कि आप इस सिलसिले में भी वास्तविकता को हाथ से नहीं जाने देंगे।

रंजना और काशी को मंगनी आज से दस पन्द्रह साल पूर्व ही हो चुकी है। यदि यह नाता केवल मंगनी ही तक सीमित रहता तो कोई बात नहीं थी परन्तु अब यह मंगनी उन दोनों के प्रेम में भी परिवर्तित हो चुकी है। जिसको सिद्ध करने के लिए रंजना देवी के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी और काशी की चिट्ठी की रद्दी नक़लें प्रस्तुत की जा रही हैं।

आपका यह सोच लेना कि रंजना आपकी बहू बनेगी और रंजना तथा परवेज़ के सम्बन्ध ठीक रहेंगे एक पर्वताकार त्रुटि है जिससे यदि आप अपने

को दूर रखेंगे तो अच्छा है।

यह पत्र आपको केवल इस बात के लिये लिखा जा रहा है कि आप पूरे तौर से इस बात को समझ लीजिये कि रंजना काशी ही की होकर इस दुनियाँ में रहेगी। आप अपनी पूँजी के बल से उसके हृदय तथा मस्तिष्क को कभी नहीं खरीद सकते हैं।

आखिर में आपसे फिर निवेदन किया जाता है कि आप अपने इरादे को बदल दीजियेगा ताकि बाद में किसी प्रकार की खराबी उत्पन्न न हो। वरना आप तो जानते ही हैं कि प्रेम अन्धा होता है।

शत्रु से ज्यादा निगहबान मजबूत है। आप शायद यह भी अच्छी भाँति जानते होंगे कि संसार में कोई बल किसी मनुष्य के हृदय तथा मस्तिष्क को बलपूर्वक अथवा ज़बरदस्ती तौर पर आधीन नहीं कर सकता है। आपका यह तरीक़ा तो एक मनुष्य पर डाका डालना है जिसके फल खराब होंगे। कृपया अपने इरादे को बदल डालिये।

आपका

"...................................."

इस पत्र को श्रीमती सागर बोलती गयीं और तनवीर लिखता ही जाता था। सागर तथा काशी चुपचाप साथ बैठे हुए थे। अलबत्ता बीच-बीच में श्री सागर सुधार अवश्य करते जाते थे। जब यह पत्र पूरा हो गया तो एक लिफ़ाफ़े में काशी और रंजना की चिट्ठी की नक़लें रखीं और यह गुमनाम पत्र बन्द कर दिये गए। यह तय हुआ अभी चार नहीं बजे हैं इसलिए तनवीर तुरन्त साइकिल से डाकखाना चले जायें और इस पत्र की रजिस्ट्री कर आयें। अर्थात् तनवीर जल्दी से डाकखाना गया और रजिस्ट्री करके वापस आ गया। इसके पश्चात् सागर ने चाय मंगाई और सबने चाय पी और इसी मामले में और ज्यादा सोच विचार होता रहा। इसके पश्चात् अब सन्ध्या होने लगी। सबकी परीक्षा आरम्भ हो गई थी। श्रीमती सागर को भी काफ़ी पढ़ना है। अर्थात् अब सभी लाल भवन से उठकर अपने-अपने निवास स्थान पर चले गये।

अध्याय इक्कीसवाँ

मुझे ये फ़िक्र सबकी प्यास अपनी प्यास है साक़ी !
तुझे ये ग़म कि ख़ाली है मेरा पैमाना बरसों से !!

जब कुबेरनाथ ने मंगनी तय कर ली और अपने घर पहुँचे तो उतरते साथ ही उन्होंने तुरन्त घर वालों को सूचित किया कि परवेज़ का विवाह रंजना के साथ होना निर्धारित हो गया है। यह खबर क्या थी कि खुश-खबरी का तार थी। बिजली की भाँति कानों कान पहुँच गई और घर का हर आदमी प्रसन्न प्रतीत होने लगा। कोई कुछ कहने लगा और कोई कुछ और झटपट प्रबन्ध आरम्भ हो गये। घरों की सफ़ाई, गल्ले का क्रय, वस्त्र का क्रय आदि के वातावरण ऐसे अवसर पर एक पूंजीपति के घर पर जो कुछ आशा रख सकते हैं प्रबन्ध होने लगा।

बसन्त बाबू ने तुरन्त दौड़ कर परवेज़ के पास जो कमरे में पड़ा हुआ सो रहा था उसको जगाया और उसका मुँह चूम कर कहने लगे, "बाबू परवेज़ ! तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें मिल गई। वाह रे भाग्य ! तुम्हारा झंडा गढ़ गया और काशी का झंडा उखड़ गया। तुम्हारी बहिन का स्वामी तुम्हारी इस विजय पर बधाई देता है। १७ मई को तुम्हारी बारात चलेगी।"

अन्धा क्या मांगे दो आँख। जिस समय यह खबर परवेज़ ने सुनी वह बहिन के पति से लिपट गया और बसन्त बाबू को भी उसके लिपट जाने का आनन्द आ गया। अनुमानतः ऐसे ही अवसर के लिए कहा गया होगा—'सारो खुदाई एक तरफ, जोरु का भाई एक तरफ।'

अब दिन रात श्री कुबेर साहब के घर वालों का कार्य केवल एक ही था और वह यह कि विवाह का प्रबन्ध खूब उच्च कोटि का हो ताकि श्री रविन्द्र साहब बरात देख कर दंग रह जायें। इन्हीं सब सिलसिलों में कुछ दिन बीत गये कि कुबेरनाथ के नाम एक रजिस्ट्री चिट्ठी आयी। श्री कुबेर ने इस लिफ़ाफ़े को खोला और बहुत ध्यान से हर पत्र को पढ़ गये। कुछ देर तक तो वह सोच में पड़ गये और उसके पश्चात् तुरन्त वह उस पत्र को लेकर अपने जनाने घर में चले गये और अपनी पत्नी को यह पत्र दे दिया कि परवेज़ को दे देना। परवेज़ के पास भी सब चिट्ठियाँ पहुँचा दी गयीं। परवेज़ साहब ने हर चिट्ठी को ध्यान पूर्वक पढ़ा और जब वह पढ़ चुके और अब फिर जब उनका विचार लिया जाता है तो अपने इरादे में वह वैसे ही अटल हैं जैसे कि पहिले थे बल्कि अब अपने इरादे में पहिले से ज्यादा अटल हैं। पिता को जब इस बात की खबर हुई कि परवेज़ पहिले से ज्यादा अटल हैं, तो कह दिया—"परवेज़ की मर्ज़ी, जिस बात में परवेज़ खुश है उसमें हम खुश।"

एक दो रोज बाद अपने घर वालों से यह कह कर कि बनारस अपनी स्त्री के लिये कुछ खास सामान खरीदने जा रहा है मिर्ज़ापुर से रेल द्वारा लखनऊ रवाना हो गये।

इस समय रात्रि के ग्यारह साढ़े ग्यारह बज रहे थे। लखनऊ विश्वविद्यालय का शानदार ओल्ड होस्टल का गेट बिलकुल उदासी की दशा में था। केवल एक बहुत बड़ा बल्ब जल रहा था। उसका प्रकाश बहुत दूर-दूर से दिखाई देता था। परीक्षा का समय होने के कारण पूरे विश्वविद्यालय के लड़के पढ़ने में लीन थे या किसी कमरे से केवल चाय पीने की आवाज़ आती थी। वरना हर स्थान पर खामोशी थी। रात भी अन्धेरी थी इसलिए सरो और शमशाद के वृक्ष भी अन्धेरी रात में कुछ भयानक सी शक्ल में दिखाई दे रहे थे। जिस कमरे से

चाय पीने की आवाज आती थी, समझ लीजिए कि उस कमरे का पढ़ने वाला थक चुका था। और वह अपने मस्तिष्क को पढ़ने के लिए फिर तैयार कर रहा था। विश्वविद्यालय का प्रत्येक होस्टल मानो मौन साधे हुए था।

यह समय भी अजीब होता है। कोई लड़का केवल पुस्तक ही पढ़ते-पढ़ते सो गया है और पुस्तक उसके हाथ में पड़ी हुई है। इतने में एक तांगा ओल्ड होस्टल के गेट के सामने आकर रुका। और उस पर से एक साहब उतरे और होस्टल के गेट में प्रवेश किया। गेट के दरवान ने तुरन्त एक रजिस्टर उनके सामने बढ़ा दिया और बोला कि उस पर अपना नाम, कमरे का नम्बर और आने का समय लिखिए। आने वाला आदमी दरवान के इस वाक्य पर मुस्करा उठा और कहा--"मैं यहाँ का छात्र नहीं हूँ। बल्कि एक महाशय से मिलने आया हूँ।"

दरवान---किन महाशय से ?

उन्होंने नाम बताया और दरवान उन महाशय को मिलने वाले के कमरे तक पहुँचा कर गेट पर चला आया।

काशी की परीक्षा को केवल दो-तीन दिन रह गये थे। गो कि दिल उसका दुखित है परन्तु क्या करे प्रमाण-पत्र (सनद) ही पर तो निर्भर था। वकालत की सनद उसे प्राप्त करना आवश्यक था। वह जितना भी परिश्रम कर सकता था कर रहा है। परीक्षा का डर तथा माता-पिता का डर दोनों उसके सिर पर बुरी तरह सवार है। अपना परिश्रम करने में कोई भी उपाय छोड़ना नहीं चाहता। चुनांचे अभी-अभी वह बिलकुल थक चुका था और उसने चाय पी है। बाईं ओर कुर्सी पर बिजली का पंखा चल रहा है और वह बीच कुर्सी पर बैठा हाथ में पुस्तक लिये हुए तेजी से अध्ययन कर रहा है और कागज पर पेंसिल से लिखता भी जाता है कि इतने में खटखट की आवाज हुई। इस आवाज को सुनते ही काशी ने दरवाजे की ओर मुँह करके कहा, "कौन साहब हैं, अन्दर पधारिये।" एक साहब ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया और उनको देखते ही काशी कह उठा---

काशी—अरे परवेज़ तुम ! कहो कैसे चले आये ?

परवेज़—एक काम से आया हूँ।

का०—अच्छा तो बैठो।

प०—नहीं बैठूंगा, यात्रा में बैठे-बैठे थक गया हूँ; केवल टहल कर बात-चीत करूँगा।

का०—अच्छा ठहरो, मैं नौकर से चाय मंगाता हूँ।

प०—नहीं मैंने चाय स्टेशन पर पी ली है (कह कर सिगरेट जलायी)।

का०—परवेज़ तुम्हारा सामान कहाँ है ? मैं सबको कमरे के अन्दर रखवाऊँ।

प०—नहीं, सामान मेरे साथ नहीं है। इसलिये मैं एक घन्टे बाद देहली एक्सप्रेस से मिर्ज़ापुर को रवाना हो जाऊँगा।

का०—अरे भाई ठहरो, इतनी जल्दी क्या है ?

प०—नहीं ठहर सकता हूँ, मैं जरा बहुत आवश्यक कार्य से आया हूँ। फिर लौट आऊँगा।

का०—भाई लौट जाना, जल्दी क्या है ?

प०—अच्छा हमारा कार्य सुनो।

का०—सुनाओ।

प०—कार्य यह है कि तुम एक काग़ज पर यह लिख कर दे दो कि तुम्हें अब रंजना से बिलकुल प्रेम नहीं है और तुम उससे विवाह नहीं करोगे।

का०—यह कैसे लिख कर दे दूँ ?

प०—चूँकि मैं कह रहा हूँ।

का०—परन्तु मुझे रंजना से प्रेम ही नहीं है मैं तो उसी से विवाह भी करूँगा और मेरी उसकी मंगनी भी बहुत पुरानी लगी हुई है।

प०—जहाँ तक मंगनी का प्रश्न है मंगनी पुरानी है और पुरानी लकीर को पीटने में कोई लाभ नहीं है। अब रहा प्रेम का प्रश्न तो मुझे भी

रंजना से प्रेम है और जहां तक कि विवाह का सम्बन्ध है तो मैंने इसको भी ठीक कर लिया है कि मैं यदि विवाह करूंगा तो रंजना ही से करूंगा।

काशी—तुम्हारा जो कुछ भी विचार हो मुझे उससे कोई भी सम्बन्ध नहीं है किन्तु जहां मेरा सम्बन्ध है मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि रंजना हमारी है और केवल मुझसे ही विवाह करेगी किसी और से नहीं।

परवेज—यदि तुम्हारा यह विचार है तो मैं सिवाय इसके क्या कह सकता हूं कि यह असम्भव है।

का०—परन्तु बिलकुल यही राय हम तुम्हारे विचार के लिए भी कह सकते हैं।

प०—तुम्हारी इच्छा। परन्तु मैं तुम्हें इतना बताना आवश्यक समझता हूं कि इस रणभूमि में तुम्हारी पराजय ही पराजय है। तुम्हारे सिर पर विजय की पगड़ी नहीं बँध सकती है।

का०—यह सब कुछ तो अब इस लड़ाई का फल ही बता सकता है मैं क्या बताऊं।

प०—काशी समझ लो तुम मेरे रास्ते में रोड़ा अटका रहे हो।

का०—मैंने तुमको हर बात भली भांति सोचने विचारने के पश्चात् बताई है।

प०—देखो काशी तुम रंजना का ख्याल छोड़ दो, इसके बदले में जितना रुपया चाहो ले लो एक हज़ार, दो हज़ार, दस हज़ार और जितना रुपया तुम चाहो मैं देने को तैयार हूं। कर लो यह सौदा तुम्हारी वकालत से अच्छा सिद्ध होगा। ऐसा अवसर बार-बार नहीं आता।

का०—बड़े अचम्भे की बात है कि तुमने रंजना की कीमत केवल एक हज़ार से लेकर दस हज़ार तक की समझी है। मैं तुमसे कहता हूं कि तुम चाहो तो केवल रंजना के नाम पर हमें बन्दूक का निशाना बना सकते हो।

प०—काशी इस समय केवल भावना के अनुसार इस बात पर ध्यान

दे रहे हो। लो तुम को सोलह सहस्त्र रुपये दे रहे हैं। ले लो और रंजना के ख्यालों से हट जाओ।

काशी—इस समय हम तुम्हें एक उचित राय दें।

परवेज़—वह क्या ?

का०—यदि तुम अपने इन सोलह हज़ार रुपये को लेकर बाज़ार चले जाओ और वहाँ पर बाटा के जूते बहुत अच्छे मिलते हैं ले लो। भगवान चाहेगा तो कुछ ही दिनों में यह सोलह हज़ार रुपया सोलह लाख हो जावेगा।

प०—खैर यह फैसला कि बाटा के जूते में ज्यादा जोर है या चांदी के जूते में यह तो तुम्हें आने वाला समय ही बतायेगा किन्तु मैं तुमसे कहे देता हूँ कि रंजना हमारी होकर रहेगी।

परवेज़ यह बात कहकर कमरे के बाहर चला गया और फिर होस्टल के गेट से निकल कर तांगे पर बैठ गया और सीधा स्टेशन पहुँचा। थोड़ी देर के पश्चात् देहली एक्सप्रेस आई और वह उसमें बैठकर मिर्ज़ापुर के लिये रवाना हो गया।

परन्तु काशी वहीं अपनी कुर्सी पर बैठा रह गया और अब उसका जी पढ़ने से उचाट हो गया और वह उसने अपनी पुस्तक बन्द करदी और परवेज की हिम्मत पर विचार करने लगा। फिर उठकर कमरे ही में इधर से उधर टहलने लगा। अब रात्रि के साढ़े बारह बजने को आये। वह सोना चाहता है किन्तु नींद कहाँ, नींद तो उससे कोसों दूर भाग रही थी। कोर्स की किताबों को पढ़ने के लिये जो नहीं चाहता। अचानक अपनी दूसरी मेज़ पर देखता है तो मासिक पत्रिका "कुसुम" की पुरानी कापी पड़ी है। उसको लेकर पढ़ने लगता है। कुछ अजीब बात कि उसने जब उस पत्रिका में कुछ कविता की पंक्तियों को पढ़ा तो उसके नेत्रों से आँसुओं की वर्षा शुरू हो गई। वे ये पंक्तियाँ हैं :—

ये अहले हवस हर गाम प अपनी शान बदलते रहते हैं !
मौसम के मुताबिक़ इशरत के सामान बदलते रहते हैं !!

इन्साफ़ की गर्दन पर खंजर चलता है दौलत मन्दों का !
बेदर्द जमाने के तीवर हर आन बदलते रहते हैं !!

मुखतार कहीं मजबूर कहीं जरदार कहीं नादार कहीं !
इस तरह किताबे हस्ती के उनवान बदलते रहते हैं !!

ऐ दुनिया वालो झूठ नहीं यह दुनिया है इस दुनिया में !
चाँदी के चमकते सिक्कों पर ईमान बदलते रहते हैं !!

अन्त में रोते-रोते काशी सो गया और ऐसी गहरी नींद में सो गया कि रात्रि के अन्तिम भाग में उसे चादर भी ओढ़नी पड़ी। दूसरे दिन सवेरे लगभग ग्यारह बजे तनवीर परीक्षा-पत्र समाप्त करने के पश्चात् जब छूटा है तो तुरन्त सीधे काशी के कमरे में गया और रात्रि का सारा वृतान्त उससे कह सुनाया। तब तनवीर कहने लगा—"अब यह आवश्यक है कि काशी तुम परीक्षा देने के पश्चात् तुरन्त लखनऊ से प्रतापगढ़ चल दो।"

अध्याय बाईसवाँ

आँसू को मेरे लेकर दामन प जरा परखो !
जम जाय तो खूँ समझो, बह जाय तो पानी है !!

सारांश यह कि काशी की परीक्षा आज ग्यारह मई को भली या बुरी समाप्त हुई। कमरे पर आकर उसने तुरन्त सामान ठीक किया और स्टेशव को रवाना हो गया। उसके मित्रों में से तनवीर, सागर तथा श्रीमती सागर तीनों काशी को स्टेशन पहुँचाने आये और हर ओर से हर बात को समझा दिया। काशी गाड़ी के अन्दर बैठ गया और गाड़ी ने सीटी देने के पश्चात् लखनऊ का स्टेशन छोड़ दिया।

दूसरे दिन नौ बजे सबेरे काशी प्रतापगढ़ पहुँच गया और जब उसका ताँगा आकर उसके घर पर ठहरा तो यह कुछ अजीब ही सा रंग देखता है। बगल में श्री रविन्द्र का घर है वहाँ पर बिलकुल सफ़ाई आदि हो चुकी है। घर की चूनाकली भी बहुत सुन्दर हुई है। घर हर नज़दीकी हिताई वाले आ चुके हैं। घर के अन्दर काफ़ी चहल-पहल भी है। उस घर का प्रत्येक निवासी प्रसन्न है कि आज के पाँचवें दिन बारात आयेगी और ऐसी वैसी भी नहीं बल्कि बहुत ही शानदार बारात आयेगी।

वहुत तड़पायगी दिल को हमारी दास्ताँ वरसों !
करेगा याद रो रोकर हमें सारा जहाँ वरसों !!

दूसरी ओर स्वयं काशी के घर की दशा कुछ अजीब है। उदासी छाई है। माताजी भी उदास हैं और पिताजी भी उदास हैं। दोनों इस बात का अनुभव करके कि यह विवाह आज उनके घर की खुशी होती बहुत मलीन हैं। कोई बात हो नहीं जैसे उन लोगों को सारा आकाश अशान्त तथा चारों ओर अन्धकार ज्ञात होता है। वहरहाल काशी उतरते ही ज़नाने घर में जाकर अपनी माताजी से मिला। बाहर आकर नहाया और फिर कपड़े बदल कर अपने घर में टहलने लगा।

अब चूँकि रंजना का विवाह काशी के साथ नहीं हो रहा है, इसलिये रंजना तथा काशी में किसी प्रकार के रिवाजी पर्दा की आवश्यकता नहीं है। इसलिये रंजना भी कई बार काशी के घर पर आई गई और काशी बाबू भी रंजना के घर में केवल रंजना के दर्शन के लिए कई बार आये गये परन्तु खेद तथा उदासीनता काशी और रंजना दोनों के मुख से प्रकट हो रही है।

चूँकि कल तेरह मई है और आज ही भर दिन और रात्रि ऐसी है कि रंजना इधर-उधर घूम फिर सकती है और यहाँ-वहाँ आ जा सकती है, वरना इसके बाद वह कल तो मड़वे में बैठा दी जायेगी। यह वह रीति है कि जिसके अन्तर्गत महिला हर एक से अलग करके किनारे बैठा दी जाती है। चुनांचे आज का अवसर केवल काशी के लिए सुनहला अवसर था। यदि वह इसका लाभ न उठाता तो उससे बढ़ कर दुनियाँ में मूर्ख कोई नहीं था। चुनांचे रंजना के भाई सुरेन्द्र को काशी ने किनारे बुलाकर सिखाया कि तुम अपनी बहिन को उस किनारे वाले कमरे में बुला लाओ और जाकर रंजना से कहना कि काशी भाई तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अतएव थोड़ी देर के पश्चात् रंजना काशी के कहने के अनुसार उस कमरे में पहुँच गयी। काशी उस कमरे में पहिले ही से उपस्थित था। रंजना ने काशी को देखते ही नेत्रों से आँसू वहाना आरम्भ कर दिया और विचार किया कि क्या से क्या हो गया। काशी अपने हृदय को काफ़ी मजबूत रखे है और हृदय पर पूर्ण

रूप से काबू बना रक्खा है और रंजना को बहुत कुछ धीरज देकर शान्त करता है। अन्त में रंजना भी अपने ही आंचल से अपने आँसू पोंछ लेती है और काशी रंजना से यूँ बातचीत आरम्भ करता है।

काशी—रंजना देखो मैं भी कैसा अभागा हूँ। सोचा क्या और हो क्या रहा है।

रंजना—आपका इसमें क्या अभाग्य है। वास्तव में तो भाग्य की खराबी हमारी है कि आपके पिता ने भी कुछ रोक-टोक नहीं किया।

का०—हाँ रंजना शायद हम लोगों के माता-पिता को यह नहीं मालूम कि हमारे सम्बन्ध केवल मंगनी ही तक सीमित नहीं है बल्कि इससे भी कुछ आगे हैं।

रं०—बहरहाल आपके भाग्य में जो लिखा था हो गया।

का०—अच्छा देखो रंजना हमारे सारे मोहरे मात खा चुके हैं। केवल एक मोहरा रह गया है। यदि यह काम आ जाय तो हम शत्रु को बुरी तरह परास्त कर सकते हैं परन्तु इसमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।

रं०—कहिये।

का०—देखो हमने लखनऊ में सब सामान कर रखा है। यहाँ से लखनऊ तक की यात्रा सरलतापूर्वक होगी। तुम हमारे साथ आज लखनऊ चली चलो।

रं०—आप यह क्या भूल गये कि इसमें मेरे परिवार की बेइज्जती है। हमारे माता-पिता का नाम मिट्टी में मिल जायेगा। यह लोग किसी स्थान पर मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहेंगे। मैं इस प्रकार से आपके साथ चली चलूँ परन्तु जो भी हमको बाद में देखेगा यही कहेगा कि मैं बाजारू महिला की भाँति आपके साथ भाग निकली।

का०—देखो रंजना तुम कहती हो कि तुम्हारे हमारे साथ चलने के कारण तुम्हारे माता-पिता का नाम हँसा जायेगा किन्तु तुम भूलती हो कि संसार यह भी कहेगा कि हमारा तुम्हारा प्रेम इतना था कि माता-पिता भी समाप्त नहीं

कर सके। जहाँ तक तुम्हे यह विचार है लोग तुम्हें बुरी नजर से देखेंगे तो इससे क्या, मगर मेरी दृष्टि में तो तुम वैसी ही रहोगी जैसे अब हो।

रंजना—आपका कहना ठीक है किन्तु आप वास्तविकता से बिलकुल दूर खड़े हैं और जज़बात की लहरों में बहते चले जा रहे हैं। आप इस बात का बिलकुल ग़लत अन्दाज़ा लगा रहे हैं। मैं एक पग भी इस घर के बाहर बिना अपने माता-पिता की इच्छा के नहीं निकल सकती। उनकी इच्छा पर अपनी इच्छा की भेंट चढ़ानी है और यही करना होगा।

काशी—रंजना बात को समझो। बुद्धि से काम लो, देखो हम क्या कह रहे है और तुम क्या समझ रही हो। हमारे साथ चलो..................चलो रंजना .... ।

रं०—(आखों में आंसू भरकर) नहीं.........नहीं, मैं कभी नहीं ऐसा कर सकती हूँ। मैं पहिले महिला हूँ और बाद में रंजना। यह कहकर रंजना उठी और अपने छोटे भाई सुरेन्द्र को लेकर कमरे से बाहर चली गयी।

का०—(पुकारता है) रंजना..............रंजना...........रंजना सुनो ।

रं०—(कहती जाती है) नहीं, नहीं..........कभी नहीं...............नहीं।

तेरे प्यार की है यही सजा !
मेरी इसमें कुछ भी खता नहीं !!

काशी ने रंजना से इतनी सी बातचीत करने के लिये बड़ी कठिनाई से अवसर निकाला था। अब कल चूंकि रंजना मड़वे में बैठा दी जायेगी इसलिये काशी तथा रंजना का अन्तिम निर्णय करने वाला मिलाप यही था और इस मुलाकात में रंजना ने जो निर्णय किया वह यही था।

तेरी हाय वह नवाजिश जमाना था यगाना !
तेरी क्या निगाह बदली कि बदल गया जमाना !!

इस बातचीत के पश्चात् काशी तुरन्त दरवाजे पर चला गया और अपने कमरे में जाकर अपनी चारपाई पर धड़ से गिर पड़ा। उसका पूरा भरोसा था कि रंजना उसकी बात मान लेगी और काशी की डूबती हुई नौका को बचा लेगी

परन्तु रंजना का निर्णय बिलकुल आशा के विपरीत हुआ और इस निर्णय ने काशी के हृदय पर एक चोट का काम किया। लखनऊ में उसके सब साथी उसके आगमन के लिए उत्सुक थे। आज बारह मई है और रात्रि भी गुज़र जायेगी कल सवेरे १३ मई आरम्भ होगी। रंजना सवेरे प्रातःकाल मड़वे में बैठा दी गई और काशी अभी तक सो रहा है। ग्यारह बजे दिन में उसकी आँखें खुलीं। लगभग रात्रि को काफ़ी देर तक जागता रहा है इसी का प्रभाव यह है।

मित्रगण लखनऊ में उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल हैं और इसी प्रकार अशान्त तथा उदासीनता की दशा में १३ तिथि बीत गयी। इसी प्रकार १४ भी बीत जाती है। आज १५ मई आ पहुँची। काशी शान्तिपूर्वक कमरे में बैठा रहना ही अच्छा समझता है और यही आजकल उसका नित्य का कार्य है। वह केवल चुप-चाप कमरे में बैठा हुआ है।

नाकमिये उम्मीद भी है रहम के क़ाबिल।
मायूस हैं ऐसे कि दुआ भी नहीं करते !!

वह काशी जिसने तीसरी कक्षा की पढ़ाई से लेकर एल०एल०, बी० तक कभी भी भूल से सिगरेट मुँह तक से न लगाई थी उसने भी आज सिगरेट पीना आरम्भ कर दिया। शायद सिगरेट दुख को घटाता है या अकेले व्यक्तियों का यही सहारा है।

उसके लखनऊ के मित्र तार पर तार दे रहे हैं कि शीघ्र सूचित करो कब आ रहे हो……कैसे हो, कुशलता लिखो…………। अन्त में काशी बाध्य होकर उन लोगों के उत्तर में एक तार यूँ दे देता है "मैं अभागा हूँ। नहीं आ सकता। रण में पराजित।" और फिर शान्तिपूर्वक कमरे में बैठा हुआ सिगरेट पीता रहता है।

सद हैफ़ कि बर्बाद हुये हम तेरी ख़ातिर !
सद शुक्र कि तुम पर कोई इल्ज़ाम न आया !!

अब विवाह के केवल दो दिन रह गये। सो वह भी बीत गये। आज सवेरे ही काशी बाबू अपने कमरे में बैठे हुए हैं, कमरे के बाहर ही नहीं निकलते। जब

लड़के की यह दशा माता-पिता ने देखो तो उस समय उन दोनों को भी दुख होने लगा कि उन्होंने क्यों मान लिया। परन्तु अब क्या हो सकता है।

"अपने किये की दवा ही नहीं"

काशी बाबू अपने कमरे में आरामकुर्सी पर बैठे हुए हैं और सिगरेट पीते चले जा रहे हैं। सामने आलमारी पर एक छोटा सा सूटकेस रखा हुआ है और बाईं ओर चारपाई पर नौकर बिस्तर लगाकर चला गया है। श्री रविन्द्र के घर पर आज उनकी पुत्री का विवाह है। उन्होंने अपना हौसला निकालने का असीमित उपाय किया है। उन्होंने सदा यही विचार रखा है कि कहीं श्री कुबेर यह न समझ लें कि वह धनी बन कर एक दान की पुत्री को ब्याह कर ले जा रहे हैं। चुनांचे उन्होंने किसी बात के करने में आलस से काम नहीं लिया है। घर बड़ा है, उसकी सजावट भी सुन्दर है। गैसों की संख्या भी काफ़ी है, बाजे वाले भी संख्या में बारातियों से कुछ ही कम होंगे। अंधेरी रात का समय है परन्तु गैसों ने रात्रि को दिन में परिवर्तित कर दिया है। खाने का क्या पूछना। इतने प्रकार का भोजन तैयार करवाया गया है कि जिसकी गिनती करना कठिन है। नज़दीकी और दूरी हर नाते वाले बुलाये गये हैं। श्री रविन्द्र का घर महिलाओं से खचाखच भरा हुआ है। और उन महिलाओं की संख्या कुछ इस प्रकार ज्यादा हो गई है कि उन महिलाओं के बच्चे घर की तंगी अनुभव करके और कहीं न बैठने का स्थान पाकर अपनी माता की गोद में जा बैठे हैं................।

................भूखे बच्चे शोरगुल अलग मचाये हुए हैं। हर ओर से कहीं महिलाओं की आवाज़ आती है कहीं बच्चों की। घर में नौकरानियों और दाइयों का आज ही कार्य पूर्ण होने वाला है। कन्यायें संख्या में कुछ इस प्रकार ज्यादा हैं और कुछ इस प्रकार बनाव सिंगार के साथ हैं कि प्रतीत होता है कि आकाश से सारी सुन्दरियाँ आज श्री रविन्द्र के घर में पार्सल कर दी गई हैं। होते-होते रात के सात बजे बाबू श्याम सुन्दर परवेज़ की बारात स्टेशन से चलती है। कहाँ रुकेगी ? श्री रविन्द्र के घर पर जिसकी बारात है ? बाबू परवेज़ जो श्री कुबेरनाथ के इकलौते पुत्र हैं। बारात क्या है, ऐसा मालूम होता है कि

किसी राजा की सिलवर जुबली का जुलूस है। लगभग सैकड़ों गैस बत्ती होंगी ? बाराती न जाने कितने हैं, सभी नये कपड़ों में लदे हैं। बाजे वाले इतनी ज़ोरों से बाजा बजा रहे हैं कि उनकी धमक से लगभग आकाश पर कुछ सितारे ही नाच रहे हैं। उन्होंने भी डर कर अपनी आँखें खोल दी है। दुःख है कि सुन्दर चन्द्रमा बाजे की आवाज सुनकर डर गया है और आज निकला ही नहीं। इसका अर्थ यह है कि दोनों की दुनियाँ आज अन्धेरी रहेगी और आज की बारात अन्धेरी रात में प्रकाशमान हो जाएगी। यद्यपि बारात अपना आधा मार्ग बिता चुकी है फिर भी आतशबाज़ी तो अभी चौथाई भी नहीं छूटी है, ऐसा हुआ तो सभी बची रह जायेगी। आखिर क्यों ऐसा हो रहा है ? अतएव आतशबाज़ी के छूटने की गति दूनी और तीन गुनी हो गई है।

लीजिए अब श्री रविन्द्र के मकान पर बारात आ पहुँची और हर ओर से बधाई दी जाने लगी। ईश्वर उनकी बेटी का विवाह सफल करे। कुछ तो बारात के गैस और कुछ श्री रविन्द्र के यहाँ के गैस मिलकर यहाँ की संख्या दूनी हो गई और सारे घर का चिराग़ देखने योग्य हो गया है।

आज की रात्रि इस घर में बाजा इतने ज़ोरों से बज रहा है कि उसकी आवाज़ मज़दूरों पर गोलियाँ चलाने वाली बन्दूकों से भी बढ़ गई है। यही नहीं मसजिद से निकली हुई मुअज्ज़िन की अज़ान की आवाज़ और मन्दिर से बजने वाले घंटे की आवाज़ आज इस बाजे की आवाज़ से दबी हुई है। किसी ने भी इन धार्मिक आवाज़ों को नहीं सुना। मालूम है आज धर्म के पक्ष वाले और धर्म के देवता अपने कानों में रुई ठूँस कर और चादर लपेट कर सो गए हैं। अनुमानतः उन्होंने समझा है कि प्रतापगढ़ में आज आकाश के देव की बारात उतरी है और वह गा बजा रही है। आज इस बारात के किसी बाराती को यह विचार भूले से भी नहीं आता कि न जाने कितने चौपाये जानवर नहीं बल्कि दो पाये जानवर भूख प्यास का व्यवसाय करके सड़कों के किनारे सोये होंगे और इन दो पाये जानवरों के बच्चों ने तो गैस का इतना ज्यादा प्रकाश कभी स्वप्न में भी नहीं देखा होगा। इसीलिए वह सन्ध्या होते ही सो जाते हैं क्योंकि अंधेरे में उनको डर लगता है और उनकी जो आँखें सन्ध्या की

बन्द हुईं तो सुबह खुलती है। परन्तु सुबह में जब यह बच्चे सूर्य नारायण की आराधना करते हैं तो दोपहर होते-होते सूर्यदेव भी इन बच्चों पर ऐसी अग्नि की वर्षा करने लगते हैं कि उनके चेहरे सूख जाते हैं और नंगे पाँव रहने वाले बच्चे पृथ्वी की रेत पर अपना पैर जलाने को अपने जलने का सामान समझते हैं।

'पैसे का पुजारी दुनियाँ में सच पूछो तो इन्साँ बन न सका।'

बारात के पहुँचते-पहुँचते अब आठ बज गये और ज्योंही बारात श्री रविन्द्र के घर पहुँची हर ओर नौकरों ने दौड़ धूप आरम्भ कर दी। कोई पान लाता है, कोई तम्बाकू लाता है, कोई शर्बत, कोई चाय आदि। गरज़ कि एक अजीब प्रकार की चहल पहल है। बाराती शान्तिपूर्वक कुर्सियों तथा चारपाइयों, फर्श तथा तख्त आदि पर बैठे हुए हैं और इधर-उधर की बातें, मज़ाक जारी है।

इतने में परवेज़ ने एक छोटा सा पर्चा लिखकर एक नौकर को दे दिया कि इसको ले जाकर काशी के घर पर काशी को दे आये। काशी का घर इस समय अन्धेरी रात होने के कारण दुख का स्थान बना है। उसके माता-पिताजी भी रंजना के विवाह में सम्मिलित होने के कारण अपने होठों पर हँसी और दिल में दुख लेकर चले गये हैं। सारा घर अकेला है। अलबत्ता बाजे की आवाज़ अवश्य सुनाई दे रही है परन्तु अन्धेरे कमरे में काशी बैठा हुआ है जिसमें एक बड़ा सा लैम्प अपनी न्यूनतम प्रकाश के साथ टिमटिमा रहा है। करीब-करीब यह भी काशी के हृदय के साथ दुख में साथ दे रहा है। काशी इस समय अकेला है और वह सिगरेट पी रहा है।

इतने में एक नौकर काशी के घर पर आया और आज्ञा लेने के पश्चात् काशी के कमरे में प्रवेश किया। सलाम करने के बाद बोला—"यह पर्चा परवेज़ बाबू ने आपके नाम दिया है।" काशी ने पर्चे को ले लिया और पढ़ने लगा। पर्चे का विषय यह है—

भेज रहे हैं स्नेह निमन्त्रण, प्रियवर तुम्हें बुलाने को!
हे मानव के राजहंस, भूल न जाना आने को!!

श्री काशी !

आज मेरा विवाह रंजना के साथ हो रहा है। इस बात की सूचना मैंने पहिले ही आपको दे दी थी। आपका होना मेरे विवाह में आवश्यक है। इसलिए कि बारात के सभी मेहमान आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि आप नहीं आयेंगे तो रंजना को भी शिकायत होगी।

अर्पित है अति प्रेम सहित, श्रीमान् निमन्त्रण यह लेना !
करना हमें कृतार्थ कृपाकर, अपने शुभ दर्शन देना !!

तुम्हारा............

परवेज़

जिस समय काशी इस पर्चे को लेकर पढ़ता है तो उसकी आँखों से आँसू तेज़ी से बहने आरम्भ हो गये। रंजना की बातचीत ने उसके हृदय पर एक गहरा घाव किया और इस घाव के ऊपर इस पर्चे ने नमक का काम किया। जब काशी ने उस पुर्जे में रंजना का नाम पढ़ा तो उसके मस्तिष्क में रंजना की बात का वह वाक्य याद आ गया—'मैं पहिले महिला हूँ और बाद में रंजना।'

अब तो परवेज़ का पत्र काशी के नाम आया ही है इसलिये उसका उत्तर लिखना आवश्यक है। काशी ने उसी पर्चे पर दो पंक्तियों में लिखकर भेज दिया और कह दिया कि यह ले जाकर परवेज़ को दे देना।

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय !
घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय !!

नौकर के चले जाने के पश्चात् काशी ने कुर्सी को मेज़ के समीप कर लिया और एक पत्र लिखना आरम्भ कर दिया। यह पत्र काशी ने श्री रविन्द्र के नाम लिखा। पत्र लिखने में लगभग उसको पूरा एक घण्टा लग गया। पत्र समाप्त करने के पश्चात् उसको लिफ़ाफ़े में बन्द किया और फिर अपनी जेब में रख लिया। इतने में सिगरेट समाप्त हो गयी इसलिये दूसरी सिगरेट जला ली।

———

अध्याय तेईसवाँ

बड़े शौक़ से सुन रहा था जमाना !
हमीं सो गये दास्ताँ कहते कहते !!

रात्रि के ग्यारह बज रहे हैं, सारे वराती उपस्थित हैं, लगन मण्डप तैयार है, हर ओर से लोग पंडित जी को पुकार रहे हैं कि वह आकर लगन मंण्डप में दुल्हा दुल्हन का ब्याह करावें। थोड़ी देर के पश्चात् पंडित जी भी आ गए और बहुत सी महिलायें अपने साथ दुल्हन को लिये हुए आगईं। दुल्हन बहुत सुन्दर वस्त्र धारण किये हुये लगन मण्डप में आ जाती है और श्री परवेज़ भी दुल्हन की बगल में बैठे हुए हैं। चूड़ीदार पाजाम पहने हैं। सिर पर पगड़ी है और शेर-वानी उनकी आन-बान बढ़ा रही है। इन दोनों दुल्हा दुल्हन के सामने अग्नि जल रही है और इस जलती हुई अग्नि का प्रकाश चमकीले कपड़ों को शान-दार बना रहा है। अब चूंकि पुरोहित जी पूजा आरम्भ करने वाले हैं इसलिए हर ओर शोर गुल समाप्त हो गया। शहनाई और बाजा बजाने वालों को भी रोक दिया गया है। थोड़ी देर के पश्चात् जब हर ओर शान्ति छा गई तो पुरोहित ने श्लोक पढ़-पढ़ कर पूजा आरम्भ कर दी और चूंकि केवल फेरा और भाँवर ही करना था इसलिये पुरोहित जी ने श्री परवेज़ के हाथ पर सिन्दूर रख

दिया। श्री परवेज़ ने अपने हाथों से सिन्दूर भर दिया ताकि सिन्दूर बन्धन का अन्त हो जाय।

ज्योंही श्री परवेज़ ने रंजना की माँग पर सिन्दूर बन्धन लगाया कि चारों ओर धूम मच गई। जितने लोग मौजूद थे सभी खुशी के मारे उछल पड़े। परवेज़ का हृदय अपने इस भाग्य पर बड़ी तेज गति से धकधका कर चल रहा था परन्तु रंजना के नयनों से घूँघट के अन्दर आँसू के क़तरे ही निकल रहे थे न जाने किसकी याद में।

रात के साढ़े ग्यारह बजने पर लगन मंडप के कारण हर ओर शान्ति छा गई थी। काशी ने समझ लिया कि अब बाजे की आवाज़ नहीं आ रही है, यही सिन्दूर लगने का समय है। उसका हृदय इस समय बैठने लगा, उसके मस्तिष्क से शान्ति ग़ायब हो गई। वह हैरानी की दशा में पड़ गया, उसकी देह शोक के कारण काँप रही थी। चुनांचे अब वह उठा और बहुत धीरे से अपना छोटा सा सूटकेस अपने दाहिने हाथ में ले लिया फिर एक सिगरेट जलाया। और केवल उज्ज्वल धोती तथा कुर्त्ता पहिने हुए कमरे के दरवाज़े की ओर देखने लगा। बहुत धीरे से मन्द प्रकाश वाले लैम्प को फूंक दिया और अपने घर के पीछे घने पेड़ों के कारण गहरा अंधेरा छाया हुआ है केवल एक बार इस स्थान से मुड़कर फिर वह अपने घर की ओर देखा। आँखों में आँसू भर आये परन्तु जल्दी से अपना पग आगे की ओर बढ़ाता गया —

दरो दीवार पर हसरत की नज़र करते हैं!
खुश रहो अहले वतन हमतो सफ़र करते हैं!!

अभी काशी कुछ गज आगे गया होगा कि उधर सिन्दूर की रस्म अदा हो चुकी है और बाजे फिर जोरों से बजने आरम्भ हो गये। बाजों की आवाज काशी के कानों तक आ रही है। मालूम होता है परवेज के लगन मंडप के बाजे काशी की मातृ-भूमि के त्याग पर सलामी दे रहे हैं। काशी धीरे-धीरे चल कर स्टेशन पर पहुँचा है और वहाँ पर पहिले लेटर बक्स पर जाकर उस लाल रंग के लेटर बक्स के अन्दर उस सफेद लिफाफे में रखा हुआ पत्र छोड़ दिया। जैसे खोदी हुई कब्र के अन्दर उज्ज्वल कफ़न में लिपटी हुई मुर्दे की लाश

को सुला दे। इतने में गाड़ी आ गयी और वह गाड़ी में बैठ कर आंसू बहाता हुआ न जाने कहाँ के लिए चल पड़ा।

अब दूसरे दिन रंजना की बिदाई है। चुनांचे बहुत बनाई संवारी गई और गाने वाली महिलाओं ने बिदाई का गीत गाया। इसके पश्चात् भांति-भांति की रीति-रिवाज की गई। हाथ पांव में मेंहदी लगाई गई। उसकी मांग में सिन्दूर भरा गया और वस्त्रों में सुगन्ध लगाया गया।

इन्हीं सब रीति-रिवाजों के होने करने में सन्ध्या के साढ़े पांच बज गये। माता-पिता, चाचा चाची और जितने नाते वाले थे सब ने मिलकर लड़की को गले से लगाया और फिर परवेज़ बाबू ज़नाने घर के अन्दर बुलाये गये। उन्हीं ने आकर दुल्हन का आंचल पकड़ा और दूसरी महिलाओं को नमस्ते किया। महिलाओं ने रुपये देना आरम्भ किया। ढोलक जोरों से बज रही थी। गाने वाली गला फाड़-फाड़ कर गा रही थीं। भिन्न-भिन्न प्रकार के रीति-रिवाज हो रहे थे। रुपये अशर्फियाँ न्योछावर किये जा रहे थे। रंजना रेशमी वस्त्र पहिने हुए थी। फूलों से इतनी लदी हुई थी कि मानो आकाश से कोई परी उतर आई हो। दुलहन के सामने परवेज़ बाबू पगड़ी पहने हुए फूलों से लदे हुए रिवाजों के अनुसार वहीं खड़े हुए थे। सारी रीतियां समाप्त होती हैं और रंजना गुड़िया की भांति अतलस व हरीर के वस्त्र में लपेट कर मोटर में बिठा दी गयी। अब रंजना अपने माता-पिता से बिछुड़ कर अपने नये माता-पिता को अपनाने जा रही थी। अब तक जो रंजना अपने मां-बाप की पूंजी थी आज वह पराई होकर चली जा रही थी। ऐसा मालूम हो रहा था कि अब रंजना के माता-पिता का रंजना पर कोई अधिकार नही है।

विष समिश्रण है अमृत में,
शहद का सम घोल घृत में,
चख लिया तो मृत्यु निश्चय,
समझ जग में सार क्या है?
मीत ये संसार क्या है?

× × × ×

वेग मय सरिता सरस जग,
मार्ग बीहड़ है पगे पग,
अन्धकार सर्वत्र साथी,
जाने उस पार क्या है ?
मीत ये संसार क्या है ?

× × × ×

रात्रि का साम्राज्य चहुँ दिशि,
दम्भ-मिथ्या पाप अहर्निशि,
छल प्रवञ्चन द्वेष ईर्ष्या,
क्रोध का बाजार क्या है ?
मीत ये संसार क्या है ?

× × × ×

है दिखावा पूर्ण यह जग,
वास्तविकता है गई भग,
स्वयं उत्तर दो तुम्हीं हे—?
मीत ये संसार क्या है ?

× × × ×

स्वप्न सा संसार लख कर,
विषयार्क का सुस्वाद चख कर,
सृष्टि अन्धी हो गई है।
धर्म का विस्तार क्या है ?
मीत ये संसार क्या है ?

× × × ×

है अन्ध मीत नर मूढ़ मन,
श्री नाथ का कर नित भजन,
इस सहज उपचार से ही,

नर नदी उद्धार क्या है ?
मीत ये संसार क्या है ?

× × × ×

संक्षेप यह कि परवेज बाबू अपनी दुलहन को लेकर बरातियों सहित मिर्जापुर पहुँच गये। यहाँ पर उनके घर की अजीब दशा है। जो है वह अलग ही खुश है जो है वही प्रसन्न है। चारों ओर गाने की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। घर सजा हुआ है। फूल पत्तियाँ हर एक दरवाजे पर लगी हुई हैं। और नौकर चाकर सभी सुन्दर वस्त्र धारण किये हुए प्रसन्नता-पूर्वक दिखलाई दे रहे हैं। अन्दर महिलायें इतनी आ गई हैं कि श्री कुवेर के किले में तिल रखने को भी जगह नहीं है। अभी बाहर ही बाहर दुलहन मोटर से डोली में बिठाई जाती है। इसके बाद ठाकुर द्वारा और डीह के दर्शन के लिये जाते हैं। इसके बाद दुलहन को डोली दरवाजे पर आकर लगती है और डोली के सहित बाबू परवेज भी आकर खड़े होते हैं। माता जी तुरन्त बेटे की बलायें लेती है और हर ओर से महिलायें रुपया अशर्फी आदि न्योछावर करती हैं। इसके बाद परवेज की बहिन सरोजनी सामने आती है और नेग का प्रश्न करती है। इस पर भाई बहिन में शीघ्र निर्धारण नहीं होता है परन्तु बाद में जब परवेज़ बाबू जेब से काफ़ी रुपया दे देते हैं तो सरोजनी दुल्हन के उतारने की आज्ञा देती है अभी यह प्रश्न हल ही हुआ था कि इतने में बसन्त बाबू आकर साले साहब का पाँव छूते हैं और अपना प्रश्न उठाते हैं। पहिले तो परवेज़ कुछ रुपया हाथ पर रखता है किन्तु ये कब के मानने वाले थे। सौदा करने के लिए तैयार नहीं हुए क्योंकि उन्होंने तो समझ लिया था कि जो कुछ भी हो उनकी फ़ीस तो मिर्जापुर की मुन्नीजान से भी बढ़ी हुई है। बहरहाल अन्त में बसन्त बाबू का सौदा बहुत वाद-विवाद के पश्चात् निर्धारित होता है और ये भी दुलहन के उतारने की आज्ञा देते हैं। चुनांचे अब भी बहिन सरोजनी दुल्हन के उतरने को डोले का कपड़ा हटाती है तो झट उसमें से दुलहन का भाई सुरेन्द्र कूद कर बाहर निकल आता है। ये देख महिलायें हँसना आरम्भ कर देती हैं और लड़कियाँ सुरेन्द्र का कान ऐंठने लगती हैं। सुरेन्द्र ने देखा कि कान तो केवल संख्या में दो हैं किन्तु

कान के ऐंठने वाली महिलायें संख्या में लगभग दो सौ हैं। शीघ्र ही अपनी बहिन के डोले में फिर घुस गया और कहने लगा बहिन उतरना मत वरना महिलायें तुम्हारा भी कान ऐंठेंगी। महिलायें सुरेन्द्र के इस वाक्य को सुन कर बड़े जोरों से हँसीं।

अन्त में सरोजनी देवी ने दुलहन को उतारा और बेचारी दुलहन आंख बन्द किये हुये उतरी। उसका सुन्दर मुखड़ा यात्रा की थकावट के कारण और डोली में बैठे-बैठे बिलकुल कुम्हला गया था। सरोजनी धीरे-धीरे ले जाती है। दुल्हन रीति के अनुसार अपनी आंखे बन्द किये हुये है। गाने वाली महिलायें गाती चली जा रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत दिनों में शायद इसी समय की प्रतीक्षा में थीं। हर ओर महिलाओं की कूंकूं मची हुई है। कोई दुल्हन को पंखा झल रहा है, कोई आँचल उसके सिर पर रख रहा है। ग़रज कि धीरे-धीरे चल कर दुल्हन आंगन में लाकर चौक पर बैठाई जाती है। लड़कियाँ हैं कि दुल्हन को आश्चर्य का पक्षी समझकर बेचारी दुल्हन पर गिरी चली जा रही है कि इतने में मु० घोश एक थरिये में पानी लेकर आती है और दुल्हन का मेंहदी से रंगा हुआ लाल पैर धोती है और उसके पश्चात् यह पानी घर के सारे कोनों में छिड़का जाता है इस के पश्चात् फिर परवेज बाबू बाहर से बुलाये जाते हैं और अन्तिम रीतियाँ भी हो जाती हैं। इधर गाने वाली महिलायें हैं कि बस गीत की सूची ही पत्तियों की रट लगाये हैं और वह ये थीं।

निराली शान की है मेरी दुलहन !
कमर पतली सुराहीदार गर्दन !!

बरहहाल जिसने दुल्हन को देखा तो उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होगया और बिना प्रशंसा किये हुये न रह सका।

श्रीमती कुबेर की तो दशा न पूछिये, वह तो इस समय इम्पीरीयल बेंक बनी हुई थीं। जो चीज अपने हाथ में थी न्योछावर के नाम से देती चली जाती थी। नाइन, मेहतरानी, धोबिन आदि सबको झोलियां आज श्रीमती कुबेर की अशर्फी तथा रुपये से भर रही थीं।

इन्ही सब रीति रिवाज के होने में अब दिन के साढ़े चार बजने लगे और

लोगों ने यही उचित समझा कि दुलहन थक कर चूर होगई है। इसलिए मु० घोश ने दुलहन को ले जाकर एकान्त और हवादार कमरे में विठा दिया। उसका मुँह धुलाया और कुछ जलपान इत्यादि कराया और कमरे का दरवाजा बिलकुल बन्द कर दिया पंखा जोरों पर झलवाने लगी ताकि दुल्हन को कुछ शान्ति प्राप्त हो।

इधर सब लड़कियों को भी अवसर मिल गया और सब की सब लगीं एक सुन्दर कमरे में दुल्हा का महल और दुल्हन के लिए "सेज" तैयार करने। कमरे में बिजली के बहुत से डंडों को लगा कर प्रकाश किया गया। दरवाजे पर रेशमी परदे टांग दिए गए और फूलों के हार लगाए और भांति-भांति की झंडियां पत्तियाँ इत्यादि लगा दी गईं सुन्दर सुन्दर इत्र, सुगन्ध तथा भिन्न भिन्न प्रकार की दूसरी चीजों से "महल" सचमुच ऐसा बनाया गया था कि परवेज बाबू को एकान्त में सभा का आनन्द आ जाये।

मसहरी पर एक फीट ऊँचा गद्दा बिछा दिया गया और उस पर लाल रंग की तोशक और तकिया आदि हर चीज लगा दी गई। एक स्टूल पर गगरे में पानी और लोटा। गरज कि इन्हीं सब बातों में आठ बज जाते हैं। और आई हुई अतिथि महिलाओं को भोजन कराया गया। जब सभी स्त्रियां भोजन कर चुकी तब लगभग ग्यारह बजे रात को दुल्हन उस कमरे में (जहाँ महल बनाया गया था) लाकर फूलों की सेज पर लिटा दी गई और बिजली का पंखा चला दिया गया। पंखे की हवा के कारण दरवाजों के रेशमी पर्दे लहराने लगे।

जब हर तरफ से शान्ति हो गयी तब परवेज बाबू "महल", में सोने के लिए बुलाए गए। जब बाबू परवेज आये तब कमरे के बाहर ही से दरवाज़ों के पर्दों का लहराना और उसकी सुन्दरता देखी तो उनको कविता की एक पंक्ति याद आ जाती हैं।

लतीफ़ परदों से थे नुमायाँ मकी के जलवे मकाँ से पहले।

जब परवेज बाबू ने कमरे प्रवेश किया तो कमरे की सजावट देख कर उनका मन पुलकित हो उठा। और जब मसहरी पर सोया हुआ एक अनमोल मोती देखा तो अपने हृदय ही हृदय में अपने भाग्य की सराहना करने लगे। इसके पश्चात

महिलाओं की आज्ञानुसार परवेज ने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया और एक आराम कुर्सी पर बैठ गए और फिर एक सिगरेट जलाया । परवेज़ बाबू के मुँह से जो धुँआ निकलता है पंखे की हवा उसे उड़ा ले जाती है । गरज़ जब परवेज़ बाबू ने अपना सिगार पूरे तौर से समाप्त कर लिया तब इस प्रकार बोल चाल आरम्भ किया ।

परवेज़ पहिले दो पंक्तियाँ पढ़ता है :—

किस सोच में सो नसीम बोलो ।
आँखें तो मिलाओ दिल कहाँ है !!

और इसके पश्चात् फिर कहता है क्यों साहब कुछ तो बोलिये .... बोलिये ....देखिये साढ़े बारह बज रहे हैं । ....कुछ तो बोलिये ....में केवल आप ही की आवाज़ सुनना चाहता हूँ.................. बोलिए क्यों नहीं बोलती । मैं केवल आप की ज़बान ही से आपका नाम सुनना चाहता हूँ । अच्छा आपको मेरी सौगन्ध बोलिये .... ।

परवेज़ के इतने कहने पर भी कोई प्रभाव रंजना पर नहीं पड़ा । इसलिए परवेज़ अपनी कुर्सी से स्वयं उठकर मसहरी के पास आता है । और उसके चेहरे पर से आंचल हटाता है । आँचल को हटाते ही परवेज़ धक से होकर रह जाता है । क्यों यह क्यों........................ऐसा क्यों । इस समय रंजना की आँखों से गङ्गा जमुना की धारा की भाँति आँसू उमड़ रहे थे ।

परवेज़ तुरन्त जेब से रूमाल निकाल कर उसके आंसू पोंछता है । और फिर रंजना को अपने दोनों हाथों से उठाकर बैठा देता है । और उसके पीठ के पीछे तकिया लगा देता है । फिर पूछता है आप क्यों ऐसा कर रही हैं क्यों आंसू बहा रही हैं । कुछ तो कहिये क्या कारण है आप को मेरी सौगन्ध.......

परन्तु रंजना अब भी मौन है और कुछ नहीं बोलती केवल शान्ति-पूर्वक आंसू बहाती जा रही है और परवेज़ उसके आंसू को अपने रूमाल से पोंछता जाता है फिर कहता है आपको मेरी सौगन्ध बताइये आप क्यों रो रही हैं । ....क्या कारण है । आपके रोने का.........................आखिर

इस बदकिस्मत से क्या गुनाह हो गया है जो आप इस तरह अपने इन कीमती आँसूओं को बहाती जा रही है। परवेज़ के इतना कहने पर अन्त में रंजना आँखे खोल देता है और कहती है—आपने मुझे क्यों खरीदा है ?

परवेज़ – क्या कहा ? क्या मैंने तुमको खरीदा है ? सरासर गलत अरे आपका तो मेरे साथ खुले आम सिन्दूर-बन्धन हुआ है।

रं०—क्या आपने एक महिला के बेज़बान होने का अनुचित लाभ नहीं उठाया है।

प०—परन्तु आप तो मेरे लिये रंजना हैं औरत नहीं।

रं—क्या आपको मालूम नहीं; काशी मुझसे प्रेम करता है।

प०—परन्तु विश्वास कीजिये कि मैं आपको काशी से कम नहीं चाहता।

रंजना—आप यह क्यों भूल जाते हैं कि आप एक पूंजीपति हैं और मैं केवल एक वकील की पुत्री।

परवेज—परन्तु यह आप क्यों भूल रही हैं कि पूंजीपति भी एक व्यक्ति ही होता है। उसकी छाती में भी एक हृदय होता है। उसके हृदय में भी प्रेम होता है। मेरे पूंजीपति होने का यह अर्थ तो नहीं है कि मैं जालिम हूँ।

रंजना—परन्तु आपने केवल मुझे धन के जोश में खरीद कर मेरे हरे-भरे जीवन को उजाड़ दिया।

परवेज—आप ग़लत समझती हैं। मैंने आपको प्रेम के जोर से पाया है। यदि काशी का प्रेम ज्यादा जोरदार होता तो निश्चय वह आपको पा लेता परन्तु मेरा विवाह आपके साथ हो जाना इस बात का सबूत है कि काशी को आप से इतना प्रेम नहीं था जितना कि मुझको आप से प्रेम है।

रंजना—परन्तु आप तो एक पूंजीपति हैं।

परवेज—यदि अर्थशास्त्र का यह नियम सही है कि आर्थिक दशा किसी देश की या व्यक्ति की एक सी नहीं रहती तो मुझे कहने दीजिये कि आज का पूंजीपति कल का मजदूर है और आज का मजदूर कल का पूंजीपति है। समुद्र

के तट पर खड़े तो बहुत से लोग हैं परन्तु जो व्यक्ति कि गोता लगा कर मोती निकालता है मोती उसी का होता है। जीवन की खींचातानी में सभी लोग लगे हुए हैं परन्तु जो व्यक्ति अपने परिश्रम से धन इकत्र कर लेता है धन उसी का होता है और वह पूंजीपति होता है। यदि आप पृथ्वी पर पड़ी रस्सी को सर्प समझ रही है तो यह आपकी ग़लती है न कि मेरी। मज़दूरी की नारावाज़ी और चिल्लाहट मशीन और तूफानी बातें एक गलत सी चीज़ है। पूंजीपति शासन एक प्राकृतिक शासन है, उसके सिवा दुनियाँ में कोई भी प्राकृतिक शासन नहीं हो सकता बल्कि वह अप्राकृतिक होगा और पूर्ण रूप से दुनियां के सामने असफल होगा।

रंजना—मैं एक कानूनी मज़दूर अर्थात् एक वकील की पुत्री हूँ। कल को प्रत्येक मेरी छाती पर अपना धनुप का तीर यही कह कर छोड़ेगा कि तुम पूंजीपति की लड़की नहीं हो।

परवेज़—कहने वाला ग़लती पर है, बिलकुल उसके कहने का सिद्धान्त ग़लत है। निश्चय आप पूंजीपति की लड़की नहीं परन्तु आप एक पूंजीपति की स्त्री तो हैं। आप मेरे जीवन की सहायक है। मेरी हर चीज़ चाहे वह धन हो, जान हो, या दिल, उसमें आपका भाग है। और आप उसकी भार्गी हैं। किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं।

रंजना—आप भूलते हैं इस बात को कि पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं परन्तु धरती-धरती हो रहती है और आकाश-आकाश ही।

परवेज—बड़ा आश्चर्य है कि आप बुद्धिमती हैं फिर भी आपने प्रकृति की इतनी बड़ी मिसाल को ग़लत समझा। देखिये धरती कितनी नीची है आकाश कितना ऊँचा है। परन्तु उसको भी धरती के चरणों पर सलामी देने के लिए आना पड़ता है। बिलकुल ठीक उसी तरह हम जैसे आपके कहने अनुसार एक पूंजीपति होते हुए भी आपके चरणों पर मौजूद है। पति-पत्नी का हृदय परस्पर जुड़े हुए होते हैं तो चाहे जितने प्रकार की चिन्ताएँ क्यों न हों वह क्षण भर में जीवन से दूर हो जाते हैं।

रंजना के पास परवेज़ की इन बातों का कोई भी उत्तर नहीं था। थोड़ी

देर के पश्चात् परवेज ने जब देखा है कि रंजना चुप है तो फिर प्रति निवेदन के स्वर में कहता है ''देखिये ग्राप हमको बिलकुल ग़लत समझ रही हैं। मैं वैसा कभी भी नहीं हूँ जैसा कि ग्राप समझ रही हैं। मैं ग्रापका हूँ ग्रोर ग्राप ही का होकर इस जीवन नौका को पार भी करूँगा। ग्रपने दिल में किसी प्रकार की ग़लत फ़हमी को स्थान न दीजिये वरना हमारे साथ ग्रापका बड़ा ग्रन्याय होगा। मेरे साथ ग्राप क्या कीजिये। ग्राप मेरे जीवन की साथी हैं। ग्राप मेरी ग़ुलाम नहीं हैं। ग्राप मेरे ग्रच्छे-बुरे की साथी हैं। मेरी शत्रु नहीं, मैं ग्रापको विश्वास दिलाता हूँ कि ग्रापका प्रेम मेरे दिल में गहरा प्रभाव डाल चुका है। ग्राप मेरी प्रिय स्त्री हैं। यदि ग्राप चाहें तो मेरा जीवन सुखमय बना सकती हैं। ग्रभी परवेज़ ये बातें कर ही रहा था कि बग़ल के मन्दिर से घंटे की ग्रावाज सुनाई दी।

इसके पश्चात् परवेज़ उठता है ग्रौर मसहरी पर जाकर रंजना का एक हाथ ग्रपने हाथ में ले लेता है ग्रौर उसको एक बार चूमता है। इस चूमने के कारण रंजना के सारे शरीर में एक बिजली सी दौड़ जाती है। इसके पश्चात् परवेज़ दरवाज़ा खोल कर बाहर चला गया।

परवेज के चले जाने के पश्चात् वस्तुतः रंजना के सारे ग्राँसू सूख चुके थे। ग्रौर परवेज़ की बातें उसके हृदय में ग्रपना स्थान बना चुकी थीं। उसके दिल में परवेज़ के प्रेम का प्रभाव हो चुका था। ग्रौर ग्रब वह इस बात को समझने लगी कि परवेज़ की ग्रोर से उसकी बेरुखी परवेज़ के साथ ग्रन्याय होगा।

सवेरा तो हो हो चुका था। गर्मी की छोटी सी रात तुरन्त कट गई। परवेज़ बाबू बाहर जा ही चुके थे। सरोजनी ग्रौर बहुत सी दूसरी ग्रौरतों ने भी महल के कमरे में प्रवेश किया तो क्या देखती हैं कि दुल्हन उसी प्रकार लेटी हुई है ग्रौर जब इन ग्रौरतों ने दुलहन में कोई परिवर्तन नहीं देखा तो सब ग्रौरतें ग्रचरज में एक दूसरे का मुँह ताकने लगीं कि यह क्या हो गया। सरोजनी समझ गई कि मालूम होता है कि उसके भैय्या बेकार सिद्ध हुए। ग़रज ग्रौरतों में भिन्न-भिन्न प्रकार की कानाफूँसी होने लगी ग्रौर सरोजनी

जब दुलहन को जलपान करा चुकी तो अपने पति बसन्त बाबू को बाहर से बुलवा भेजा और जब वह आये तो उनसे सरोजनी ने कहा।

सरोजनी—अरे तुमने कुछ सुना ही नहीं एक अजीब गड़बड़ी हो गई।

व० बा०—अरे क्या हो गया ? कुछ कहो भी।

र०—अरे यही कि परवेज दुल्हन का कमरबन्द न तोड़ सके।

व० बा०—इसका क्या अर्थ।

स०—अरे तुम तो कुछ समझते ही नहीं। मालूम होता है निरे बच्चे हो।

व० बा०—अरे कुछ कहोगी भी कि यूँ ही सारा अर्थ समझ लें।

स०—कहना क्या है यही कि हकीम नूरी का माजूम खा-खा कर तुमने हमारे पेट से सात लड़कों की घाघरा पलटन उत्पन्न कर दी, अब वही माजूम उनके लिये भी लादो।

व० बा०—अरे वाह री मेरी स्त्री क्या बात है, खूब याद दिलाई हम हकीम नूरी का माजूम खा खाकर तुम्हारे पेट से सात बच्चे पैदा कर सकते हैं तो अच्छा है तुम स्वंय ही हकीम नूरी के पास चली जाओ वह तुम्हारे पेट से सात सौ लड़कों की घाघरा पलटन पैदा कर देंगे।

स०—(झुंझला कर) अरे हटो भी काम की बातें करो।

ब०—(मज़ाक के स्वर में) तुम भी अजीब व बेकार औरत हो। आपके भाई साहब प्रेम करें तो हम पकड़े जायें। आपके भाई साहब खाना छोड़े तो हम पकड़े जाये। आपके भाई साहब बेकार सिद्ध हों तो हम पकड़े जायें। अजी वाह हमको तो तुम्हारे भाई ने मार डाला।

ग़जब हाय उस बुत का रो रो के कहना !
मुझे आज जोरू के भैय्या ने मारा !!

स०—(खिसयाकर) इतने दिन में एक काम कहा तो लगे नाक भौं सिकोड़ने !

व० बा०—वाह.........वाह......क्या काम कहा है। आप पर,कुर्बान

जाइयो आपके भइया के लिये में माजूम तलाश करता फिरूँ.... चलो........ चलो रास्ता नापो।

सरोजनी अपने पति की बातें सुनकर क्रोधित हो गई और कहती चली गई कि मर्दों की जात ही ऐसी होती है, धोखेबाज। दिन-रात माजूम खाते फिरते हैं और जब मैंने कहा तो लगे बात बनाने........अच्छा हमसे भी तो काम पड़ेगा तो खूब बदला लूंगी।

इधर सरोजनी यह कहती चली गई। दूसरी ओर बसन्त बाबू दिल ही दिल में सोचते सोचते चले गये कि धत् तेरेकी परवेज़ ने तो आज मर्दों की सारी इज्जत मिट्टी में मिला दी। यदि ऐसी बात थी तो पहिले से कहना चाहिये था। आखिरकार दुनियां भर के वैद्य होते है किस दिन और रात के लिये। धत् तेरे की.................।

इधर औरतों में भिन्न-भिन्न प्रकार की कानाफूंसी हो रही थी। परन्तु परवेज अपने कमरे में बहुत प्रसन्न था। वह अपनी सफलता पर केवल इसलिए खुश था कि उसने रंजना को आज अपनी बात से हरा दिया और अब उसके लिये केवल एक चीज रह गई है। और वह यह कि किसी प्रकार रंजना को को समझा दे कि उसको रंजना से दिली प्रेम है और यह समझा कर वह रंजना का हृदय जीत ले। यह विचार उसके मस्तिष्क में आया कि वह क्यों न अपने भावों को अंकित करने के लिये कलम और दवात की सहायता ले।

ईश्वर की दया से एक तो परवेज बाबू स्वयं ही कवि प्रकृति के व्यक्ति हैं और फिर इस समय तो इनकी अपनी कविता से लाभ उठाना जीवन के लिये हितकर होगा। दुनियां यह मान लेगी कि जीवन साहित्य के लिये नहीं बल्कि साहित्य जीवन के लिये' ठीक नियम है। बस क्या था। इस विचार के आते ही परवेज बाबू कागज तथा कलम लेकर बैठ गये और अपने भावों को अंकित करने का इतना सुन्दर तरीका अपनाया कि वास्तव में कम कवियों को प्राप्त हुआ होगा। इतनी सुन्दर कविता थी कि शायद इनकी हस्तलिखित पुस्तक में ऐसी कविता उपस्थित न होगी। शायद न तो वह ऐसी कविता कह सकते थे और न कह सकते है। ये केवल रंजना के सिलसिले में प्रेम भाव से जन्म लिया है इसी ने उनसे ये कविता कहलवाई है। वस्तुतः बात तो यह है कि

"दिल से जो बात निकलती है असर रखती है" ये उनके दिल की आवाज़ थी जो कविता के रूप में आ गई। कविता ये है।—

मुझे तुम से मुहब्बत है !!

मुझे तुमसे मुहब्बत है यह छोटा सा फ़िसाना है !
मेरे टूटे हुये जज़बात का दिलकश तराना है !!
समझना मत कि ये एक मुख़्तसर सादा सा जुमला है !
मेरे दिल का मेरी हालत का एक रंगीन नक्शा है !!
ये वह अलफ़ाज़ है फ़ितरत भी जिन पर नाज करती है !
जमाने में नये मज़मून का आग़ाज़ करती है !!

यक़ीं इसका तुम्हें होता कि इसमें कुछ हकीकत है !
मैं कैसे तुमसे कह देता मुझे तुमसे मुहब्बत है !!

ज़बां अपनी न दिल अपना न याद आये सवाल अपना !
बहुत दुशवार है लफ़जों में इज़हारे ख्याल अपना !!
जो है तक़दीर उल्फ़त की वही है दास्तां मेरी !
नहीं समझा अगर तुमने तो कुछ शिकवा नहीं तुमसे !!
मगर डर है न कहदे और कुछ कोई कहीं तुमसे !!

न कुछ तुमसे तमन्ना है न कुछ तुमसे शिकायत है।
बस इतनी बात काफ़ी है मुझे तुमसे मुहब्बत है !!

दो बजे तक परवेज़ की कविता तैयार हुई। और अब वह इस चिन्ता में में पड़ा है कि इसको रंजना के पास कैसे भेजें। चुनांचे उसके विचार में एक तरकीब आती है। वह तुरन्त रंजना के भाई सुरेन्द्र को बुलाता है और पूछता है—तुम्हारी बहन इस समय क्या कर रही है। वह कहता है कि चूंकि बहिन अधिक देर बैठने के कारण काफ़ी थक गई थी इसलिये वह इस समय अपने कमरे में विश्राम करने के लिये उठकर चली गई है।

परवेज़ के लिये इससे अच्छा अब कौन सा अवसर हो सकता था। तुरन्त आलमारी में से एक चाकलेट का डिब्बा निकाल कर सुरेन्द्र को देता है और

फिर उसके पश्चात् एक कागज़ देता है (जिस पर कविता लिखी है) और कहता है कि इसको छिपा कर ले जाओ और अपनी बहिन को दे आओ। कभी भी किसी को दिखाना मत। इसको देकर तुरन्त मेरे पास आओ तो एक चाकलेट का डिब्बा और दूंगा। एक चाकलेट का डिब्बा तो न मालूम एंग्लो-इंडियन लड़कियों के लिये काफी से अधिक होता है लेकिन यहाँ यह चीज रंजना के भाई के लिये भी लाभदायक प्रतीत हुई।

वह तुरन्त कागज़ छिपाये हुये लेकर अपनी बहिन के पास दौड़ गया। उसकी बहिन उस समय अपनी मसहरी पर लेटी हुई शान्ति पूर्वक रात्रि के घटनाओं पर ग़ौर कर रही थी कि सुरेन्द्र ने पहुँच कर ये कागज़ अपनी बहिन को यह कह कर दिया कि बहिन यह पत्र छिपा के ले लो, दुल्हा भाई ने दिया है। और ये कागज़ देकर सुरेन्द्र दूसरा चाकलेट का डिब्बा लेने के लिये बिजली की भाँति वापस दौड़ कर आता है। जिस समय सुरेन्द्र ने कागज़ रंजना को दिया उस समय उसको अपने छोटे भाई के भोलेपन पर बहुत हँसी आ गई।

रंजना ने उस कागज़ पर लिखी हुई कविता को पढ़ा उस कविता का एक-एक अक्षर उसके जीवन के भविष्य में चलने के लिये गीता का पाठ बन रहा था। उसके हृदय पर जो कुछ भी प्रभाव पड़ता कम न था। क्योंकि ये कविता परवेज़ ने लिखकर भेजी थी जो उसका पति है।

आज रात्रि के ग्यारह बजे रंजना "महल" में पहुँचा दी गई। और परवेज़ बाबू बुलाये गये। परवेज़ बाबू अपने "महल" के कमरे में प्रवेश किया और फिर दरवाज़ा बन्द कर लिया। थोड़ी देर कुर्सी पर बैठ कर सिगार पीते रहे उसके बाद उठकर मसहरी की ओर बढ़े। और अपनी स्त्री के मुख से आँचल हटाते हैं परन्तु आज रंजना की आँखों में आँसू नहीं हैं बल्कि आज उसके कमल रूपी मुख पर एक विशेष प्रकार की मुस्कराहट है। उसकी शहानी चूड़ियों वाली कलाई उसके गालों पर रखी हुई है।

डर है उन्हें कि नींद में बोसा न ले कोई!
गालों पै रख के सोई कलाई तमाम रात!!

यह देखकर परवेज़ का हृदय न जाने आज कितना पुलकित है। इसलिये रंजना को सम्बोधित करते हुए वह निम्नलिखित दो पंक्तियाँ पढ़ता है।

साक़ी क़दहे शराब दे दे!
महताब में अफ़ताब दे दे!!
लैला मैंने तुझे पुकारा!
"मजनूं" मुझे खिताब दे दे!!

इन पंक्तियों को सुनने के पश्चात् रंजना के होठों की मुस्कराहट साफ प्रकट होती है। उसका गाल एक तो यूँ ही गुलाब का फूल था। और अब वह अधिक खिल गया और उसका मुख परवेज़ से केवल एक बात पूछ रहा था। वह क्या?

शबे वस्ल उनका ये शर्मा के कहना!
बता दीजिये हमसे क्या कीजियेगा!!

अब परवेज़ धीरे से रंजना की मसहरी पर बैठ जाता है। और उसके कोमल करों को अपने हाथ में लेता है। रंजना अपने हाथों को खींचती जाती है। शायद रंजना आज अपने पति से रस्सा कशी करना चाहती है अथवा पंजे की आजमाइश करना चाहती है। परवेज़ बाबू तो बस पसीने से तर हो रहे हैं और रंजना का शरीर भी धीरे-धीरे कुछ अजीब है रानी की दशा में होता जा रहा है। इतने में परवेज बाबू ने रंजना को अपने दोनों हाथों से उठा लिया। अब रंजना ने वाध्य होकर आँखे दी रंजना ज्योंही बैठी परवेज़ उसके सङ्गमरमर जैसे चिकने देह से ऐसा लिपट गऐ जैसे दो इश्क पेचां संगमरमर के बुत पर चढ़ गया हो।

जहाँ तक हो सका रंजना अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न करती है परन्तु क्या करे परवेज़ उसे हर ओर से पकड़े हुये है। वह कहती है "छोड़ दीजिये मुझे............छोड़िये................।

कह रहा है ये आप का इनकार!
नौबत आयेगी हाथा पाई की!!

परवेज अपना होठ रंजना के होंठ से मिला देता है रंजना और परवेज के पसीने के कतरे गंगा यमुना के पानी की तरह मिलते चले जा रहे है यद्यपि बिजली का पंखा तेजी से चल रहा है। फिर भी पसीने की तेजी उसकी गति से ज्यादा है। रंजना का चेहरा लाल होता चला जा रहा है। उसकी आँखों में लाल डोरे पड़ते चले जा रहे हैं। और परवेज़ अपने बाये हाथ में रंजना की कमर पकड़े हुए हैं।

न जाने रात के कितने बजे तक ये दोनों पती–पत्नी जागते रहे किन्तु सवेरे जब परवेज़ चला गया और महिलायें दुल्हन को जलपान कराने आईं तो उन्होंने दुल्हन का अजब रंग देखा !!!

सरोजनी इधर–उधर प्रबन्ध कर रही थी कि एक दाई आई कि आपको बसन्त बाबू बुला रहे हैं। सरोजनी जाती है। उसको देखते ही बसन्त बाबू ने कहा लाओ रुपया दो। आज तुम्हारी आज्ञा को पूरा कर देता हूँ। और हकीम नूरी के यहाँ से माजूम ला दूँ।

इस पर सरोजनी बड़ी क्रोधित होकर बोली—दूर हो जाओ हमारी निगाहों से हमारा भाई कोई ऐसा वैसा नहीं है।

तब बसन्त बाबू कहने लगे—कल तक तो तुम बिल्लो बनी हुई थीं किन्तु आज तो तुम बाघ प्रतीत होती हो बाघ..............

मुहब्बत में मेराज चाहे जो इन्साँ !
खुद उसका बने, उसको अपना बनाले !!

आज परवेज़ अपने भाग्य पर मन ही मन इतरा रहा है कि उसको रंजना का हृदय जीतने में तनिक भी देर नहीं लगी। वह असफलता जो उसने संगीत में पाई थी आज सफलता में परिवर्तित हो गई। चुनांचे सवेरे ही अपनी बहिन को बुलाकर कह दिया कि आज दोपहर में हम रंजना के पास ही रहेंगे। भाई की स्त्री के साथ यह दिलचस्पी आखिर बहिन क्यों न पूरा करती। परवेज़ आज कुछ रंजना के विषय में लिखने बैठ गया और लिखना आरम्भ किया।

कई घण्टों के पश्चात् दोपहर हो गई। परवेज़ दोपहर का भोजन करते

हैं और फिर रंजना के "महल" वाले कमरे में पहुँच जाते हैं। बातें करते-करते परवेज़ रंजना से गाना सुनाने के लिए कहता है। परन्तु रंजना इन्कार कर देती है। परवेज़ का इसरार बढ़ता जाता है और रंजना इन्कार करने में बड़ी अटल रहती है। अन्त में कुर्सी से उठकर परवेज़ तुरन्त रंजना का पैर पकड़ लेता है और कहता है आपको मेरी कसम है, गाना सुनाइये।

अब रंजना प्रेरित होकर गाती है और कहती है अच्छा मेरा पैर छोड़िये। ये आप क्या कर रहे हैं। मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगी। यह सुनना था कि परवेज़ ने सब दरवाजे, खिड़की और रोशनदान इत्यादि बन्द कर दिये और कहा "लीजिए अब आवाज़ बिलकुल बाहर नहीं जावेगी।"

थोड़ी देर के पश्चात् इधर-उधर की बातें करके दर्द पूर्ण और बहुत अच्छे स्वर में गज़ल के प्रसिद्ध कवि श्री "जिगर" मुरादाबादी की प्रसिद्ध गज़ल गाती है। ऐसा जान पड़ता है कि यह उसके हृदय की आवाज़ है जो बहुत गहराई से निकली चली जा रही है। लीजिये आप भी इस ग़ज़ल का आनन्द उठाइये।

नज़र मिलाके मेरे पास आके लूट लिया !
नज़र हटी थी कि फिर मुसकुराके लूट लिया !!
शिकस्ते हुस्न का जलवा दिखाके लूट लिया !
निगाह नीची किये सर झुकाके लूट लिया !!
सलाम उसपे कि जिसने उठाके परदये दिल !
मुझी में रहके मुझी में समाके लूट लिया !!
बड़े वह आये दिलो जाँ के लूटने वाले !
नज़र से छेड़ दिया गुदगुदा के लूट लिया !!
कोई ये लूट तो देखे कि उसने जब चाहा !
तमाम हस्तिये दिल को जगा के लूट लिया !!
ख़ुशा वो जान जिसे दीगई अमानते इश्क़ !
ज़हे वो दिल जिसे अपना बना के लूट लिया !!

अपनी रंजना के मुख से दर्द भरी आवाज़ में "जिगर" की यह ग़ज़ल सुनकर परवेज़ थोड़ी देर के लिये बिलकुल बे सुध बुध हो गया। वह अजीब

हिचकिचाहट में पड़ गया। कुछ देर तक उसकी यही समझ में नहीं आया था कि किस मुँह से उस भगवान को धन्यवाद दूँ कि मुझे ऐसी सर्वगुण सम्पन्न स्त्री दी है कि मैं उस पर नाज़ करूँ। थोड़ी देर तक तो वह बिलकुल अपने को खो बैठा था। बोलना चाहता था परन्तु उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या कहे।

अन्त में परवेज़ ने बड़े प्रेम भरे स्वर में रंजना की ओर देखते हुए कहा—मैंने भी आपसे प्रभावित होकर कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। यदि आज्ञा हो तो सुनाऊँ। तब रंजना ने कहा पूछने की क्या आवश्यकता है ये तो हमारा सौभाग्य है कि आपको भी संगीत से प्रेम है। चुनांचे आज जो उसने कुछ पंक्तियाँ कही हैं, रंजना को सुनाता है। सुनिये—

निगाहों को रूहों से सरशार करलें !
मुक़द्दर को मिलजुल के बेदार करलें !
लबों को कहीं रह न जाय शिकायत !
इधर आओ इक बार फिर प्यार करलें !
मैं क़ुर्बान इक बार फिर प्यार करलें ।।

निगाहों में बेख़ाबियाँ पल रही हैं !
तबस्सुम में मजबूरियाँ ढल रही हैं !
लहू रेशे रेशे में बल खा रहा है !
रगो पै में अँगड़ाइयाँ पल रही हैं !
मुनासिब है इक बार फिर प्यार करलें !!

मेरी शायरी की जवानी तुम्हीं हो !
जवानी की रंगीं कहानी तुम्हीं हो !
जवानी की रंगी कहानी तो क्या है !
मेरा मक़सदे जिन्दगानी तुम्हीं हो !
ख़ुदा हाफिज़ इक बार फिर प्यार करलें !

यूँ तो रंजना परवेज़ की कविता की हर पंक्ति की प्रशंसा करती थी परन्तु जिस समय कि परवेज़ ने अपने अन्तिम शेर की अन्तिम पंक्ति पढ़ी तो

रंजना लज्जित हो गई और कहने लगी आपकी अशिष्टता मुझे पसन्द नहीं आती ।

अन्त में पति-पत्नी का कवि सम्मेलन समाप्त हुआ और परवेज़ बाबू ने ज्योंही उठकर अपनी दुल्हन को छाती से लिपटाना चाहा तो रंजना ने अपने आपको समेटते हुए कहा "कुछ नहीं हुस्न की सरकार में हसरतों के सिवा" ।

रंजना के इस शब्द पर परवेज़ तथा रंजना दोनों हँस देते हैं और एक दूसरे के गले लिपट जाते हैं । परवेज़ रंजना के गालों को चूमता जाता है और रंजना अपने दिल की भरी हुई आवाज से कहती जाती है—यह वह दिल है जिसे अपना बना के लूट लिया ।

परवेज़ तथा रंजना का विवाह होने के पश्चात् ये तीसरी मुलाक़ात थी । परवेज़ रंजना के पूर्ण-रूप से आधीन होता चला जा रहा था । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अपनी स्त्री के लिये कौन सी ऐसी बात कहे कि वह उससे ज्यादा प्रसन्न रहे और स्नेह करने लगे । परवेज़ किसी क्षण भी यह नहीं चाहता था कि रंजना से दूर रहे । वह नूरजहाँ तथा जहाँगीर की कहानी सुनता तो था परन्तु स्वयं आज उसके सामने "रंजना महल" मौजूद है न जाने उसके अन्दर क्या-क्या खिंचावट है । आखिर रंजना से वह क्यों इतना प्रभावित होता जा रहा है । परवेज़ को अपनी रंजना के ऊपर नाज़ है कि अब उसको ऐसी चिरसगिनी मिली जो संसार में बहुत कम सौभाग्यशाली को मिलता है । उसके हृदय में भिन्न-भिन्न प्रकार की विचारधारायें आती हैं कि कौन सी ऐसी बात कह कर अपनी प्यारी नव विवाहिता स्त्री को प्रसन्न करे । उसको यह भी ख्याल था कि वह किससे अपनी स्त्री की सुन्दरता का वर्णन करे कि उसकी सुन्दरता का डंका सारे संसार में फैल जाय । इन्हीं सब विचारों तथा रंजना से बातें करने में शाम के पाँच बज जाते हैं । और अब परवेज़ बाबू कमरे से बाहर निकलते हैं । रंजना भी महल से निकल कर बाहर आकर अन्य औरतों के साथ जलपान करती है । और परवेज़ बाहर अपने मित्रों के साथ जलपान करता है और फिर इधर-उधर टहलने के लिये चला जाता है ।

होते-होते रात हो जाती है। और आज रात को बजाय बारह बजे रात के आने के दस बजे रात को अपने स्त्री के महल वाले कमरे में प्रवेश करता है। चूंकि रंजना को भी परवेज़ के बिना चैन ही नहीं आता इसलिये उसने परवेज़ से वचन ले लिया था कि आज रात को जरा शीघ्र ही आइयेगा। अब दोनों दुल्हा दुल्हन एकत्र हो गये और यहाँ-वहाँ को सब बातें होने लगीं।

रंजना बड़े विनीत स्वर में परवेज़ से एक बात कहने के लिये आज्ञा मांगती है। परवेज़ उसको एक बात के बजाय सौ बात कहने की आज्ञा देता है। जब परवेज उसको आज्ञा दे देता है तो फिर रंजना परवेज़ से वचन लेती है कि वह उसको बातों पर क्रोध तो नहीं करेगा अथवा बुरा तो नहीं मानेगा। परवेज़ इस बात का पूर्ण रूप से उसको विश्वास दिलाता है कि इस प्रकार की व्यर्थ की बातें अपने हृदय में न लाये। बहरहाल रंजना बात-चीत यूँ आरम्भ करती है।

र०—देखिये आप ये भलीभाँति जानते हैं कि मुझ में और काशी में प्रेम है!

प०—जी हाँ।

रं०—अब मैं आपकी स्त्री हूँ और आप मेरे पति!

प०—जी हाँ।

रं०—आप मुझे केवल एक बात की आज्ञा दीजिये।

प०—वह क्या?

र०—वह यही कि मैं काशी से बिलकुल उस पवित्र रूप से मिल सकती हूँ जैसे कि उनसे पहिले मिला करती थी।

प०—देखिये! मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपनी खुशी का महल किसी की लाश पर बनाया है। मैं आप से ईश्वर की शपथ खा कर कहता हूँ कि आप जब भी चाहें काशी से मिलें और काशी रुपया पैसा खाने कपड़े आदि जिस चीज को सहायता लेना चाहें आप सहायता दे सकती हैं मेरा और आपका रुपया कोई दो नहीं है। एक ही है। काशी के लिये जितने रुपये की आपको जिस समय आवश्यकता हो आप मुझसे ले सकती हैं। काशी से जब भी आप

चाहें, जहाँ भी चाहें मिल सकती हैं। मुझे आप पर पूरा विश्वास है। आप विश्वास रखिये दुनियाँ चाहे आपके विरुद्ध जो कुछ भी कहे परन्तु मैं आपकी दयालु दृष्टि का भिखारी हूँ। आप जिस समय भी चाहें काशी को बुला सकती हैं।

परवेज की इन बातों का प्रभाव रंजना के दिल पर कैसा हो सकता था? उसका हृदय अपने पति की बातों से और काशी के प्रेम से भर आया और आँखों से आँसू निकल पड़े। वह तुरन्त परवेज से लिपट गई।

परवेज़ को अपनी स्त्री की वेलाग बात कुछ इस प्रकार पसन्द आई कि दुनियाँ में उसको सबसे ज्यादा प्रिय चीज उसको केवल अपनी स्त्री ही दिखाई देने लगी। परवेज़ की आँखों से भी प्रेम के आँसू छलक पड़े और वह भी रंजना से बड़े जोर से लिपट गया।

रोने लगे आखिर ज्यादा खुशी से हम !!

दोनों के नैनों से प्रेमाश्रु बह रहे थे। और दोनों एक दूसरे से लिपट कर सो जाते हैं। परवेज़ और रंजना के मुँह बिलकुल मिले हुए हैं और दोनों एक दूसरे से लिपटे हुए हैं और इसी दशा में दोनों निद्रा देवी की गोद में चले गये।

रख के मुँह सो गये उन आतशीं रुखसारों पर !
दिल को था चैन तो नींद आगई अङ्गारों पर !!

रंजना ने आज्ञा केवल आज इसलिये माँगी है कि कल वह अपनी मायके जा रही है और उसकी परवेज़ के घर से बिदाई है।

———

अध्याय चौबीसवाँ

भूल सी भूल है "इहसान" जो फरमाते हैं !
हाँ कहीं आपको देखा है मगर याद नहीं !!

परवेज के घर पर सब रीति-रिवाज हो जाने के पश्चात् रंजना अन्त में अपने घर आई। वहाँ पर उसके माता-पिता सब प्रसन्न दिखाई पड़े परन्तु हृदय में एक ज्वार था। उसकी आँखें किसी और को भी देखना चाहती थीं।

आता है इस तरह भी मुहब्बत में इनक़लाब !
ख़ुद मुझको ढूंढ़ता है वो जलवा कभी-कभी !!

रंजना का विवाह परवेज से हो चुका है अब उसके लिए काशी के घर पर जाना रिवाजी तौर पर बुरा नहीं है तथा वह काशी के घर गई। ज्योंही कि उसने पहला पग रखा तो क्या देखा कि काशी के पिताजी अपने पुत्र के घर छोड़ने के शोक में पीड़ित हैं और माता पुत्र की याद में रो रही है कि न जाने इस जमाने में लड़का कहाँ-कहाँ मारा-मारा फिरता होगा। कहाँ रहता होगा ? क्या खाता होगा ? क्या पीता होगा ? परदेश में किसके दरवाजे पर पड़ा होगा। जज साहब कई जिलों में रह चुके हैं। उन्होंने हर जिले में अपने मित्रों को तार भेज दिया कि पता चलाओ कि काशी कहाँ हैं। हर ओर से उत्तर "नहीं" का आया।

वह काशी जिसका पसीना किसी ज़माने में गुलाब था, वह काशी जिसका चेहरा तथा मुसकराहट सभी हृदयों को जीवन देती थी, उसी काशी के भवन पर उसी काशी की मंगेतर रंजना उसी काशी के माता-पिता से आज मिलने-जुलने गई। किन्तु काशी नहीं है। उसका ग़ायब होना उसके घर वालों के लिये मृत्यु के समान है। काशी ! काशी कह कर पिता बहुधा रातों में उठ जाया करते और अक्सर माता को काशी की याद में मस्तिष्क में गर्मी उत्पन्न हो जाती है। काशी तुम कहाँ हो ? रंजना के मस्तिष्क में भी यही प्रश्न हुआ। काशी मैं अब भी तुम्हारी हूं..........मैं आगई हूँ...........तुम कहाँ हो ? रंजना भी इस समय यही सोच रही है।

परन्तु न जाने काशी कहाँ है। माता-पिता को वियोग का दुख दे गया।

मैं नज़र से पी रहा था तो ये दिल ने बद-दुआ दी !
तेरा हाथ ज़िन्दगी भर कहीं जाम तक न पहुँचे !!

अन्त में थोड़ी देर बैठने के बाद काशी के घर पर काली घटायें छाने लगीं और रंजना उठकर अपने घर में वापस चली आई और आकर अपना पुराना बक्स खोला। जिसमें से काशी का चित्र निकाला। काशी तुम कहाँ हो ? रंजना ने काशी के चित्र को सीने से लगाया और कहती है "ऐ चित्र तू ही बता मेरा काशी कहाँ है ? शायद मेरा काशी मृत्यु के घाट उतर गया। रंजना का जी स्वयं अपने घर में घबड़ा रहा है। हृदय को कैसे धीरज बँधाये, कैसे काबू पाये ? कि इतने में रंजना की एक सहेला काशी का वह पत्र जो काशी ने रंजना के पिता श्री रविन्द्र को लिखा था और यह वही पत्र है जिसको काशी ने स्टेशन पर आकर लेटर बक्स में डाला था, लाकर दिखाया। यह पत्र लगभग दो पन्ने का था, और लगभग दूसरे ही दिन से रंजना के पिता तथा काशी के पिता दोनों ही इस पत्र को पाने के बाद से अब तक काशी का शोक कर रहे हैं, लाई।

परन्तु काशी तुम कहाँ हो...........किसी को नहीं मालूम..........किस ....ने तुम्हारे दिल पर चोट दी। औरत ने ?....रंजना ने ? भाग्य ने ?

रंजना अब अपने पिता के नाम लिखित पत्र पढ़ती गई। चूँकि पत्र लम्बा है इसलिये उसका एक अंश निम्नलिखित पंक्तियों में था—

तिथि १७ मई

प्रतापगढ़

श्री रविन्द्र चाचा,

प्रणाम !!

लोग जब नवीन कार्य उठाते हैं तो पहिले परमात्मा का नाम लेते हैं। मैं आपका पत्र आपही के नाम से आरम्भ करता हूँ क्योंकि अब भगवान का नाम लेने की आवश्यकता ही नहीं है।

न किसी की आँख का नर हूँ न किसी के दिल का क़रार हूँ !
जो बिगड़ गया वो नसीब हूँ जो उजड़ गया वो दयार हूँ !!

आपने रंजना की मंगनी मुझसे की थी किन्तु आपने रंजना को एक पूँजीपति के हाथों बेच दिया। भगवान आपको अच्छा खासा लाभ दे। आपने मेरे माता-पिता के सीधे-साधे होने का अनुचित लाभ उठाया। वह इस कारण से कि मेरे माता-पिता के हृदय में मेरा प्रेम तो था नहीं किन्तु आपके हृदय में पूँजीपति की पूँजी से प्रेम अवश्य था। आपको याद होगा कि केवल आपके राय देने के कारण मैं वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के लिये लखनऊ गया था और केवल आपने यह आशा दिलाई थी कि आप मेरी वकालत चलवा कर रहेंगे। इस बात का हज़ार-हज़ार धन्यवाद कि आप मेरी वकालत तो न चलवा सके किन्तु आपने मेरे हृदय के नशैमन को अवश्य जलवा दिया। क्या आपको मालूम नहीं था कि रंजना मुझसे प्रेम करती है और मैं उससे·········
यदि नहीं मालूम था तो क्या आपने रंजना से इस बारे में पुछवाया भी था ?····

आपने मेरे जीवन को नर्क की अग्नि में झोंक दिया। और············कहीं का न रखा। आपने मेरे जीवन के साथ एक मजाक किया है जो एक सख्त धोखा है।

मैं आपको नहीं बता सकता कि आज मेरे हृदय में कितने अंगारे जल रहे हैं। और मैं किस मंजिल की ओर जा रहा हूं, क्यों जा रहा हूँ ? और कैसे जा रहा हूँ··············

केवल एक अन्तिम कष्ट आपको दे रहा हूँ। वह यह कि मेरी ओर से मेरे माता-पिता को ये पंक्ति सुना दीजियेगा।

"कारे जहाँ दराज है अब मेरा इन्तज़ार कर !"

अभागा

काशी

एक ओर तो अपनी रुपहली तथा सुनहली किरणों की पूँजी लुटाकर सूर्यनारायण अस्त हो रहे थे और सन्ध्या होने का संकेत कर रहे थे। दूसरी ओर इस पत्र को पढ़ने के पश्चात् रंजना का दिल डूबने लगा और वह आँगन में आकर चारपाई पर लेट गई। अभी उसे लेटे हुए पाँच मिनट बीते होंगे कि उसको मतली आना शुरू हो गई। उसको दनादन तेरह क़ै हो गयीं। छाती में बड़े ज़ोरों की धड़कन उठी और वह बेहोशी में पड़ गई उसी बेहोशी की दशा में वह अपनी माता से कहने लगी कि "परवेज़ को तार दे दीजिये" और रंजना उसी बेहोशी में पड़ी-पड़ी रात भर काट लेती है। इधर जब परवेज़ को रंजना का तार मिला तो वह व्याकुल हो गया और धनुष के छूटे हुए तीर की भाँति वह मोटर लेकर तुरन्त सवेरे प्रतापगढ़ में श्री रविन्द्रनाथ के घर पर आ पहुँचा।

परवेज़ को देखते ही रंजना लिपट गई और कहने लगी—मुझको शीघ्र से शीघ्र मिर्ज़ापुर ले चलिये। परवेज़ तुरन्त सामान ठीक करने लगा और रंजना को मोटर से लेकर तुरन्त मिर्ज़ापुर रवाना हो गया।

एक तो परवेज़ जैसे पति का पहलू था ही दूसरे ठण्डी हवा के झोंके। दोनों ने रंजना की दशा ठीक करदी। जब दोनों मिर्ज़ापुर की मंजिल पर पहुँचे तो वहाँ पर फिर कुशल मंगल के साथ—हर दिन होली और रात दीवाली हो गई।

वो जोनूने इश्क़ फिर आगया !
वो बहारे हुस्न फिर आगई !!

अध्याय पच्चीसवाँ

दुनियां की महफिलों से उकता गया हूँ यारब !
क्या लुत्फ़ अन्ज़ुमन का जब दिल ही बुझ गया है !!

आगरा का शहर यूं तो अपने ताजमहल के लिए सारी दुनियां में प्रसिद्ध है और बहुत से लोग इस विख्यात इमारत को देखने के लिए आया करते हैं। इसके अलावा और भी बहुत सी सुन्दर तथा शानदार इमारते हैं जिनको देखना बहुत से लोग अपने जोवन का कर्त्तव्य समझते हैं और बात भी यही है कि यदि आगरा प्रसिद्ध है तो केवल अपनी शाही इमारतों के लिये ही प्रसिद्ध है।

परन्तु वह लोग जो आगरा के खास निवासी हैं यह भली भांति जानते हैं कि इन भवनों के अतिरिक्त आगरा एक और चीज के लिये भी प्रसिद्ध है और वह यहां का "नोबता है"। जी हां नोबता।

आप पूछेंगे कि आखिर नोबता क्या चोज है और कोनसी बला है तो सुनिये एक लम्बी कहावत यूं वर्णन की जाती है और पुरानी बात है कि "नोबत व पूंजा रसीद (यहां तक नोबत पहुँची) आगरे के मुहल्ले का नाम है। इस मुहल्ले के बारे में आगरे के निवासी बहुत ही मनहूस विचार करते हैं और इस मुहल्ले के बारे में प्रसिद्ध है कि कोई भों इक्का बिना एक बार उलटे हुए नहीं गुजरेगा। कोई

भी मनुष्य इस मुहल्ले से बिना बीमार हुए या मुर्दा हुए नहीं निकलेगा। कोई भी मोटर बिना बिगड़े इस ओर से नहीं गुज़रेगी। यहाँ तक कि कोई भी साइकिल वाला ऐसा न होगा जो इधर से होकर गुज़रा हो और उसकी साइकिल में पंचर न हो गया हो और कोई भी पैदल चलने वाला मुसाफिर ऐसा न होगा जिसको आकर यहाँ पर ठोकर न लगी हो, गिर न पड़ा हो और चूँकि इस मुहल्ले की ज़मीन पर हर एक के साथ कोई न कोई घटना अवश्य घटती ही रहती है इसलिये लोग यहाँ पर घटना के समय सदा यही कहते हैं कि "नौबत व ईजाँ रसीद (नौबत यहाँ तक पहुँची) जिसका फल यह हुआ कि लोग इस मुहल्ले को नौबत व ईजाँ रसीद जैसा बड़ा नाम तो न दे सके अलबत्ता उसको नौबत कहने लगे और बाद को इस जमीन से आगरा के निवासी कुछ इतना चिढ़ गये और बुरा ख्याल करने लगे कि उनको "नौबता" कहना आरम्भ कर दिया। अब लोग इसको नवीन उर्दू साहित्य के अनुसार "नौबता" कहते हैं।

इस मुहल्ले के खिलाफ़ आगरा वालों के घृणा की ये दशा है कि फ़िरोजाबाद जो आगरा की एक तहसील है और जो अपनी चूड़ियों के लिये सारी दुनियाँ में प्रसिद्ध है उसकी सड़क नौबता से होकर गुजरती है परन्तु दूसरी सड़क जो दूर का मार्ग है लोग उससे आना जाना पसन्द करते हैं। परन्तु नौबता जैसे निकटवर्ती मार्ग से आना जाना पसन्द नहीं करते।

और वास्तव में ये मुहल्ला भी अजीब ही मुहल्ला है। इस मुहल्ले को देखकर भय मालूम होता है। इधर की ओर न तो बिजली का प्रबन्ध है न पानी के नल इत्यादि का ही प्रबन्ध है। केवल नगर के दो बड़े कब्रिस्तान अवश्य हैं। एक तो मुसलमानों का बड़ा क़ब्रिस्तान है, दूसरा एँग्लो इन्डियन का बड़ा क़ब्रिस्तान है। इसी के साथ-साथ इस मुहल्ले में एक विशाल पेड़ों का बहुत बड़ा बगीचा है। इस बग़ीचे को बहुधा लोग बबूल और बेर का जंगल कहते हैं। इसके हर एक पेड़ों की पत्तियाँ अधिकतर सूखी रहती हैं शायद इस बग़ीचे में कभी बसन्त आता ही नहीं और इस हिस्से में एक बहुत ऊँचा सा टीला है। उस टीले के अन्दर बहुत सी बिल हैं जिनके अन्दर खतरनाक

जहरीले सर्प रहा करते हैं। सर्प आज़ादी से बहुधा दिन में भी अपनी बिलों के बाहर आया जाया करते हैं। और इस टीले में बिलों के अतिरिक्त बहुत सी मांदे हैं जिनमें जंगली पशु जैसे गीदड़, सियार इत्यादि रहा करते हैं और जब इस टीले के नीचे उतरिये तो गन्दे पानी की एक बहुत बड़ी गड़ही आपको मिलती है। यह गड़ही यद्यपि बहुत बड़ी है परन्तु वर्ष के अधिक दिनों में सूख जाती है। और बहुत थोड़ा सा गन्दा पानी मौजूद रहता है जिसे जगंली पशु बहुधा आकर पीते रहते हैं। इस गड़ही के किनारे पर इमली के बहुत झंगाड़ पेड़ हैं। परन्तु पेड़ भी कुछ इतने पुराने हो गये हैं कि न जाने कब आंधी चले और गिर जांय।

यहाँ पर जितने पेड़ हे उन पर या तो दिन में गिद्ध बैठे रहते है या दोपहर में शायद चील बैठी अन्डे दिया करती हैं और जब रात होती है तो इन पेड़ों पर बैठने वाले उल्लू अपनी हूक से सारे जगंल की फिज़ा को भयानक करना चाहते है परन्तु जब ये मनहूस चिड़िया बोलना आरम्भ करती है तो कोई भी पंक्षी दम नहीं मारते। बल्कि अपने परों को समेट कर शान्त हो जाते हैं और उल्लू की हूक इस मुहल्ले में जोर शोर से हुआ करती है।

इस मुहल्ले में केवल एक ही घर है जो कभी साफ़ नहीं होता है। ये घर किसी मारवाड़ी सेठ ने यहाँ पर केवल इसलिये बनवाया था कि उसका लड़का बहुत ज्यादा ज्वर से पीड़ित हो गया था और डाक्टरों ने कहा था कि इसे खुली वायु में रखना चाहिये। सेठ ने अपने प्रिय लड़के के लिये यह घर बनवाया और इसमें बहुत सी खिड़कियाँ और जंगले लगवाये परन्तु आपको अचरज होगा कि ये घर बहुत छोटा है। इसलिये कि पहिली मंजिल में प्रवेश करने पर कोठरी तथा फिर उस पर दालान और कोठरी की छत के ऊपर एक लम्बा दालान और एक बड़ा सा कमरा है और बस। ये कमरा चारों ओर से खुला हुआ है इसमें लगभग चौदह खिड़कियाँ हैं। पाँच-पाँच खिड़कियाँ दोनों ओर तथा दो-दो खिड़कियाँ उत्तर और दक्षिण की दीवार में है।

अभाग्य से जब माहमारी का लड़का इस खुले हुए मैदान की हवा खाने के लिये अपनी बीमारी के समय इस घर में आया तो उसकी दशा दिन पै दिन

खराव होती गई। और वह एक दिन परलोक को सिधार गया। उसके पश्चात् तो इस सेठ ने इस घर की ओर तो क्या इस मुहल्ले की खबर तक न ली। चुनांचे साधारणतया लोग भी इस घर को नौबता की बहुत मनहूस उत्पादक कहते हैं। इस घर के ऊपर बहुत बड़े पीपल के पेड़ का साया पड़ता है जिसके कारण दिन में तो ये घर बहुत ठंडा रहता है और सूर्य का प्रकाश तो इस घर पर आ भी जाता है परन्तु इसकी धूप की किरणें कभी भी इस घर तक नहीं पहुँचती हैं। ये घर कंकड़ी का बना है, सड़क के किनारे है। आगरे की म्युनिसिपैलटी ने इधर कोलतार की सड़क बनवाना उचित न समझा। इस घर के सामने मुगलों के समय का एक बहुत बड़ा इमामबाड़ा है जिसकी लगभग हर दीवार और छत गिर चुकी है। केवल एक ओर की कुछ चारदीवारी का भाग पुरानी दशा में शेप रह गया है। वस्तुतः इस मुहल्ले में आते हुये बड़ा भयानक डर मालूम होता है। इस मुहल्ले में दिन में आते भी डर लगता है तो रात का क्या पूछना है। लोग किसी गर्भवती महिला को उस ज़माने में नौबता की ओर से नहीं गुज़रने देते थे क्योंकि उसके लिये ये सबसे खतरनाक है। बच्चों को इधर आना बिल्कुल मना है क्योंकि वह डर जाते हैं। नवयुवक यदि अपनी जवानी की कुशलता चाहें तो कभी इधर नहीं आयें और वृद्ध यदि अपने जीवन की कुशलता चाहे तो कभी न इधर आयें।

वस्तुतः ये मुहल्ला बहुत वीरान है और उसके वातावरण में कुछ अजीब प्रकार के भय का अंश पाया जाता है। आगरा के लोग इसका सवेरे-सवेरे नाम नहीं लेते। लोग बहुधा इस मुहल्ले को नर्क से भी बुरा समझते हैं और उसको साधारणतया नर्क की मनहूसियत का सा समझते हैं। महिलायें जब किसी अभागे को सराहतीं हैं तो कहती हैं कि "जा जा ईश्वर चाहेंगे तो तेरी मरघट नौबता में बनेगी।" अब हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि नौबता कैसा स्थान है—

मेरी जिन्दगी है ज़ालिम तेरे ग़म से आशकारा !
तेरा ग़म है दर हक़ीक़त मुझे ज़िन्दगी से प्यारा !!

जिस समय रंजना का सिन्दूर बन्धन हो रहा था ठीक उसी समय काशी

लगभग बारह बजे रात को अपने घर से धीरे से निकला और शान्तिपूर्वक एक अन्धेरी तथा लम्बी सड़क पर आ गया। उसने एक बार अपने घर की ओर बड़े दुखित मन से देखा "ये वही घर है जिस में हम बचपन से रहते आये हैं। मेरे माता-पिता इसी घर में रहते हैं। और अब? वाह रे मेरा भाग्य!" यही विचार अपने दिल में लिये और आंखों से आंसू के मोती बहाता हुआ काशी स्टेशन पर पहुँचा। यहाँ आकर उसने वह पत्र लैटर बाक्स में छोड़ा जो कि उसने श्री रविन्द्र के नाम लिखा था। और जब गाड़ी आई तो उसमें बैठकर चला गया।

उसका नहीं पता कि वह इस समय कहाँ जा रहा है। उसके पास एक छोटा सा सूटकेस है और देह पर एक मलमल का उज्ज्वल कुर्त्ता और धोती है। उसको इस समय ऐसा विलाप हो रहा था कि ऐसा मालूम होता था कि वह अब सदैव के लिए अपने घर वालों से बिछुड़ कर जा रहा था। गाड़ी में बैठकर वह अपना सिर गाड़ी के डिब्बे की खिड़की पर झुका लेता है कि दूसरे यात्रा करने वाले ये न जान सकें कि वह आंसू की धार बहा रहा है। उसकी आँखों से निकलते हुए आंसू के क़तरे बड़ी तेज़ गति से डिब्बे की दीवार पर बहते चले जा रहे हैं। इस समय उसके मस्तिष्क की दशा अजीब सी हो रही है। रेल के चलने की आवाज़ तथा शोर उसकी परवेज़ की शादी वाले बाजे की याद दिला रही है।

रेल तो वह सभ्यता से भरी हुई मशीन है जो अपने सिर पर धनी, नीच, ऊँच, दीन प्रत्येक को लेकर चलती है और ठीक समय से प्रत्येक को एक स्थान से दूसरे स्थान को सुविधापूर्वक पहुँचा देती है। यही नहीं बहुधा खुशनसीबों को भी यहाँ से वहाँ पहुँचा देती है और बहुधा दुख के मारों की दुनिया बदल देती है।

परन्तु इस समय प्रतापगढ़ से गुज़रने वाली रेल दुखित काशी को न जाने कहाँ ले जा रही है। काशी भी दुख का मारा दुनिया से प्रभावित होते-होते उसी खिड़की पर सो जाता है परन्तु रेल है कि तेज़ गति के साथ आगे ही बढ़ती जाती है। रुकने का नाम ही नहीं लेती है। चुनांचे चलते-चलते अब

उसकी रेल टूँडले जंकशन पर से गुज़री और प्रात:काल के छ: बजने को आये और घंटे दो घंटे के पश्चात् अर्थात् आठ बजे सबेरे ही ये रेल आगरा के स्टेशन पर रुक गयी। चूँकि अब ये गाड़ी यहाँ से आगे नहीं जायेगी इसलिए अब सारे यात्रा करने वाले यहाँ उतर जाते हैं। चुनांचे डिब्बे से जब सब यात्री उतरने लगे तो किसी ने काशी को जगाया और कहा—"उठ जाइये अब यहाँ से आगे गाड़ी नहीं जायेगी। काशी ने पूछा—कौन सा स्टेशन है? मुसाफिर—"आगरा है बाबूजी।"

काशी ने पहिले तो उठकर अपनी आँखें मलीं। उसके पश्चात् अपने हाथ में अपना सूटकेस लेकर डिब्बे से नीचे उतरा और स्टेशन के दरवाजे पर आकर बिना टिकट यात्रा करने का महसूल अदा किया। इसके पश्चात् बाहर आकर एक रिक्शा करके उस पर बैठ गया और सिगरेट पीते हुए एक बहुत ही साधारण भोजनालय में पहुँचा। भोजनालय तक पहुँचने में उसका सिगरेट समाप्त हो चला था। इसलिये दूसरा सिगरेट जलाया। भोजनालय के मैनेजर ने एक कमरा और उसकी चाबी काशी को दे दी। काशी उस कमरे में जाकर बीच की चारपाई पर लेट गया और वह थोड़ी देर में सो गया। उसकी अर्जीब भयानक दशा हो रही थी। बाल बिखरे हुए हैं और मुख मलीन। सूटकेस कोच के पास रखा हुआ है। कमरे का दरवाज़ा बन्द है और बिलकुल अँधेरे में काशी सो रहा है। उसी समय का सोया-सोया काशी बिलकुल तीन बजे संध्या को जागता है और उठने के पश्चात् मुँह धोता है। उसको भोजन करने की इच्छा बिलकुल ही नहीं होती अलबत्ता नौकर से कह कर चाय मँगाता है। चाय पीने के पश्चात् भोजनालय वाले से कहकर किराये पर एक साइकिल लेता है और सारे आगरे का चक्कर लगाने के लिए निकलता है। सन्ध्या के लगभग चार बजे वापस आता है। दूसरे दिन सबेरे फिर साइकिल लेता है और चल देता है। आज वह घूमते-घूमते आगरे के उसी मुहल्ले नौबता में पहुँचता है। उसको इस मुहल्ले का अकेला घर मारवाड़ी सेठ वाला बहुत पसन्द आता है। पता इत्यादि की पूछताछ करने के पश्चात् वह मारवाड़ी सेठ के पास जाता है और उस घर को किराये पर ले लेता है और उसी दिन उसकी सफाई आदि

कराके वह ऊपर वाले कमरे में रहना प्रारम्भ कर देता है और मुरली नाम के एक व्यक्ति को नौकर रख लेता है। चुनांचे अब आज से इस घर में रहने वाले दो हो गए। एक तो काशी दूसरा उसका नौकर मुरली। इसी कार्य के साथ-साथ काशी ने एक कार्य और भी किया और वह यह कि इम्पीरियल बैंक जा कर कुछ रुपया जमा करता है जो रुपया काशी अपने सूटकेस में रख कर लाया था।

काशी अपने घर के ऊपर एक छोटा सा बोर्ड लगा देता है। यह बोर्ड काले रंग का है और उस पर लिखा हुआ है "शोक प्रभात"। काशी ने अपने इस नवीन घर का नाम "शोक प्रभात" रखा है।

आज की रात काशी अपने इस शोक प्रभात में काट रहा है और वहाँ आज रंजना और परवेज़ की दूसरी सुहागरात है जो कि परवेज़ के जीवन में सबसे सफल रात सिद्ध हुई है। आज ही की रात वह है जब परवेज़ ने अपनी दुल्हन रंजना के मुख से आँचल हटाया है तो उसके होठों पर हल्की मुस्कान थी और सुहानी चूड़ियों वाला कोमल कर उसके गालों पर था।

तुम हमारे किसी तरह न हुए !
वरना दुनिया में क्या नहीं होता !!

आज की रात काशी सुनसान वीराने में केवल बिना दूध की चार प्याली चाय पीकर और तीन तीन सिगरेट पी के अपने छोटे से लैम्प की बहुत धीमी रोशनी में एक दुख का मारा हृदय लेकर सो रहा है और मुरली नीचे वाले दालान में सो रहा है।

रात्रि काफी व्यतीत हो चुकी थी। मुरली के खाँसने की आवाज़ आती है या उल्लू की हूक की आवाज़ आती है। परन्तु काशी है कि एक काले रंग की चादर ओढ़े हुए अपने हवादार कमरे में सो रहा है। कमरे की खिड़कियों से बाहरी हवायें तेजी से आ रही हैं और काशी के शरीर को थपेड़े लगा कर चली जाती हैं। इस नौबता में केवल काशी का घर है और उसमें लैम्प टिमटिमा रहा है वरना सारे मैदान में सुनसान मैदान फ़ैला हुआ था। बस ईश्वर की ही मेहरबानी थी नहीं इस समय मामला बड़ा संगीन था।

जिस रात को काशी अपने घर से निकला और बारात में सम्मिलित होने के पश्चात् जज साहब तथा उनकी स्त्री आदि लौट कर अपने घर आये तो सारे घर में अँधेरा पाया। किन्तु वह लोग काशी के कमरे में लैम्प जला हुआ छोड़ गए थे। सो वह भी बुझा हुआ था। जज साहब ने समझा शायद काशी सो गया है। बहरहाल ये पति-पत्नी भी बड़ी उदासी के साथ सो गए और सबेरे ग्यारह बजे दिन तक उन लोगों ने काशी को नहीं खोजा, क्योंकि उन लोगों को काफी विश्वास था कि काशी यहीं कहीं होगा। परन्तु ढाई बजे दिन को जब श्री रविन्द्र आँसू बहाते हुए काशी का पत्र लिये हुए जज साहब के पास आये तब सबको मालूम हुआ कि काशी गायब है और उसने घर को त्याग दिया है। ये शोक माता-पिता के लिए हृदय विदारक था अर्थात् असहनीय था। जज साहब तुरन्त बेहोश हो गए परन्तु पानी छिड़कने के पश्चात् फिर कुछ जो सम्भ ना। जज साहब ने सब जगह तार, समाचार पत्रों में फोटो, इश्तहार इत्यादि भेजना आरम्भ कर दिया। परन्तु एक दो सप्ताह में हर ओर से "नहीं" का उत्तर आया। सुनहले भवन के अन्दर शोक रूपी साम्राज्य छाया हुआ था। काशी के घर वालों को शोक रूपी अग्नि में जलते २ आज तीसरा दिन हो चुका है और दिन के ढाई बज रहे हैं। उस समय परवेज़ तथा रंजना अपने "महल" वाले कमरे में बैठे हुए कवि सम्मेलन जमाये हुए हैं और रंजना गाना सुना रही है।

"अहे वही दिल जिसे अपना बना के लूट लिया!"

और परवेज़ अपनी कविता सुना रहा है कि!

मेरा मक़सेद जिन्दगानी तुम्हीं हो !!

परन्तु काशी अपने 'शोक प्रभात' में इस समय कुर्सी पर बैठा हुआ बिना दूध की चाय पी रहा है और साथ में सिगरेट का कश भी लगाता जाता है। प्याली में बनी हुई गहरे रंग की चाय उसके सामने रखी है। और उसकी भाप निकल रही है और काशी के मुँह से सिगरेट का धूँआ निकल रहा है। काशी के बाल बिखरे हुए माथे पर आ गये हैं परन्तु उसे इतनी भी सुध-बुध नहीं है कि वह अपने बालों को ठीक कर ले। इसी चल-चिलाती दोपहर में काशीका सेवक इस अधिकता

से चाय का पीना देख कर व्याकुल हो जाता है और वह नीचे की कोठरी में लू से वचने के लिये दरवाजा वन्द करके दोपहर की निद्रा का आनन्द ले रहा है। इस समय इस वियावान वीराने में काशी अपने कमरे में केवल दो साथी रखता है एक तो केवल उसकी चाय दूसरी उसकी सिगरेट।

इस दोपहर में जब कि सूर्य की गर्मी अधिकता के साथ है। दूर से लाउड स्पीकर पर किसी के बोलने की आवाज़ आती हैं। लाउड स्पोकर पर वोलने वाले ने नौबत की सड़क पर आना अच्छा नहीं समझा वल्कि वह एक फ़रलांग के फासले पर आगरा छावनी की सड़क पर होकर गुज़र रहा है। लाउड-स्पोकर एक ताँगे पर रखा हुआ है और कुछ सिनेमा के पोस्टर उस ताँगे पर लगे हैं। लाउड स्पीकार वाला जो कुछ भी चिल्ला कर कहता है काशी के कानों तक वह आवाज पड़ती जाती है। और इस आवाज़ को सुन सुन कर रोता जाता है लाउड-स्पीकार की आवाज़ ये हैं:—

आइये, आइये और अवश्य आइये। आज निशात टाकीज में प्रसिद्ध खेल "शाहजहाँ" लगा है। उसका डाइरेक्टर भारत का प्रसिद्ध डायरेक्टर कारदार हैं नौशाद उसका संगीत डाइरेक्टर है। सहगल के गाने कौन नहीं जानता गाने सहगल ने गाये हैं। सहगल ने इन गानों से अच्छा कभी भी नहीं गाया। आइए अवश्य आइए। केवल एक बार आइए। सहगल के गाने को "शाँहजहाँ" में सुन कर आप खुशी से झूम उठेंगे····आइए अवश्य आइए। यदि आपको गाने के अच्छा होने का विश्वास नहीं है तो सहगल का गाया हुआ शाहाँजहाँ में रिकार्ड सुन लीजिए और आने की कृपा करें। आइए और अवश्य आइए।

लीजिये "शाहजहाँ', के गाने का रिकार्ड सुनिये।'

(रिकार्ड के गाने की आवाज़ आती है)

चाह बरबाद करेगी हमें मालूम न था।
सर में सौदा न रहा दिल में शरारे न रहे॥
वह उम्मीदें न रहीं और वह सहारे न रहे।
गैर तो गैर ही थे वह भी हमारे न रहे॥

हम पर ऐसी भी पड़ेगी हमें मालूम न था।
गर्दनें गैर में पड़ जायेंगी बाँहें उनकी ।।
होंगी बन्द आह हमारे लिये राहें उनकी।
बदली-बदली सी रहेंगी हमसे निगाहें उनकी ।।
दिल की दिल में ही रहेंगी हमें मालूम न था।
वाह किस्मत कि हुये ग़ैर हमारे होकर ।।
उनकी नजरों से गिरे जान से प्यारे होकर।
वह दशा दे गये अफ़सोस हमारे होकर ।।
जिन्दगी मौत बनेगी हमें मालूम न था।

अभी तक काशी को बैठे-बैठे दो कार्य थे। एक तो चाय पीना, दूसरा सिगरेट पीना और जब रिकार्ड की आवाज आने लगी तो तीसरा काम भी हो गया था और वह रिकार्ड सुनने लगा जो कि उसके लिये बड़े दर्दनाक गाने थे, जिसे कि वह न सह सका और उसका शोक आँसुओं के रूप में बह निकला। परन्तु अब वह रिकार्ड के गाने की एक-एक कड़ी को सुनता था और आँसुओं की बूँदें उसकी आँखों से निकल कर उसके कुर्त्ते पर गिरती जाती थीं—

जब से कि मुहब्बत हुई प्यारे हैं यह आंसू !
यानी कि मेरी आँख के तारे हैं यह आँसू !!
कहते हो कि लिल्लाह अब आँसू न गिराओ !
ऐसे में कि जीने के सहारे हैं ये आँसू !!
मासूम निगाहों को भिगोते हैं यह अक्सर !
पोशीदा मुहब्बत के इशारे हैं ये आँसू !!
हर ख़ूने जिगर के लिये तैयार हूँ अब भी !
हारा हूँ न मैं और न हारेंगे ये आँसू !!

———

अध्याय छब्बीसवाँ

गुलों को देख ले जी भर के बुलबुल !
चमन में फिर वहार आये न आये !!

तनवीर, तारा तथा चन्दा को लखनऊ से आये हुये एक सप्ताह हो चुका है। काशी का कुछ पता नहीं चला। काशी के मित्रों ने बड़े हार्दिक प्रेम के साथ प्रतीक्षा की। परन्तु जब काशी का निराश पूर्ण तार मिल गया तो सभी अपने घरों को लौटने लगे। सागर तथा श्रीमती सागर अपने घर चले गये। तनवीर तारा और चन्दा का भी काफिला ग़ाजीपुर चला आया। यहाँ पर चूँकि गर्मी का समय आ चुका था इसलिये चन्दा, तारा, वकील साहब और उनकी स्त्री ने कमरे में सोना बन्द कर दिया था और रात्रि को आगन में सोया करते थे। परन्तु ऐसा करने से तारा तथा चन्दा की तनवीर से वह मुलाकात जो जाड़े की रात में कमरे में सो जाने के कारण हो जाती थी अब कैसे हो सकती है। इसलिये इसका प्रबन्ध करना आवश्यक है।

इधर वकील साहब और उनकी श्रीमती जी आँगन में सोया करती थीं इसलिये इन लोगों की आजादी तथा खाना-आबादी के कार्य में रुकावट पड़ती थीं और रायबहादुर और श्रीमती साहब का क्रय-विक्रय बिलकुल बन्द था।

इन्हीं दिनों में एक दिन चन्दा ने अपनी चाची को इस बात पर मना लिया कि तारा तथा चन्दा स्वयं दोनों दूसरे बग़ल वाले आँगन में सोया करें और चाचा तथा चाची बड़े आँगन में सोया करें। चन्दा की इस बात पर रायबहादुर की मुराद बर आई। रायबहादुर ने तुरन्त स्वीकार कर लिया।

जहाँ तक हो सका रायबहादुर की स्त्री नहीं चाहती थी परन्तु रायबहादुर ने अपने लाभ को दृष्टि में रखते हुए चन्दा तथा तारा की बात मान ली। चलिये रायबहादुर को पूर्णरूप से स्वतन्त्रता मिल गई और चन्दा तथा तारा को भी स्वाधीनता का साम्राज्य मिल गया अर्थात् आजादी प्राप्त होगई।

अब रायबहादुर तथा उनकी स्त्री सदन में सोने लगी। और दूर वाले सदन में तारा तथा चन्दा सोने लगीं। लड़कियों ने नियम बना लिया था कि भोजन इत्यादि कर लेने के पश्चात् जब रात काफ़ी व्यतीत हो जाया करती थी अपने आँगन में चल दिया करती थीं। इस बात की सूचना तनवीर को भी दी गई कि मार्ग बिलकुल साफ़ है और आपको रात के बारह बजे से स्वागतम् की झन्डी दिखाई जायेगी। चुनांचे तनवीर ने भी अपना नियम बना लिया कि रात को ग्यारह बजे वह सीधे सैय्यद मुहल्ले की ओर रवाने हो जाय। रायबहादुर साहब के घर पर बारह बजे आना उनके जीवन का नियम बन गया था।

डर है जनाबे अहमक जूता न खाये एक दिन !
छुप छुप के रोज मिलने जाते हैं उनके घर में !!

अब तनवीर बाबू दिन में या तो सोया करते थे अथवा घर ही में रहा करते थे और रात को अपने कारोबार के सिलसिले में रवाना हो जाते थे। उनका आना-जाना ऐसा ही पोशीदा था कि सैय्यद वाड़े मुहल्ले वाले भी नहीं जान सकते थे कि बाबू तनवीर सैय्यदवाड़े मुहल्ले को अपनी सुसराल समझते हैं। अब मामला केवल यहीं तक नहीं था बल्कि तारा तथा चन्दा बहुत आगे बढ़ चुकी थीं भारत के वायसराय बहादुर लार्ड कारनवालिस जब ग़ाजीपुर आये, सेल गये। बजाय गंगा के घाट उतरने के मृत्यु के घाट उतर गये। और अंग्रेजों की सरकार ने इनकी क़ब्र ग़ाजीपुर ही में संगमरमर की बनवाई। ग़ाजीपुर के निवासी इसे ग़ाजीपुर का ताजमहल ही समझते हैं

और अधिकतर लोग अपने सन्ध्या का समय अपने नगर के ताजमहल के बगीचे में व्यतीत करते हैं। चुनांचे एक दिन चन्दा तथा तारा ने पत्र द्वारा तनवीर को सूचित किया कि हम लोग आज कार्नवालिस की कब्र पर जा रहे हैं। सन्ध्या के चार बजे तुम भी आओ मुलाकात होगी।.......................अन्धा क्या मांगे ? दो आंखें। बाबू तनवीर ने सन्ध्या को झट साइकिल उठाई और कार्नवालिस की कब्र पर जा पहुँचे।

चलिये अब दिन में मुलाकात करने के लिए स्थान भी दो एक सप्ताह में ठीक हो गया और बहुधा सन्ध्या की चाय पाव रोटी भी इसी स्थान पर होने लगी।

आज तनवीर को लखनऊ से आये हुए चौदहवां दिन था। इसी दिन डाकिये ने तनवीर को एक पत्र दिया। तनवीर ने पत्र पर जो मुहर पढ़ी, तो उस स्थान पर आगरा लिखा था परन्तु वहां उसका कोई भी जान पहिचानी अथवा मित्र नहीं रहता था। अचरज के बाद उसने पत्र खोला और पढ़ना आरम्भ किया। ये पत्र काशी का है जो उसने नौबता से लिखा है। पत्र ये है।

आगरा

नौबता

"उस दिल की बुलन्दी के सदमे जिस दिल ने बहलाना छोड़ दिया"

माई डियर तनवीर !

मुझको मेरी रंजना ने धोखा दिया। मैं ये पत्र तुमको इसलिये लिख रहा हूँ कि तुम मेरे सच्चे गहरे मित्र हो। यदि तुमने किसी को भी मेरा पता बता दिया तो मैं समझूंगा कि तुमने भी मेरे साथ धोखा किया। आशा है तुम धोखा नहीं दोगे। मैं इस समय आगरे के प्रसिद्ध मुहल्ले नौबता में रहता हूँ इस मुहल्ले में केवल एक ही घर है और ऐसा घर है जो मुझे 'शोक-प्रभात प्रतीत' हुआ और मेरा दिलचस्प साथी है। यद्यपि आगरे के निवासी इसको नापसन्द करते हैं परन्तु हमें ये नौबता बहुत पसन्द है। तुम जानते हो कि मैं पहिले चाय बहुत कम पीता था परन्तु इस समय बिना दूध की चाय. जो रंग में बिलकुल सड़े हुए खून के रंग से मिलती जुलती है मेरी सर्वश्रेष्ठ साथिन है। मैंने तुम्हारे

बताये हुये दुख की दवा को बहुत कुछ अपना लिया है जो मुझसे बहुत अधिक सहानु-भूति कर रहा है अर्थात् सिगरेट पीना आरम्भ कर दिया है और काफी पीता हूँ और लगभग तुमसे अधिक !

"रोशनी रखता था पहिले अब धुआँ रखता हूँ मैं"

तनवीर ! तुम हमारे पत्र का उत्तर अवश्य देना क्योंकि मैं तुम्हारे पत्रों का सहारा लेकर यहाँ पर अपने जीवन को तनिक शान्तिमय कर सकूँगा । तुम मेरे प्रिय मित्र हो इसलिए मैं तुम्हारे जीवन के बारे में जानना आवश्यक समझता हूँ । तनवीर देखो किसी को न बताना वरना मेरा जीवन व्यर्थ नष्ट हो जायेगा ।

ए सकूने शाम आ बैठ जायें दो घड़ी !
तुझ से भी कहना है इक खामोश अफसाना मुझे !!

तुम्हारा
काशी

इस पत्र का पढ़ना था कि तनवीर का हृदय शोक से व्याकुल हो पड़ा और सोचने लगा कि आखिर क्या करें कैसे मिले । काशी के पिता को सूचना दे या न दे । सागर और श्रीमती सागर अभी-अभी दो दिन हुये अपनी उच्च शिक्षा के लिए विलायत जा चुके । मैं केवल इसलिए काशी के पास नहीं जा सकता कि यहाँ तारा तथा चन्दा कब मेरे वियोग को स्वीकार कर सकती हैं । इन्हीं सब विचारों को सामने रखकर तनवीर ने केवल इस समय काशी के पत्र का उत्तर देना ही उचित समझा और इसी को अच्छा जाना परन्तु काशी के पत्र का उत्तर लिखने के पश्चात् बहुत अधिक वह दुखित हो गया । कुछ अजीब उलझन सी अनुभव कर रहा है । बहरहाल यूँही दिन गुजरते गये और दस-बारह दिन गुजरे होंगे कि परीक्षाफल समाचार पत्रों में निकलना आरम्भ हो गया अब समाचार पत्रों में लगभग प्रत्येक विश्वविद्यालय का परीक्षाफल निकल चुका है । केवल दिल्ली विश्वविद्यालय तथा लखनऊ विश्वविद्यालय का परीक्षाफल नहीं निकला है । न जाने इसमें क्यों देर हो रही है । लीजिए एक दिन लखनऊ का भी परीक्षाफल समाचार पत्रों में आ जाता है और हर ओर

से बधाई होती है। तनवीर बाबू अपनी एम० ए० की परीक्षा में सफल हो गए और ईश्वर मुबारक करे तारा और चन्दा अपनी बी० ए० की परीक्षा में सफल हो गई। रायबहादुर साहब अति प्रसन्न हैं। उनकी स्त्री और अधिक प्रसन्न हैं कि माता ने कुछ नहीं पढ़ा और बिटिया ग्रेजुएट हो गई हैं। क्या ही आश्चर्य की बात है।

रायबहादुर साहब अपने सब मिलने वालों से यही कहते हैं देखिये लड़कियाँ कितनी योग्य हैं। किसी वर्ष भी किसी परीक्षा में असफल नहीं हुईं। और अब बी० ए० पास हो गईं। वास्तव में स्त्रियों को शिक्षा देना आवश्यक है क्योंकि बिना शिक्षा के इनका जीवन बिलकुल प्रकाशहीन व बेकार होता है। शिक्षित स्त्रियों के ढंग ही निराले हैं। सौभाग्य है उन माता-पिता का जिनके पुत्र व पुत्रियाँ शिक्षित हैं। शिक्षा भी अजीब निधि है। क्योंकि आजकल संसार में इसी का बोलबाला है और इसी पर मनुष्यों की मान मर्यादा निर्भर है।

रात उस बुत से कहा मैंने कि ऐ जाने जहाँ !
अब तो लाजिम है कि तदबीर करो सोने की !!
हँस के फ़र्माया कि घर आपका है सो रहिये !
पर जो काम आपने सोचा है वो होने का नहीं !!

आज रात तनवीर बाबू का तारा के पास जाना आवश्यक था चुनांचे रात को बारह बजे बाहर निकला और जाकर दरवाजे को धीरे-धीरे खटखटाया। दरवाज़ा खुलवाया। और तनवीर ने अन्दर सयन में प्रवेश किया। चन्दा और तारा दोनों ने उसको पास होने की बधाई दी और वह भी उन दोनों के सफल होने पर बधाई देता है। इसके पश्चात् तनवीर तुरन्त इन दोनों से मिठाई का प्रश्न करता है। लड़कियाँ वह मिठाई जो उनके लिए विशेष तौर से रख छोड़ी थी उनके सामने रखती हैं। और फिर तीनों मिल बैठकर मिठाई खाते हैं। मिठाई खाने के पश्चात् लड़कियों का प्रश्न तनवीर के पास होने की मिठाई का होता है तो तनवीर कहता है "अवश्य ! अवश्य ! लार्ड कार्नवालिस की कब्र पर।" इस पर सभी हँस देते हैं। इस सिलसिले में एक सप्ताह बीत चला। रायबहादुर की स्त्री ने सोचा कि लड़कियाँ परीक्षा में भी पास हो चुकीं और अब जवान भी

हो चुकीं हैं अतः इन लड़कियों का विवाह हो जाना चाहिए। दूसरे ही दिन रात में जब रायबहादुर सोने आते हैं तो श्रीमती रायबहादुर इधर-उधर देखती हैं कि कोई इनकी बात सुन तो नहीं रहा है और श्री रायबहादुर से यूँ बात चीत आरम्भ करती हैं।

स्त्री—अब तो लड़कियाँ ईश्वर की कृपा से परीक्षा में पास हो चुकी हैं और अब अवस्था भी हो चुकी है, क्यों न अब हम लोग इन लड़कियों की शादी करके इन्हें अच्छे घर डालकर इनसे उऋण हो सुखमय जीवन व्यतीत करें।

रायबहादुर—भाई ! ये भी कोई पूछने की बात है अब तो ऐसा हो ही जाना चाहिए।

स्त्री—हाँ तो जाना चाहिए परन्तु इस सिलसिले में कुछ कीजियेगा भी।

राय०—क्या करना है केवल रमेश को बुलवाना है इसलिए कि मंगनी तो पहिले से ही निर्धारित है तारा का विवाह पहिले हो जाय फिर चन्दा का देखा जायगा और वह उससे एक वर्ष छोटी भी तो है।

स्त्री—हाँ, हाँ तो रमेश को अब लिखियेगा ?

राय०—जब तुम कहो.................

स्त्री०—अच्छा तो कल लिखियेगा।

चुनांचे दूसरे दिन श्री रायबहादुर उमेश बाबू से तथा उनकी श्रीमती जी से राय लेने के पश्चात् रमेश को एक पत्र लिख दिया। रमेश इस समय मलाया में नौकर हो गया है और सिंगापुर में रह रहा है। उधर रमेश को भी संतोष है कि उसकी मंगनी बचपन में ही लग चुकी है। देखा जाये विवाह कब होता है।

श्री रायबहादुर ने रमेश के नाम जो पत्र लिखा है। वह यह है :—

प्रिय रमेश !

ईश्वर तुम्हें सदा प्रसन्न रखे। हम लोग तुम्हारी उन्नति के लिए रात-दिन ईश्वर से प्रार्थना किया करते हैं। तारा तथा चन्दा दोनों बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गईं। भाई उमेश का तुम्हारा विवाह करने का इरादा है। इसलिए तुम वहाँ से छुट्टी लेकर आ जाओ, ताकि तुम्हारे माता-पिता तथा

हम लोग सभी अपने इन कर्त्तव्यों से उद्धार पा जायें। अधिक आशा है कि तुम आने का शीघ्र प्रयत्न करोगे। यहाँ पर तुम्हारे विवाह का सारा सामान हो चुका है। अपने उत्तर से सूचित करो। तुम्हारी चाची तुम्हें आशीर्वाद कहती हैं।

हितैषी

रायबहादुर मोहन लाल

रमेश ने अपने चाचा का ये पत्र पाते ही उत्तर दिया जो श्री रायबहादुर को आज नवें दिन मिला है। रमेश ने जो पत्र लिखा है वह यह है।

सिंगापुर

पूज्य चाचा जी,

नमस्ते !

आपका पत्र मिला। मैं ईश्वर की दया से बिलकुल अच्छा हूँ। अन्तर इतना है कि आप तो जानते ही हैं कि मुझे तैरने का बड़ा शौक है। अतः जब गाज़ीपुर में था तब नदी तथा तालाब में तैरा करता था परन्तु अब तो यहाँ समुद्र के पानी में बहुत अच्छा तैरता हूँ।

मैंने छुट्टी के लिये प्रार्थना पत्र दे दिया है परन्तु मुझे छुट्टी चौदह दिन के लिये लेनी है इसलिये छुट्टी एक माह के पश्चात् मिलेगी। अतः मैं एक मास के पश्चात् आपके चरणों में उपस्थित होऊँगा। इसलिये विवाह की जो भी तिथि निर्धारित कीजिये वह एक माह के बाद की तारीख हो। माता जी, पिता जी को मैं इस बारे में पहिले ही पत्र लिख चुका हूँ। मैं दिन रात आप लोगों की कुशलता चाहता हूँ। चाची को बहुत बहुत नमस्ते कहियेगा। चन्दा को आशीर्वाद।

आपका सेवक

"रमेश"

श्री रायबहादुर को जब यह पत्र मिला तो वह बहुत प्रसन्न हुए और तुरन्त जाकर अपनी स्त्री को पत्र दिखा दिया तथा लड़के की योग्यता की प्रशंसा करने लगे। इसके पश्चात् चन्दा को बुलाकर श्री रायबहादुर ने रमेश

का आशीर्वाद कह दिया और कहा—देखो ! चन्दा रमेश का पत्र आया है वह एक माह के पश्चात् आ रहा है और मैं सोचता हूँ कि तारा का विवाह हो ही जाना चाहिये, क्यों ?

भला चन्दा तारा के मन के भावों को कैसे पिता के सन्मुख प्रकट कर सकती थी इसलिये चन्दा क्यों बोलती, चुप रही। श्री रायबहादुर ने उसकी इस गम्भीरता पर ध्यान नहीं दिया। चन्दा उठकर चली गई। अकेले कमरे में तारा को पाकर उसने अपने पिता की कही हुई सारी बातों को सुना दिया। जब तारा ने इन बातों को सुना तो उसकी हालत भी बिलकुल अधमरे रोगियों की सी हो गई तथा उसके आंखों के सामने बिलकुल अन्धेरा छा गया। वह आपे में न रही।

नियमानुसार जब तनवीर आया तो चन्दा ने सारी बात आज रात को सुना दी। इस बात को सुनना था कि तनवीर के मुख पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और सोचने लगा कि आखिर में किस तरह तारा को अपनाऊँ और पराया न होने दूं। तारा अलग चुप बैठी सोचती रही कि क्या करे कि इतने में चन्दा को एक उपाय सूझा जो सबको पसन्द आया।

चन्दा ने कहा—देखो तनवीर तुम किसी प्रकार अपने पिता को इस बात पर तैयार करलो कि वह चाचा के पास आकर तुम्हारा विवाह तारा से करने के लिये कहें। बस जब वह कहने के लिये आवेंगे तो उसके पश्चात् यदि परमात्मा ने चाहा तो चाचा स्वीकार कर लेंगे और इस समय जो बातें हमको दुखदायी प्रतीत हो रही हैं वह सुखदायी हो जावेगीं तथा आप लोगों का जीवन जो प्रकाश रहित हो रहा है वह प्रकाश मान हो जावेगा। चन्दा फिर तनवीर से कहती है कि यदि उन्होंने स्वीकार कर लिया तब तो ठीक है नहीं तो फिर हम लोग कोई और उपाय करेंगे।

तनवीर भी इस उपाय को पसन्द करता है और कहता है—कि वह इस काम के करने में कोई भी उपाय उठा न रखेगा। इस राय को सुनते ही तारा के मस्तिष्क को भी कुछ शान्ति हुई।

फिर जब रात के चार बजने लगे तब तनवीर तथा तारा दोनों ने एक दूसरे को स्नेह भरी दृष्टि से देखा और फिर तनवीर घर से बाहर निकल कर अपने घर की ओर अग्रसर हो गया।

दूसरे दिन जब तनवीर सबेरे ६ बजे सोकर उठा और घर में जाकर अपनी माता जी के साथ बैठकर नाश्ता करने लगा फिर नाश्ता के पश्चात् इधर उधर की बातें शुरू हुईं।

आजकल बाबू तनवीर का क्या पूछना है माताजी पुत्र के एम० ए० कर लेने के कारण बहुत प्रसन्न हैं। इसलिये पहिले तो वह इधर-उधर की बातें करके अपनी माताजी को शीशे में उतारता है। इसके पश्चात् अपनी माता जी से कहता है।

तनवीर—माताजी एक बात मैं कहना चाहता हूं यदि आप हां कह दीजिये। तो कहें।

माताजी—कहो क्या बात है ?

त०—नहीं पहिले आप मुझे तीन बार हां हां हां कहके वचन दीजिये तब मैं अपनी बातों को आपके सन्मुख रखूंगा।

मा० जी—आखिर कुछ कहो भी तो कि क्या बात है ?

त०—नहीं पहिले तीन बार हां हां हां कहिये।

मा० जी—अच्छा मैं तीन बार वचन देती हूं।

त०—आपने राय बहादुर की पुत्री तारा को देखा है ?

मा० जी—"हां" देखा है।

त०—तो पिताजी से कहिये कि उसी से हमारी शादी की चर्चा करके तारा के पिता से हमारी शादी ठीक करवादें।

मा० जी—तो तुम ही अपने पिता से क्यों नहीं कहते।

त०—अरे हमें तो उनसे डर लगता है वह बड़ी जल्दी क्रोधित हो जाते हैं।

मा० जी—(मुस्कराकर) क्रोधित क्यों हो जायेंगे वह तुम्हारे पिता हैं क्या उन्हें तुमसे प्यार नहीं ?

त०—(गिड़गिड़ाकर) नहीं माता जी हमको तो उनसे भय लगता है आप तो यह जानती ही हैं कि बच्चे जितना प्रेम ढिठाई अपनी माँ से कर सकते हैं और अपने मन की हर एक बात कह सकते हैं उतना पिता से नहीं।

ये कहकर तुरन्त तनवीर अपनी माता से लिपट गया। माता ने जब ये शब्द अपने बेटे के सुने कि पिता से अधिक प्रेम माता पर होता है तो उनकी आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे फिर बेटे के सिर पर अपना हाथ रखकर कहने लगती है कि अच्छा बेटा! आज जब तुम्हारे पिता भोजन करने आयेंगे तो उनसे इस बात को कहूँगी! तब तनवीर कहता है कि हाँ तुम उनसे सब बातें समझा कर कहना और जल्द से जल्द वहाँ भेजना क्योंकि लड़की अति सुन्दर है फिर हाथ न आयेगी फिर किसी दूसरे की होकर चली जायेगी। इसलिए मेरी अच्छी माँ तुम इस काम में ज़रा देर न करना मेरी परेशानियों को ख्याल करके पिता जी को शीघ्र भेजना।

माताजी—अच्छा अच्छा आज ही भेज दूँगी घबराओ मत।

तनवीर को वास्तव में अपनी माता से बहुत ज्यादा प्रेम था और उसको अपने पिता का डर उतना ही था। वह सोचता है कि पिता जी न जाने कैसे हैं कि हर समय हमको डाँटा ही करते हैं। देखिये एक माता बेचारी है कि तुरन्त हमारी बात मान लेती है और एक वह हैं कि हम कोई बात करते हैं कि तुरन्त डाँट दिया करते हैं।

पिता जी भी एक अजीब मनुष्य है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि दुनियाँ में सबके पिता हमारे ही पिता जी की भाँति होंगे। कि माताएँ जितनी होंगी सब अच्छी होंगीं इधर जब से पिता जी स्कूल में लड़कों को पढ़ाने लगे हैं तभी से लड़कों को डाँटते-डाँटते उन्हें डाँटने की लत पड़ गई है और उनमें बहुत ज्यादा चिड़चिड़ापन आगया है। बात बात में बिगड़ जाते हैं। कोई ठिकाने की भी मैं बात करता हूँ तो बस पाजामा में से बाहर हो जाते हैं। घर में नौकरों चाकरों पर कटकने कुत्तों की भाँति झुंझुला पड़ते हैं। मुझे तो अभी तक वह

निरा बच्चा समझते हैं। ये नहीं समझते कि मैं अब उनके बराबर हो गया हूँ तथा एम०ए० पास हो चुका हूँ अतः डांटना ठीक नहीं। लेकिन कौन सुनता है वह तो बस अपनी ही हाँकते हैं दूसरे की सुनते नहीं।

आज दोपहर में जब अध्यापक श्री रणवीर जी भोजन करने के लिये घर में आये तो उनकी स्त्री अर्थात तनवीर की माता ने उनको कुछ ऐसी पट्टी पढ़ाई कि तुरन्त उन्होंने शाम को श्री रायबहादुर से मुलाकात करके इस सिलसिले में बातें करने का इरादा किया। जब माता ने खबर अपने बेटे तनवीर को सुनाई कि उसके पिता आज चार बजे श्री रायबहादुर से उसके विवाह के बारे में बात करने जायेंगे तो वह मारे खुशी के उछल पड़ा और अपनी माता से लिपट गया तथा उसका ललाट चूम लिया। फिर बोला—वस्तुतः माता लोग कहते हैं कि माँ के पाव के नीचे स्वर्ग है और पिता के पेर के तले नर्क बना है।

उसकी ये बाते सुनकर माता भी हसने लगी और कमला तो हर समय तनवीर को मूर्ख बनाया ही करती थी। इस समय भी उसने तनवीर का मजाक उड़ाना आरम्भ कर दिया।

अब तनवीर अपने कमरे की खिड़की को बराबर देखता है और विचार करता है कि आज ये अभागिन घड़ी भी सुस्त चलने लगी है। अब तो ये भी व्यर्थ हो गई हैं अब इसे चोर बाजार में बेच देंगे। इसका प्रयोग करना मूर्खता है। लेकिन होते होते ये सुस्त घड़ी भी चार बजा देती है। तो क्या देखता है कि उसके पिता अभी जनाने हीं घर में हैं बाहर नहीं निकले।

सोचता हैं कि वस्तुतः हमारे पिता भी बहुत सुस्त व्यक्ति हैं। देखिये अब चार बज गये न जाने कब जायेंगे। बहुत ही सुस्त मनुष्य हैं। स्कूल में भी उन्हें हर रोज देर होती है हैडमास्टर देर आने की शिकायत करता है सही ही कहता है अभी तनवीर ये सब बाते सोच रहा था कि उसके पिता घर में से वस्त्र पहिन कर हाथ में घड़ी लेकर जनाने घर से निकल बाहर आते हैं। उनको देखते ही वह झट से आलमारी के पीछे छुप जाता है कि इस समय अच्छे मूड में जा रहे हैं कहीं हमको देख कर डाँट न दें कि दुष्ट है अभी तक लेटा है। खैर श्री रणवीर अपने घर के फाटक से बाहर निकलते हैं और फिर सड़क पर आजाते हैं। अब

खिड़की से तनवीर झाँक कर देखता है वह सड़क पर जा रहे हैं तो धीरे से दबी हुई आवाज़ में कहता है "कि परमात्मा करें इनका जाना सफल हो"। लीजिए तनवीर का जादू माता पर चल गया और स्त्री का जादू पति पर। देखें अब मुलाकात का क्या फ़ल होता है।

धीरे-धीरे चलकर श्री रणवीर अन्त में श्री रायबहादुर के घर पर पहुँच ही गये। उनके पहुँचते ही बाँके तुरन्त कमरे के दरवाजे का पर्दा उठाता है और मास्टर साहब कुर्सी पर बैठ गये फिर बाँके ड्योढ़ी पर जाकर आवाज़ देता है कि श्री रणवीर आपसे मिलने आये हुए हैं।

उस समय वकील साहब अपनी स्त्री से बैठे बातचीत कर रहे थे कि बाँके की आवाज पहुँचती है। इन आवाज़ों को चन्दा तथा तारा ने भी सुना। श्री रायबहादुर साहब घर से बाहर दरवाजे पर आते हैं और तुरन्त बाँके से पान इलायची आदि लाने को कहते हैं। इधर चन्दा तथा तारा ने ज्योंही बाँके की आवाज सुनी तो तुरन्त अपने घर की छत पर चली गईं और कमरे के रोशनदान के पास कान लगाकर खड़ी हो गईं।

पहिले तो श्री रणवीर तथा श्री रायबहादुर से यहाँ-वहाँ की बातें होती रहीं। इसके पश्चात् अपने अर्थ पर आते हैं।

रायबहादुर—कहिये आपने कैसे कष्ट किया आने का।

रणवीर—सोचा कि आपसे मुलाकात हुए बहुत दिन हो गये। आज चलूँ आपसे मिलता आऊँ।

रा०—बहुत बहुत धन्यवाद और कहिये आपके पुत्र की परीक्षा का फल कैसा रहा।

र०—ईश्वर की कृपा से वह परीक्षा में सफल रहा और आज इसी सिल-सिले में आया हूँ।

रा०—कहिये वह क्या ?

र०—वह यह कि यदि आप स्वीकार करें तो मैं क्यों न आपको अपने पुत्र को देकर आपकी पुत्री को बहू के रूप में ग्रहण करूँ।

रा०—ठीक है, परन्तु श्री रणवीर साहब आपको मालूम नहीं कि मेरी पुत्री की मंगनी हो गई है।

र०—(अचम्भे में) किसके साथ ?

रा०—उसकी मंगनी बाल्यकाल ही से उमेश बाबू के पुत्र रमेश के साथ लग चुकी है वह आजकल सिंगापुर में नौकर है। कुछ दिनों के बाद आने वाले हैं। ईश्वर करे कि आ जायें तो मैं इस कार्य से भी मुक्त हो जाऊँ।

र०—अरे साहब मंगनी कोई सिन्दूर बन्धन तो है नहीं, अपनी पुत्री को अपने ही पास क्यों नहीं रखते हैं।

रा०—मैं मानता हूँ कि भगवान की दया से आपका पुत्र सुलझा हुआ है और इसी नगर का लड़का है। मुझे भी अपनी पुत्री का वियोग अच्छा प्रतीत नहीं होता। परन्तु मैं विवश हूँ क्योंकि मैं अपनी पुत्री की मंगनी कर चुका हूँ और मंगनी को तोड़ने के पश्चात् मैं अपनी जातिवालों को क्या मुँह दिखाऊँगा, उनका सामना कैसे करूँगा।

र०—वकील साहब आप मंगनी को बहुत महत्त्व दे रहे हैं। हालांकि मंगनी तो ऐसी चीज है कि आज लगती है कल छूटती है यह तो केवल एक रिवाज है।

रा०—मास्टर साहब आप ठीक कहते हैं कि मंगनी एक रिवाज है परन्तु आप ही बताइये कि जब मैं इस दुनियाँ में रहता हूँ तो इस रिवाजी बात को मानना ही पड़ेगा। चुनांचे इस रस्म को अस्वीकृत करने से क्या फायदा।

र०—बहरहाल इच्छा आपकी। परन्तु मेरी भी यही इच्छा थी। और मेरी स्त्री की भी यही इच्छा थी कि यदि इसी शहर की लड़की घर में आये तो अच्छा है।

रा०—मास्टर साहब मैं बिलकुल बाध्य हूँ, क्या कहूँ। इन बातों के हो जाने के पश्चात् श्री रणवीर चल दिये और घर आकर अपनी बातचीत का फल अपनी स्त्री को सुना दिया। रोशनदान पर खड़े होकर सुनने के पश्चात् लड़कियों को भी वकील साहब के विचार का अन्दाज हो गया।

जब वकील साहब रात में भोजन करने के लिये अपने जनाने घर में गये तो चौके पर कुछ बातें होने लगीं। इन बातों ही बातों में चन्दा अपने चाचा से कहती है कि मैं आज एक पुस्तक पढ़ रही थी तो उसमें लेखक ने लिखा है कि कानून के अनुसार मंगनी की महत्ता सिन्दूर बन्धन से अधिक है।

व० सा०—अरे लिखने वाला अभागा अशिक्षित है। उसको कुछ नहीं मालूम कि कानून के अनुसार मंगनी की कोई महत्ता नहीं है। हाँ सिन्दूर बन्धन बहुत महत्त्वपूर्ण चीज़ है और उसी की महत्ता होनी भी चाहिये। मंगनी क्या चीज़ है कुछ भी नहीं। व्यक्ति मानलें तो सब कुछ न। मानें तो कुछ भी नहीं।

चन्दा—परन्तु आपने श्री रणवीर से तो यही कहा था कि मंगनी की अधिक महत्ता है।

रायबहादुर—अरे वह तो मैंने यूँ ही कह दिया था।

च०—वाह! चाचाजी वाह! जीवन के नाते का अधिक महत्त्व है और आपने इस सिलसिले में प्रत्येक बात बिना सोचे समझे ही कह दी। बिना किसी नियम के।

व० सा०—(बिगड़कर) ! तू हमें कानून पढ़ाती है। पिता लड़कियों के लिये जो भी करता है ग़लत अथवा सही सब ठीक ही करता है। वकील साहब को बिगड़ता देख चन्दा चुपचाप भोजन करने लगती है और अन्त में सभी भोजन करके उठ जाते हैं।

जब रात के बारह बजते हैं तो तनवीर बाबू आते हैं और उनको सारी बातें मालूम हो जाती हैं उनको अब चन्दा तारा तथा तनवीर तीनों मिलकर कुछ न कुछ तरकीब अपने जोड़-तोड़ की सोचना आरम्भ कर देते हैं।

———

अध्याय सताईसवाँ

मेरी आँख झपकी थी एक पल, वही दिल ने कहा कहीं उठ के चल !
दिले बेकरार ने आन कर मुझे चुटकी लेके जगा दिया !

फिरोजाबाद अपनी चूड़ियों के लिए देश के कोने कोने में विख्यात है। यहाँ पर चूड़ियाँ बनाने के कारखाने इतने है जितने बम्बई में शायद कपड़ा बनाने के कारखाने भी न होंगे और इसी कारण फिरोजाबाद की हर दूकान चूड़ियों से लदी रहती है और यहाँ के दूकान पर महिलाओं की कलाइयाँ पकड़ कर चूड़ियाँ पहिनाने वाले व्यक्ति होते हैं।

परन्तु फिरोजाबाद में आज-कल कुछ अजीब सी ऋतु है। हर ओर बदली छाई है और शीतल मन्द सुगन्ध हवा चल रही है। ये हवायें अपनी शीतलता बता रही हैं कि कहीं वर्षा हो रही है। इतने में एक दूकान पर स्वयं मोटर चलाती हुई एक महिला उतरती है। देखने में तो ये महिला बिलकुल नई सभ्यता की प्रतीत हो रही है। इसलिये कि होठों पर लाल रंग है, दाँत बिलकुल सफ़ेद हैं। नीले रंग की जारजेट की साड़ी भी बहुत अच्छी है। नाखून भी लाल रंग में रंगे हुए हैं। चेहरे पर पाउडर ऐसा लगा है कि कोई व्यक्ति बिलकुल निकट आकर देखे तो बता न सके कि पाउडर लगा है। रंग भी गोरा चिट्टा है। युवती भी है और सुन्दर भी। नीले रंग की साड़ी

उसकी सुन्दरता को और दुगुना कर रही थी। उसका शरीर इतना सुडोल और मोम का बना हुआ है कि क्या कहना था। ऐसी महिलाओं के ऊपर किसी कवि ने कहा है कि—

सरापा मुसल्वत सरापा जवानी !
सितम उस पै साड़ी का रंग आसमानी !!

इस औरत की मोटर जब दूकान के पास आकर रुकती है तो ये तुरन्त उतर कर चूड़ियाँ खरीदना आरम्भ कर देती है परन्तु चूड़ियों के खरीदने के समय बार-बार आकाश की ओर देखती जाती थी तथा आकाश में घिरी हुई बदली और चमक-दमक को देख घबराती जाती थी। दुकानदार से जल्दी २ सामान बाँधने के लिए कहती जाती है। इसी समय उसकी चूड़ियों का बंडल तैयार हो जाता है और वह उस बंडल को तुरन्त हाथ में ले लेती है। जब यह दुकान से उतरती है तो बादल और जोरों से गरजना आरम्भ कर देता है। अभी दिन के साढ़े चार ही बजे हैं। परन्तु बदली के गहरे रंग के कारण मालूम होता है बिल्कुल सन्ध्या हो गई है।

उस औरत ने बंडल को लेकर अपने मोटर की पिछली वाली गद्दी पर रखा और स्वयं आगे वाली गद्दी पर बैठ गई। एक बार तो उसने मोटर का हार्न बजाया और मोटर ने रेंगना आरम्भ कर दिया।

थोड़ी देर बाद महिला मोटर की गति को तेज करती है और कुछ मिनटों में मोटर फिरोजाबाद की सीमा पार करने लगती है परन्तु ज्योंही मोटर फिरोजाबाद की बाहरी सड़कों पर पहुँचती है कि बूंद पड़नी शुरू हो जाती है और ज्यों ज्यों मोटर तेज गति के साथ-साथ आगे बढ़ती जाती है वर्षा की गति भी बढ़ती जाती है चूंकि पैट्रोल मोटर के अन्दर कम है इसलिये वह महिला मोटर को अधिक तेजी के साथ नहीं चला रही है जैसा कि वह ऐसी वर्षा के अवसर पर चलाती। बहरहाल चूंकि वर्षा अब बहुत तेजी के साथ हो रही है। इसलिये अब उसको अपनी मोटर की गति तेज करनी ही पड़ी और इस समय उसकी मोटर की गति बहुत तेज हो गई है। चारों तरफ अँधेरा छा गया है। उसने मोटर की बत्ती जलादी और अब इस समय वर्षा भी मूसलाधार हो रही थी। चलते-चलते अब उसकी मोटर की गति काफी तेज

है। उसकी मोटर आगरा की सीमा में प्रवेश कर रही है परन्तु उसके मस्तिष्क में इस समय ऋतु का ख्याल था। जब उसकी मोटर आगरे की सीमा में प्रवेश कर गई तो उसने निकटवर्ती मार्ग का विचार करके कि नगर में शीघ्र पहुँच जाये तो फिरोजाबाद से आगरा आने वाली निकटवर्ती सड़क की ओर बढ़ी अर्थात् नौबता की ओर से जाने लगी। अब इस समय उसकी मोटर नौबता की सड़क पर होकर चल रही है।

नौबता की सड़क पर ये मोटर मुश्किल से सौ गज चली होगी कि अचानक पैट्रोल के समाप्त हो जाने के कारण रुक जाती है। लीजिये नौबता व ईंजा रसीद (नौबता यहां तक पहुँची) वाला मामला उस मोटर के साथ भी हो ही गया और नौबता से होकर ये मोटर भी जाने न पाई। वाह रे नौबता की मनहूसियत, इस समय मोटर को रोका जब दो चार हाथ निकलने को रह गई। अब मोटर आखिर चले तो कैसे चले। साथ में कोई सेवक भी नहीं था। वह मोटर की खिड़कियों से बाहर देखती है कि यह अजीब स्थान है न कोई आदमी न जानवर। कुछ दृश्य ही अजीब है। वर्षा इतने जोरों से हो रही है, ऐसा प्रतीत होता है कि आज ही सारे वर्ष की बर्षा होगी। केवल पानी के बरसने और बादल के गरजने की आवाज आ रही है। रह-रह कर बिजली चमकती है। पेड़ों की छाया के कारण ऐसा अंधियारा हो गया है कि न मालूम कितना बड़ा सुनसान जंगल लग रहा था। अन्धेरे के कारण इस समय की सन्ध्या डरावनी सी होकर रह गई है। आखिर इस महिला ने मारे भय के बिलकुल मौन धारण कर लिया है।

परन्तु अब की बार जो बिजली कड़की तो उसको सामने थोड़ी दूर पर एक घर दिखाई दिया। शायद इस में कोई साहब अपने परिवार सहित रहते हैं चलकर उन्हीं की कुछ सहायता प्राप्त करूँ और बिजली के चमकने के पश्चात् जब अन्धेरा हुआ तो घर के अन्दर कुछ प्रकाश भी दिखाई पड़ा।

परन्तु रात काफी हो चुकी थी। यदि वह मोटर के बाहर निकले तो उसके सारे कपड़े भीग जायेंगे। कोई परवाह नहीं यदि एक साड़ी भीग कर खराब हो जायगी तो दूसरी साड़ियां हैं। उनको काम में लाऊंगी। इस समय

उसी घर में चलकर किसी औरत की साड़ी माँग कर पहिन लूँगी। फिर देखा जायगा।

ये सब बातें सोचकर वह मोटर से बाहर निकलती है और थोड़ी देर कुछ तेज़ चलकर आखिर घर के दरवाजे के पास पहुँच जाती है और जाकर दरवाज़ा खटखटाती है। उस घर से एक व्यक्ति निकलता है उससे ये औरत बात करती है।

औरत—तुम कौन हो ?

व्यक्ति—नौकर हूँ। मेरा नाम मुरली है।

औ०—ये किसका घर है ?

मु०—काशी साहब का।

औ०—वह कहाँ है ?

मु०—कमरे में।

औ०—इस घर में औरतें भी हैं।

मु० जी नहीं।

औ०—मैं श्री काशी से मिलना चाहती हूँ।

मु०—अन्दर चली आइये, ऊपर ले चलूँ।

औरत दरवाज़े के अन्दर प्रवेश करती है मुरली सोपान से गुज़र कर उसको ऊपर के कमरे में पहुँचा देता है। काशी इस समय वही लाल रंग की चाय खून का घूँट समझ कर पी रहा है और जलती हुई सिगरेट उसकी अँगुलियों में दवी है और लैम्प उनकी धीमी प्रकाश के साथ जल रहा है। चाय की प्यालियाँ और चायदानी दोनों इस समय मेज पर काशी के सामने रखी हुई है और काशी कुर्सी पर उजला कुर्ता, धोती पहिन कर बैठा हुआ है। सुनहले रंग की घड़ी कलाई पर लगी हुई है। उसकी टेढ़ी माँग निकली हुई है। कुछ बाल व्याकुलता तथा खेद के कारण माथे पर हैं।

मुरली तथा वह औरत दोनों काशी के कमरे में प्रवेश करते हैं परन्तु काशी यह समझता था कि मुरली आया होगा। पीछे मुड़कर भी नहीं देखा

कि इतने में मुरली कहता है। सरकार ! मेम साहिबां आपसे मिलना चाहती हैं। मुरली की आवाज सुन काशी पीछे मुड़कर देखता है। काशी खड़ा होकर एक कुर्सी को बढ़ाता है और कहता है "आइये" औरत उस कुर्सी पर बैठ जाती है और मुरली चला जाता है। इसके पश्चात् काशी और औरत में वातचीत होती है।

काशी—कहिये आपका नाम ? आपने कैसे कष्ट उठाया ?

औरत—(मुस्कराकर) में अपना परिचय आपसे कराऊं या यह बताऊं कि मैंने कैसे कष्ट उठाया।

का०—(गम्भीर स्वर में) जो आप उचित समझें।

औ० – तो क्यों न अपना परिचय ऐसे तरीके से कराऊं जिससे आने का कारण भी मालूम हो जाये।

का०—आपकी इच्छा।

औ०—वास्तव में हम लोग निवासी इलाहाबाद के हैं परन्तु आजकल हम लोगों ने रहना आगरे में आरम्भ कर दिया है और हम लोगों की गिनती आगरा वालों ही में होती है। मेरे पिता नगर के एक बहुत बड़े सेठ हैं। उनका नाम हीरालाल है। उनको आगरे का बच्चा-बच्चा जानता है। हम लोग केवल दो उनकी लड़कियां हैं। मेरी बड़ी वहिन जिनका नाम सुशीलादेवी है। वह अलीगढ़ से एम० ए० करने के पश्चात् वहीं रहती है। मेरा नाम मनोरमा है। मैंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० ए० पास किया है। आज मैं अपनी चूड़ियां खरीदने फिरोजाबाद गई थी। मुझे वहां देर हो गई। जहां तक हो सका मैंने बहुत जल्दी किया। परन्तु आपके घर के पास इस नोबता मुहल्ले में मेरी ये नौबत पहुँची है। मेरी मोटर का पैट्रोल समाप्त हो गया और मैंने मोटर आपके घर के सामने रख छोड़ा है और मैं इस समय आपके पास इसलिये उपस्थित हुई हूँ कि आप यदि कुछ सहायता कर सकते हों तो मैं इसके लिये धन्यवाद दूंगी, परन्तु इसके साथ साथ आप अपना भी परिचय दीजिये।

काशी—उस समय जब तक मनोरमा बोलती रही काशी शान्तिपूर्वक अपने सामने रखी हुई चाय की प्याली की ओर देखता रहा और जब उसने

बोलना समाप्त कर दिया तो फिर काशी एक हल्की मुस्कान से हंसता और कहता है।

काशी —मैं इसी दुनियां के रहने वालों में से एक अभागा व्यक्ति हूँ और इस नौबता में रहता हूँ। मुझे मेरे पिता-माता का नाम भी याद नहीं। मुझे यह भी नहीं मालूम कि मैं धनी हूँ या दीन।

मनोरमा—आप विवाहित हैं ?

काशी—जी नहीं।

म०—आपकी शिक्षा ?

का०—एम० ए० एल० एल० बी०।

म०—शिक्षा कहां प्राप्त की।

का०—लखनऊ में।

मनोरमा अब चुप हो जाती है। काशी मुरली को आवाज़ देता है और जब वह आता है तो काशी एक कागज़ और एक पेंसिल मनोरमा को देता है और कहता है—आप जो कुछ सूचना अपने पिता को देना चाहती हैं इस काग़ज पर लिख दीजिये और इसी पर्चे पर उनका पता भी लिख दीजिये।

मनोरमा ने कागज़ पर लिखा—मेरे मोटर का पेट्रोल समाप्त हो गया है और इस समय खड़ी है। तुरन्त दूसरी गाड़ी भेजिये। इस चिट्ठी को लिखने के पश्चात् मुरली से कहता है—जहां तक हो सके तेज़ जाओ और ये चिट्ठी नई बस्ती में हीरालाल सेठ को दे आओ।

मनोरमा से पर्चा लेकर मुरली कमरे से नीचे उतरता है और फिर अपनी कोठरी में जाकर शेरवानी पहिनता है और डंडा तथा लालटेन लेकर छाता लगाये हुये नयी बस्ती की ओर चल देता है। नई बस्ती का मुहल्ला नौबता से छः सात-मील की दूरी पर है।

थोड़ी देर बाद काशी मनोरमा से कहता है—देखिये मैं इस समय बिना दूध की चाय पी रहा हूँ। यदि आप इस चाय को पीना चाहें तो पी सकती हैं।

मनोरमा—श्रीमान् मैं विना दूध की चाय पीती तो नहीं क्योंकि मुझे खुश्की पैदा करती है परन्तु चूंकि आपकी चाय है और आप पी रहे हैं इसलिये मैं भी अवश्य पीऊंगी।

काशी ने एक दूसरी प्याली में चाय बनाकर मनोरमा की ओर बढ़ाया और वह धन्यवाद देने के पश्चात् चाय ले लेती है। और पीना आरम्भ कर देती है। बारबार काशी की ओर देखती है किन्तु काशी है कि वह केवल चाय की ओर देखता है। अपने मुंह से सिगरेट के धुंए को उसकी ओर निकाल रहा है। इस शान्ति को तोड़ने के लिये मनोरमा कुछ बातों का सिलसिला जारी रखती है और बातचीत आरम्भ करती है।

मनोरमा—आप इस घर में क्यों रहते हैं जो नगर से बिलकुल बाहर है।

काशी—आप अपने घर के अन्दर क्यों रहती है जो नगर के बिलकुल अन्दर है।

म०—क्योंकि मुझे नगर के अन्दर रहना पसन्द है।

का०—मुझे नगर के बाहर रहना पसन्द है।

म०—आप कोई काम भी करते हैं ?

का०—जी नहीं।

पानी की एक दो बूंद बहुधा खिड़की की ओर से कमरे में आ जाती हैं जिससे मनोरमा तथा काशी दोनों को इस बात का अन्दाजा होता रहता है कि अभी वर्षा मूसलाधार हो रही है जोकि अब रात के आठ बज रहे हैं।

मनोरमा आश्चर्य करती है कि इतना सुन्दर व्यक्ति और उसकी दिनचर्या अजीब है। क्या बात है ? इतने में काशी दूसरी सिगरेट जलाता है। मनोरमा के सामने ये उसकी तीसरी सिगरेट और चाय की तीसरी प्याली है ये सारी बातें देखकर मनोरमा अजीब हैरान सी है कि मामला क्या है ? इस व्यक्ति को हुआ क्या है ? चुनांचे वह फिर शान्ति का अवलम्बन ले चुप हो जाती है।

मनोरमा—आपके माता-पिता ने आपका विवाह अब तक क्यों नहीं किया।

काशी—क्यों कि मेरे भाग्य में नहीं था।

म०—क्या आप भाग्य को मानते हैं।

का०—जी हाँ।

म०—परन्तु मुझे देखिये कि औरत होते हुये भी मैं भाग्य को नहीं मानती हूँ।

का०—इसलिए मैं औरत की पूजा नहीं करता।

म०—परन्तु औरत तो मर्द की रंजना है।

का०—इसलिये तो मैंने रंजना से हाथ धो लिये हैं।

म०—किन्तु औरत वह वफ़ादार रंजना है जो रुपये से नहीं खरीदी जा सकती।

का०—परन्तु हमने जिस औरत को रंजना समझा वह रुपये से खरीदी जा सकती थी।

म०—कभी नहीं ! वह औरत नहीं होगी बल्कि बच्चा पैदा करने की मशीन होंगी, कल होगी, जिसने भी दाम लगाया उसने खरीदा।

का०—आप अपनी जीत की दशा आप ही भली भाँति समझ सकती है।

यूँही काशी की बातचीत और मनोरमा की बातचीत परस्पर टकराती है मनोरमा एक न एक बात निकाल कर बातचीत करना चाहती है। तथा चाहती है कि काशी उसकी बात में दिलचस्पी ले किन्तु मामला इसके बिलकुल विरुद्ध था। परन्तु फिर भी काशी की बातें मनोरमा पर प्रभाव अवश्य डालती थीं तथा वह काशी के इस रहन सहन को देखकर विचार व ख्याल को देखकर कुछ अजीब पहेली की सूरत में थी और साथ ही साथ काशी की साफ़ गोई और सुन्दर मुखड़ा भी उसके हृदय को मोह रहा था। वर्षा जो है वह रूकने का नाम नहीं लेती पानी उसी तरह मूसलाधर बरस रहा था और मुरली बेचारा मील दो मील का मार्ग तय करता हुआ नयी बस्ती में पहुँच जाता है और वहाँ एक व्यक्ति ने हीरालाल का पता बता दिया। अब वह हीरालाल को

मुन्दर कोठी में प्रवेश करता है और चिट्ठी को एक नौकर को दे देता है। पिता इस समय उपस्थित नहीं है परन्तु घर में सेठाइन मौजूद है और सब घर वाले मनोरमा की प्रतीक्षा में व्याकुल हैं। सेठाइन ने चिट्ठी को पढ़ते हुए तुरन्त नौकर को आज्ञा दी कि दूसरी मोटर जल्दी से भेज दो और अपने साथ पेट्रोल और दूसरा ड्रायवर भी लेते जाओ ताकि मनोरमा जिस मोटर में गई है वह मोटर भी आ जायेगी। चुनांचे उनकी आज्ञानुसार एक मोटर और दो ड्राइवर पेट्रोल सहित रवाना हुये। उन लोगों के साथ मुरली भी मोटर में बैठ कर चला गया कुछ मिन्टों में ये लोग काशी के घर पर पहुँचते है और मुरली जाकर अन्दर कहता है। इस समय रात के बारह बज रहे हैं मनोरमा काशी को धन्यवाद देती है और चल देती है और फिर अपने बटुए से पाँच का नोट निकाल कर मुरली को देती है मुरली नमस्ते कहकर उसको ले लेता है। मनोरमा मोटर में सवार होकर अपने घर पहुँचती है।

अध्याय अट्ठाईसवाँ

न छेड ए निकहते वादे बहारी राह लग अपनी !
तुझे अठखेलियाँ सूझीं हैं हम बेज़ार बैठे हैं !!

खैर ! मनोरमा की कठिनाई सरल हुई और वह एक बजे रात को अपने घर पहुँची। माँ ने सब हाल पूछा और इसके पश्चात् मनोरमा अपने कमरे में गई। वहाँ जाकर पहिले उसने साड़ी बदली जो अभी तक कुछ भीगी थी फिर उसके पश्चात् अपना कमरा बन्द करके अपने रात के कपड़े पहने और मसहरी पर जाकर लेट गई परन्तु निद्रा उसको आ ही नहीं रही थी। अन्त में विस्तर से उठ जाती है। अब तो एक बज चुका है सामने रेडियो ग्राम रखा हुआ है किन्तु अब सारे प्रोग्राम समाप्त हो चुके हैं।

प्रेरित होकर वह आराम कुर्सी पर बैठ जाती है और जी बहलाने के लिये रेडियो ग्राम पर रिकार्ड बजाने लगती है। कुछ अजीब बात रही कि उसने पहला रिकार्ड जो लगाया वह यही मशहूर रिकार्ड था।

लगा पहली नज़र का तीर !
हायराम पहली नज़र का तीर !!
लगा पहली नज़र का तीर !
हाय राम पहली नजर का तीर !!

यूँही मनोरमा ने रेडियो ग्राम पर सदा रिकार्ड बजाया है परन्तु आज इसको न जाने क्यों अपने रेडियों से ज्यादा लाभ इसको अपने रिकार्ड से ही हो रहा है। थोड़ी देर में ये पहिला रेकार्ड समाप्त हो गया और अब दूसरा रिकार्ड लगाती है जिसका गाना ये है।

मेरे दिल में आओ !!!
आके बस जाओ !!!
बस के फिर न जाना !!!
कर के कुछ बहाना !!!
मेरे दिल में कुछ रहना !!!
रहके मत जाना !!!

सुरैया ने ये गाना दुनियाँ फिल्म में गाया है। यूँ तो सुरैया का गाना मनोरमा सदा पसन्द करती है क्योंकि वह अच्छा गाती है। परन्तु आज उसको सुरैया का गाना अधिक पसन्द आरहा है सुरैया के गाने को वह सुनती जाती है और मुस्कराती जाती है उसके मुख की मुस्कान से उसकी प्रसन्नता प्रकट हो रही है। न जाने कितने विचार उसके दिल में लहरें ले रहे हैं परन्तु इस समय सुरैया का गाना उसके हृदय के भावों को प्रकट कर रहा है।

नजर कुछ आज ऐसा आ रहा है !
कि दिल सीने में मचला जा रहा है !!

यूँही मनोरमा ने कई और रेकार्ड बजाये और सुने और फिर बड़ी रात तक जगने के पश्चात् सो जाती है। सबेरे उठते ही नहाने धोने और सिंगार करने के पश्चात् फिर मोटर लेकर काशी के घर पर जा पहुँचती है। आज ऋतु सुहावनी है किसी बात का कपट नहीं है।

काशी के पूछने पर मनोरमा बताती है कि आज वह फिर काशी को कल की कृपा के सिलसिले में धन्यवाद देने आई है परन्तु धन्यवाद तो उसने अदा किया। इस सिलसिले में उसने नित्य तीन घन्टे काशी से बातचीत का सिलसिला जारी रखा। इसी समय मुरली आता है और काशी के सामने से चाय पीने के

बर्तन इत्यादि उठाकर ले जाता है और एक सिगरेट का नया डिब्बा वहीं रखने के पश्चात् भोजन करने के लिए कहता है ।

काशी मनोरमा से पूछते है—आप भोजन करेंगी ? मनोरमा कहती है जी नहीं, मुझे दोपहर में खाने के लिए एक स्थान पर जाना है । काशी तब मुरली से भोजन के लिए कहता है । अतः मुरली एक छितनी के अन्दर एक प्लेट में दो रोटियाँ और एक छोटी सी तस्तरी में तरकारी रखकर लाता है । काशी अपनी सिगरेट बुझा देता है और जब भोजन कर लेता है तो फिर चाय आ जाती है तथा वही चाय और सिगरेट का दौर आरम्भ हो जाता है। मनोरमा काशी जैसे नवयुवक का इतना थोड़ा भोजन देखकर आश्चर्य में पड़ जाती है और घबराकर कहती है कि आप केवल इतना ही भोजन करते हैं ? काशी—"जी हाँ" मनोरमा—और रात में क्या खाते हैं ? काशी—रात में भोजन ही नहीं करता हूँ केवल चाय पीकर रहता हूँ। काशी ने बात बड़े शोक तथा दुखित स्वर में कही और मनोरमा के हृदय पर इस वाक्य का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा । यहाँ तक कि उसके दिल की चोट उसके मुख से प्रकट हो गई परन्तु मनोरमा करे तो क्या करे । काशी अपना भेद किसी भाँति नहीं बताता है । मनोरमा ने हर प्रकार से प्रश्न किया किन्तु उसे महिलाओं से कुछ घृणा सी हो गई है । आखिर ऐसा क्यों है ? महिला कोई ऐसी चीज़ तो नहीं । दुनिया औरत पर मरती है केवल औरत के लिए सहस्त्रों मनुष्य घूमते हैं फिर क्या बात है ।

अब मनोरमा को काफी देर हो चुकी है और दिन के साढ़े ग्यारह बज रहे थे । आज उसको दावत में भी जाना था । परन्तु काशी के पास से जाने को उसका जी नहीं चाहता था लेकिन दावत के कारण उसको जाना अवश्य था और उसमें सम्मिलित होना जरूरी था इसलिए चल देती है ।

चलते समय मनोरमा ने काशी को धन्यवाद दुबारा अदा किया और सन्ध्या को चार बजते बजते मनोरमा फिर काशी के घर पहुँचती है । दूसरे दिन फिर पहुँची और फिर तीसरे दिन । सारांश यह है कि अब वह नित्य काशी के घर के चक्कर काटने लगी ।

काशी इससे दूर भागने का उपाय करता है। अपनी हर बात से उसने मनोरमा पर ये प्रभाव डाला कि मनोरमा का अपने यहाँ आना-जाना उसे बिलकुल नापसन्द है परन्तु मनोरमा कोई न कोई बहाना करके हर रोज आती है। मतलब यह कि मनोरमा को देखिये कि काशी के दरवाजे से ही चिपकी रहती है। काशी शक्ल और बातों में मनोरमा कुछ अजीब प्रकार का आकर्षण पाती है जिसके कारण वह ऐसा कर रही है। काशी के यहाँ हर रोज पहुँचना मनोरमा का नियम हो गया था और उसको वहाँ बिना गए शान्ति नहीं मिलती थी।

इसी प्रकार मनोरमा ने पन्द्रह सोलह दिन व्यतीत कर दिये चूँकि काशी को बहुत दिन हुए हैं तनवीर को पत्र लिखे हुए। अतः काशी तनवीर को पत्र लिखता है। पढ़ते चलिये।

डीयर तनवीर !

तुमने मेरे पत्र का उत्तर दिया और मेरी भी आज्ञा का पालन किया। मेरी ओर से तुम्हें कोटि-कोटि धन्यवाद। मैं इस सयय कुछ अजीब उलझन में हूँ। मालूम होता है कि मेरा भाग्य मुझे यहाँ भी शान्ति नहीं लेने देगा। समझ में नहीं आता है कि क्या करूँ।

औरत एक नागिन है जिसने रंजना के आकार में मुझे डस लिया। उसका विष अभी तक मेरे हृदय तथा मस्तिष्क में भरा हुआ है इसी विष की लहरों को कम करने के लिए मैं यहाँ नोबता में रह रहा हूँ। मेरे हृदय से मेरे घर शोक प्रभात ने और नोबता के वातावरण ने विष के प्रभाव को बहुत कुछ कम कर दिया है। किन्तु यहाँ भी इस अभागे के पीछे एक दूसरी नागिन मनोरमा की शक्ल में दौड़ रही है। तुम ही बताओ कि मैं क्या करूँ और कैसे अपने आपको बचाऊँ।

हरचन्द कि मैं अपने आपको सदैव इससे दूर रखना चाहता हूँ परन्तु वह हमसे भी तेज गति वाली है। और बड़ी तेजी के साथ मेरा पीछा कर रही है। आखिर ये क्यों ?

मनोरमा नाम है। एक बहुत बड़े पूँजीपति की बेटी है। वह मुझे खरीदना चाहती है और मैं बिकना नहीं चाहता हूँ बिकूँ भी तो एक औरत के हाथ !! उसका जोर सौदा करने पर, मेरा इन्कार करने पर दृढ़ है। और मैं उसको तुच्छ दृष्टि से देखता हूँ।

वह दिन रात मेरे घर पर आया जाया करती है। मुझे उसका आना-जाना बिल्कुल नापसन्द है। मैंने मना किया वह नहीं मानती। कैसे मना करूँ ? समझ में नहीं आता। क्या बात उसके साथ करूँ ? कि उससे मेरे प्राणों का उद्धार हो जाय। मुझे औरत से कोई प्रेम नहीं।

अभागा
काशी

अध्याय उन्तीसवाँ

क्या निभाये दोस्ती मुझसे कोई पैमाँ शिकन!
दिल मिला टूटा हुआ क़िस्मत मिली फूटी हुई!!

तनवीर, तारा तथा चन्दा सबने मिलकर यह उपाय किया कि रमेश वाली मंगनी मिट जाय। परन्तु श्री रायबहादुर पर्वत की तरह अचल रहे और उन पर किसी का जादू नहीं चल सका। अब जून की पन्द्रहवीं तिथि बीत चुकी है और आज ही रमेश के यहाँ से श्री रायबहादुर के पास चिट्ठी भी आई है कि वह पानी के जहाज द्वारा सिंगापुर से रवाना हो रहा है और उसकी छुट्टी पन्द्रह जोलाई तक की है। अतः विवाह की जो भी तिथि निर्धारित हो वह इन्हीं दिनों में से होनी चाहिये।

फलस्वरूप श्री रायबहादुर ने प्रबन्ध आदि का विचार करते हुए ग्यारह जुलाई को विवाह की तिथि निर्धारित की और उस पर उमेश बाबू तथा उनकी स्त्री की भी स्वीकृति ले ली। तारीख हर प्रकार से उचित समझी गई। एक सप्ताह बीतने के पश्चात् वह आज अपने माता-पिता से मिले हैं इसलिये उनको और उनके माता-पिता को अति प्रसन्नता है। हर तरफ यही विचार हो रहा है कि रमेश बहुत ही योग्य पुत्र है। उसने श्री रायबहादुर की बातों और

उनके सम्मान का ख्याल रख तनवीर भी बराबर तारा, चन्दा से रात को घर पर आकर मिलता है। हर प्रकार का उपाय किया जा रहा है परन्तु कोई भी सफल नहीं होता।

सामने तक़दीर के रुसवाई ये तदबीर देख!
इक जनाज़ा जा रहा है दोष पर तक़दीर के!!

तनवीर क्या करे और किससे कहे। वह आजकल तारा के प्रेम में दीवाना हो रहा है। उसने यह विचार करके कि कुछ दिनों के पश्चात् तारा उससे अलग हो जायेगी। अति खेद होता है परन्तु कौन सा उपाय करे कि तारा तथा रमेश का विवाह न हो।

तारा सात जुलाई को पूर्वी रिवाज़ के अनुसार अलग बिठा दी जायेगी, जिसका अर्थ यह होगा कि अब वह अकेले में रहेगी और किसी से भेंट न कर सकेगी। तारा आजकल जब भी तनवीर को देखती है तो रोने लगती है और चन्दा की दिलासा देने के कारण उसके आँसू कम होते रहते हैं परन्तु फिर भी प्रेम के आँसू कब रुक सकते हैं। किसी न किसी समय गंगा यमुना बनकर खूब बहते हैं।

इधर रमेश अपने सौभाग्य पर फूला नहीं समा रहा है। उसकी स्त्री लखनऊ की एक ग्रेजुएट लड़की होगी। रिवाज़ के तौर पर आजकल वह श्री रायबहादुर के घर पर नहीं आता है। परन्तु तारा को रमेश ने पहिले देखा है। उसकी सूरत हर समय रमेश की आँखों में घूमती है। वह तारा की हर अदा और अंग का प्रेमी है। उसके विचार में तारा सौन्दर्य की देवी है। वह उसके जीवन की साथी बनेगी। उसका विचार भी सही है। रमेश अपने भाग्य पर जितना घमंड करे कम है क्योंकि तारा उसके लिये जीवन में पूँजी बन कर आ रही थी।

तनवीर बराबर तारा तथा चन्दा से मिलने आया करता है उसको अभी कोई ऐसी आशा दिखाई नहीं देती है कि शायद रमेश की मंगनी का अन्त हो जाये। अब आज चार जुलाई हो चुकी है। इसलिये आज रात में जब तनवीर तारा से मिलने आता है तो तारा उसको देखते ही लिपट जाती है और खूब

फूट-फूट कर विलाप करती है। तनवीर के भी आँसू बहते हैं लेकिन आखिर वह करे ? तो क्या करे ? कैसे सहायता करे ? चन्दा भी इन दोनों प्रेम के मारों का विलाप देखकर अपने आपको भी न रोक सकी और उसकी आँखों से आँसुओं के झड़ी शुरू हो गई।

परन्तु चन्दा हर स्थान पर हर समय मस्तिष्क की तेज सिद्ध हुई है। फिर इस अवसर पर उसकी बुद्धि क्यों असफल रहतो उसके पश्चात् अपने हृदय पर अधिकार रख तनवीर तथा तारा के आँसुओं को पोंछा उसके पश्चात् अपने मस्तिष्क के बल पर अन्तिम उपाय बताया, शायद सफल हो। चन्दा (तारा तथा तनवीर दोनों से कहती है) बस एक अन्तिम उपाय रह गया है। यदि इस पर कार्य हो तो शायद सारा कार्य बन जाय।

तनवीर वह क्या ?

चन्दा वह यह कि तुम कल रात में तारा को अपने साथ लेकर कहीं इस नगर से बाहर चल दो।

इस बात का सुनना था कि तारा तुरन्त तनवीर से लिपट जाती है और रो-रो कर कहने लगती है कि मैं तैयार हूँ...... ......तैयार हूँ............ मुझे अवश्य अपने साथ ले चलिये। आप मेरे लिये जीवन के प्रभात हैं.......... मुझे अपने साथ ले चलिये। .... मैं तैयार हूँ।

तारा की इतनी गिड़गिड़ाहट देखकर तथा अपनी विवश स्थिति और कठिनाई को ध्यान में रखकर तनवीर भी फूट-फूट कर विलाप करने लगता है और अपने आँसू पोछने के लिये रूमाल निकालता है। तनवीर तारा के आँसू रूमाल से पोंछता जाता है और साथ ही अपने आँसू भी पोंछता है। परन्तु आँसू रमेश के नाम पर रुकने का नाम ही नहीं लेते।

तारा फिर कहती है—"बोलिये, बोलिये ! आप कुछ बोलते क्यों नहीं। मुझे अपने साथ ले चलिये.......मैं तैयार हूँ...........कब चलेंगे..........कल ही मैं आपके साथ चलने के लिये तैयार हूँ.......... चलिये।

तनवीर आप बिलकुल ये नहीं समझतीं कि आप एक औरत हैं। बाद में.... मुझे ले चलिये।

तनवीर................ऐसा करने में आपके माता-पिता के सम्मान का भी प्रश्न है।

तारा—कुछ नहीं ....मैं अपने प्रेम के पीछे हर चीज़ बलिदान कर दूंगी। मुझे दुनियां में कुछ नहीं चाहिये, केवल आप।

तनवीर—देखिये मेरे लिए सबसे बड़ा प्रश्न रुपये का है।

चन्दा—इसकी परवाह बिलकुल न कीजिये। तारा के गहने तो सुनार के यहाँ साफ़ होने गये हैं। परन्तु मेरे गहने मौजूद हैं मैं तुमको दे दूंगी लेकिन तुम इस नगर से बहुत दूर चले जाओ।

अन्त में तनवीर स्वीकार कर लेता है कि नियमानुसार वह कल रात को आयेगा और तारा को लेकर दूसरे नगर को चल देगा तारा को बिलकुल तैयार रहना चाहिये। आज रात में तारा रोने धोने के कारण बहुत अधिक थक चुकी है इसलिये तनवीर के चले जाने के पश्चात् वह तुरन्त सो जाती है। सवेरे के आठ बज गये हैं, परन्तु ये लड़कियाँ हैं कि उसी सहन में अभी तक सो रही हैं। तारा की माता जगाने जाती है। ज्योंही वह तारा की चारपाई के पास आती है तो उसे पृथ्वी पर गिरा हुआ एक उजला रूमाल मिलता है। माता उस रूमाल को उठा लेती है हाथ से छूने पर पता चला कि रूमाल कुछ भीगा हुआ है जब रूमाल को फैला कर देखती है तो उसमें रेशम से कढ़ा हुआ एक शब्द लिखा हुआ है और वह शब्द "तनवीर" है। यह देखते ही माता का माथा ठनका और तुरन्त इधर उधर जो दृष्टि दौड़ाई तो क्या देखती है कि उस सहन का दरवाजा जो पीछे की ओर है उसके ताले की कुंजी भी उसके गुच्छों से गायब है और एक बार जो पृथ्वी पर देखा तो क्या देखती है कि मर्दाने जूते के चिन्ह भी मौजूद है और स्पष्ट तरीके से किसी के आने जाने का पता दे रहे हैं।

लेकिन मामला यह अपनी पुत्री का है जिसका कुछ दिन में विवाह होने वाला है और माता को ये बातें सबसे पहले मालूम हुईं। अच्छा यही है कि माता इस घटना को रहस्य में रखे और उसका इलाज सोचे और इसका सबसे योग्य

इलाज वही था कि निश्चित तिथि से तीन दिन पूर्व ही मासों हल्दी में बिठाई जाय ताकि उसका घूमना तथा इधर उधर आना जाना बिलकुल बन्द हो जाये।

बस यह विचार मष्तिस्क में आना था कि तुरन्त आई हुई अतिथि औरतों के सामने जाकर ये कहा कि क्यों न तारा को आज ही मासों में बिठाऊँ। इसलिए कि ये मेरी चहेती बेटी है।

औरतों को यों व्यर्थ रीतिरिवाज के अदा करने में आनन्द आता ही है तुरन्त सभी तैयार हो गईं और आज ही दिन दोपहर में तारा मासों हल्दी में बिठा दी गई। गोया कि वह केवल एक कमरे में रहेगी और जिस सहन में अब तक तारा तथा चन्दा सोती थी। इसमें अतिथि महिलाओं को सोने के लिए और ठहरने के लिए कह दिया गया।

अब तारा इस कमरे में मुस्तकिल छः दिन तक रहेगी। ऊपर नोकरानियों और अतिथियों का बहुत ही संगीन पहरा रहेगा।

रात को तनवीर आता है और दरवाज़ा बन्द पाता है तो तीन बार खट-खट-खट करता है परन्तु कोई आवाज़ नहीं आती। अलबत्ता अतिथि औरतों के हँसने-हँसाने और बोलने की आवाज़ अवश्य आती है हर रोज तनवीर के लिए ये दरवाज़ा तुरन्त खुलता था परन्तु आज बन्द है।

या इलाही ये माजरा क्या है।

बड़ी रात तक तनवीर वहीं पर टहलता है इस प्रतीक्षा में कि शायद दरवाज़ा अब खुल जाय। परन्तु वह दरवाज़ा तो ऐसा बन्द हो चुका है जैसे कि अभागे के भाग्य का दरवाज़ा बन्द हो गया है। वह समझ गया कि अवश्य तारा पर कोई नवीन विपत्ति आ पड़ी है परन्तु क्या हो सकता है।

दूसरे दिन पर्चा दाई के हाथ मिलता है उसका विषय है।

प्रिय तनवीर !

मैं आपके बिना जीवित नहीं रह सकती न जाने क्यों मुझे समय के पूर्व ही मासो (हल्दी) में बिठा दिया गया। अवश्य मैं बड़ी अभागिन हूँ। मुझे केवल एक बार अपना मुखड़ा अवश्य दिखलाना। मैं केवल तुम्हीं को देखने की इच्छुक हूँ। मैं आप की हूँ।

सब को पुकारता है दिल पर कोई बोलता नहीं !
क्या मेरी कायनात में मेरे सिवा कोई नहीं !!

अभागिन
तारा

तनवीर के घर नौकरानी पहुँचती है और तनवीर को तलाश करके तारा का पत्र देती है तो वह उसको लेकर पढ़ता है और फिर उत्तर में निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखकर दाई को देता है।

मेरे जीवन के प्रभात तारा !
घबराओ न मैं तुमसे अन्तिम भेंट,
अवश्य करूँगा मुझे भूलना मत
क्योंकि मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरी हो।
"तदबीर मुकद्दर थी तकदीर को क्या कहिये"

अभागा
तनवीर

नौकरानी को तुरन्त पत्र का उत्तर देकर तनवीर रवाना करता है और स्वयं चारपाई पर गिरकर मछली की भाँति तड़पता है।

———

अध्याय तीसवाँ

बारहा ऐसा हुआ है याद तक दिल में न थी।
बारहा मस्ती में लब पर उनका नाम आही गया॥

रंजना बचपन ही से चाय बनाने के लिये विख्यात थी। वास्तव में उसको चाय बनाने में कुछ इतनी मदारत हो गई थी। उसकी बनाई हुई चाय बड़ी स्वादिष्ट होती थी। चुनांचे आज भी परवेज़ के घर पर अपने हाथों से चाय बनाकर परवेज़ बाबू की ओर बढ़ाती जाती है और वह उसे अमृत समझ करके पीते जा रहे हैं।

चार बजे सन्ध्या का समय है। रंजना तथा परवेज़ कुर्सियों पर बैठे हुए हैं और बीच मेज़ पर चायदानी और प्यालियाँ रखी हुई हैं। रंजना और परवेज़ चाय भी पीते जाते हैं और बात भी करते जाते हैं। इतने में परवेज़ रंजना से कहता है।

परवेज़—आपने सब नगर घूमा होगा लेकिन एक शहर नही देखा होगा। इसलिए हमारा विचार है कि चलकर उसको भी देख लीजिये।

रंजना—कौन सा शहर।

प०—आगरा।

रं०—(मुस्कराकर) क्षमा कीजिये आप ही आगरा व बरेली देखिये मैं नहीं देखूंगी।

प०—अरे सरकार बिगड़ती क्यों हैं.........हम दोनों ही आगरा चलें। मैं ताजमहल देख लूंगा और आप पागल खाना.................।

रं०—(झुंझलाकर) पागल खाना देखें मेरे शत्रु। व्यर्थ की बात मत कीजिये।

प०—अरे इसमें बिगड़ने की क्या बात है। अब तो १५ जून से अधिक बर्षा हो गई है। ताजमहल धुल कर साफ हो गया होगा। ऋतु भी सुहावनी है। यदि आप साथ चलें तो मैं आगरे जाने का पूर्ण इरादा कर लूं।

रं—मैं तो आपकी दासी ठहरी जो आज्ञा देंगे उसी पर चलूंगी।

प०—(मुस्कराकर) आप मेरे आधीन है या मैं आपके।

रं०—नहीं मैं, क्योंकि ये तो सभी जानते हैं कि औरत सदैव पति के आधीन होती हैं।

प०—अच्छा यदि आप मेरे आधीन में है तो मेरी आज्ञा मानिये और इस समय मेरे हाथों में दर्द हो रहा है, उसको अपने कोमल हाथों से दवा दीजिये।

रं०—आपकी ये आज्ञा अस्वीकार की जायेगी।

प०—अच्छा तो मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं आपके हाथ पैर दबा दूं।

रं०—ये भी नहीं हो सकता।

प०—क्यों ?

रं०—स्वामी को सेवक से पूछने की आज्ञा नहीं...............।

प०—वाह रे मेरी सरकार जो भी बात की, उल्टी। स्वामी को नौकर से कुछ पूछने का अधिकार ही नहीं !!

रंजना की इस बात पर परवेज़ तथा रंजना दोनों हँस देते हैं और अन्त में दोनों की बातचीत में ये निर्धारण हो जाता है कि आगरा का प्रोग्राम भी होना चाहिये चुनांचे रंजना और परवेज़ दोनों ही आगरा रवाना हो जाते हैं।

आगरा का लारीज़ होटल वह है जहाँ "आगा खाँ" ठहरा करते हैं या इसी प्रकार के छोटे मोटे "आगा खाँ" ठहरते हैं। चुनांचे परवेज़ और रंजना भी इसी होटल में आकर ठहरे और इन लोगों का नियम था कि नित्य ताजमहल देखने जाया करते थे। दूसरी ओर प्रसिद्ध इमारतें तो चार बजे तक देखा करते थे परन्तु चार बजे शाम को ताजमहल पहुँचना आवश्यक था। फिर भी इन लोगों का ताजमहल देखने से जी न भरता था। अतएव प्रतिदिन चार बजे सन्ध्या में पति-पत्नी ताज़महल जाया करते थे।

इधर मनोरमा के लिये शोक प्रभात में उपस्थित रहना जीवन का एक आवश्यक अंग हो गया था वह नित्य शोक प्रभात पर जाया करती थी (चुनांचे आज जबकि १० जुलाई है मनोरमा सन्ध्या समय काशी के घर पहुँचती है और जब भलीभाँति इधर उधर की बातें कर लेती है तब वह काशी से ताज़महल चलने के लिये कहती है जिस पर काशी कहता है—मैं इस घर को उस समय छोड़ूंगा जबकि मुझे मृत्यु के मुंह में जाना होगा। मनोरमा काशी का यह वाक्य सुनकर खटक जाती है और फिर बड़ी खुशामद करती है कि ताज़महल देखने चलिये और अन्त में काशी ने मनोरमा से उद्धार पाने के लिये उसके इस निवेदन को स्वीकार कर लिया और चलने के लिये तैयार हो गया। अब काशी तथा मनोरमा दोनों मोटर में बैठते हैं और ताज़ पहुँचते हैं।

काशी तथा मनोरमा दोनों टहल-टहल कर इधर-उधर घूमते हैं और शाहजहाँ की उल्फत और प्रेम के ऊपर टीका टिप्पणी, वाद-विवाद करते जाते हैं। मनोरमा औरत की महत्ता बताती जाती है और काशी उसको काटता जाता है। काशी कहता है "कि प्रेम के लिये भी रुपयों की आवश्यकता है" और मनोरमा कहती है—"कभी नहीं ! इसके लिये केवल दिल की आवश्यकता है। काशी ताजमहल के ऊपर एक कवि का विचार दोहराता है जो वास्तव में बहुत अछूता है।

एक शहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर !
हम गरीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक !!

मनोरमा कवि के इस विचार से बिलकुल सहमत नहीं है और वह उनको

काटती जाती है। ताज की वाटिका में और भी बहुत से लोग इधर-उधर टहल रहे थे कि अचानक सामने से एक साहब सूट पहिने हुए गुजरते हैं और उसके साथ एक औरत है। काशी तथा मनोरमा से उन लोगों का बिलकुल निकट आमना सामना हो जाता है।

यह रंजना और परवेज़ हैं जिनका सामना मनोरमा और काशी से हुआ है। रंजना और परवेज़ हक्के बक्के हो जाते हैं और काशी भी ठिठक कर रह जाता है। परन्तु थोड़ी देर के पश्चात् काशी की दृष्टि ऐसी हो जाती है जैसे एक पराजित सिपाही अपने शत्रु के सामने सिर नीचा कर लेता हो।

थोड़ी देर तक ये रुके रह कर और अचम्भे की दशा में रहते हैं। काशी और रंजना की दृष्टि आपस में बराबर नहीं हो पा रही है। परवेज़ भी अपने सिगार का कश भूल गया है। मनोरमा बड़े आश्चर्य से देख रही है और हक्की बक्की है कि क्या मामला है? काशी का इस आगरे में कोई भी मित्र अथवा साथी नहीं है तो ये लोग कौन हैं अन्त में प्रेरित होकर रंजना शान्ति को तोड़ती है और बोलती है—"नमस्ते"।

काशी—खुश रहिये।

परवेज़—काशी! बातचीत का सिलसिला हम आरम्भ करें या तुम शुरू करोगे।

काशी—तुमने तो आरम्भ कर ही दिया।

प०—तुम यहाँ कहाँ रहते हो?

का०—"नौबता में"।

प०—मैं यहाँ लारीज़ में ठहरा हूँ।

फिर शान्ति स्थापित हो जाती है और काशी मनोरमा से कहता है चलो मनोरमा मेरा जी कल से ही खराब है और आज मैंने बहुत ही अधिक टहल लिया है, थक गया हूँ। मनोरमा कहती है "चलिए" और मनोरमा काशी को मोटर में बिठाती है और मोटर चलाना शुरू कर देती है।

मोटर के अन्दर बैठते समय काशी और मनोरमा में फिर बातचीत होने लगती है और फिर काशी कहता है मनोरमा ! कल रात हमारे घर में अजीब घटना घटी ।

मनोरमा—वह क्या ।

काशी—हुआ यह कि एक बहुत बड़ा काला सांप निकल कर मेरे कमरे में रेंगने लगा । परन्तु मेरे पास कुछ भी नहीं था जिससे मार सकूं । अब न जाने वह सर्प आज भी उस कमरे में होगा या नहीं । मुझे तो बहुत ही खतरनाक सांप जान पड़ता था ।

म०—निश्चय वह ही उसी कमरे में होगा इसलिये आप हमारे यहां सो रहिये ।

का०—नहीं मनोरमा यह कभी नहीं होगा । किन्तु यदि तुम हमारी सहायता करना चाहती हो तो केवल एक बात करदो । वह यह कि मेरी रक्षा के लिये तुम अपने पिता का पिस्तौल कुछ दिनों के लिए दे दो ताकि उसे हर समय पास रखूं । जब वह सांप निकलेगा मार डालूंगा ।

म०—देखिये मेरी तो यही राय है कि आप मेरे घर सोइये । बहरहाल अब जब आप सोना नहीं चाहते तो आप मेरे घर ही पर चलिये ताकि मैं आपको पिस्तौल दे दूं । इसी बहाने से आप मेरा घर भी देख लेंगे । कैसा सुन्दर और शानदार मौका है ।

काशी उसके घर पर पिस्तौल लेने के लिये जाने को तैयार हो गया और मनोरमा काशी को सारा घर दिखाने के पश्चात् अपने पिता का पिस्तौल उसे दे देती है । इसके पश्चात् मनोरमा काशी को अपनी मोटर पर बिठाकर उसके घर पर पहुँचा आती है अब सूर्यनारायण भी अस्त हो चुके हैं ।

इधर रंजना और परवेज़ जब लारीज़ होटल वापस पहुँचते हैं तो परवेज़ तुरन्त काशी के पिता को प्रतापगढ़ निम्नलिखित विषय का तार देता है ।

आगरा

लारेज होटल कमरा नं० २३

काशी आगरे में मौजूद हैं । उनसे मिलने शीघ्र आइये ।

रंजना, परवेज़

इस तार के पाते ही काशी के पिता जज साहब यद्यपि पुत्र के शोक में बहुत बीमार और बलहीन हो गये हैं परन्तु पौत्रिक प्रेम ने प्रेरित किया और बेटे से मिलने के लिये तुरन्त आगरा को प्रस्थान किया।

अब काशी के हाथ में पिस्तौल आ ही चुकी थी। एक लिफ़ाफा और एक काग़ज़ जेब में रखता है। घड़ी में देखता है तो सात बज रहे हैं और उसके पश्चात् मुरली को बुलाता है और कहता है देखो मुरली! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न रहा। मैं कलकत्ते जा रहा हूं। शायद न आऊँ। अतएव तुम मेरा ये सब सामान ले लेना परन्तु यदि तुमने किसी को यह बताया कि मैं कलकत्ता गया हूँ। तो मैं समझूंगा कि तुम नमकहराम हो और शायद यह कि मैं कलकत्ता से वापस आया तो तुमको मार डालूंगा देखो! खबरदार! किसी से ये न बताना कि मैं वहाँ गया हूँ।

मुरली आज काशी की बात सुनकर हक्का-बक्का सा रह जाता है। इसके कहने के पश्चात् काशी मुरली को वापस भेज देता है कि जाओ अपना काम करो। इसके बाद एक छोटी सी अटैची में पिस्तौल को रखता है और एक सिगरेट जलाकर फिर अपने घर "शोक प्रभात" से बाहर आता है और सड़क पर काफी दूर चलकर जब नोबत की सीमा से बाहर निकलता है तो एक रिक्सा करके स्टेशन पर पहुँचता है। वहाँ पर पहिले वह कलकत्ता का टिकट खरीदता है और उसके पश्चात् ट्रेन की प्रतीक्षा में टहलता रहता है। थोड़ी देर में कलकत्ता मेल बड़ी तेज गति से आता है और यह सैकिण्ड क्लास में सवार हो जाता है।

इस समय रात के आठ बज रहे हैं। काशी अपनी गाड़ी के डिब्बे में अकेला बैठा हुआ है। उसकी बगल में एक छोटी सी अटैची रखी हुई है वह उजला कुर्त्ता और उजली धोती पहिने हुए है। थोड़ी देर में इंजन ने बड़े जोर से सीटी दी और गाड़ी आगरा के स्टेशन से रवाना हो जाती है। कलकत्ता मेल की गति का क्या पूछना। आँधी पानी की तरह चला जा रहा है। खिड़की से हवा के सुहावने झोकों ने बहुधा यात्रियों को सुला दिया है। परन्तु काशी की आँखें बन्द नहीं हो रही हैं बल्कि खुली हुई संसार का दृश्य देखती चली

जा रही है और उसके बाल हवा के कारण उड़-उड़ कर माथे पर आ रहे हैं। किन्तु वह शान्तिपूर्वक अपने अकेले डिब्बे में बैठा चला जा रहा है।

दिल में एक शोला भड़क उठा है आखिर क्या करूँ ?
मेरा पैमाना छलक उठा है आखिर क्या करूँ ?
जख्म सीने का महक़ उठा है आखिर क्या करूँ ?
ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ ?

कलकत्ता मेल अपनी तेज गति के साथ दूसरे ही दिन काशी को कलकत्ता पहुँचा देता है। चुनांचे काशी कलकत्ते के प्रसिद्ध स्टेशन कलकत्ता जंकशन पर उतरता है। उसके बाद एक रिक्सा करके जकरया स्ट्रीट पर पहुँचता है और वहाँ पर एक विख्यात भोजनालय जिसका नाम हिन्दू भोजनालय है। उसमें प्रवेश करता है। वहाँ के रजिस्टर पर अपना नाम और पता लिखता है और फिर एक कमरे में ठहरता है।

अध्याय इकत्तीसवाँ

कैफ़ियते चश्म उसकी मुझे याद है 'सौदा' !
साग़र को मेरे हाथ से लेना कि चला मैं !!

११ जुलाई को तारा के विवाह की तिथि का निर्धारण हो चुका है। अतएव हर ओर बाजे बज रहे हैं। रायबहादुर का घर आज राजा इन्द्र का अखाड़ा हो गया है। अतिथि मर्द व औरतों की एक बड़ी संख्या उपस्थित है। श्री रायबहादुर की ये केवल इकलौती पुत्री है इसलिये श्री रायबहादुर ने जी खोलकर हौसला निकाला है। रुपये पैसे को पानी की भाँति बहा दिया है। उन्होंने बारात का प्रबन्ध ऐसे किया है कि प्रत्येक मनुष्य उनका हौसला तथा जोश देखकर दंग रह गया है और हर देखने वाला उनके हौसले की प्रसंशा कर रहा है। विवाह मंडली अपनी भड़क-धड़क में अपनी आप मिसाल है। लोगों का कहना है कि ग़ाजीपुर में ऐसा विवाह कभी किसी रईस के यहाँ नहीं हुआ है।

इधर उमेश बाबू के घर पर भी अनोखा प्रबन्ध है। रीति के अनुसार कभी रमेश बाबू बुलाये जा रहे हैं और कभी बाहर भेजे जाते हैं। कभी कुछ और कभी कुछ, हर ओर से खुशी के गीत जारी हैं। सब लोग लड़के की योग्यता से प्रसन्न हैं और उसकी हर बात की प्रशंसा कर रहे हैं। रमेश की माता

ने प्रसन्नता के अवसर पर ऐसे सुन्दर कपड़े पहिन रखे हैं जैसे प्रतीत होता है कि उन्हीं की बारात चलने वाली है। हर ओर प्रसन्नता के गीत गाये जा रहे हे। अब रात के नौ बज रहे हैं वकील साहब के मित्र उमेश बाबू के घर से बारात चलती है।

रमेश बाबू पालकी पर बैठे हैं। मयूर बंधा हुआ है। मुख फूलों से लदा है। बारात में गैसों की संख्या बहुत अधिक है। लगभग ऐसा मालूम होता है कि ग़ाज़ीपुर की एक-एक गैस बारात में मौजूद है। ग़ाज़ीपुर में इस शादी की इतनी शोहरत हुई कि कुछ दिन तक लोगों के दिल से इसकी स्मृति नहीं गई।

बारात बीच बाजार के चौराहे पर होती हुई अब रायबहादुर के घर के करीब पहुँचती है। यहाँ पर बाजे बड़े जोरों से बज रहे हैं। ज्योंही रायबहादुर के घर के पास बारात पहुँचती है औरतें और कन्याएँ सभी बारात की शोभा देखने खिड़कियों पर आ जाती हैं और खिड़कियों की सुन्दरता में चार चाँद लगाने लगती है। बारातियों ने जो लड़कियों को देखा कि खिड़कियों पर आ गई हैं तो दूल्हे महोदय का ध्यान छोड़ दिया और लगे कन्याओं को घूरने और लड़कियों ने जो देखा दूल्हा महोदय का मुख फूलों से ढका है और बिलकुल नहीं दिखलाई देता तो वह भी बारातियों को घूरने लगीं। बहरहाल प्रत्येक की दृष्टि किसी न किसी की नजर से टकरा रही थी।

सारांश यह है कि बारात ठहराई जाती है और रमेश बाबू का सिन्दूर बन्धन होने का समय होता है। पण्डितजी दूल्हे से दुल्हन की माँग भरवाते हैं। न जाने तारा के दिल पर इस समय क्या गुज़री होगी। भगवान ही जानें या तारा जानती थी

हर ओर से बधाई का शोर होता है। अब दूसरे रीति रिवाज भी होते हैं और आये हुए अतिथियों और बारातियों को भोजन करवाते हैं।

विवाह होने के एक दिन पश्चात् रमेश बाबू ठहरते हैं। चूँकि उनकी छुट्टी का पन्द्रह जुलाई को अन्त है इसलिये १२ जुलाई को ये नवीन दुल्हन सहित कलकत्ते के लिये प्रस्थान करते हैं ताकि जलयान द्वारा सिंगापुर चले जांय।

दुल्हन के माता-पिता पर क्या गुजरी होगी इसको केवल बेटी वाले माता-पिता ही समझ सकते हैं क्योंकि उनके लिये बेटी की विदाई क्या होती है कि घर से एक जिन्दा लाश निकलती है बहरहाल कलकत्ते तारा और रमेश पहुंच जाते हैं और दोनों के साथ बांके भी कलकत्ते तक पहुँचाने के लिये भेजे गए हैं। इसलिये ये भी साथ साथ हैं।

तनवीर तो आजकल बिलकुल दीवाना हो गया है उसको तारा के जाने की तिथि और समय सब मालूम है परन्तु वह आखिर तारा से कैसे भेंट कर सकता है। और उसके लिये तारा से भेंट करना आवश्यक है। यही भेंट उसके जीवन की साथी होगी। और भेंट को व्यर्थ कैसे जाने दें? क्या उपाय करे समझ में नहीं आता था।

एक उपाय उसके मस्तिष्क में आता है और वह तुरन्त उसको करने को तैयार हो जाता है वह अपने जनाने घर में जाता है और अवसर पा कर अपनी माता के गहने के बक्स में से सोने का कंगन निकाल लेता है और वह इस कंगन को लेजाकर छिपे तरीके से बेचता है। दूकानदार इसको चोरी का माल समझ कर खरीदने से डरता है और वह कम मूल्य लगाता है। बहरहाल किसी तरीके से दुकानदार उन्हें साठ रुपये में लेने को तैयार हो गया। तुरन्त तनवीर ने कंगन उसको दे दिया और रुपया लेकर गाज़ीपुर के स्टेशन पर पहुंचता है। फिर वहां से कालका मेल पर सवार हो जाता है यही गाड़ी है जो सब से तेज़ चलती है। इन दोनों गाड़ियों के चलने में केवल सात घन्टे का अन्तर है। तनवीर गाड़ी के डिब्बे में बिलकुल दीवानगी की दशा में बैठा हुआ चला जा रहा है।

बाबू रमेश और उसकी स्त्री तारा कलकत्ते उतरते हैं किसी होटल में ठहरते है और सात घन्टे के पश्चात् तनवीर भी कलकत्ता उतरता है और कलकत्ता की प्रसिद्ध सड़क अली मुद्दीन रोड पर सुन्दर होटल में ठहरता है।

दूसरे दिन सवेरे ही तनवीर कलकत्ता पोर्ट अर्थात् जहां पर जहाज खड़ा रहता है, दरवाजे का सहारा लिये हुए उस दरवाजे के पास खड़ा है जहां जहाज के हर यात्री को गुजरना पड़ता है।

सदा उसने सफेद कमीज़ पहिनी है परन्तु आज वह काली कमीज़ पहिने हुए है चुपचाप खड़ा सिगरेट पीता जा रहा है। न किसी से बोलता है न चालता है। दुखित तनवीर को खड़े-खड़े कई घन्टे गुज़र गये। उसकी निगाहें किसी को खोज रही थीं कि संध्या के चार बज गये। आज ऋतु की दशा भी खराब है। मिस्टर जाफरी जो जहाज़ का नायब कैप्टेन है। अपने अफसर को ऋतु की दशा दिखाते हुये कहता है कि आज समुद्र की दशा बिलकुल खराब है, बादल घिरा है। बिजली चमक रही है वर्षा काफी होगी। ऐसी दशा में जहाज का आज कलकत्ते से सिंगापुर ले चलना अधिक खतरनाक है। जहाज का कैप्टिन मिस्टर जाफरी की इन बातों पर हँस पड़ा और कहने लगा कि हमारी सारी अवस्था जहाज चलाते हुए गुजरी है। मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि जहाज़ बड़ी सुरक्षा के साथ कलकत्ते से सिंगापुर पहुंच जायेगा। यदि ऋतु इससे भी ज्यादा खराब हो जाय तब भी कोई बात नहीं है; इसलिये कि मैं अपने काम को बहुत ही भली भांति जानता हूँ। आप देखियेगा कि जहाज़ तुरन्त मार्ग तै करेगा।

तनवीर इसी व्याकुलता की दशा में दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा है। अचानक एक महोदय बहुत सुन्दर वस्त्र धारण किये हुये सामने से इस दरवाज़े द्वारा प्रवेश करते हैं उसके पीछे पीछे एक औरत और उसके पीछे बाँके है वही सुन्दर वस्त्र वाले महोदय रमेश बाबू है और उसके पीछे चलने वाली औरत तारा हैं उसकी आँखों से आँसू जारी है। तारा अपनी लाल चूड़ियों और मेंहदी से रंगे हुए लाल रंग वाले कोमल करों से तनवीर को नमस्ते करती है और दोनों की नज़रों का आमना सामना होना है तनवीर रोने लगता है और झट अपने रूमाल से अपना मुंह ढक लेता है। उधर तारा अपने नेत्रों से आँसूओं की धारा बहाती हुई अपने चेहरे को आँचल से छुपा लेती है और अपने पति रमेश के पीछे चली जाती है। तारा ने अपने मुँह से आचल हटाकर तनवीर को ऐसे नमस्ते किया जैसे कि ये उसका अन्तिम प्रणाम था। तुरन्त मुँह छिपा लिया ताकि रमेश न देखने पावे बाँके के पीछे कुली बक्स और बिस्तर लेकर आ रहा था। और ये लोग जहाज़ के डेक पर आकर सामान रखते हैं। बिस्तर के ऊपर रमेश बैठ जाता है और बक्स के ऊपर तारा बैठ जाती है। जैसे कि बहुधा स्टेशन पर यात्री बैठे रहते हैं। थोड़ी देर के पश्चात् तनवीर

भी वहाँ पहुँच जाता है और केवल तारा ही को देखता रहता है। तनवीर कुछ देर तो तारा तथा रमेश से दो-तीन गज़ के फासले पर खड़ा रहता है परन्तु फिर थोड़ी देर के पश्चात् अपना रूमाल बिछाकर उसी स्थान पर बैठ जाता है। यद्यपि तारा दुखित होने के कारण मुँह-छिपाये है परन्तु फ़िर भी तनवीर तारा की ओर देख रहा है या यूँ कह लीजिये कि तारा को वह आज्ञानुसार अपना मुखड़ा दिखा रहा था शायद अन्तिम बार।

बादल जो है कि गहरे से अधिक गहरा रंग लेता जारहा है। धूप का कहीं पता नहीं है। इस समय तारा का कार्य केवल मुँह ढंके आँखों से खून के आँसू रोना है। कभी-कभी वह अपने आँसुओं को आँचल के कोने से पोंछ लेती है ताकि उसका स्वामी रमेश ये न जान सके कि तारा रो रही है। परन्तु जब रमेश ने देखा कि एक युवक काली कमीज पहिने बार-बार उसकी स्त्री की ओर देख रहा है तो वह तनवीर के पास आता है और कहता है।

रमेश—(क्रोधित स्वर में) आप इस ओर क्या देख रहे हैं आपको मालूम होना चाहिये कि मेरे साथ मेरी स्त्री है।

तनवीर—(शोक पूर्ण स्वर में) जी हाँ··· ·········और मेरे साथ मेरा अभाग्य है।

रमेश—आप किसी की जेब काटना चाहते हैं"।

तनवीर—"जिसका गला कट चुका हो वह किसी की जेब क्या काटेगा। उलटे बना हूँ लुट के चोर दस्ते सितम दराज हो !!

रमेश ने समझा कोई दीवाना या पागल है। इसलिये उससे अधिक बात-चीत नहीं की और लौट कर फिर तारा के पास आ गया। परन्तु तारा ने भी इस बातचीत को जो तनवीर और रमेश के बीच पहिली बार हुई, सुना। और दिल मसोस कर रह गई कि तनवीर मेरे भाग्य में यही था। बाँके तनवीर को पहिचानता है और सारा माजरा देख रहा है परन्तु बिलकुल चुप है। ये बातें उसके लिए पहेली थीं।

सन्ध्या के ६ बजने को आये। बादल की गहराई और बढ़ गई है और समुद्र के अन्दर तलातुम और भी बढ़ रहा है। परमात्मा रक्षा करे।

तारा तथा रमेश दोनों अब जहाज़ में सवार होकर जहाज़ के अन्दर वाले कमरे में जाकर बैठते है। रमेश बाँके को दस रुपये देकर जहाज़ के नीचे वापस करता है रमेश और तारा अपना सामान ठीक करते हैं और अब तारा अपने शरीर से चादर उतार कर किनारे रखती है फिर कमरे की खिड़की खोल कर सामने खड़ी हो जाती है। इस समय सामने काली कमीज पहिने तनवीर व्याकुल दशा में खड़ा है।

तनवीर के लिये तारा का ये अन्तिम दृश्य है। जी भर कर देख रहा है। तारा भी तनवीर की ओर खिड़की से टकटकी बाँध कर देख रही है। तारा की माँग में सिन्दूर, माथे पर अफशाँ, हाथ में लाल चूड़ियाँ हैं और अँगूठियाँ लाल रंगी हुई हैं माथे पर टीका है और इसी दशा में दुखित और शोकपूर्ण दिल के साथ तारा तनवीर को देख रही है तो काली कमीज़ और पतलून पहिने दीवानगी की दशा में केवल तनवीर तारा के अन्तिम दीदार के लिये खड़ा है।

तारा का दिल भरा हुआ है। दुख उसकी आँखों और मुँह से प्रकट हो रहा है और उसके दिल की धड़कन से मालूम होता है कि दिल की दुनियाँ उजड़ चुकी है दुखी दिल के साथ वह केवल तनवीर की ओर दृष्टि डालती जा रही है। उसके मस्तिष्क में बैचेनी छाई हुई है। ऐसा मालूम होता है कि उसकी आत्मा अन्दर से कहती है कि तनवीर! तुम्हारी स्मृति मेरे जीवन में सदैव बनी रहेगी लेकिन क्या करे विवशता का दूसरा नाम शान्ति है।

आह, तनवीर इस समय तुम्हारे लिये हम दो आँसू भी नहीं बहा सकते ....तनवीर तू क्या इतना अभागा है..........क्यों तनवीर ऐसा क्यों है............ तनवीर तुम मेरे हृदय रूपी मंदिर के देवता हो और मैं तेरे चरणों की पुजारिन हूँ। अफसोस तुम हमसे दूर हो। ....

साढ़े छः बजते बजते जहाज ने बड़े जोरों से सीटी दी और फिर एक हरकत हुई और जहाज चलने लगा। तारा के इस समय बहुत ही अधिक आँसू निकल रहे थे। मानो उसके हृदय से ये विचार प्रकट हो रहा था कि तनवीर तेरे लिये मैं अपने आँसू, अपना दिल, अपनी हर चीज भेंट चढ़ा

सकती हूँ। तनवीर तू मेरे प्राण, तू मेरा जीवन है ……………… तनवीर तू मेरे पास आजा…………आजा तनवीर……………आजा………… यद्यपि मेरे शरीर पर रमेश का अधिकार है परन्तु मेरी आत्मा हमेशा तुम्हारे पास रहेगी………इस पर केवल तुम्हारा ही अधिकार है…………

यहाँ वह विचार थे जिसके आने से नई दुल्हन आँसू बहाकर रोती जा रही है और वह अपने आँचल से अपने मुँह जिसको तनवीर "आनन्द प्रभात" कहता था ढांक लेती है।

तनवीर भी अपने हृदय पर अधिकार नहीं पा रहा है क्योंकि ये दुख उसके लिये असहाय हो रहा था सदा तेरा सोहाग रखे। तुम्हारे पर हमेशा पूर्णिमा को चाँदनी छाई रहे। अमावस्या की रात तुम से हमेशा दूर रहे। कोई दुःख तुम्हें न सताये। तुम सदैव सुखी रहो बस इतना ही मुझे तुम से कहना था मुझे भूल मत जाना और रमेश को अपनाओ और अपने जीवन को सुखमय बनाओ।

रमेश समझता है कि घर के प्रेम के कारण वह रो रही है। जहाज तनवीर की दृष्टि से ओझल होता जा रहा है जब जहाज तनवीर की दृष्टि से बिल्कुल ओझल हो गया तो इस समय घड़ी ने ठीक आठ बजाये।

तनवीर अब लौट कर अपने होटल के कमरे में आता है और एक आह भर कर चारपाई पर गिर जाता है। आंखों से आँसुओं की धारा बहती जा रही है इस समय तारा उसके हृदय तथा मस्तिष्क में बैठी हुई है तारा के आँसू भी याद आ रहे हैं जो तारा ने उसके लिये बहाये थे।

कहते-कहते मेरा अफ़साना गिला होता है!
देखते देखते तकदीर बदल जाती है!!

———

अध्याय बत्तीसवाँ

आया है बाद मुद्दत बिछड़े हुये मिले हैं।
दिल से लिपट-लिपट कर गम बार-बार ॥

काशी तो रात की गाड़ी से कलकत्ते चल दिया परन्तु सबेरे नियमानुसार मनोरमा जब सात बजे काशी के घर पर आई तो काशी को गायब पाया। बड़े आश्चर्य में पड़ गई। मुरली को बुलाकर पूछती है काशी कहाँ है? मुरली ने कहा "मैं नहीं जानता। मनोरमा पूछती है—परसों यहाँ पर कोई साँप निकला था। मुरली ने कहा जी नहीं।

अब मनोरमा के कान खड़े होते हैं और वह पिस्तौल खोजती है। पिस्तौल कहीं नहीं मिलती है परन्तु मुरली के मुख से प्रकट होता है कि वह जानता है कि काशी कहाँ है और वह बता नहीं रहा है। इतने में अचानक परवेज और रंजना काशी से मिलने आते हैं।

मनोरमा तुरन्त उन लोगों से मिलती है। कल तो उन लोगों से परिचय भी हो गया था। मनोरमा अब सारी बात समझ गई कि वही रंजना है जिसके मामले की ओर काशी बहुधा इशारा करता था। उसने यह भी कहा था—यदि हम शोक प्रकाश से निकलेंगे तो मरने के लिये ही निकलेंगे। अब काशी यहाँ नहीं है। पिस्तौल ग़ायब है। साँप नहीं निकला।

अब मनोरमा को सब बात साफ़-साफ़ मालूम हो रही है वह मुरली पर बहुत क्रोधित होती है बता काशी बाबू कहाँ है परन्तु वह एक चुप हजार चुप। परवेज़ भी डाँटता है किन्तु वह नहीं बताता। मनोरमा ने तुरन्त दौड़कर मुरली की छड़ी उठाली और बड़े जोरों के साथ पच्चीस तीस छड़ी मारकर कहती है—आज तुमको मार डालूँगी वर्ना बता कहाँ है काशी बाबू।

कहावत विख्यात है कि मार के आगे भूत भी भागता है। अन्त में बड़ी मार-पीट के पश्चात् मुरली बता देता है कि काशी ने मुझसे कहा था कि यदि तूने हमारा पता किसी को दिया तो हम तेरा सिर फोड़ देंगे। इसलिये हमने आपको बताने से इन्कार किया वह कलकत्ता गये और हमसे कह गये हैं कि अब हम नहीं आयेंगे। जेब में कलम और कागज़ लेकर गये हैं। एक छोटी-सी अटैची भी उनके साथ थी। न जाने उसके अन्दर क्या चीज़ थी। अटैची के हिलने पर उसके अन्दर की चीज़ गेंद जैसी आवाज़ देती थी।

मुरली के इन शब्दों को सुनना था कि मनोरमा तुरन्त दीवानी होकर वहाँ से अधिक व्याकुल दशा में पिता की तिजोरी में से जितने भी नोट उसके हाथ में आये लेकर उन्हें अपने हैंडबेग में रख कर चलदी स्टेशन की ओर। वहाँ पर तूफ़ानमेल कलकत्ते की यात्रा के लिये खड़ी मिलती है। तुरन्त बिना टिकट खरीदे ही सवार हो जाती है। कुछ अजीब अवसर है कि यदि वह एक मिनट भी देर से होती तो गाड़ी छूट चुकी होती। उसके बैठते ही रेल की सीटी बजती है और गाड़ी स्टेशन छोड़ने लगती है। तूफ़ानमेल अपनी पूरी गति के साथ जा रहा था और दूसरे दिन सात बजे सन्ध्या में मनोरमा कलकत्ता स्टेशन पर उतरती है।

स्टेशन पर उतरते ही यह पूछ-ताछ कार्यालय में चली जाती है और टेलीफोन द्वारा हरएक होटल वालों से काशी की हुलिया बताकर पूछती है कि इस प्रकार का कोई व्यक्ति तुम्हारे होटल में ठहरा है। हर स्थान से उत्तर "नहीं" आता है परन्तु इत्तफ़ाक से १२ बजे रात जब उसी टेलीफ़ोन द्वारा हिन्दू होटल से बात करती है तब उसे पता चलता है कि काशी बाबू "दी न्यू होटल" के कमरा नं० १६ में ठहरे हैं।

मनोरमा अपने इस कार्य की सफलता पर बड़ी प्रसन्न हुई और उसका दिल तुरन्त काशी से मिलने के लिये उद्यत हो जाता है। फिर तुरन्त एक मोटर किराये पर करती है और फिर कमरा नं० १९ में पहुँचकर काशी को भली भाँति देखकर उसे बहुत सन्तोष होता है और वह एक तरफ चुपचाप खड़ी होकर उसके कार्यों को देखती है।

काशी उस समय एक कागज़ पर तनवीर जो उसका अधिक प्रिय मित्र था उसके नाम एक पत्र लिख रहा है। कागज़ मेज पर रखा है और काशी स्वयं उज्ज्वल कुर्ता और धोती पहिने कुर्सी पर बैठा है सामने उसी मेज़ पर दवात के पास भरी हुई पिस्तौल रखी हुई है। पत्र के लिखते-लिखते अब वह पूरा समाप्त ही करने पहुँचा है कि मनोरमा उसके कमरे में प्रवेश करती है, परन्तु काशी अभी पत्र लिखने में लीन है। लीजिये उसका पत्र आप भी पढ़ लीजिये।

कलकत्ता ता० १४ जुलाई
समय बारह बजे रात्रि
कमरा नं० १९ हिन्दू होटल

माई डियर तनवीर !

मर्ग आशिक़ तो कुछ नहीं लेकिन !
इक मसीहा नफ़स की बात गई !!

मैं जीवन से अब बिलकुल थक चुका हूँ। मेरा जी भी अब कहीं नहीं लगता है। मैं दुर्भाग्य से एक औरत के कहने पर ताजमहल घूमने गया वहाँ इत्तफ़ाक से परवेज़ की स्त्री रंजना से जो हमारे लिए एक औरत थी भेंट हुई। मेरे दिल पर क्या गुज़री होगी। इसका अन्दाज़ा केवल तुम्हीं लगा सकते हो।

मैं जितना ही औरत से दूर भागता हूँ ये उतना ही मेरे पीछे आ रही है। न जाने क्या बात है। मेरा यह पत्र तुम्हारे नाम अन्तिम है। ये समय भी अन्तिम है हमको आशा है कि तुम कभी-कभी इस अभागे को भी याद कर लिया करोगे।

मैं अपने जीवन का अन्त आगरे ही में करता परन्तु मनोरमा को

जो मुझ से प्रेम करती है बचाने के लिये मैं कलकत्ता आकर इस अन्तिम कर्त्तव्य को अदा कर रहा हूँ और मनोरमा से मुझको प्रेम नहीं बल्कि.......... ....

काशी अभी ये पत्र यहीं तक लिख पाया था कि मनोरमा को कमरे में देख लेता है और तुरन्त अपने हाथ में पिस्तौल उठा लेता है और दीवानेपन में ज़ोर के साथ बोलता है :—

काशी—आप यहाँ क्यों आई हैं ?

मनोरमा—मैं आपको लेने आई हूँ।

का०—आप चली जाइये, आप कौन होती हैं, मेरी जो मुझे लेने आई है।

म०—मैं मनोरमा हूँ, आपकी दासी।

का०—आप मेरी कोई नहीं हैं बल्कि मेरी मौत बन कर आई हैं।

म०—मैं नहीं जाऊँगी चाहे आप कुछ कहें।

का०—मैं पिस्तौल चला दूँगा, आप चली जाइये।

म० आपके हाथों से अपनी मौत होते देखकर मैं अपने को बड़ी भाग्यशाली समझूँगी।

का०—दूर हट जाइये, तुम मेरे रास्ते से हट जाओ।

म०—मैं अटल हूँ, मैं मनोरमा हूँ, मैं मनोरमा हूँ, मैं औरत हूँ।

ज्योंही मनोरमा ने कहा मैं औरत हूँ तुरन्त काशी उसके ऊपर पिस्तौल चला देता है और गोली उसके सीने से पार हो जाती है। वह घायल होकर ज़मीन पर गिर जाती है और खून फुव्वारों की भाँति उसके सीने से निकलने लगता है उसकी लाश बड़े ज़ोरों से तड़फती और फड़फड़ाती है। प्राण बड़े ही कठिनाई से निकल रहे हैं। मरने के समय भी मनोरमा की दृष्टि काशी की ही तरफ थी। उसके बाद काशी ने भी पिस्तौल से अपने को समाप्त कर दिया। इस प्रकार दोनों की लाशें पृथ्वी पर तड़फती हैं और अन्त में दोनों की जीवनज्योति सदैव के लिये इस नश्वर संसार से लुप्त हो गई। दोनों लाशें पृथ्वी पर कुछ अजीब दशा में पड़ी हुई हैं क्योंकि मनोरमा की लाश तड़फ कर

काशी की लाश के पैरों के पास है और मनोरमा का दाँया हाथ इस समय काशी के पैर की अँगुलियों पर रक्खा है। उस समय का दृश्य ऐसा प्रतीत होता था कि मरने के पश्चात् भी मनोरमा अपनी अपनी भूलों की क्षमा काशी से माँग रही थी। इन दोनों का खून पृथ्वी पर एकत्र होकर इस प्रकार वह रहा था मानों गंगा यमुना मिलकर परस्पर एक धारा में वह रही हों। ये अन्दाज लगाना कठिन है कि कितना खून किसके शरीर का है और कौन-सी धार किसके खून की है दो-दो वार पिस्तौल चलने की आवाज सुनकर होटल वाले व्याकुल हो जाते हैं और तुरन्त काशी के कमरे की ओर दौड़ते हैं खून देख कर मैनजर फौरन फोन द्वारा पुलिस को बुलाता है। खबर पाते ही पुलिस आती है दृष्टि पड़ते ही पत्र को उठाती है और इस नाजुक घटना की छान-बीन करना आरम्भ कर देती है। उसके बाद काशी के हाथ से पिस्तौल लेकर पुलिस वाले उसका नम्बर देखते हैं जो कि यू० पी० का मालूम होता है।

उस परमात्मा का खेल भी निराला है कि आज इस शहर में दोनों मित्र उपस्थित होते हुए भी अन्तिम भेंट न कर पाये। दुर्भाग्य था कि कि तनवीर जैसे प्रिय मित्र से वह अन्तिम समय भी न मिल सका केवल अन्तर इतना ही था कि दोनों के ठहरने का स्थान अलग-अलग था।

जब कि तारा का जहाज़ रवाना हो गया और तनवीर आठ बजे रात में अपने टूटे हुए दिल को बन्दरगाह से लेकर लौटा तो उस समय वह इतना शिथिल हो गया था कि आते ही होटल की चारपाई पर लेट गया। उस समय से लेकर लगभग बारह बजे रात तक उसका काम बिलकुल आँसू बहाना था। पर यह कोई अन्दाज नहीं लगा सकता था कि वह आँसू तारा पर न्योछावर कर रहा था या अपने दुर्भाग्य पर।

तेरा गम है दर हक़ीक़त मुझे ज़िन्दगी से प्यारा।

जब कि होटल की घड़ी ने टन-टन करके बारह बजाये। उस समय ये उठकर मेज़ के पास एक कुर्सी पर बैठ जाता है। और फिर एक पत्र लिखना आरम्भ कर देता है लीजिए तनवीर के इस पत्र को भी पढ़ते जाइये।

कलकत्ता, तिथि १४ जौलाई
जनता होटल
कमरा नं० २२
अर्द्ध रात्रि

प्रिय मित्र काशी !

अपना जीवन क्या लिखूँ अब भाग्य ने मेरा साथ बिलकुल छोड़ रखा है। अब मैं अभागों के हाथ बिक चुका हूँ शायद मेरा ये अन्तिम पत्र है।

आ अन्दलीब मिलके करें आहोज़ारियाँ !
तू 'हाय गुल' पुकार मैं चिल्लाऊं हाय दिल !!

तुम रंजना को न पा सके। आज मेरे भाग्य ने तारा को भी मुझसे छीन लिया। अब मेरे लिए जीना कठिन है। तारा मेरा जीवन-दीपक थी जो मुझसे छीन ली गई और मैं अन्धेरे में उसे ढूंढ़ रहा हूँ लेकिन पाना मुश्किल है। अब मुझे जीने का भी अधिकार नहीं, क्योंकि जब मेरी आँखों का प्रकाश गायब हो गया तो क्या करूंगा इस संसार में रहकर। काशी ! तुम कभी-कभी इस अभागे को भी याद कर लिया करना।

डुबा ही क्यों न दूं मैं आज अपनी किश्ती को !
ये तूफ़ाँ बार-बार आये न आये !!

अब कभी न मिलने वाला
तनवीर

तनवीर ये पत्र लिखकर लिफाफे में बन्द करता है और फिर होटल से बाहर निकलता है। कुछ दूर चलकर सड़क पर आ जाता है मार्ग में एक स्थान पर लेटरबाक्स मिलता है। उसमें तुरन्त उस पत्र को छोड़ देता है उसके पश्चात् तेजी से आगे बढ़ता जा रहा है।

आज सवेरे ही कलकत्ता शहर पर इन्द्रदेव का प्रकोप छाया हुआ था। हर तरफ काले बादल छाये हुए थे और इस समय जोरों से वर्षा की झड़ी जारी थी। बिजली इतनी जोरों से चमक रही थी कि पक्के घर बिलकुल दमक कर रह जाते थे। बादल की गरज मिनटों तक गूंजती रहती थी। प्रत्येक व्यक्ति

शहर से भागता फिर रहा है परन्तु तनवीर भींगता हुआ न जाने किस धुन में चला जा रहा है और अब ये समुद्र के किनारे ही आ पहुँचता है। समुद्र में पानी का क्या पूछना था मालूम होता था कि इस समय समुद्र के अन्दर भूडोल आया हुआ है और लहरें अधिक ऊँची उठ रही हैं चारों तरफ के लोग और किनारे पर के व्यक्ति इधर-उधर छिप गये हैं। किश्ती मोटी-मोटी जंजीर और रस्सों से बांध दी गई हैं कि कहीं बह न जायँ। किनारा इस समय सूनसान है। बिजली की चमक से समुद्र का पानी कुछ अजीब-सा हो जाता है। इस समय दुखित तनवीर किनारे पर खड़ा कभी आकाश की ओर देखता है और कभी कलकत्ते की जगमगाती दुनियां की ओर देखता है और कभी समुद्र की लहरों की ओर। उसकी कुछ अजीब दशा है। एक ओर उसके दिल में निराशाओं का उमड़ता सैलाव है दूसरी ओर समुद्र की ऊँची लहरें हैं। तनवीर कभी तट की सूनसान दशा को देखता है और और कभी समुद्र की लहरों को।

हम हैरतों हसरत के मारे खामोश खड़े हैं साहिल पर !
दरयाये मुहब्बत कहता है आ कुछ भी नहीं पायाब है हम !!

तनवीर अब एक ऊँची चट्टान पर चढ़ जाता है। जीवन उसके लिये कठिन हो चुका है। कलकत्ता नगर की जगमगाती रोशनी और शोर गुल अब उसको कुछ भी नहीं भाते। एक बार वह निराशा भरी दृष्टि सांसारिक रंगीनियों पर डालता है और अब की बार उसको तारा याद आती है। वह इस बार उस चट्टान से कूद कर समुद्र की लहरों की गोद में जा पड़ता है। उसका कूदना था कि समुद्र ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उसे अपनी गोद में ले लिया। परन्तु उसके पश्चात् समुद्र की लहरें उसको मिन्टों में तिनकों की तरह मीलों दूर पहुँचा देती हैं। तनवीर बिलकुल बेहोश हो गया है। नाक-कान और मुँह हर ओर से उसके शरीर में पानी भर गया है। लहरें तो ऐसीं मालूम होती हैं कि जैसे वह वर्षों से मनुष्य की भूखी थीं मनुष्य को अनमोल मोती समझ कर आगे तेजी के साथ लिये भागती जा रहीं हैं। उसकी लाश पर समुद्र की थपेड़े पड़ते जा रहे हैं। उससे ऐसा मालूम होता था कि वह इसे थपकियां दे-देकर सुला रही हो। कभी उसकी लाश इस ओर जाती है और

कभी उस ओर। तनवीर तेरा शरीर, वह शरीर है जिस पर तेरे माता-पिता ने कभी मक्खी भी न बैठने दी। आज उस पर समुद्र की लहरों का अत्याचार हो रहा है। उसकी लाश पानी के अन्दर धँसी जाती है उसका दम घुटता है लाश पानी से बिलकुल भर चुकी है, समुद्र की लहरें कभी लाश को चित्त कर देती हैं और कभी इस लाश को समुद्र की लहरें इस प्रकार ले जाती हैं जैसे लड़के अक्सर गेंद को पैर से मारते हुए ले जाते हैं। तनवीर की लाश पाँच मील आगे चली जाती है तो दूसरी लहर का थपेड़ा उसे एक मील पीछे घसीट ले जाता है तनवीर की लाश बोतल की काग की भाँति इधर-उधर पानी पर घूम रही है। समुद्र की लहरों पर ये मानव तिनका न जाने कहाँ ले जायेगा।

इस दो घन्टे के समय में लहरें उसे इतना तेज़ ले गईं कि अब वह समुद्र के तट से ७० मील की दूरी पर है। यहाँ इस तूफानी और अन्धेरी रात में जहाज लंगर डाले हुए हैं जिसका कैप्टिन काले-काले पानी पर उजला दो शाख वाला जानवर देखता है और सोचता है कि हो सकता है यह कोई खतरनाक जानवर हो। तनवीर की कमीज काले रंग की थी इसलिए पता नहीं चलता था परन्तु उसकी टाँगों को देख कर वह कप्तान कोई दो शाख वाला जानवर समझ रहा था। जहाज को उस जानवर की हानि से बचाने के लिए उसने उचित यही समझा कि उसको जान से मार डालें।

उसने बन्दूक उठाई और निशाना करके चला ही दी। गोली तनवीर के सीने में लगती है और उसके मुँह से एक धीमी आवाज़ करुण स्वर के साथ निकलतीहै। और प्राण निकल जाते हैं। घायल हो जाने के कारण खून इतने जोरों सेनिकलता है कि फिर क्या पूछिये सारी उजली पतलून लाल हो जाती है। न जाने कब तक ये लाश यूँ तैरती रहेगी।

ये जहाज जिस पर से कप्तान ने गोली चलाई है, यह वही जहाज है जिस पर सवार होकर तारा सिंगापुर जा रही है। उस कैप्टिन ने यह कह कर यात्रा कलकत्ता से आरम्भ की कि मैं जहाज चलाने में होशियार हूँ तूफानी ऋतु हमारे मार्ग की रुकावट नहीं बन सकती किन्तु २ बजे रात को जब ये जहाज

तट से ७० मील की दूरी पर पहुँचा तो ऋतुओं की दशा इतनी खराब हो गई कि कैप्टिन होकर उसे उस स्थान पर अपने जहाज का लंगर डालना पड़ा। जिस केबिन में तारा और रमेश बैठे थे उसकी मेज पर एक रेडियो रखा है और एक तरफ लम्बी सी कोच पर बिस्तर बिछा कर रमेश निद्रा के खर्राटे भर रहा है और दूसरी ओर तारा किसी की स्मृति में आंसू बहा रही है वैसे तो तारा ने बन्दूक की आवाज सदा ही सुनी है परन्तु उस समय कैप्टिन ने जो जहाज से बन्दूक चलाई तो न जाने उसके हृदय में एक टीस-सी क्यों उठी कि तुरन्त उसके मुँह से एक आह निकली। उसे ऐसा मालूम हुआ कि तनवीर की आत्मा ने शरीर को छोड़ दिया है। अब ये जहाज सबेरे आठ बजे प्रस्थान करेगा। परन्तु रात तीन बजे से ऋतु की दशा कुछ शान्त होती जा रही है। और समुद्र की लहरों का उफान भी कुछ कम होता जा रहा है।

होते-होते जब सुबह को पौ फटना शुरू होती है और सुबह होता जाता है तो रमेश सोकर उठता है और हाथ-मुँह धोता है तारा को बहुत कुछ समझाता बुझाता है और उसके पश्चात् मुँह इत्यादि धोने के लिये कहता है ! खैर अपने पति की आज्ञानुसार वह हाथ मुँह धोती है और फिर आकर केबिन में बैठ जाती है। रमेश नाश्ता करने को कहता है परन्तु वह यह कह कर कि "जी नहीं चाहता" नाश्ता करने से इन्कार कर देती है। और कुर्सी पर चुपचाप बैठी किसी की याद में लीन रहती है कि इतने में तारा का जी बहलाने के लिए रमेश रेडियो का बटन दबा देता है और रेडियो से आवाज आनी आरम्भ हो जाती है।

'ये आल इण्डियाँ रेडियो है। हम दिल्ली से बोल रहे हैं। अभी-अभी आपने लक्ष्मी बाई से दादरा सुना है। लीजिये अब इन्द्रा बाई से गजल सुनिये। जिस कवि की ये गजल है उसको उर्दू साहित्य में "निराशिक" कविता का नेता कहा जाता है।

(अब गजल के गाने की आवाज आती है)

गजल ये है।

मशाले सोजे गम हाए नेहानी देखते जाओ।
भड़क उठी है शमएँ जिन्दगानी देखते जाओ !!

वहारे ज़िन्दगी का लुत्फ़ देखा और देखोगे !
किसी का ऐश, मरगे नागहानी देखते जाओ !!
ग़ुरुरे हुस्न का सदक़ा कोई जाता है दुनियाँ से !
किसी की खाक में मिलती जवानी देखते जाओ !!

उसी रेडियो से गजल की अन्तिम पंक्ति के गाने की आवाज आ रही थी कि जहाजों के मुसाफिरों में हलचल मच जाती है। हर मुसाफिर दौड़ धूप कर रहा है। उसका कारण यह है कि तनवीर की लाश जो रात में गोली खाने के कारण समुद्र की तह में चली गई थी अब इस समय सवेरे उतार कर पानी की ऊपरी तह पर आकर तैर रही थी। इसकी दो शाख पतलून खतरनाक जानवर समझ कर जहाज के कैप्टिन ने गोली चला दी थी। यह वही तनवीर की लाश है। जहाज का कैप्टिन अपने साथियों से कहता है। यदि हमको रात को पता चल जाता कि यह व्यक्ति की लाश है तो हम इसको पानी से निकालने का उपाय करते परन्तु हमको बड़ा खेद है हमने खतरनाक जानवर समझ कर इस पर बन्दूक चला दी और यह व्यक्ति मर गया।

अभी यह सब बातें हो रही थी कि तनवीर की लाश बहती हुई जहाज की ओर आना शुरू कर देती है कैप्टिन सोचता है कि ज्योंही यह लाश निकट आ जायेगी हम इसे निकाल लेंगे। जहाज के मुसाफिरों की बातें और हलचल देख रमेश भी अपने केबिन से बरामदे में आ जाता है कि देखें आखिर क्या मामला है। तनवीर की लाश को देखते ही रमेश ने तारा को पुकारा "आइये देखिये ये क्या अजीब बात है। तारा भी केबिन के बरामदों पर आ जाती है आते ही ज्योंही कि वह तनवीर की घायल और खून से लथपथ लाश देखती है "हाय" कहके कूद पड़ती है और समुद्र के पानी में गिरते ही बेहोश हो जाती है। तारा की लाश ज्योंही समुद्र के पानी में पहुँचती है लहरें उसे बड़ी तेजी से ले भागती हैं और तारा की लाश तनवीर की लाश से मिल जाती है। अब ऊँची उठती हुई लहरों ने इन दोनों लाशों को बड़ी तेजी से आगे बढ़ाना आरम्भ कर दियो लहरें इस तरह बहाये लिये जा रही हैं कि ऐसा मालूम पड़ता है जैसे वह बहुत दिनों के बिछुड़े हुए साथी को पा गई हों। चूँकि तारा की

लाश में कुछ जान बाकी है इसीलिये उसकी लाश तनवीर के लिये कई बार गोता खाती है उसका लाल दुपट्टा तनवीर की लाश में बुरी-तरह उलझ जाता है। तार के लम्बे बाल भी तनवीर की गरदन में फंस जाते हैं। इस समय समुद्र की लहरें बड़ी तेजी से इन दोनों प्रेमियों की लाशों को लिये जा रही थीं। रमेश जोकि एक चतुर तैराक है उसको बहुत भरोसा है कि वह तारा को बचा लेगा जिस बरामदे में वह खड़ा था वहीं से कूद जाता है ताकि वह अपनी स्त्री के प्राण बचा ले। परन्तु वाह रे भाग्य कि वह समुद्र के जल को छू भी न सका और उसका गला जहाज के निकले हुए एक बहुत तेज और नुकीले लोहे में फँस जाता है। इस लोहे में फंस कर लाश ऐसी फड़कती है जैसे किसी खूँटी पर कोई लम्बी सेरवानी टंगी हो और वह तेज हवा से हिलने लगे।

खून उसकी गर्दन से फुव्वारे की भाँति निकल रहा है। उसके गले की रग फट जाती है वह डोर में टंगी हुई मछली की भाँति तड़पता है। उसकी आँखे ढक गई हैं। खून उसकी गर्दन से पिचकारी की भाँति निकल रहा है। उसका सारा कपड़ा खून से भीग गया है और मुँह से बड़ी धीमी आवाज में "आह" "आह" निकल रही है। तारा और तनवीर की लाश परस्पर लिपटी हुई समुद्र की लहरों पर उसी तेज गति के साथ चली जाती है वह सुन्दरी जो कल सोहागिन, तथा दुल्हन थी आज उसके ललाट पर का अकशांका पानी अपने थपेड़ों और तमाचों से धो रहा है। उसकी मांग का लाल सिन्दूर निधि के जल ने पहिले ही धो दिया है। उसका मेंहदी से रंगा दाँया हाथ तनवीर की गर्दन में पड़ा है और उसका बाँया हाथ इधर-उधर झूल रहा है कि इतने में समुद्र की एक बड़ी मछली करीब आती है और लाल रंग के हाथ को स्वादिष्ट भोजन समझकर अपने मुँह में रख लेती है और एक बार अपने मुँह को इतनी जोर से झटका देती है कि तारा जैसी सुहागिन का लाल हाथ कलाई के पास से टूट जाता है और वह उसके कोमल कर को निगल जाती है। हाथ का टूटना था कि उसकी कलाई की लाल चूड़ी खनखनाती आवाज के साथ समुद्र की तह में पहुँच जाती हैं। उसकी कलाई से खून गिरता है जैसे किसी नल से लाल रोशनाई गिर रही हो। समुद्र के पानी के अन्दर

उसके खून से एक लाल रंग की धार बनती जाती है। तारा का सुन्दर मुखड़ा सूखकर नीला हो जाता है।

अब दिन के ग्यारह बज रहे हैं। तनवीर और तारा की लाश केवल दो चीजें देख रही हैं। यानी निधि का जल और आकाश, तीसरी कोई चीज़ नहीं है। अब सूर्यनारायण भी निकल चुके हैं। बादल कहता चला जा रहा है। सूर्य की किरणें इन लाशों पर पड़ने लगी हैं। और पक्षी अब इन लाशों का मांस खाना आरम्भ कर देते हैं। दिन के एक बजते-बजते इन दोनों की लाशें हड्डियों का ढांचा बन के रह जाती हैं। ये दोनों ढांचे भी अभी तक लाल रंग के आँचल के उलझने के कारण साथ ही साथ बह रहे हैं। अब चूँकि हड्डियों का ढांचा ही शेष रह गया है अत: यह पहिचानना कठिन है कि कौन सो लाश किसकी है अन्त में समुद्र की एक बहुत जोरदार लहर आती है और यह दोनों ढांचे पसलियों की हड्डी के कारण उलझ जाते हैं क्योंकि पसलियों की हड्डियों के ही पिजड़े में दोनों के हृदय रहते हैं और डूब जाते हैं। इस भांति दोनों ने अपने प्रेम का बलिदान किया और प्रेम का सच्चा प्रमाण दिया।

ढूंढ़ोगे अगर मुलकों मुलको मिलने के नहीं नायाब हैं हम !
ताबीर है जिसकी हसरतो ग़म ए हम नफ़सो वे खाब हैं हम !!

————

अध्याय तेतीसवाँ

जरा उनकी शोखी तो देखिये लिये जुल्फ़े खमीदा को हाथ में !
मेरे पीछे आके दबे दबे मुझे साँप कहके डरा दिया !!

जिस दिन मनोरमा ने कलकत्ते के लिए प्रस्थान किया उसी दिन रंजना व परवेज भी नौबत से लौट आये और दूसरे दिन होटल में ढाई बजे दिन में अब लोग बैठे थे कि काशी के पिता जज साहब अपनी बीमारी ही की दशा में सीधे लारीज होटल पहुँचे । उनकी हार्दिक इच्छा यही थी कि वह अपने इकलौते बेटे को देख लें परन्तु उस समय उनकी निराशा की दशा न पूछिये जब कि उनको यह मालूम हुआ कि काशी परसों यहाँ से भी चल दिया । अभी तीनों काशी के बारे में बात कर ही रहे थे कि समाचार पत्र वालों की आवाजें आना आरम्भ हो जाती हैं । भिन्न २ समाचार-पत्र वाला भिन्न २ आवाजें देता चला जा रहा है । उनकी आवाजें निहायत ही भयानक खबरों का संदेशा हैं । उनकी आवाजें ये हैं :—

"कलकत्ते में गोली चल गई..............नवयुवक की हत्या हो गई........ पढ़िये कलकत्ते..............कि तारीख.............. में जबरदस्त घटना........ प्रेम की दास्तान पढ़िये..............लीजिए..............ताजी खबर है........

लड़की मर गई.................दुल्हन का सुहाग लुट गया............नवयुवक तड़प कर मर गया............बिलकुल ताज़ी खबर पढ़िये........ लीजिए............ पढ़िये।"

इन आवाज़ों को सुनकर परवेज़ होटल के बरामदे से उतर जाता है और प्रसिद्ध दैनिक समाचार-पत्र "प्रभात" खरीदता है। उसके पहिले पन्ने की सबसे महत्वपूर्ण खबर यही है जो वह पढ़ कर रंजना को सुनाता है। खबर ये है :—

कलकत्ता तिथि १५ जुलाई सम्वाददता द्वारा यह खबर मिली है कि यहाँ पर एक अजीब घटना घटी जो अपने लिये कलकत्ते के इतिहास में पहिली घटना है। एक नवयुवक सुन्दर लड़का काशी जो आगरे के मुहल्ले नौबता का निवासी है उसने अपनी पिस्तौल से अपने आपको मारकर खुदक़शी करली। उसी पिस्तौल द्वारा उसने आगरे के प्रसिद्ध व्यापारी हीरालाल की पुत्री मनोरमा को भी मार डाला। और उसी रात में लगभग उसी समय एक नवयुवक जिसका नाम अभी नहीं मालूम हो सका। उसने समुद्र में कूदकर अपने प्राण दे दिये। उसकी तैरती हुई लाश जब जहाज़ के पास पहुँची तो उसमें से पहिले एक दुलहन जिसका नाम तारा है और जिसकी मातृभूमि ग़ाज़ीपुर है कूद पड़ी और मर गई। उस दुलहन के पति का नाम रमेश था। स्त्री के कूद जाने के पश्चात् यह अपनी स्त्री के बचाव के लिए कूदा, परन्तु अफ़सोस कि गले की रग में तेज़ और नुकीला लोहा धँस गया और उसका प्राणान्त हो गया। पुलिस विस्तृत वृतान्त के प्राप्त करने के सिलसिले में लीन है।

ज़िन्दगी क्या है अनासिर जोहरे तरतीब।
मौत क्या है इन्हीं अजज़ा का परीशाँ होना !!

इस खबर को ज्योंही परवेज़ ने समाप्त किया जज साहब का अचानक देहान्त हो गया। और इधर इस खबर को सुनते ही रंजना को होला उठने लगता है। हृदय की गर्मी से व्याकुल हो जाती है और कै करना आरम्भ कर देती है और अपनी लाल आँखों को दिखाते हुए बड़ी धीमे स्वर में परवेज़ से कहती है कि शीघ्र से शीघ्र मिर्ज़ापुर चलिये। परवेज़ अलग व्याकुल है।

अन्त में होटल के मैनेजर द्वारा उसको किराये पर एक मोटर मिल जाती

है। उस मोटर पर जज साहब की लाश रखी जाती है और परवेज़ रंजना को भी उसी मोटर पर साथ लेकर आगरे से मिर्ज़ापुर को प्रस्थान करता है। मार्ग में रंजना को कै होती जाती हैं और परवेज़ ड्राइवर से कहता है—तेज चलो............और तेज चलो............और तेज............बहुत तेज़ चलाओ। इधर रंजना की बेहोशी बढ़ती जाती है। उसकी नब्ज़ भी बिलकुल बन्द होती जाती है। परवेज़ रंजना की दशा देखकर व्याकुल हो रहा है और मोटर इस समय पूर्ण गति से चल रही है।

दूसरे दिन परवेज़ रंजना सहित अपने घर पहुँच जाता है। और जज साहब की लाश एक दूसरी मोटर पर रख कर प्रतापगढ़ भेज दी जाती है रात में परवेज़ और रंजना अपने घर आ जाते हैं और सारे घर की महिलायें एकत्र हो जाती हैं। उसकी कै का सिलसिला रुकता ही नहीं। दिल की धड़कनों में भी बहुत वृद्धि हो गई है। बीसों डाक्टर, वैद्य सभी उपस्थित हैं। सबका यही विचार है कि बीमार को गहरा शोक पहुँचा है जिसका यह परिणाम हुआ कि मूल्यवान दवाइयां दी जा रही हैं परन्तु—

"मरज़ बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की।"

रंजना रातों को नींद में उठ उठकर चिल्लाती, चीखती है और रोती है। उसकी दीवानगी अजीब रोग है और फिर कै करती है। रोग मिनट-मिनट पर खतरनाक होता गया। और अब इतना अधिक बढ़ गया कि मिर्ज़ापुर के पहुँचने के तीसरे दिन रंजना की दशा बिलकुल खराब हो गई और बिलकुल सन्ध्या समय जबकि पश्चिम में सूर्य डूब रहा था और इधर रंजना के जीवन का सूर्यास्त हो रहा था। उधर सूर्य डूबा इधर रंजना के जीवन का सूर्य भी अस्त हो गया और उसकी आत्मा ने उसके देह के ढांचे को पूर्णरूप से त्याग दिया।

"किस बेकसी से मुँह वो छुपाकर चले गये!"

मृत्यु के बाद उसका सुन्दर मुखारबिन्द ऐसा मालूम दे रहा था मानों कि वह अपने असली प्रेमी से स्वर्गलोक में मिलने की खुशी में हँस रही हो पर रंजना की मृत्यु परवेज़ के लिये असह्य थी। वह बिलकुल बेहोश होकर उसकी लाश पर गिर पड़ा तथा होश आने पर अपने सीने को हाथों से पीट-पीटकर

विलाप कर रो रहा था। अपना सिर पीटता जाता था और रंजना-रंजना पुकारता जाता था। परन्तु अब रंजना तो किसी और की होने जा रही थी। यह छली और पूंजीपतियों का संसार उसे पसन्द न आया, जिससे शीघ्र ही उसने इस संसार से नाता तोड़ दिया।

बारह बजे रंजना की लाश परवेज़ के घर से निकलती है। घर से चीख़ चिल्लाहट और रोने पीटने की आवाज़ आती है। परवेज़ बच्चों की तरह रो रहा है और रंजना-रंजना कहकर अपना सिर पटकता है परन्तु अब रंजना कहाँ? वह तो अपने प्रेमी के साथ कहीं और विराजमान होती होगी।

आजकल अंधेरी रात का ज़माना है। रिस्ते-नाते के लोग रंजना की अर्थी को बना संवार कर शमशान की ओर ले चले। परवेज़ भी इस अर्थी के साथ था। होते-होते रंजना की अर्थी मरघट पर आती है और लकड़ियों की एक चिता बनाकर रंजना को उस पर रख दिया। रंजना का वह शरीर जो कल तक मसहरी के गद्दों पर रहा करता था वह आज चिता में जलने आया है। थोड़ी देर के पश्चात् चिता पर घी इत्यादि डालने के पश्चात् अग्नि लगादी गई। अग्नि के शोले इतने ऊँचे उठ रहे थे कि उसके प्रकाश ने सारे मरघट के अन्धेरे को समाप्त कर दिया।

रंजना का कमल रूपी शरीर चिता में जलकर राख हो गया और अन्त में चिता की सारी राख बटोर कर एक घड़े में बन्द करदी गई और गंगाजी के पवित्र जल में डुबो दिया गया। सुन्दर रंजना के जीवन का अन्त संसार में इस प्रकार हो गया।

"पहिले चाहने वाले लाखों थे अब पूछने वाला कोई नहीं।"

रंजना की मृत्यु के पश्चात् परवेज़ लगभग एक मास तक दीवानगी की दशा में रहा। बराबर रंजना-रंजना चिल्लाया करता था, परन्तु रंजना तो अब गंगाजी की शरण में जा चुकी थी। खेद भुलाने के लिए उसने शराब पीना आरम्भ कर दिया। शराब अधिकता से पीने लगा ताकि वह अपने ग़म को भुला सके। लेकिन उसकी दशा खराब होती गई और एक वह दिन इस संसार से चल बसा दिल में रंजना की दर्द भरी आह लेकर।

लाई दया न आई क़ज़ा ले चली चले।

इस छः महीने के समय में रायबहादुर और उनकी स्त्री पुत्री के दुःख से उद्धार न पा सके और एक के बाद एक ने परलोक यात्रा की। अब चन्दा अकेली रह गई थी और सारे प्रबन्ध को देखती थी। कभी उसे तारा तथा तनवीर का ख्याल आता था और कभी माता-पिता के समान चाचा और चाची का। जिन्होंने चन्दा को यह अनुभव न होने दिया कि उसके माता-पिता मर चुके हैं।

अब चन्दा ही चाचा-चाची का दुख उठाने के लिये रह गई। ग़ाज़ीपुर अब की वर्ष फिर बाढ़ आई और अब की बार का सैलाब हर बार से अधिक जोरदार था। श्री रायबहादुर का घर पानी से घिर गया। नौकर और दाइयाँ जितनी थीं सभी बेवफ़ा निकली और सबके सब भाग गये।

रात का समय है बिजली चमक रही है और बादल हर समय इस जोर से गरजता है मानों टूट कर पृथ्वी पर गिर जायेगा। भगवान ही दया करे। अँधेरी रात है लैम्प को वायु ने गुल ही कर दिया है। घबरा-घबरा कर कभी अपने स्वर्गीय चाचा को पुकारती है और कभी चाची को। परन्तु कोई उत्तर उसे नहीं मिलता। बाहर सैलाब का पानी है कि बढ़ता ही जाता है और अबकी बार सैलाब के पानी ने वह धक्का दिया कि रायबहादुर के घर की दीवार गिर पड़ती है और पानी जब जनाने घर में बड़ी तेज़ गति के साथ आ रहा है। दीवार के गिरने की आवाज़ से चन्दा बिलकुल बेहोश होकर गिर पड़ी है। इसी पानी में एक जंगली और ज़हरीला साँप रेंगता हुआ आता है और अंधेरे में चन्दा की चारपाई पर धीरे-धीरे चढ़ जाता है और उसके पैर में काटता है। साँप का विष बहुत तेज़ है। वह घबराकर बेहोशी की दशा में तड़फने लगती है। कई एक जगह काटता है चन्दा तड़फ-तड़फ कर अपना सीना पीटती है और अन्त में साँप इधर-उधर रेंगने के बाद चारपाई से उतर कर फिर पानी में चला जाता है, चन्दा इस समय अपनी चारपाई पर मरी हुई पड़ी है और उसका हाथ उसके सीने पर तड़फता हुआ रह गया।

औव्वले शब वो बजम की रौनक़ शमां भी थी परवाना भी !
रात के आखिर होते-होते खत्म था ये अफ़साना भी !!

॥ समाप्त ॥

SHARMA BOOK DEPOT

AGRA

Pr